Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी कहावत कोश

सम्पादक
श्रीशरण

2.2
30

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chenn

हिन्दी कहावत कोश

R
1.3
30

गौशरण

omain. Gurukul Kangri Co

R
१.३
३०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7412

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2024 74270

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 2.3 / 30 आगत संख्या 74270

पुस्तक – वितरण की तिथि नीचे अंकित है । इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए । अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब - दण्ड लगेगा ।

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

074270

हिन्दी कहावत कोश

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय

R1.3/30
74270

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री शरणजी की बहुचर्चित कृतियाँ

* विश्व सूक्ति कोश (पाँच खण्डों में)
* हिन्दी मुहावरा कोश
* मैथिलीशरण गुप्त और उनकी सूक्तियाँ
* दिनकर और उनकी सूक्तियाँ
* पंत और उनकी सूक्तियाँ
* तुलसी और उनकी सूक्तियाँ
* आहार विज्ञान कोश
* पारिवारिक कोश (आठ खण्डों में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी कहावत कोश

सम्पादक :
श्री शरण

प्रेम प्रकाशन मंदिर
3012, बल्ली मारान, दिल्ली - 110006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© श्री शरणजी द्वारा सुरक्षित

R

9.3

30

मूल्य : पचास रुपये / प्रथम संस्करण : १९८१ / प्रकाशक : प्रेम प्रकाशन मन्दिर, ३०१२, बल्लीमारान, दिल्ली-११०००६ / मुद्रक : जनार्दन कम्पोजिंग एजेंसी द्वारा मानस प्रिंटिंग प्रैस, ६/४७५३, पुराना सीलमपुर, दिल्ली-११००३१

HINDI KAHAVAT KOSH

By Shri Sharan Price : Rs. 50.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमुख

कहावतें लोक जीवन की सिद्ध अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हैं। इनमें वाचक अर्थ की अपेक्षा लक्ष्यार्थ की प्रधानता होती है। ये लोक जीवन के व्यापक अनुभवों को सामान्य शब्दों के माध्यम से व्यक्त करती हैं। इन्हें लोकोक्तियाँ, प्रवाद वाक्य, जनश्रुतियाँ आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है।

कहावतों के प्रयोग से रचनाकार की भाषा अथवा वक्ता के भाषण में प्रभावात्मकता, शक्ति और सौन्दर्य आ जाता है तथा विचारों को बल मिल जाता है। सही अर्थों में यह हमारे विचारों की आलोचक होती हैं और इनमें निहित सच्चाई श्रोताओं को तत्काल प्रभावित करती है। फलतः उनके हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है जिससे वह ऐसा प्रतीत करने लग जाते हैं कि मानो सच्चाई रूप धारण करके उनके समक्ष आ खड़ी हुई है। वास्तव में ये भाषा का शृंगार हैं। अतः आज के युग में इनका महत्त्व बहुत बढ़ गया है।

कहावतों का प्रयोग बहुत ही सतर्कता के साथ करना चाहिए। प्रयोग ग़लत होने पर भाषा का सौंदर्य एवं उसकी शक्ति घट जाती है तथा अर्थ का अनर्थ होने की सम्भावना रहती है। वास्तव में इनका प्रयोग कहीं उपदेशात्मक नीति को अपना कर या कहीं उपालम्भ के लिए किया जाना चाहिए।

छात्र वर्ग को इनके प्रयोग में कठिनाई को देखते हुए ऐसी उपयोगी पुस्तिका तैयार करने की इच्छा हुई जिसको पढ़-कर छात्र वर्ग कहावतों (लोकोक्तियों) के अर्थ और उनका सही ढंग से वाक्यों में प्रयोग सीख जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी उद्देश्य को लेकर 'हिन्दी कहावत कोश' का सम्पादन किया है। हिन्दी में बहुत-सी कहावतें संस्कृत, अवधी, भोजपुरी, फ़ारसी और प्रान्तीय भाषाओं से भी आई हैं। इनमें से लगभग ५०० प्रचलित कहावतें जिन्हें मैं पिछले दशक में एकत्रित कर पाया था, उनके अर्थ व प्रयोग के साथ प्रस्तुत कोश में वर्णक्रमानुसार प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रस्तुत कोश की उपादेयता के विषय में कुछ भी कहना मेरे लिए ठीक नहीं है। यह निर्णय तो 'हिन्दी कहावत कोश' के पास आने वाले रत्नावेशी पाठकों पर छोड़ रहा हूँ। भूलें सतर्कता बरतने के बाद भी इसमें रह सकती हैं। अतः उनके लिए क्षमा याचना करता हुआ पाठक बंधुओं से अनुरोध करता हूँ कि इसे पढ़ कर अपनी प्रतिक्रिया व आवश्यक सुझावों से अवगत करायें।

वेदी भवन, —विनीत
मदरसा रोड, कशमीरी गेट दिल्ली। शरण
दिनांक २५ अगस्त, १९८१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पित

प्रिय पुत्र
प्रमोद
को
जो
अकस्मात्
ही
हमसे
बिछुड़
गया।

—शरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ

अंतर बजै तो जन्तर बजै—अ० मन में ज्ञान हो तो काम ठीक चलता है। प्र० आशीष बहुत श्रम करता है किन्तु समझ में न आने से पर्चे में कुछ लिख नहीं पाता। सच है—अंतर बजै तो जन्तर बजै।

अंत भले का भला—अ० सच्चे का हमेशा कल्याण होता है। प्र० गौरव सबके साथ भलाई करता है। उस पर भी दोष लगाया गया, पर छूट गया। हाँ जी, अंत भले का भला।

अंधरी पीसें पीसना चून कूकरा खाई—अ० मूर्ख श्रम करे, चतुर लाभ उठाये। प्र० श्याम फल तोड़ तोड़ नीचे डालता है, लड़के उठा-उठाकर ले जाते हैं। सच है—अंधरी पीसे पीसना चून कूकरा खाई।

अंधा क्या चाहे दो आँखें—अ० अभीष्ट वस्तु प्राप्त होना। प्र० मुझे घड़ी की आवश्यकता थी। संगीता बोली, मेरे पास एक घड़ी पड़ी है, लोगे? मैंने कहा, अंधा क्या चाहे दो आँखें, अवश्य लूंगा।

अंधा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपनों ही को देइ—अ० अन्याय करना। प्र० प्रधान जी कल कच्चों को मिठाई बाँटते समय निर्लज्ज होकर घूम फिर कर अपने ही सम्बन्धियों को आ देते थे। सच है—अंधा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपने ही को देइ।

अंधा गावै बहरा बजावै—अ० एक-दूसरे को न समझे। प्र० श्याम और राम अपनी-अपनी गाते हैं, एक दूसरे की समझते ही नहीं। सच है, अंधा गावै बहरा बजावै।

अंधाधुंधी—अ० जहाँ बिना विचारे काम किया जाए। प्र० औरंगजेब के राज्य में विद्वान् और मूर्ख की कुछ पूछ नहीं थी। दीवान जी जो चाहें करें। हाँ जी, वहाँ तो ऐसी ही अंधाधुंधी थी।

अंधी चूही थोथे धान—अ० मूर्ख ऐसा काम करता है जिससे कोई लाभ नहीं। प्र० बहुत से लोग पत्थरों में भगवान् को खोजते हैं। उनकी यही कहावत है, अंधी चूही थोथे धान।

अंधे के लेखे दिन-रात बराबर—अ० मूर्ख विद्यार्थी को विद्वान् और अविद्वान् गुरु समान है। प्र० दुर्योधन पर न कर्ण की बात का प्रभाव पड़ा, न योगीराज कृष्ण की। सच है अंधे के लेखे दिन-रात बराबर।

अंधे के हाथ बटेर—अ० बिना प्रयास के कोई चीज़ हाथ लगना। प्र० अपना सब कुछ तो उसने नष्ट कर डाला, पर उसे नाना का माल मिल गया। इसे कहते हैं—अंधे के हाथ बटेर।

अंधे को क्या आरसी—अ० मूर्ख पर उपदेश का कुछ प्रभाव नहीं पड़ता है। प्र० प्रमोद को अनेक प्रकार से समझाया, पर उसके एक भी समझ में न आई। सच है—अंधे को क्या आरसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधे की लकड़ी—अ० अनायास काम निकलना। प्र० श्याम परीक्षा में बैठा तो है पर आशा नहीं है, हाँ जी, अंधे की लकड़ी है; लग गई तो लग गई।

अंधे आगे रोवै और अपने नैन खोवै—अ० मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है। प्र० श्यामा को स्वदेश ने बहुतेरा समझाया, पर उसकी एक समझ में न आयी। सच है कि अंधे आगे रोवै और अपने नैन खोवै।

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—अ० अयोग्य शासक के कारण अंधेरगर्दी होना। प्र० आज़ादी से पूर्व राजा और नवाब अपनी सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगे रहते थे। उन्हें प्रजा के आराम की चिन्ता तो थी ही नहीं। सच ही है कि अंधेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

अंधों में काना राजा अथवा अंधों में काना सरदार—अ० मूर्खों में थोड़ा जानने वाला विद्वान् गिना जाता है। प्र० राकेश थोड़ा पढ़ लिखकर गाँव में पण्डित बन बैठा। सच है कि अंधों में काना राजा (सरदार)।

अक़ल की दुश्मन—अ० महामूर्ख। प्र० नीलम सारे काम उल्टे ही करती है। क्यों न करे, वह तो अक़ल की दुश्मन है।

अक़ल के नाखून लिवाना—अ० बुद्धि सुधारना। प्र० आज कृष्ण को यह प्रश्न कई बार समझाया, फिर भी उसकी समझ में नहीं आया। अब तुम उससे कहो कि अपनी अक़ल के नाखून लिवा आवे।

अक़ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना— अ० जानबूझ कर मूर्ख बनना। प्र० माल अच्छा न होते हुए भी गिरधारी ने सौदा कर लिया। वह तो हमेशा अक़ल के पीछे लट्ठ लिए फिरता है।

अक़ल पर पर्दा पड़ गया—अ० बुद्धि भ्रष्ट होना। प्र० राजकुमार आजकल सब काम अंडबंड करता है। क्यों न करे, उसकी तो अकल पर पर्दा पड़ गया।

अक़ल मंदांरा इशारा काफी अस्त—अ० बुद्धिमान् संकेत मात्र से ही सब बात समझ लेता है। प्र० कल प्रकाश को सभा में आँख मार दी, वह फिर नहीं बोला। सच है कि अक़ल मंदांरा इशारा काफ़ी अस्त।

अक़ल से ख़ारिज—अ० मूर्ख होना। प्र० सुरेश अपनी ही गाता है, उसकी कोई सुनता ही नहीं। उसकी कौन सुने, वह तो अक़ल से ख़ारिज है।

अगले का करा पिछले पै आवै—अ० बड़ा करे छोटा भरे। प्र० मोहन को पिता का कर्ज़ चुकाना पड़ा। सच है कि अगले का करा पिछले पै आवै।

अगले को ग्रास न पिछले को पानी—अ० कंगाल व अधर्मी होना। प्र० छली को पेट भर दाने नहीं मिलते और वृद्धों को जल दान नहीं होता। सच है कि अगले को ग्रास न पिछले को पानी।

अगले पानी पिछले कीच—अ० पहले काम शुरू करने वाले को ज़्यादा फायदा होता है और बाद वाले को कम। प्र० तुमने देखा गंगा, जिन्होंने पहले अनाज भरा था, उनके ड्योढ़े हो गए और बाद वालों का मूल भी उठना मुश्किल है। सच है कि अगले पानी पिछले कीच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगिल खेती आगे पाछिल खेती भागे— अ० पहले किए काम का फल पहले मिलता है और बाद किये काम का फल भाग्याधीन है। प्र० जो लड़के पहले गये थे वे तो फल तोड़कर चले आये, श्यामू अब गया है, देखो क्या हो? होगा क्या, अब तो वही बात है कि अगिल खेती आगे पाछिल खेती भागे।

अग्गिल बुद्धि बनिया पाछिल बुद्धि जाट— अ० चतुर व्यक्ति अपने कार्य को पहले ही बुद्धि से विचार कर करता है और मूर्ख विना विचारे करके फिर सीखता है। प्र० प्रवीण ने बाज़ार का रुख देखकर रुई का सौदा किया, लाभ हुआ। गंगाराम ने अंधाधुंध गुड़ भर लिया, अब खोकर अक़्ल आई है। सच है कि अग्गिल बुद्धि बानिया पाछिल बुद्धि जाट।

अचार का-सा घड़ा—अ० जो व्यक्ति न कुछ करे न धरे, बैठा ही रहे। प्र० भय्या! अनिल का स्वास्थ्य बिगड़ गया है। बिगड़े न तो क्या हो? वह तो अचार का-सा घड़ा बना एक स्थान पर रक्खा रहता है।

अच्छे घर बायना दिया या अच्छे से पल्ला डाला—अ० अपने से अधिक बलवान से वैर रखना। प्र० लंकाधीश ने सीता-हरण करके अच्छे घर बायना दिया।

अजगर के दाता राम—अ० आलसी दूसरे के आश्रित होते हैं। प्र० श्याम ने कहा, देखो मदन कुछ नहीं करता फिर भी पेट भरता ही है। सच है कि अजगर के दाता राम।

अति सर्वत्र वर्जयेत्—अ० मर्यादा से बढ़कर कार्य करने से क्षति होती है। प्र० अति गर्व से लंकाधिपति मारा गया और अति रूप से सीता-हरण हुआ। अति सर्वत्र वर्जयेत्।

अति और नारायण में वैर है—अ० मर्यादा को तोड़कर चलने वाले का भगवान् शीघ्र ही अंत कर देता है। प्र० संगीता सुनो, कंस ने अति गर्व से गौ ब्राह्मणों को कष्ट दिया, भगवान् कृष्ण ने उसको नष्ट कर दिया। सच है कि अति और नारायण में वैर है।

अधजल गगरी छलकत जाय—अ० ओछा इतरा कर चलता है। प्र० श्याम देखा, सतीश पाँच सौ रुपये की नौकरी में कैसा इतराता है। हाँ, भय्या! सुना नहीं, अधजल गगरी छलकत जाय।

अनमिल के सब त्यागी—अ० जब तक लक्ष्मी आगे नहीं आती, तब तक सब त्यागी बने रहते हैं। प्र० देखा, स्वामी जी कैसी-कैसी त्याग की बातें किया करते थे; किन्तु कल राय साहब का तुलादान ले आये। हाँ भय्या! अनमिल के सब त्यागी।

अनरथ करत जाहि डर नाहीं। सो जैहै थोड़े दिन माहीं—अ० पापी जल्दी ही मिट जाता है। प्र० उस बेचारे ने अनर्थ से क्या कमाया, सपरिवार ही थोड़े दिनों में उठ गया। क्यों न होता भाई! सच है कि अनरथ करत जाहि डर नाहीं। सो जैहै थोड़े दिन माहीं।

अनोखी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी पी मरी पटोरी अ० जब नीच के हाथ कोई ऐसी बड़ी चीज आ जाती है जो उसने पहले न देखी हो तो वह उसका सदुपयोग न करके उससे नुकसान उठाता है। प्र० राजा ने खुश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर एक पलंग घसीटाराम को दिया और वह आठों पहर उसी पर पड़े रहने के कारण बीमार हो गया। सच है कि अनोखी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी मरी पदोरी।

अपना खाना अपना कमाना—अ० एक का दूसरे से संबंध न रहना। प्र० कहो, रहीम का क्या हाल है ? कुछ पता नहीं बन्धु ! यहाँ तो अपना खाना अपना कमाना।

अपना मारै तोऊ छाँह में डारै—अ० निष्ठुर सम्बन्धी भी दया करता है। प्र० हरद्वारी ने बनवारी को बुरी तरह मारा, पर अब आप ही उसके अंगों को सेक रहा है। क्यों नहीं, आखिर भाई ही तो है, अपना मारै तोऊ छाँह में डारै।

अपना मरन जगत को हांसी—अ० अपनी क्षति हो और दूसरे हँसें। प्र० अहमद मियां का घर जलता रहा, पर पड़ोसी खड़े हँसते रहे। सच है, अपना मरन जगन की हाँसी।

अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष—अ० जब अपना ही अच्छा न हो तो दूसरे कहने वाले का क्या दोष ? प्र० मोहन अगर ब्लेक मार्केटिंग न करता तो सजा क्यों भुगतता ? हाँ भई, जब अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष ?

अपना सो अपना और पाली का ढकना—अ० अपने ही खून का व्यक्ति अपनी ओर झुकता है, बाकी तो दिखावे के होते हैं। प्र० बन्धु ! जब मेरी अच्छी स्थिति थी तो अनेक सहायक थे; किन्तु बिगड़ी में तुम्हीं सहायक हुए। सच है कि अपना सो अपना और पाली का ढकना।

अपनी करनी पार उतरनी—अ० जैसा काम वैसा फल। कल्लू ने अपने पिता को सताया, अब उसका बेटा बदले ले रहा है। हाँ जी, क्यों न हो ? अपनी करनी पार उतरनी।

अपनी काख में दूसरे को उतारैं—अ० अपनी इज्जत तो मिटा ली दूसरों की मिटाये। प्र० घनश्याम आजकल खोटा हो गया है, किसी की कानि नहीं करता। सच है कि अपनी काख में दूसरे को उतारैं।

अपनी अपनी ठौर पै लगे सबन को दाव—अ० अपने अपने-अपने स्थान पर सबकी बन आती है। प्र० देखो कमल, नौका गाड़ी पर जा रही है। क्यों नहीं, थल में यही होता है, अपनी अपनी ठौर पै लगे सबन को दाव।

अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग—अ० मनमानी करना। प्र० यहाँ कोई किसी की सुनता ही नहीं। सभी मनमानी करते हैं। यह अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग।

अपनी अपनी अलापना—अ० सब अपनी तो कहें पर दूसरे की न सुनें। प्र० बन्धु ! तुम पंचायत में गए थे, वहाँ क्या हो रहा था ? कुछ नहीं, वहाँ तो हरेक अपनी-अपनी अलापने में लगा था।

अपनी अपनी ही तानना—अ० जहाँ हरेक व्यक्ति अपनी ही बात को बड़ा करने का प्रयास करे। प्र० कुछ सुना तुमने, रहीम के घर में फूट पड़ गई। क्यों न पड़े, उस घर में तो प्रत्येक अपनी-अपनी ही तानता है।

अपनी अपनी बानी बोलना—अ० अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही कहना दूसरे की न सुनना । प्र० आज समाज में क्या हो रहा है ? कुछ भी तो नहीं, हरेक अपनी-अपनी बानी बोल रहा है ।

अपनी नाक कटै सो कटै पर तेरा सगुन तो बिगड़ै—अ० नीच व्यक्ति अपने लाभ को और की हानि के सामने तुच्छ समझते हैं । प्र० अरी कमला, उपले जला आज तो । चाची गीले उपले जलाने से क्या लाभ ? अरी लाभ क्या, वैरी तो नींद भर न सोवेगा । सच है कि अपनी नाक कटै सो कटै पर तेरा सगुन तो बिगड़ै ।

अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना—अ० विरक्त हो जाना । प्र० सन्त लोग मायावी जगत् को त्याग कर अपनी नींद सोते और अपनी नींद उठते हैं ।

अपनी टाँग उघाड़ै आप ही लाजों मरना—अ० अपने व्यक्ति को आप ही बुरा कहना । प्र० अरे बन्धु ! क्यों बेटे की बुराई करते हो ? अपनी टाँग उघाड़े आप ही लाजों मरना है ।

अपनी टेक रखना—अ० अपनी ही बात को पूरी करना, दूसरे की न मानना । प्र० कई दिन से बलवन्त को समझा रहा हूँ पर मानता ही नहीं । समझाना व्यर्थ है, वह तो अपनी टेक रखेगा ।

अपनी पहुँच विचार के करतब करिये दौर—अ० अपनी सामर्थ्य को विचार कर फिर काम को जल्दी ही कर डाले । प्र० रघुराज ने अपने बल की परीक्षा करके उस कुँए को शीघ्र ही खोद लिया । सच है कि अपनी पहुंच विचार के करतब करिये दौर ।

अपनी बंसी बजाना—अ० अपनी खुशी या मस्ती में लीन रहना । प्र० सन्त किसी के आश्रित नहीं होते, वे तो अपनी कुटी में ही अपनी बंसी बजाते हैं ।

अपनी ही हाँकना—अ० अपनी ही बात कहना, दूसरे की न सुनना । प्र० अरे, तुममें से कोई अनिल को समझाये । क्या समझाएँ, वह तो हमेशा अपनी ही हाँकता फिरता है ।

अपने घर पै कुत्ता भी शेर होता है—अ० अपने घर पर निर्बल भी बली होता है । प्र० देखा, कल भोंदूमल अपने मोहल्ले में कैसा अकड़ रहा था । सच है कि अपने घर पैं कुत्ता भी शेर होता है ।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू—अ० अपनी बढ़ाई आप करना । प्र० जगमोहन तुम्हें हमेशा अपनी बढ़ाई आप करते देखा है । अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बने तो क्या ।

अपने वैर पराये मीत—अ० घर में वैर बाँधना और लोगों से प्यार करना । प्र० कैलाश सगे भाइयों को छोड़कर मदन के घर पड़ा रहता है । उसकी यही कहावत है कि अपने वैर पराये मीत ।

अपने बछड़े के दाँत सब जानते हैं—अ० अपनी सन्तान के चरित्र के विषय में सबको पता होता है । प्र० गौरव ने आशीष से कहा, भाई, तुम्हारा पुत्र तो बड़ा ही उद्दण्ड है । भाई क्या कहते हो, मैं अपने बछड़े के दाँत जानता हूँ ।

अपने पाँव कुल्हाड़ी मारना—अ० अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नुकसान आप करना। प्र० श्यामू ने यह नौकरी छोड़कर आप ही दुःख भोगा। सच है कि अपने पाँव कुल्हाड़ी मारना इसी का नाम है।

अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता—अ० अपना कार्य अपने ही हाथ से होता है। प्र० हरिया ने अपनी फसल काटने के लिए पड़ौसियों को बुलाया, पर कोई नहीं आया। अन्त में स्वयं ही दो दिन में फसल काट डाली। सच है कि अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता।

अमरौती खाकर कौन आया है—अ० सदैव अमर कौन रहा है? प्र० प्रभात, देखो कल बाबा ९१ वर्ष के होकर बैठे-बैठे स्वर्ग सिधार गए। अच्छा तो अमरौती खाकर कौन आया है?

अरहर की टट्टी और गुजराती ताला—अ० तुच्छ वस्तु का बड़ा प्रबन्ध करना। प्र० उसने भुस की गठरी दुशाले में बांध ली। सच है कि अरहर की टट्टी और गुजराती ताला।

अशर्फी लुटें कोयलों पर मुहर—अ० बड़े-बड़े खर्चों की फिक्र न करके छोटे-छोटों में बचत करना। प्र० हरी, देखो सेठ जी ने विवाह में एक लाख को आग लगा दी, वैसे भुस का तिनका भी किसी को देने वाला नहीं है। अजी उनके तो अशर्फी लुटें कोयलों पर मुहर है।

अहमद की पगड़ी मुहम्मद के सिर पै—अ० एक से छीन कर दूसरे को देना। प्र० जगत का धन चुरा कर चोर हरिया के घर डाल गए। सच है कि अहमद की पगड़ी मुहम्मद के सिर पै।

अहंकार का नीचा—अ० घमण्डी को लज्जित होना पड़ता है। प्र० शर्मा को अपने डाक्टर होने का बड़ा घमण्ड था, पर विराट का भाषण सुनकर उसे लज्जित होना पड़ा। हाँ जी, अहंकार का सिर नीचा होता है।

आ

आँख फूटी पीड़ गई—अ० झगड़े से छूट जाना। प्र० बाप-बेटे में झगड़ा होने से बाप घर छोड़ गया और सुखी हुआ। तब बेटे ने कहा कि अच्छा हुआ, आँख फूटी पीड़ गई।

आँख का अंधा गाँठ का पूरा—अ० मूर्ख धनी होना। प्र० विष्णु ने बेटे के विवाह में अंधाधुन्ध रुपया लुटा दिया तो क्या है वह तो आँख का अंधा गाँठ का पूरा है।

आँख ओट पहाड़ ओट—अ० आँख के सामने न होने से कोई चीज दूर ही समझी जाती है। प्र० जब तक कमल वेदी के पास रहा तब तक तो उसकी सुधि लेता रहा। अब चले जाने पर उसे याद भी नहीं करता। सच है कि आँख ओट पहाड़ ओट।

आँख ऊपर न उठाना—अ० लज्जित होना। प्र० श्याम ने बड़े भाई को बुरा-भला तो कहा किन्तु अब आँख ऊपर नहीं उठाता है।

आँख का तारा—अ० अति प्रिय। प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेय को मैं कहीं नहीं जाने दूंगा, वह तो मेरी आँख का तारा है।

आँख का टेंटरा देखे नहीं पैरों को मांजै—अ० दोष अथवा पाप पर ध्यान न देकर ऊपर की उज्ज्वलता दिखाना। प्र० धनिया डाके तो डलवाता है, पर ठाकुर की पूजा रोज करता है। हाँ जी, आँख का टेंटरा देखे नहीं पैरों को मांजै।

आँख का पानी ढलना—निर्लज्ज होना। अ० मोहन—भाई हरी, कमल किसी की कानि नहीं करता है। क्यों करे, उसकी आँख का पानी ढल गया है?

आँख की बदी भौंह के आगे—अ० किसी की बुराई उसके प्रिय के सामने करना। प्र० कमल ने जगत की बुराई उसके मित्र विष्णु के सामने की। उसने उससे कह दिया, यह तो वही कहावत है कि आँख की बदी भौंह के आगे।

आँख चार होना—अ० आपस में मिलना। प्र० आँखें चार होते ही प्रेम उपज आता है।

आँख दिखाना—अ० कल तक तो श्याम हमें मदद देने के लिए तैयार था, पर आज आँख दिखा गया।

आँख कान में चार अंगुल का अन्तर—अ० आँखों देखा सच कानों सुना झूठ। प्र० सच है भय्या, आँख कान में चार अंगुल का अन्तर है।

आँख भर कर देखना—अ० हाथ छोड़ना। प्र० श्याम, देखो राकेश मुकेश को पीटेगा। उसने उत्तर दिया, ऐसा कौन है जो उसकी ओर आँख भर कर देखे।

आँख लगना—अ० सो जाना या प्रेम में फँस जाना। प्र० (i) भावना अब तो अच्छी है। हाँ, अभी-अभी आँख लगी है। अच्छा है, सोने दो, जगाना मत। (ii) गंगा की आँख यमुना से लग गई है।

आँखों का अंधा नाम नैनसुख—अ० गुणानुसार नाम का न होना। प्र० चूहे को देख डरे नाम निर्भयसिंह। सच है कि आँखों का अंधा नाम नैनसुख।

आँखों के आगे नाचना—अ० किसी वस्तु को न भूलना। प्र० वृन्दावन की मनोहारी शोभा सदैव मेरी आँखों के आगे नाचती रहती है।

आँखों में चर्बी छाई—अ० गर्व होना। प्र० मोहन ने धनाभिमान में सबको ठुकरा दिया है। हाँ, क्यों न हो उसकी आँखों में चर्बी छा गई है।

आँखों से लहू बरसना—अ० क्रोध से आँखें लाल होना। प्र० अनुचित काम होते हुए देखकर राम की आँखों से लहू बरसने लगा।

आँखों से खा जाना—अ० भली-भाँति टकटकी लगा कर देखना। प्र० नल को दमयन्ती की सखियों ने ऐसी टकटकी लगा कर देखा मानो उसको आंखों से खा जाना चाहती थीं।

आँखों ही में खा जाना—अ० सख्त नजर से देखना। प्र० रहीम अपने नौकरों को आँखों ही में खा लेता है।

आई गई करो—अ० पिछली बात को भूलो। प्र० मोहन और सोहन में लड़ाई हुई। उनके पिता ने दोनों को समझा कर कह दिया, बस आई गई करो, जाओ खेलो।

आकाश पाताल एक करना—अ० किसी काम में ज्यादा मेहनत करना। प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक भय्या ने इस काम को पूरा नहीं किया, तब तक आकाश पाताल एक कर दिया।

आकाश पाताल की गाना—अ० बे-ठिकाने बातें करना। प्र० आज तो वाजपेयी ने सभा में बड़ी आकाश पाताल की गाई।

आकाश का थूका मुंह पर आता है—अ० अभिमानी को नीचा देखना पड़ता है। प्र० लंकाधिपति को वेदान्त में बड़ा अभिमान था, पर ब्रह्मा की सभा में जनक से हार मानी। सच है कि आकाश थूका का मुँह पर आता है।

आकाश में थेगली लगाना—अ० असम्भव कार्य करना। प्र० श्याम ने इस काम के लिए ऐसी दूती प्रेरित की जो आकाश में थेगली लगाती थी।

आग धोकर रखना—अ० सफाई से काम करना। प्र० नौकर ने आग धो-धो कर चिलम भरी।

आग को आग मारती है—अ० जैसे को जब तैसा मिलता है तो शांति हो जाती है। प्र० वैद्य जी ने ज्वर में ऊष्ण औषधि का प्रयोग किया और रोगी अच्छा हो गया। सच है कि आग को आग मारती है।

आग खाय अंगार उगलै—अ० जो जैसी संगत बैठता है वैसे ही कर्म करता है। प्र० शकुनि की संगति से कर्ण अत्याचारी हो गया। हाँ जी, आग खाय अंगार उगलै।

आग पानी का बैर—अ० स्वाभाविक शत्रुता होना। प्र० कबूतर के जमीन पर बैठते ही बिल्ली ने पकड़ लिया। क्यों न हो, उनका तो आग पानी का बैर है।

आग बबूला होना—अ० गुस्से से आपे को भूलना। प्र० दुश्शासन को देखते ही भीम आग बबूला हो उठा।

आग बुझाना—अ० झगड़े को शान्त करना। प्र० योगीराज कृष्ण ने कौरवों और पाण्डवों में लगी आग को बुझाना चाहा, पर वृथा।

आग भड़कना—अ० क्रान्ति होना। प्र० देश के कोने-कोने में फूट की आग भड़क रही है।

आग लगे तो बुझे जल से, जल में लगे तो बुझे कैसे—अ० किसी काम को कोई करे तो हो जाता है, पर जो काम करने वाला ही खोटा हो तो कौन करे? प्र० श्याम की चिकित्सा हकीम जी कर रहे थे, पर हकीम जी स्वयं पागल हो गए। अब उसकी चिकित्सा कौन करे? सच है कि आग लगे तो बुझे जल से, जल में लगे तो बुझे कैसे?

आग लगे पर कुंआ खोदना—अ० काम बिगड़ने पर उपाय सोचना। प्र० श्याम ने दो भाइयों में लड़ाई करा दी। अब लोगों से कहता फिरता है कि उन्हें समझाओ। उसकी वही कहावत है कि आग लगे पर कुँआ खोदना।

आग लगे पर बिल्ली का पूत खोजना—अ० बिगाड़ कर के असम्भव उपाय सोचना। प्र० वृज ने पहले तो दोनों भाइयों में लड़ाई करा दी, अब कहता है कि बम्बई से चाचा जी को बुलाओं, वे समझायेंगे। सच है कि आग लगे पर बिल्ली का पूत खोजना।

आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो सार—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० जब सब नष्ट होता हो तो जो बचे सोई अच्छा। प्र० जब आँधी चली तो सब कागज़ उड़ने का डर मान कर जितने मुझसे उठ सके उतने ही उठा लाया। सच है कि आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो सार।

आगे गुल खिलेगा—अ० इस काम का फल आगे मिलेगा। प्र० हरिमोहन अब तो ख़ूब रिश्वत खा रहा है; किन्तु इसका आगे गुल खिलेगा।

आगे दौड़ पीछे चौड़—अ० आगे का काम करता जाये पीछे का काम बिगड़ता जाये। प्र० रामू आगे को पढ़ता जाता है पीछे भूलता जाता है। हाँ जी, आगे दौड़ पीछे चौड़।

आगे नाथ न पीछे पगा—अ० अकेला होना। प्र० मोहन जहाँ चाहता है, वहाँ चला जाता है। ठीक है बंधु! उसके तो आगे नाथ न पीछे पगा।

आज का काम कल पर मत छोड़ो—अ० काम को जहाँ तक बने शीघ्र पूरा कर डालो। प्र० मनीष ने नित्य का पाठ याद नहीं किया। अब उसका पास होना मुश्किल है। सच है कि आज का काम कल पर मत छोड़ो।

आत्मा में पड़ै तो परमात्मा की सूझै—अ० पेट भरे पर ही भक्ति सूझती है। प्र० आज तो पंडित जी बिना पेट में पड़े सब भजन भूल गए। सच है कि आत्मा में पड़ै तो परमात्मा की सूझै।

आती लक्ष्मी कोई नहीं फेरता—अ० होता लाभ सब को भला लगता है। प्र० राम प्रकाश अपने नाना की सम्पत्ति लेने के लिए उपाय सोच रहा है। अजी आती लक्ष्मी कोई नहीं फेरता।

आते आओ जाते जाओ—अ० अचिन्तित होना। प्र० राम के घर पर कोई आवे तो वह मुँह से नहीं बोलता। हाँ जी? उसकी ओर से कोई आते आओ जाते जाओ।

आदमी की औषधि आदमी है—अ० आदमी को आदमी ही उभारता है। प्र० राधेश्याम बड़ी मुसीबत में था। श्रीयांस ने उसको उस मुसीबत से निकाला। हाँ जी, आदमी की औषधि आदमी ही है।

आदमी नाज का कीड़ा है—अ० मानव जीवन अनाज पर निर्भर है। प्र० सुरेश ने कल व्रत रखा, आज उठा नहीं जाता। सच है कि आदमी नाज का कीड़ा है।

आदमी पानी का बुलबुला है—अ० मानव देह क्षणभंगुर है। प्र० दद्दा कल बैठे-बैठे मर गए। सच है कि आदमी पानी का बुलबुला है।

आध पाव चून चौवारे रसोई—अ० थोड़ी सामग्री पर बहुतों को बुलाना। प्र० श्यामसुन्दर ने हॉफ सेट चाय का मंगाया और दस मित्रों को पीने के लिए बुला लिया। किसी ने कहा है कि आध पाव चूने चौवारे रसोई।

आध सेर के पात्र में कैसे सेर समाय—अ० छोटा इन्सान किसी बड़ी बात को नहीं छिपा सकता। प्र० गंगाराम ने अपने मुकदमे का कच्चा हाल अपने नौकर से कह दिया। उसने उसी समय जाकर सारा हाल मुहल्ले वालों को सुना दिया। सच है कि आध सेर के पात्र में कैसे सेर समाय?

आधा तजै पण्डित और सारा तजै गंवार—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० चतुर व्यक्ति जब सारा जाते देखता है तो आधा बाँट देते हैं; किन्तु मूर्ख ऐसा नहीं करते। प्र० प्रमोद अपने नाना के माल का स्वामी बना; किन्तु जब नाना के भतीजे ने दावा किया तो आधा बाँट दिया। पर कमल ने इसके विरुद्ध किया। सच है कि आधा तजै पण्डित और सारा तजै गंवार।

आधी रात जम्भाई आय, सांझ ही ते मुंह फैलाय—**अ०** किसी काम के करने की तैयारी वक्त से पहले करना। प्र० गंगा स्नान पर जायेंगे तो कार्तिक में, श्याम भादों ही में गाड़ी किराये पर कर लाया। सच है कि आधी-रात जम्भाई आय साँझ ही ते मुँह फैलाय।

आन पड़ी सिर आपने छोड़ पराई आस—अ० जो बात अपने ही सिर आ पड़े, उसमें दूसरे की सहायता की आशा न करे। प्र० भगवाना उठो, यह काम तो तुम्हें ही करना है। किस की आशा करते हो? सुना नहीं, आन पड़ी सिर आपने छोड़ पराई आस।

आटे दाल का भाव मालूम हो जाएगा—अ० जब व्यक्ति किसी काम को करता है तब मालूम हो जाता है कि कितनी आपत्ति झेलनी पड़ती है। प्र० बच्चू जब पढ़ना आरम्भ करोगे और रात-दिन मेहनत करोगे तो सब आटे दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

आटे में नमक—**अ०** उतना कम जितना निभ जावे। प्र० महाजन ने अंधा-धुंध रिश्वत ली, अब जेल काट रहे हैं। सच है कि रिश्वत उतनी ही भली जितना आटे में नमक।

आठों गाँठ कुम्मैत—**अ०** बहुत बड़ा आदमी। **प्र०** बन्धु, श्याम तो सब काम कर डालता है। वह तो आठों गाँठ कुम्मैत है।

आप करै मोहि दोष लगावै, ऐसा स्वामी मोहि न सुहावै—अ० अपना दोष दूसरे के माथे मढ़े, ऐसे स्वामी को कोई सेवक नहीं चाहता। प्र० दिनेश काम आप बिगाड़ता है और सेवकों को दोष लगाता है। इसलिए उसके सेवक उसके विरुद्ध रहते हैं। उसकी वही कहावत है कि आप करै मोहि दोष लगावै, ऐसा स्वामी मोहि न सुहावै।

आप गये अरु औरन घाले—अ० अपना नाश करके दूसरों का नाश करना। प्र० विजय ने अपना पैसा तो जुए में बराबर कर दिया, अब दूसरों को सिखाता है। सच है कि आप गये अरु और न घाले।

आप जावे न सासरे औरन को सिख देत—अ० स्वयं तो किसी काम को करे नहीं, किन्तु दूसरों को उस काम के करने की सीख दे। प्र० महेन्द्र—बन्धु! पंडितजी स्वयं तो गंगा नहाने कभी नहीं जाते, किन्तु दूसरों को बहुत शिक्षा देते हैं। उनका तो वही हाल है कि आप जावे न सासरे औरन को सिख देत।

आप भला तो जग भला—अ० जो दूसरों के साथ भलाई करता है उसका संसार सहायक है। प्र० अजीत परोपकारी है तो संसार में उसका विरोधी भी नहीं है। सच है कि आप भला तो जग भला।

आप मरे जग परलै—अ० अपनी देह छूटने पर सारा जगत् छूट जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र० गौरव परिवार में अधिक दुःखी था, किन्तु आँख मुँदने पर सब छूट गया। सच है कि आप मरे जग परलै।

आप से गया जहाँ से गया—अ० जो अपने काम न आवै वह मरे बराबर है। प्र० भूषण अपने पिता का घर छोड़ कर भाग गया, अब पिता खोजता फिरता है। यह भूल है कि आप से गया जहान से गया।

आम के आम गुठलियों के दाम—अ० किसी वस्तु से दुगुना लाभ उठाना। प्र० भजनलाल ने एक पैन सेट दस रुपये में लिया। उसमें से पैंसिल उसने दस रुपये में बेच ली, पैन रह गया। उसके तो आम के आम और गुठलियों के दाम हो गये।

आम खाने कि पेड़ गिनने—अ० तुम्हें अपने प्रयोजन से प्रयोजन। प्र० राजभूषण की खोई पुस्तक सुशील ने खोज कर दे दी। इस पर राजभूषण खोज के विषय में पूछने लगा। सुशील ने कहा कि तुझे आम खाने कि पेड़ गिनने।

आये को हर्ष न गये को शोक—अ० हानि लाभ समान होना। प्र० पुजारी जी सदैव प्रसन्न रहते हैं। क्यों नहीं, उन्हें तो आये को हर्ष न गये को शोक।

आये तो थे राम भजन को ओटन लगे कपास—अ० जिस काम को जाये उसे न करके और ही काम करने लगना। प्र० वसन्तकुमार परदेस गया पढ़ने, कर ली नौकरी। सच है कि आये तो थे राम भजन को ओटन लगे कपास।

आरत काह न करहि कुकर्मू—अ० दुःखी इन्सान हरेक कुकर्म कर डालता है। प्र० राजा भरत ने क्षत्री होकर भी गंगाजी से भीख माँगी। हाँ जी, आरत काह न करहि कुकर्मू।

आरत के चित रहै न चेतू—अ० दुःखी इन्सान पागल-सा हो जाता है। प्र० सब कुछ चोरी हो जाने से पवन का मन विक्षिप्त हो गया है। सच है कि आरत के चित रहै न चेतू।

आरी चलाना बन्दर का काम नहीं—अ० होशियार इन्सान का काम चंचल इन्सान नहीं कर सकता है। प्र० धनिया ने बच्चे को चिलम भरने को दे दी, उसने अपना हाथ जला लिया। सच है कि आरी चलाना बन्दर का काम नहीं।

आलस, निद्रा और जँभाई, ये तीनों हैं जम के भाई—अ० आलसी, ज्यादा सोने वाले और जम्भाई लेने वाले इन्सान की मृत्यु निकट रहती है। प्र० देवदत्त आलसी होने के कारण रोगी होकर जल्दी ही दुनिया से कूच कर गया। सच है कि आलस, निद्रा और जँभाई, ये तीनों हैं जम के भाई।

आवै तो जावै कहाँ—अ० अत्यन्त क्रोधित होना। प्र० ललित को देखते ही सुशील आग हो गया। बस फिर क्या था, आवै तो जावै कहाँ ?

आसमान ने डाला भूमि ने सम्भाला—अ० जिसका कोई रक्षक न हो। प्र० कोई-कोई व्यक्ति ऐसा होता है कि जन्म से ही अपनी आप सम्भाल करता है। वह कहा करता है कि मुझे तो आसमान ने डाला और भूमि ने सम्भाला।

आशा का मरे निराशा का जिये—अ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो लोग दूसरों के भरोसे रहते हैं वे सदा दुःखी रहते हैं । प्र० गणेश अपने भाई के भरोसे है तो सदैव दुःखी रहता है, पर श्याम स्वयं पुरुषार्थी है सो आनन्द में है । ठीक है कि आशा का मरे निराशा का जिये ।

आहार हारे सो हारे व्यौहार हारे सो हारे—अ० जिस का भोजन और व्यापार थक जाय, वह नष्ट प्रायः है । प्र० दादाजी का भोजन थक गया इसलिए उठने-बैठने में भी कष्ट होता है । सच है कि आहार हारे सो हारे व्यौहार हारे सो हारे ।

आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे—अ० भोजन और लेन-देन में शर्म न करे । प्र० महेन्द्र भोजन करने में लज्जा नहीं करता है । परोसने वाले को पूछने भी नहीं देता, आप माँग लेता है । सच है कि आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे ।

इ

इधर उधर की मिलाना—अ० दूत कर्म करना । प्र० अब तो प्राणनाथ का विश्वास उठा जाता है । क्यों न उठे, वह तो इधर की उधर मिलाता है ।

इधर उधर की हाँकना—अ० गपोड़े मारना । प्र० श्याम लाल, कहो सतीजा आज क्या कहता था ? कहता क्या था, इधर उधर की हाँक रहा था ।

इधर-उधर से मार खाना—अ० जहाँ तहाँ से पेट का समाधान करना । प्र० सोहन दस रुपये मांग रहा है, कहो तो दे दूं । कभी नहीं, वह तो इसी तरह इधर उधर से मारता खाता फिरता है ।

इधर के रहे न उधर के रहे—अ० दोनों ओर से जाना । प्र० बंधु क्या कहूँ, इस नौकरी की आशा में पुरानी छोड़ दी और यह मिली नहीं । इसलिए मैं तो इधर का रहा न उधर का ।

इधर देखूं तो कुआँ और उधर देखूँ तो खत्ती—अ० दो मुसीबतों में फँसना । प्र० श्याम ने मुकेश से कहा, बंधु ! राकेश राजेश के झगड़े में पड़कर किसके विरुद्ध कहूँ; क्योंकि दोनों ही अपने हैं । इधर देखूँ तो कुआँ उधर देखूं तो खत्ती ।

इधर से उधर करना—अ० स्थान बदल देना । प्र० हमारा हिसाब ठीक नहीं बैठ रहा । बैठ जायेगा, इस रकम को इधर से उधर कर दो ।

इधर से उधर होना—अ० असम्भव बात का होना । प्र० चाहे धरती इधर से उधर हो जाए, पर वह अपनी हठ नहीं छोड़ेगा ।

इन तिलों में तेल नहीं—अ० कंगाल से लाभ की आशा न करना । प्र० राधेश्याम ने श्यामलाल से कहा, कहो बंधु ! श्रीयांस कुछ दे सकता है । पूछ लो, पर इन तिलों में तेल नहीं ।

इनकी नाक पर गुस्सा है—अ० अति क्रोधित होना । प्र० भवानीमल से तो बात करने को जी नहीं चाहता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R 9.2 / 20

074270

इनकी नाक पर तो गुस्सा है।

इस कान सुनी उस कान निकाल दी—अ० किसी बात का ध्यान न रखना। प्र० तुम्हें अनेक बातें बतायी जाती हैं, पर तुम तो इस कान सुनते हो और उस कान निकाल देते हो।

इसकी भैरवी में मत आना—अ० किसी के बहकाने में मत आना। प्र० श्यामा ने गंगा को समझाया, भाई मंदन आज तुमसे क्या बातें बना रहा था, इसकी भैरवी में मत आना।

इसके चाटे रौंगटे नहीं जमते—अ० दग़ाबाज के लिए कहा जाता है। प्र० मदन वैभव से कहता है, कहो तुमने कपिल को जो रुपये दिये थे, मिल गए। अरे बंधु, कहाँ? इसके चाटे रौंगते नहीं जमते।

इस हाथ ले उस हाथ दे—अ० जल्दी ही पाप या पुण्य का फल भोगना। प्र० श्यामाचरण ने हरी को पचास रुपये की चपत दी और कल ही उसकी दो सौ रुपये की घड़ी निकल गई। सच है कि इस हाथ ले उस हाथ दे।

इसे पत्थर मारे मौत नहीं—अ० अप्रतिष्ठित होना। प्र० रंजन सबको दुःख देता है। मरता भी तो नहीं। भय्या, इसे पत्थर मारे मौत नहीं।

इहाँ कुम्हड़ बतियाँ कोउ नाहीं—अ० झूठी धमकी का जवाब। प्र० अरे, मुझे क्या लाठी दिखाता है, इससे मैं डरने वाला नहीं हूँ। इहाँ कुम्हड़ बतियाँ कोउ नाहीं।

इहाँ न लागहि राउरि माया—अ० अब आपके धोखे में नहीं आयेंगे। प्र० राम ने कपिल को बहुतेरा फुसलाया पर वृथा। तब राधेश्याम ने कहा कि इहाँ न लागहि राउरि माया।

ई

ईंट का घर मिट्टी करना—अ० बने हुए काम को बिगाड़ देना। प्र० बेचारे की फसल तैयार हो गई थी, पर कल के ओलों ने सब नाश कर दिया। सच है, ईंट का घर मिट्टी हो गया।

ईंट की देवी झावें की भेंट—अ० जैसे के साथ तैसा। प्र० पुजारी जी निराक्षरी भट्टाचार्य हैं, उन्हें भोजन भी ज्वार की रोटी मिली। सच तो है ईंट की देवी झावें की भेंट।

ईंधन पात किरात मिताई—अ० जैसे से तैसी भेंट मिलती है। प्र० ठाकुर साहब गाँव गए थे। वहाँ के माली ने कचरे भेंट में दिये। सच है कि ईंधन पात किरात मिताई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ

उंगली उठना—अ० अप्रतिष्ठा होना। प्र० रहीम लेकर देना ही नहीं जानता। इसलिए जहाँ जाता है, वहीं उँगली उठती है।

उंगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना—अ० थोड़ा लेकर सारे का दावा करना। प्र० अरे रामा को एक छान की जगह दी थी, अब सारी हवेली दबाता आता है। हाँ जी, उंगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ता है।

उंगली पै नचाना—अ० चक्कर में डालना। प्र० पंडित जी ने सारे परिवार को अपनी कथा सुना कर भ्रमित कर दिया। हाँ जी, वे तो इसी तरह उंगली पै नचाते रहते हैं।

उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई—अ० निर्लज्ज हो जाना। प्र० गौरव ने नितिन से पूछा, कहो, श्याम किसी की चिन्ता करता है। नहीं, जिसके साथ चाहता है, खानपान कर लेता है। सच है उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई

उखड़े न टिड्डी के पर नाम वीर सिंह—अ० आलसी व अभिमानी। प्र० कालीचरण खाट से उठता नहीं, कहे कि मैंने शेर भगाया। सच है उखड़े न टिड्डी के पर नाम वीर सिंह।

उतते अंधा आय है इतते अंधा जाय—अ० मूर्ख से मूर्ख मिला। प्र० कपिल तो कुछ समझता ही नहीं, वैभव भी ऐसा ही निकला। इसलिए दोनों ने व्यापार ठंडा करके रख दिया। ठीक है कि उतते अंधा आय है इतते अंधा जाय।

उतरा शहना मर्दक नाम—अ० पद से गिरने पर प्रतिष्ठा नहीं रहती है। प्र० प्रधान जी ने जब से अपना पद त्यागा, तब से कोई राम-राम भी नहीं करता। हाँ जी, उतरा शहना मर्दक नाम।

उतावला सो बावला—अ० जल्दी में काम बिगड़ता है। प्र० नितिन भाग कर चला सो ठोकर खाकर गिर पड़ा। सच है उतावला सो बावला।

उत्तर जाय कि दक्खन, वे ही कर्म के लक्खन—अ० भाग्य का लिखा नहीं मिटता। प्र० नारायण ने रायसाहब की नौकरी करी फिर भी कोरा ही रहा। सच है उत्तर जाय कि दक्खन वे ही कर्म के लक्खन।

उत्तर रहै बतावै दक्खन, उसके आछे नाहीं लक्खन—अ० ठीक बात को छिपाना। प्र० पंकज कहता है कि मैं बम्बई से आया हूं। भली कही, उसकी कौन माने, वह उत्तर रहै बतावै दक्खन, उसके आछे नाहीं लक्खन।

उथले कहि कर गहरे बोरै—अ० कठिन कार्य को सरल बताना। प्र० भगवाना कहता तो था कि मथुरा तीन ही कोस है पर वह तो पाँच कोस निकली। ऐसा जानता तो मैं क्यों जाता? सच है, उसने तो वही काम किया, उथले कहि कर गहरे बोरै।

उदर निमित्त, भेष बहु कृत्त—अ० पेट के लिए अनेक खेल खेलते हैं। प्र० अभी तो नारायणा पाग बाँधे हुए था और अब ओढ़नी ओढ़ कर नाच रहा है। सच है उदर निमित्त, भेष बहु कृत्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यम करे दलिद्दर नाश—अ० उद्यमी भूखा नहीं मरता । प्र० आशीष दिन भर कुछ न कुछ करता ही रहता है । इसलिए अब उसके पास चार पैसे हैं । सच है उद्यम करे दलिद्दर नाश ।

उदधि रहै मर्याद में उफन बहै नदनीर—अ० बड़ों को अभिमान नहीं होता है । प्र० सेठ जी के पास लाखों की दौलत होने पर भी कोई नहीं जानता; किन्तु हरिया माली चालीस मन आलू होने पर ही ऊपर को उछलने लगा । सच है उदधि रहै मर्याद में उफन बहै नदनीर ।

उधार खाये बैठे हैं—अ० किसी काम के लिए तैयार रहना । प्र० सागर ने रामा को कुश्ती के लिए कहा, वह उसी समय तैयार हो गया । वाह, अरे, कुश्ती के लिए तो वह उधार खाये बैठा था ।

उधार दिया, गाहक खोया—अ० उधार देने से ग्राहक भी खो जाता है । प्र० प्रसन्ना ने चार पुस्तकें उधार दामों पर ले ली थीं । अब पुस्तक विक्रेता की दूकान के आगे को नहीं जाता है । सच है, उधार दिया ग्राहक खोया ।

उधार देना बैर लेना—अ० उधार देने से बैर होता है । प्र० राधे ने कल्लू को सौ रुपये दे दिये थे, अब माँगता है तो कल्लू आँखें दिखाता है । हाँ जी, उधार देना बैर लेना ।

उधार लेकर खेला जुआ, आज न मुआ कल मुआ—अ० परायी पूंजी पर व्यापार जल्दी ही खत्म हो जाता है । प्र० प्रमोद ने रुपया उधार लेकर फैक्टरी खोली थी सो लाभ तो व्याज ले गया, पूँजी में घर पाला । अब अंत में घर में सब भूखे बैठे हैं । सच है, उधार लेकर खेला जुआ आज न मुआ कल मुआ ।

उधार हत्या है—अ० ऋणी को असत्य भाषण करना पड़ता है । प्र० मातादीन से मुकेश रोज़ तकादा करता है, पर वह रोज़ को कल करता है । सच है, उधार हत्या है । एक बार झूठ बोलने में एक हत्या का पाप होता है ।

उन्नीस बीस का अन्तर होता ही है—अ० दो वस्तुएँ सदैव एक सी नहीं होती हैं । प्र० दोनों वक्स एक ही हाथ के हैं फिर भी थोड़ा अन्तर है । सच है उन्नीस बीस का अन्तर रहता ही है ।

उठ गये मत जानिये टट्टी दीने द्वार—अ० अधिकार हो तो गया मत जानो । प्र० संजय घर के आगे खाट खड़ी करके दूसरे गाँव चला गया । लोगों ने कहा कि वह तो भाग गया । तब एक पड़ौसी वृद्ध ने कहा, नहीं, उठ गया मत जानिये टट्टी दीने द्वार ।

उठते लात बैठते घूंसा—अ० सबसे कमजोर हो जाना । प्र० श्याम काका अब इतने निर्बल हैं कि राह में चलते चलते भी लड़के ठोकर मारते हैं और घर में भी कोई आदर से रोटी नहीं देता । सच है, अब तो उनके लिए उठते लात बैठते घूँसा है ।

उठी पैंठ आठवें दिन—अ० जो काम वक्त पर हो गया तो हो गया नहीं तो फिर न जाने कब हो । प्र० जो करना है अब कर लो, नहीं तो उठी पैंठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवें दिन लगती है।

उड़ती चिड़िया परखना—अ० अति चतुर होना। प्र० कल कलुवा औरत का भेस बनाकर निकला पर इंस्पेक्टर ने फौरन पहचान लिया। सच है, ये लोग उड़ती चिड़िया परखते हैं।

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे—अ० स्वयं ही गलती होने पर भी बढ़-बढ़ कर बातें करना। प्र० भावना से जब मैंने पैन के सम्बन्ध में पूछा, तो अपराध की स्वीकृति के स्थान पर मुझे ही दोषी ठहराने लगी। इसी को कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

उल्टा चोर स्वर्ग को जाय—अ० पापी होकर फूले फले। प्र० कल्लू रात-दिन पाप करता है, पर सदा धन धान्य से पूर्ण है। सच है, उल्टा चोर स्वर्ग को जाय।

उल्टी माला फेरना—अ० अनुसार होकर विरुद्ध हो जाना। प्र० हरिया को पवन ने नौकर कराया। अब वह उसी से लड़ने लगा। उसने भी उल्टी माला फेर दी।

उलझ जायेगा तो सुलझ जायेगा—अ० काम में पड़ कर आदमी ठीक हो जाता है। प्र० राकेश को मुकेश के साझे दूकान पर बैठा दो; क्योंकि उलझ जायेगा तो सुलझ जायेगा।

उल्टा लिया जाय न सीधा—अ० किसी तरह समझाने पर भी न समझना। प्र० सुरेन्द्र को हर तरह से समझाया, पर नहीं मानता। उल्टा ही जवाब देता है। उसकी भली कही, उल्टा लिया जाय न सीधा।

उलटी अन्तड़ी गले आई—अ० सुख की भावना में दुःख होना। प्र० नितिन गया तो था ज्वर का इलाज कराने, आँख दुखनी और आ गई। हाँ जी, उलटी अन्तड़ी गले आई।

उलटी खोपड़ी अन्धा ज्ञान—अ० बात को कुछ की कुछ समझना। प्र० गौरव ने कहा था घर की चौकसी करने के लिए। अगला ताला लगाकर सो गया। चोरों ने सेंध लगा ली। कहा तो उत्तर मिला—ताला लगाकर सोना चौकसी नहीं तो क्या है? सच है उलटी खोपड़ी अन्धा ज्ञान।

उलटे बाँस बरेली जाना—अ० विरुद्ध बात का होना। प्र० पंकज ने दस टन जूट बंगाल को लादा है। वाह-वाह, उलटे बाँस बरेली लदे।

उल्लू की मिट्टी पड़ना—अ० अधिक नींद आना। प्र० काजल पर न जाने क्या उल्लू की मिट्टी पड़ी है, जगाये तो जागती ही नहीं, दिन-रात सोती है।

उल्लू बोल गया—अ० उजाड़ हो गया। प्र० एक समय था कि दण्डकारण्य राज्य था पर अब तो उल्लू बोल गया।

उसी का सिर उसी की सिरोही—अ० किसी को उसी के द्वारा हानि पहुँचानी। प्र० नितिन ने बाप-बेटे में लड़ाई कराकर उसी का सिर उसी की सिरोही कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊ

ऊँच नीच सोचना—अ० विचारकर काम करना। प्र० आशीष जो चाहता है सो करता है और और दुःखी होता है। हाँ, वह ऊँच-नीच सोचता ही नहीं।

ऊँची दुकान फीका पकवान—अ० गुण थोड़ा अभिमान ज़्यादा। प्र० भावना बड़ाई इतनी मारती है; किन्तु जानती नहीं एक अक्षर। हाँ जी, ऊँची दूकान फीका पकवान।

ऊँचे चढ़ के देखा, तो घर-घर ये ही लेखा—अ० ज्ञान दृष्टि से सब संसार एक सा ही है। प्र० भावना तो कठिनाई से दिन काट ही रही थी किन्तु मालूम हुआ कि लेखा की भी वही स्थिति है। सच तो यह है कि ऊँचे चढ़के देखा, तो घर-घर ये ही लेखा।

ऊजड़ देख के गूजर कूदै—अ० अपने काम की सामग्री देखकर सबको खुशी होती है। प्र० मस्तराम को ठगों के साथ मिलकर अति हर्ष हुआ। क्यों न होता, ऊजड़ देखके गूजर कूदता है।

ऊत गई वह दाई जो टाँग पकड़कर लाई—अ० नटखट होना। प्र० बंधु, देखा! ललित ने लड़के को ईंट मारी और दूसरे के लात। अजी भली कही, ऊत गई वह दाई जो टाँग पकड़कर लाई।

ऊतो के पूत और भूतों के समध्याने—अ० असम्भव बात नहीं होती। प्र० हरिया आप ही भीख माँगकर खाता है, मोहन उससे हल माँगने गया। सच है ऊतो के पूत और भूतों के समध्याने।

ऊधो का लेन न माधो का देन—अ० किसी झगड़े में न पड़ना। प्र० आप तो बहुत खुश रहते हैं। क्यों न रहूँ, मैं तो ऊधो के लेन में न माधो के देन में।

ऊधो तोहि द्वारिका जानो—अ० जब कोई काम करना ही पड़े तब कहा जाता है। प्र० मैंने बहुतेरी टालमटोल करी पर अन्त में मुझे पत्र लिखना ही पड़ा। सच है ऊधो तोहि द्वारिका जानो।

ऊधो बनियाई की बात—अ० जब किसी का कोई का अनायास ही हो जाए। प्र० देखा तुमने, अनायास पड़ी लक्ष्मी मिल जाने पर कपिल कितना गर्वित है। सच है ऊधो बनियाई की बात।

ऊना है कि पूना—अ० यह एक तरह के खेल में कहा जाता है। प्र० महाराज नारायण ने हरी से पूछा कह भाई, ऊना है कि पूना। उसने जवाब दिया पूना अर्थात् हम दो या चार छह भाई हैं।

ऊँट किस करवट बैठे—अ० न जाने क्या हो? प्र० बलवन्त अभी बम्बई जाने की जाने की जल्दी मत करो। समय को देखो, न जाने ऊंट किस करवट बैठे।

ऊँट के गले में बिल्ली—अ० किसी काम का होना असम्भव-सा कर देना। प्र० महेन्द्र चिट्ठी लिख रहा था मगर अचानक चूहे ने उँगली काट ली। यह अच्छी ऊंट के गले में बिल्ली बंधी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊँट के टाटरै—अ० किसी चीज़ का बहुत ऊंचे पर होना । प्र० रामभरोसे की छान का कल आँधी में सब फूंस उड़ गया । क्यो न उड़े, है भी तो ऊँट के टाटरैं।

ऊँट को छप्पर कहाँ—अ० किसी ऐसी चीज़ का प्रवन्ध नहीं होता जो अधिक बड़ी हो । प्र० सावन के यहाँ बारात को खाट नहीं मिली । अरे भाई, ऊँटों को छप्पर कहाँ ?

ऊँट चढ़े अरु कुत्ता काटे—अ० जब शत्रु कुछ न कर सके । प्र० सोहन वृक्ष पर बैठा है । उसका गीदड़ क्या करेगा पर वह तो डरता है । हाँ जी, ऊंट चढ़े अरु कुत्ता काटे ।

ऊँट चढ़ के बूट माँगे—अ० बहुत दूर से किसी काम को करने की हिम्मत करना । प्र० संजय कोठे पर बैठकर नीचे बैठे लड़के के लिए हाथ फैलाता है । सच है ऊँट चढ़के बूट माँगे ।

ऊँट जब तक पहाड़ तले को न निकले ऊँचा ही है—अ० जब तक दूसरा नहीं मिल जाता अभिमान रहता ही है । प्र० श्याम सबको एक ही लाठी से हाँकता था, पर जब हरद्वारी ने दो चपत लगा दिए तो सीधा हो गया । हाँ ठीक है, ऊँट जब तक पहाड़ तले को न निकले ऊँचा ही है ।

ऊँट बहै गधे थाह लें—अ० बड़े आदमी किसी काम को न कर सकें और छोटे करने का साहस करें । प्र० सेठ जी की तो मंत्री महोदय की कोठी पर बात पूछी नहीं गई, पर पंकज बाबू उनसे मिलना चाहते हैं । सच है ऊँट बहै गधे थाह लें ।

ऊँट बिलाई ले गई तो हाँजी हाँजी कहना—अ० झूठी खुशामद करना । प्र० आशीष की साइकिल भूषण के यहाँ थी । जब उससे माँगी तो उसने कहा चूहा ले गया । हाँ जी ठीक है, जाट कहै सुन जाटनी याही गाँव में रहना, ऊँट बिलाई ले गई तो हाँ जी हाँजी कहना ।

ऊँट मरा माल के सिर—अ० एक चीज़ का टोटा दूसरी से पूरा करना । प्र० लाला की नमक की दो बोरियाँ पानी में भीग गईं । उनके दाम रुई पै बढ़ा लिए । हाँ जी, ऊंट मरा माल के सिर।

ऊँट रे ऊँट तेरा कौन अंग सीधा—अ० जो सब तरह से गया बीता हो । प्र० नलिन को अनेक प्रकार देखा, पर उसमें सारी बुराई ही बुराई भरी है । हाँ जी, ऊँट रे ऊँट तेरा कौन अंग सीधा ।

ए

एक अंडा वह भी गंदा—अ० एक ही लड़का और वह भी कुपात्र। प्र० धन्नो के एक ही बेटा है, वह भी जुआरी शराबी है । उसके लिए तो एक ही अंडा वह भी गंदा ।

एक अनार सौ बीमार—अ० एक वस्तु के कई ग्राहक । प्र० रहीम के चार तो बेटे, गेंद लाया एक । वह कहे मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लूँ और वह कहे मैं लूं। सच है एक अनार सौ बीमार।

एक अहारी सदा व्रती, एक नारी सदा यती—अ० एक बार भोजन करने वाले के सदैव व्रत ही हैं और एक पत्नी संतुष्ट यती है। प्र० संजय का व्याह तो हो गया पर जती कहलाता है, यह कैसे ? तब पंकज ने कहा कि तुम नहीं जानते—स्व पत्नी संतुष्ट : स एव जती और स्व पतीम् संतुष्टा मा एव सती (यती)

एक और एक ग्यारह होते हैं—अ० संगठन एक बड़ी शक्ति है। प्र० राम-लक्ष्मण का मेल और लंकाधिपति रावण और विभीषण की फूट को समझो, एक और एक ग्यारह होते हैं।

एक का घर जतो एक तापै—अ० किसी को हानि पहुँचे कोई लाभ उठावे। प्र० घूंस ने सोहन का सारा अनाज हरिया के घर में पहुँचा दिया। सच है एक का घर जतो एक तापै।

एक के इक्कीस—अ० अधिक उन्नति होना। प्र० महाजन ने उस दीन की मदद की। उसने आशीर्वाद दिया कि भाई तुम्हारे एक के इक्कीस हों।

एक के मत्थे पड़ना – अ० किसी एक को किसी का प्रतिभू बनाना। प्र० मोहन और सोहन ने खेत बोया, पर भूपति ने हरिया को प्रतिभू बनाया। सच है, एक के मत्थे ही तो पड़े।

एक को एक धरा है—अ० मनुष्य को अपनी शक्ति पर गर्व नहीं करना चाहिए। प्र० मुरली सबको दुःखी करता था। एक दिन प्रकाश ने उठा कर दे मारा तब राहुल ने कह कि एक को एक धरा है।

एक करै सब भरैं—अ० एक पापी के पापों से सम्बन्धियों को भी दुःख भोगना पड़ता है। प्र० दुर्योधन के सम्पर्क से सम्पूर्ण भारत को दुःख भोगना पड़ा। ठीक है कि एक करै सब भरैं।

एकादशी कै शिवरात—अ० भूखे के घर भूखा जाए। प्र० पाण्डव आप तो वन में भूखे थे ही कि दुर्वासा शिष्यों सहित और आ गए। हाँ जी, एकादशी कै शिवरात।

एक चुप सौ को हरावै—अ० गम्भीर सत्र को जीत लेता है। प्र० कल हरीश को लगभग दस लडके गालियाँ देने लगे, वह कुछ नहीं बोला। हार कर सब उठ-उठ कर चले गए। हाँ जी, एक चुप सौ को हरावै।

एक तवे की रोटी क्या मोटी क्या छोटी—अ० सब एक से होना। प्र० गौरव घर से निकल कर सबसे लड़ता-झगड़ता था, पर उसका भाई नितिन सीधा-सा लगता था। अब तो वह उससे भी तेज है। हाँ जी, एक तवे की रोटी क्या मोटी क्या छोटी।

एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा—अ० बुरे में और बुराई बढ़ जाना। प्र० पकज ने ललित को इतना सताया कि गांव छोड़ गया। अब तो उसको पूत भी ऐसा ही मिला है। वाह-वाह, एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।

एक तो कानी कुनक और गिर गया—अ० बुरे को बुरी संगत मिलना। प्र० सोमेश वैसे तो पहले ही काम से भागता था; किन्तु जबसे हरीश जुआरी की संगति मिली है तब से तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ठीक ही नहीं है। ठीक कहाँ से होता उसकी तो वही कहावत है, एक तो कानी कुनक और गिर गया।

एक तो गिली कड़वी दूसरे नीम चढ़ी—अ० बुरे को बुरे ही लोग मिलना। प्र० कैकेई जैसी थी वैसी थी, पर मंथरा दासी के मिलने से तो उसकी कुटिलता और भी बढ़ गई। सच है एक तो गिली कड़वी दूसरे नीम चढ़ी।

एक थैली के बट्टे—अ० कोई किसी से कम न होना। प्र० बंधु, बताओ तो सही गौरव और नितिन में कौन भला है? कोई भी नहीं, दोनों एक ही थैली के बट्टे हैं।

एक न शुद्ध दो शुद्ध—अ० एक आपत्ति से छूटे नहीं दूसरी और आ गई। प्र० वंधु! बाबा जी का ज्वर तो टूटा नहीं था, पिता जी को भी आने लगा। हाँ भाई, एक न शुद्ध दो शुद्ध।

एक नीम सब घर शीतल—अ० एक सुपुत्र से सारा परिवार सन्तुष्ट रहता है। प्र० आशीष अपने पिता को ही नहीं अपितु समस्त परिवार को खुश रखता है। कैसा सुपुत्र है, सच है कि एक नीम सब घर शीतल।

एक टका मेरी आली, नथ गढ़ाऊं कि बाली—अ० थोड़ी पूंजी पर अनेक विचार करना। प्र० पूजा के पास पचास रुपये हैं। कभी कहती है सूट ले लूं कभी कहती है कार्डिगन। ठीक है एक टका मेरी आली, नथ गढ़ाऊं कि बाली।

एक पंथ दो काज—अ० दूना लाभ उठाना। प्र० रवीन्द्र गया था ससुराल मार्ग में नानी के भी हो आया। अच्छा है एक पंथ दो काज।

एक पापी नाव को डुबो देता है—अ० कुल में कपूत उत्पन्न होकर कुल को नष्ट कर देता है। प्र० कंस ने उत्पन्न होकर सूरसैन की जड़ उखाड़ दी। ठीक है, एक पापी सारी नाव को डुबो देता है।

एक पूत जनि जनियो माय, घर पै रहे कि बाहर जाए—अ० इकलौते पुत्र की माता दुःखी रहती है। प्र० गौरव अपनी माता का इकलौता पुत्र है सो जब वह पढ़ने के लिए जाता है तो उसकी माता उसके लौटने की राह देखती रहती है। हाँ भाई क्यों न देखे, जानते नहीं, एक पूत जनि जनियो माय, घर पै रहै कि बाहर जाय।

एक बलि नौ देव—अ० एक व्यक्ति एक ही स्थान पर काम कर सकता है। प्र० अरे देखा बंधु! आज चपरासी पर मुख्याध्यापक ने कितना अत्याचार किया है। एक ओर वह अध्यापकों को पानी पिला रहा था, दूसरी ओर पीरियड का समय हो गया और तीसरे स्वयं बुला बैठे। वेचारा न पहुँच सका तो जवाब-तलबी कर डाली और तरक्की न देने की धमकी तक दे डाली। कहो, एक व्यक्ति क्या-क्या करता? यह तो वही बात हुई, एक बलि नौ देव।

एक म्यान में दो तलवार नहीं समातीं—अ० एक ही स्थान में दो अधिकारी नहीं रह सकते हैं। प्र० रमेश और सुरेश में रात-दिन लड़ाई रहती है क्योंकि उनकी साझे की ज़मींदारी है। फिर क्या है, एक म्यान में दो तलवार नहीं समातीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मछली सारे ताल को गंदा कर देती है—अ० एक कपूत सारे कुल को कलंकित कर देता है। प्र० बनवारी ऐसा कपूत उठा है कि उसने सारे कुल को दाग़ लगा दिया। सच है एक मछली सारे ताल को गंदा कर देती है।

एक मास ऋतु आगे धावै—अ० होनहार के चिन्ह पहले ही दिखाई देने लगते हैं। प्र० राजा दशरथ के निधन से पूर्व ही कैकेई की दाहिनी आँख फड़कने लगी थी। फिर भी श्रीराम को वन भेज ही दिया और राजा दशरथ का निधन हुआ ही। हाँ बंधु, इसमें किसी का क्या चारा है? कोई न माने तो क्या करे, एक मास ऋतु आगे धावै।

एक मुँह दो बात अ० झूठ बोलना। प्र० बंधु! श्याम क्या कहता था? उसने कहा कि मैंने उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी। क्यों? इसलिए कि उसकी हमेशा एक मुँह दो बातें होती हैं।

एक लेना न दो देने—अ० झगड़े से दूर रहना। प्र० पंकज श्यामसुन्दर के मामले में फँस कर दुःखी हो गया। बंधु, मैं तो सबसे अलग ही हूं, मुझे एक लेना न दो देने।

एक स्वास्थ्य सहस्र भोग—अ० स्वस्थ व्यक्ति हज़ार सुख भोग सकता है। प्र० आशुतोष आजकल ज्वर से पीड़ित है सो शय्या पर ही पड़ा रहता है। खाने-पीने की अनेक चीजें हैं, पर उसके लिए सब फिज़ूल हैं। सच है एक स्वास्थ्य सहस्र भोग।

एक सिंह मारता है सौ लोमड़ी खाती हैं—अ० एक कमाऊ कमाता है सारा कुनबा खाता है। प्र० प्रभात अकेला ही अपने घर को थाम रहा है। सच है एक सिंह मारता है सौ लोमड़ी खाती हैं।

एक से ले एक को दे—अ० ईश्वर किसी को कंगाल और किसी को धनवान कर देता है। प्र० सुनो, पंकज और बलराम का माल चुरा कर जब चोर छत पै को भागा तो ठोकर खाकर गिरा और सारा माल भगवाना के घर में गिर गया। हाँ भई, ईश्वर का यही काम है कि एक से ले एक को दे।

एक सपूत सिंहनी निर्भय सोती अ० एक सुपुत्र से माता निर्भय सुख से रहती है। प्र० सोमेश की माता अकेली जहाँ चाहे वहाँ जाये, उसको कोई टोकने वाला नहीं है। हाँ भाई क्यों होता, सुना नहीं, एक सपूत सिंहनी निर्भय सोती।

एक हत्या हत्यारा लाख हत्या सूर—अ० समर्थ के दोष भी गुण हैं। प्र० हरिया ने एक लड़की को मार डाला था सो मृत्यु दण्ड पाया किन्तु अर्जुन ने लाखों मारे और महारथी कहलाया। सच है समरथ को नहीं दोष गुसाईं, रवि पावक सुरसरि की नाईं। सो ठीक है एक हत्या हत्यारा लाख हत्या सूर।

एक हाथ लेना दूजे हाथ देना—अ० नक़द माल देना और उधार न करना। प्र० कल्लूसिंह की दूकान में तो चूहे कलाबाजी खाते हैं; किन्तु हरनाम सिंह की दूकान में लाखों का माल लगा है। क्या कारण, यही कि उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी दूकान पर एक हाथ लेना दूजे हाथ देना कर रखा है। उधार किसी को नहीं देता है।

एकहि साधे सब सधैं—अ० एक स्वामी को बस में करने से सब बस में हो जाते हैं। प्र० एक ईश्वर भक्त ध्रुव ने सब देव अपने अधीन कर लिए। सच है कि एकहि साधे सब सधैं।

ऐ

ऐरे गैरे नत्थू काने, ऐरे गैरे पस कल्याने, ऐरे गैरे फसल बहुतेरे—अ० ऐसे व्यक्ति जिनकी कहीं गिनती न हो अथवा जो जाति में ही न हों। प्र० बंधु ! आज तो तुमने श्याम से बात भी नहीं की। क्या करूँ, ऐसे ऐरे गैरे नत्थू काने, ऐरे गैरे पस कल्याने सैंकड़ों फिरेते हैं, किस-किस से बात करता फिरूँ।

ऐसी खोदि किशोरा, जाइ गदहा खाइ न घोरा—अ० ऐसा निकम्मा काम करना जो किसी भी अर्थ का न हो। प्र० प्रदीप को उसकी मां ने सब्जी लेने के लिए भेजा। वह सड़ी-गली बासी सब्ज़ी उठा लाया कि दुर्गन्ध के मारे गाय ने भी न सूंघी। तब माँ ने कहा, अरे प्रदीप आज तो तूने वही काम किया कि ऐसी खोदि किशोरा, जाइ गदहा खाइ न घोरा।

ऐसी तेरे ही तले गंगा बहती है—अ० महान् अहंकार पर ऐसा कहा जाता है। प्र० भय्या, मैंने पंकज के आगे एक चिट्ठी लिखने के लिए हाथ तक जोड़े, पर उसने एक न मानी फिर हार कर सविता से लिखवाई। तब मैंने कहा कि ऐसी तेरे ही तले गंगा बहती है। हाँ बंधु, क्या करें, समय ही ऐसा है।

ऐसे गये जैसे गधे के सिर से सींग—अ० जब कोई वस्तु बिल्कुल नष्ट हो जाए। प्र० मोहन अपने मालिक से दुःखी होकर घर की ईंट तक उखाड़ कर ले गया। सच है, वह तो ऐसा गया जैसे गधे के सिर से सींग।

ऐसे जीने से मरना भला—अ० जब कोई व्यक्ति बुढ़ापे के कारण क्रिया भ्रष्ट हो जाए। प्र० गिरधारी लाल के पितामह अब इतने बूढ़े हो गए हैं कि मल-मूत्र त्यागने के लिए भी नहीं उठा जाता है, इस कारण महा दुःखी हैं। हाँ, ऐसे जीने से मरना भला।

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय—अ० जब व्यक्ति बहुत बूढ़ा हो जाए और कुछ भी करने में असमर्थ हो। प्र० ललित के पितामह अब किसी को कुछ कमा कर नहीं देते हैं। इसलिए भोजन में भी टोटा है। अरे बंधु, सुनी नहीं, ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय।

ऐसे होते कंत तो काहे जाते अंत—अ० निकम्मे व्यक्ति के लिए कहा जाता है जो मारा-मारा फिरे। प्र० भावना तुम्हारे स्वामी घर छोड़ अपनी बहन के घर जा पड़े हैं, मर्द होकर लाज नहीं आती। कुल वानि भी खोई। अरी बहन, ऐसे होते कंत तो काहे जाते अंत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ

ओछा पात्र उछलता है—अ० नीच के हाथ धन आ जाए तो वह अभिमानी हो जाता है। प्र० प्रवीण को अपने नाना की कई लाख की सम्पत्ति मिल गई, सो किसी को अपने पास भी नहीं बैठने देता, सबको हीन समझता है। सच है, ओछा पात्र उछलता है।

ओछी पूंजी खसम को खाय—अ० थोड़ा धनी व्यापारी थोड़े दिनों में ही ख़त्म हो जाता है। प्र० रामलाल ने पाँच सौ रुपये से व्यापार किया, पर भाग्य की बात कि अब के मेलें में टोटा आ गया। बचा खुचा माल कर्ज़दार ले गया। अब खाने को न नहाने को। सच है, ओछी पूंजी खसम को खाय।

ओछे की पीत बालू की भीत—अ० नीच की दोस्ती थोड़े ही दिन चलती है। प्र० श्याम ने राधे से पहले तो बड़ा घनिष्ठ प्रेम दर्शाया था, पर अब तो मुख से भी नहीं बोलता। क्यों बोले, जानते नहीं, श्याम कैसा व्यक्ति है? कोई गों गांठनी होगी सो गंठते ही बोलना छोड़ दिया होगा। जानते नहीं, ओछे की पीत बालू की भीत।

ओछे के घर जाना, जनम-जनम का ताना—अ० नीच व्यक्ति किसी का भला करके उसे जन्म भर ताने देता रहता है। प्र० पंकज ने एक दिन पवन की कटी उंगली पर कपड़ा बाँध दिया था। उसे कभी नहीं भूलता, जहाँ बैठता है वहीं गाता है। सच है, ओछे के घर जाना, जनम जनम का ताना।

ओछे के संग बैठ कै अपनो हू पत जाय—अ० ओछी संगति में व्यक्ति अपनी भी प्रतिष्ठा खो देता है। प्र० अजायब सिंह जिस दिन से डाकुओं के संग में रहने लगा है, उस दिन से उसको कोई अपने पास भी नहीं बैठने देता। क्यों बैठने दे, जानते नहीं, ओछे के संग बैठ कै अपनो हू पत जाय।

ओछे बड़े न हो सकें, लगि सतरोहे बैन—अ० नीच व्यक्ति उभर कर बोलने से बड़ा व्यक्ति नहीं हो जाता। प्र० बंधु! आज धोबी ने दादा जी को ऐसी कड़ी बात कही कि मुझे तो गुस्सा आ गया; किन्तु उन्होंने उसकी बातों पर ध्यान भी नहीं दिया। तो क्या हुआ, क्या वह नीच उनके बराबर हो गया, नहीं। जानते नहीं, ओछे बड़े न हो सकें, लगि सतरोहे बैन।

ओछे सन उपकार, राख में घी डार—अ० नीच के साथ भलाई करना फिजूल है। प्र० सौरभ ने पराग को ऐसी मुसीबत में मदद दी थी कि जब उसका कोई भी धीर धरैया नहीं था, पर अब सौरभ पर मुसीबत आई तो उसने आँख दिखा दी। क्यों न दिखाता, जानते नहीं, ओछे सन उपकार, राख में घी डार।

ओझ भरे न रोग झरे—अ० जब किसी तरह भी लोभी की इच्छा पूर्ण न हो। प्र० गौरव को हज़ारों रुपये महीने की आमदनी है पर दिन पर दिन कमज़ोर होता जाता है। क्यों न हो, उसकी इच्छा ही पूर्ण नहीं होती। जब इच्छा लगी रहती है तो कमज़ोर क्यों न हो? भैया जानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो, ओझ भरे न रोग झरे ।

ओस के चाटे किसी की प्यास नहीं बुझती—अ० जब इतनी थोड़ी वस्तु मिले कि जिससे किसी तरह की तृप्ति न हो । प्र० नितिन आम छील-छील कर खा रहा था और पराग छिलके उठा-उठा कर खाने लगा, उनसे क्या संतोष होता । बंधु, ओस के चाटे किसी की प्यास नहीं बुझती है ।

औ

ओघट चलै न चौपट गिरै—अ० न बुरी राह चले न ठोकर खाय । प्र० हेमन्त ने बुरे लडकों की संगति में बैठ-बैठ कर पहले तो स्वयं को बदनाम कर लिया और अब पछताता है । तुम ठीक कहते हो बंधु, पर अब क्या हो सकता है, जानते नहीं कि औघट चलै न चौपट गिरै ।

औंधे मुंह दूध पीते हो—अ० अभी तो निरे वच्चे हो । प्र० अरे बंधु ! आज सिर से साफा बाँधे और हाथ में लाठी लिए रोष भरे कहाँ जा रहे हो ? तब सुरेन्द्र ने उत्तर दिया कि मैं आज नामी लठैत से लड़ने जा रहा हूँ । सुनकर रमेन्द्र ने कहा कि तुम उससे क्या लड़ोगे ? अभी तो औंधे मुँह दूध पीते हो ।

और की भूख, भूख नहीं जानै; अपनी भूख में आटा सानै—अ० जब कोई व्यक्ति अपना ही ध्यान रखे और दूसरे की कोई फिक्र न करे। प्र० नर्मदादास और पुनीत दोनों ने एक साथ यात्रा की । चलते-चलते नर्मदादास को भूख लगी और उसने पुनीत से कहा कि बंधु, मुझे तो भूख लगी है, कुछ खाने को हो तो काम बने । तब पुनीत ने उत्तर दिया, अरे भूख की क्या चिन्ता, यह तो लगती ही रहती है, चले चलो, पर जब पुनीत को भूख लगी तो इधर-उधर देखने लगा और एक गाँव में जाकर सत्तू ले आया और घोल कर खाने लगा । इसको देखकर नर्मदादास ने कहा कि बंधु, तुमने तो वही कहावत सच्ची कर दी कि और की भूख, भूख नहीं जानै, अपनी भूख में आटा सानै ।

और दिन चंगी, त्यौहार के दिन नंगी—अ० जिस काम को सब लोग कर रहे हों उसे न करके मनमानी करना । प्र० वह तो हमेशा सूट में रहता था, पर आज मेले के दिन साधारण कपड़ों में कैसे दिखाई दे रहा है ? उसने तो वही कहावत सच्ची कर दी कि और दिन चंगी, त्यौहार के दिन नंगी ।

औरन की फूली देखते हैं, अपना टेंटरा नहीं निहारते—अ० दूसरों के छोटे-छोटे दोषों पर ध्यान देते हैं, पर अपने बड़े दोषों की चिन्ता तक नहीं करते । प्र० क्या ज़माना आ गया है बंधु ! हरीश ने बिना पूछे छोटे भाई के पैन उठाने पर तो तमाचा ज़ड़ दिया किन्तु स्वयं कमल की पुस्तक उड़ा लाया, उसकी लेश मात्र भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता नहीं की। इस पर श्रेय ने उत्तर दिया, क्या कहते हो बंधु! लोगों की तो यही रीति हो रही है कि औरन की फूली देखते हैं, अपना टेंटरा नहीं निहारते।

औलाती का पानी मगरे पै नहीं चढ़ता—अ० असम्भव बात कभी भी संभव नहीं हो सकती है। प्र० दुष्यन्त कुमार ने नदी में बंद लगाकर पानी को उल्टा स्रोत की ओर चढ़ाने का भरसक प्रयास किया; किन्तु पानी बन्द को तोड़ कर आगे को ही वह निकला। तभी किसी ने कहा कि बंधु, औलाती का पानी मगरे पै नहीं चढ़ा करता।

औसर चूके मन पछितैहो—अ० अगर कोई व्यक्ति वक्त पर काम नहीं करता तो फिर उसे पछताना ही पड़ता है। प्र० जिन दिनों तुम्हें खूब मेहनत करनी चाहिए थी, खेल तमाशों में बिता दिये, अत्र परीक्षा में असफल होने पर उन दिनों की याद करके रोते हो। तुमने तो राकेश वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि औसर चूके मन पछितैहो।

औषधि जाह्नवी तोयं, वैद्यो नारायणो हरिः--अ० दवा को गंगा जल के समान नीरोग और चिकित्सक को साक्षात् नारायण का रूप मान कर रोगी को अपनी चिकित्सा शुरू करनी ठीक है। ऐसा करने से रोगी जल्दी ही ठीक हो जाता है। प्र० नलिन ज्वर से पीड़ित होकर चिकित्सक महोदय से दवा लेकर घर लौट रहा था कि राह में उसकी भेंट अमित से हो गई। हाथ में दवा की शीशी देख कर अमित से चुप न रहा गया, बोला, अरे, नलिन इन औषधियों से क्या होता है, कर्म फल तो भोगने ही पड़ते हैं। नलिन ने उत्तर दिया, ठीक है; किन्तु जानते नहीं, औषधि जाह्नवी तोयं, वैद्यो नारायणो हरिः, दोनों ही कष्ट निवारक हैं।

क

कंत न पूछे बात, मेरा धरा सुहागन नाम—अ० जो बात वास्तव में न हो परन्तु लोग भ्रम करें। प्र० पुलिन रायबहादुर के घर आने जाने लगा। यद्यपि वे उसकी बात भी नहीं पूछते थे; किन्तु लोगों को इस बात का विश्वास हो गया कि वह रायबहादुर का सैक्रेटरी हो गया है। इसलिए सब उसका सम्मान करने लगे, यहाँ तक कि उसकी मित्र मण्डली भी उसे और ही दृष्टि से देखने लगी। यह व्यवहार देख कर जब सब भेद समझ लिया तो कहा, बंधुओ, तुमने तो वही कहावत कर दी कि कंत न पूछे बात, मेरा धरा सुहागन नाम।

कंटकेनैव कंटकमुद्धरेत्—अ० कांटे को कांटे ही से निकाले अर्थात् शत्रु का नाश शत्रु द्वारा ही करे। प्र० देखो बंधु, नन्द और मलेच्छराज दोनों ही चन्द्रगुप्त के शत्रु थे सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने दोनों को लड़ा कर नंद को समूल नष्ट करा दिया। ऐसा करके उसने यह कहावत चरितार्थ कर दी कि कंटकेनैव कंटकमुद्धरेत्।

कच्ची डाल जिधर चाहो नवा लो—अ० बच्चे को जैसे ढंग में चाहो ढाल लो। प्र० भय्या, राकेश की बुरी संगति छुड़ाओ वरना पछताओगे। जानते नहीं, अभी कच्ची डाल है, जिधर चाहो नवा लो।

कतहुँ सुधाई ते बड़ दोषू—अ० कभी-कभी सीधेपन से भी बड़ा कष्ट झेलना पड़ता है। प्र० लखन पर तो तुम्हारी पार न बसाई, अब सीधे-सादे रामू को पीटने लग रहे हो। सच है कतहुं सुधाई ते बड़ दोषू।

कनक-कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाय—अ० पैसे में धतूरे से सौ गुना नशा होता है। प्र० श्रीराम ने अपने भाई लक्ष्मण से कहा, देखो लक्ष्मण, महान् ऐश्वर्य का अहि रावण को कितना गर्व है। इस पर लक्ष्मण ने उत्तर दिया, हाँ महाराज ! कौन नहीं जानता कि कनक-कनक तें सौ गुनी मादकता कधिकाय।

कनियाँ छोरा नगर ढंढोरा—अ० जब कोई वस्तु अपने पास ही हो और उसे इधर-उधर खोजता फिरे। प्र० ललित की घड़ी उसकी मेज पर उसकी पुस्तक के पास ही रखी थी किन्तु वह सारे घर में ढूँढ़ता फिरा और घड़ी न मिली। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कनियाँ छोरा नगर ढंढोरा।

कटे पर लौन लगाना—अ० दुःखी व्यक्ति को चुभती हुई बात कहकर और भी दुःखी करना। प्र० श्रीराम के वन-गमन के दुःख से दशरथ स्वयं ही शोकाकुल थे, तिस पर कैकेई और भी कटु वाणी कह कहकर उनके मर्मस्थल को छेद रही थी। मानो कटे पर लौन लगाती थी।

कटेगा सिर काऊ का, बेटा सुधरेगा नाऊ का—अ० जब एक की हानि हो और दूसरे का लाभ हो। प्र० दर्जी ने मेरी दोनों कमीज़ें अपने लड़के को सीने के लिए दे दीं और उसने खराब कर दीं। सुनकर पत्नी ने कहा कि इसमें उसकी क्या हानि है ? उसकी तो वही कहावत है, कटेगा सिर काऊ का, बेटा सुधरेगा नाऊ का।

कड़ुवे से मिलिये मीठे से डरिये—अ० खरे व्यक्ति से मेल-जोल करे और खुशामदी से दूर रहे। प्र० देखो वधु ! श्रवण जब तक स्पष्टवादी रवि की कटु वाणी को मीठी मानता रहा, तब तक दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता गया; किन्तु जिस दिन से मिष्टभाषी ठग सुन्दर की संगति में आया है, उसी दिन से उसका पतन शुरू हो गया है। इस पर उत्तर मिला कि आपने सुना नहीं, कड़ुवे से मिलिये मीठे से डरिये।

कढ़ी में कोयला—अ० जब किसी अच्छी चीज में बुरी चीज मिल जाये। प्र० अरे, तुम्हारी पीताम्बरी साड़ी में यह काला दाग़ ऐसा चमक रहा है जैसे कढ़ी में कोयला।

कपट की प्रीति मरन की रीति—अ० कपटी व्यक्ति के पास बैठना मौत को बुलाना है। प्र० कुछ सुना तुमने,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले तो हरिया ने कौड़ीमल से पाँच हज़ार रुपया कर्ज़ लिया, फिर जब देखा कि अब कर्ज़ नहीं दिया जाएगा तो उसने इस इच्छा से कि अगर साहूकार जीवित रहेगा तो एक न एक दिन उसकी राशि लौटानी ही पड़ेगी। इसलिए वह उसे झांसा देकर जंगल में ले गया और बदमाशों से ठिकाने लगवा दिया। सुनकर एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा, बेटा सुना नहीं कि कपट की प्रीति मरन की रीति।

कपड़ा कहे तू मुझे कर तह, मैं तुझे करूँ शह—अ० अगर तुम कपड़े की प्रतिष्ठा करोगे तो तुम्हारी भी प्रतिष्ठा होगी। प्र० पंकज अपने कपड़ों का बड़ा ध्यान रखता है, इसलिए जहाँ जाता है प्रतिष्ठा पाता है। सुनकर अनिल ने कहा कि भाई ऐसा क्यों न हो, जानते नहीं, कपड़ा कहे तू मुझे कर तह, मैं तुझे करूँ शह।

कपड़ा फटे ग़रीबी आए—अ० जब ग़रीबी घेरती है तो कपड़े भी जल्दी फटते हैं। प्र० आजकल हरीराम को ग़रीबी ने घेर लिया है, जैसे तैसे करके कोट बनवाया था, वह भी कल बस की पत्ती में अटककर फट गया। सुनकर चंचल ने कहा कि इसमें कौन-सी अचम्भे की बात है, जानते नहीं, कपड़ा फटे ग़रीबी आए।

कपूत बेटा मरा भला—अ० कपूत पुत्र का होना अच्छा नहीं और अगर हो जाए तो उसका मर जाना ही अच्छा है। प्र० बन्धु, देखते हो अजीत ने बदमाशों की संगति में बैठ-बैठ कर अपने कुल को कलंकित कर दिया। इससे तो कपूत बेटा मरा भला।

कफ़न सिर से बाँधे फिरता है—अ० मरने से नहीं डरता। प्र० कल शकुन की चार व्यक्तियों से लड़ाई हो गई। उसने किंचित मात्र भी डर नहीं माना। उसी क्षण लाठी सम्भाल उन पर टूट पड़ा और लहूलुहान होकर भी उनको भगा दिया, कैसा निडर निकला! इस पर लोगों ने कहा कि उसकी क्या बात है, वह तो कफ़न सिर से बाँधे फिरता है।

कब के बनियाँ कब के सेठ—अ० थोड़े ही दिनों में कंगाल से धनाढ्य बन जाना। प्र० देखा बन्धु, आजकल हरीराम अपने धनाभिमान में बड़े-बड़े सेठों को भी कुछ नहीं गिनता है। सुनकर रामरतन ने कहा कि भले की बात कही, कल तो दही-पकौड़ी बेचता था। आज थोड़े से धन का अभिमान कर बैठा। उसकी वही कहावत है कि कब के बनियाँ कब के सेठ।

कबाड़ी की छान पै फूंस नहीं—अ० जो जिस चीज़ का व्यापार करता है, वह उस चीज़ को अपने प्रयोग में नहीं लाता। प्र० मोहन की दूकान पर हज़ारों का कपड़ा रोज़ बिकता है, पर अपने आप वही फटी धोती पहने रहता है। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कबाड़ी की छान पै फूंस नहीं।

कबीरदास की उल्टी बानी, बरसे कम्बल भाजे पानी—अ० इस मायावी जगत् में सज्जन दुःखी और दुर्जन सुखी रहते हैं। प्र० बन्धु, स्वामी गणेशदत्त कम्बल का चिथड़ा ओढ़े फिरते हैं और छलिया सालिगराम बढ़िया से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़िया कपड़े पहनता है। यह तो वही कहावत हुई कि कबीरदास की उल्टी बानी, बरसे कम्ल भाजे पानी।

कबूतर का सूतक कहाँ तक माना जाए—अ० जो बात हर वक्त होती रहती हो, उसकी कहाँ तक फिक्र की जाए। प्र० रामगुलाम की इतनी औरतें हैं कि किसी न किसी के बालक होता ही रहता है। अन्त को अब छूतछात का झगड़ा छोड़ना ही पड़ा। तब सोहन ने जवाब दिया कि कबूतर का सूतक कहाँ तक माना जाए।

कबूतरखाने में कौन किसका—अ० इस मायावी जगत् में कोई किसी का नहीं। प्र० बन्धु ! तीन दिन हुए दादी जी का शरीपात हुआ था; कल बड़े भय्या के लड़का हुआ। दादी जी को तो सब भूल गए। सुनकर सुदर्शन ने कहा कि बन्धु, कबूतरखाने में कौन किसका है।

कभी के दिन बड़े कभी की रात—अ० कभी किसी की चढ़ बनती है और कभी किसी की। प्र० रवि ने सोमेश्वर से कहा, मोहन तुमने देखा, उस दिन हरिया के हाथ में लाठी नहीं थी तो सालिगराम ने उसे कितनी मार लगाई थी, किन्तु आज उसके हाथ में डंडा ही देखा तो दुम दबाकर भाग गया। तब सोमेश्वर ने जवाब दिया, यह कौन सी अचम्भे की बात है। सुना नहीं, कभी के दिन बड़े कभी की रात।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना और कभी वह भी मना अ० जो कुछ मिले उसी पर सन्तोष करना चाहिए। प्र० अरे बन्धु ! सज्जन जिस दिन अच्छे-अच्छे पकवान ग्रहण करता है, उस दिन प्रसन्न नहीं होता और जिस दिन सूखा खाता है उस दिन या जिस दिन फाका करना पड़ता है, दुःख नहीं मानता, हर समय आनन्द में मग्न रहता है। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है कि कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना और कभी वह भी मना।

कभी न कभी तो केशू फूले—अ० जो कभी कोई ऐसा काम कर बैठे जो उसने कभी न किया हो। प्र० आज नन्दीबाबू को कथा में बैठा देख कर सभी लोग हँस रहे थे, सो कुछ ही देर में उठ कर चले आये। उन्होंने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कभी न कभी तो केशू फूले।

कभी न सोये साँथरे सपने आई खाट—अ० किसी व्यक्ति ने कोई चीज़ न देखी हो और वह मिल जावे। प्र० सोहन के बाप दादा ने तो घोड़ागाड़ी नहीं देखी थी और उसे नाना के यहाँ से मिल गई मोटरसाइकिल। सो उसके मारे धरती पर पैर नहीं देता। किसी ने ठीक ही कहा है कि कभी न सोये साँथरे सपने आई खाट।

कभी नाव पर गाड़ी, कभी गाड़ी पर नाव—अ० कभी किसी का किसी से काम, कभी किसी का किसी से। प्र० कभी तो तुम साइकिल पर चढ़े फिरते थे, आज पंचर हो जाने से उठाये ला रहे हो। सच है कभी नाव पर गाड़ी, कभी गाड़ी पर नाव।

कमाऊ आवै डरता, निखट्टू आवै लड़ता—अ० काम करने वाला व्यक्ति सबसे डरता है और निकम्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे लड़ता है। प्र० रवि रात-दिन काम करता है सो तो घर में सबसे डरता आता है, तुम काम भी नहीं करते और सबको मारते पीटते रहते हो। किसी ने सच ही कहा है कि कमाऊ आवै डरता, निखट्टू आवै लड़ता।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा—अ० जो कर्म करता है वही उसका फल भोगता है। प्र० कल्लू सुनार ने चोरी का माल खरीदा सो पुलिस ने उसी को पकड़ लिया। सच है कर्म प्रधान विश्व करि राखा।

कर्म रेख नहिं मिटै, करै कोई लाखों चतुराई—अ० भाग्य का लिखा नहीं मिटा करता है। प्र० देखो, पंकज परीक्षा में पास होने के लिए अनेक उपाय करता है पर वृथा। हाँ बंधु, क्या आप जानते नहीं कर्म रेख नहीं मिटै, करै कोई लाखों चतुराई।

कर्महीन खेती करै, बर्ध मरै और सूखा परै—अ० अभागा जब कोई कार्य करता है तो उस कार्य के साधन पहले ही नष्ट हो जाते हैं। प्र० अरे, देखा बंधु! मदन लाल ने जैसे-तैसे कपड़े की दूकान खोली पर भाग्यवश उसमें आग लग गई और बचा खुचा चोर उठा ले गये। उस बेचारे पर तो वही कहावत चरितार्थ हो गई कि कर्महीन खेती करै, बर्ध मरै और सूखा परै।

कर्महीन जब जमत है होत सकल जग वाम। छाँह जानि जहँ बैठिये, तहाँ होत है घाम—अ० जब वंश में कलंकी पैदा हो जाता है तो उस वंश के सारा जगत् विरुद्ध हो जाता है। जिनसे सुख की आशा होती है वे ही दुःखदायी हो जाते हैं। प्र० अब क्या कहूँ भय्या, जबसे यह कपूत चन्द्र पैदा हुआ है तभी से सब लोग हमारे खिलाफ हो गए और जो हमारे लिए प्राण निछावर करते थे, वे ही अब हमारे साथ शत्रुता का व्यवहार करते हैं। सुनकर रमाकांत ने कहा, आपने सुना नहीं भाभी कि कर्महीन जब जमत है, होत सकल जग वाम। छाँह जानि जहँ बैठिये, तहाँ होत है वाम।

कर्महीन सागर गये, जहां रतन को ठेर। कर लागत घोंघा भये, लखौ कर्म को फेर—अ० अभागा सागर सोने को भी हाथ डाले तो मिट्टी हो जाता है। प्र० महाराज ने प्रसन्न होकर हरिया को एक गाँव जागीर में दे दिया, पर जबसे वह उसका स्वामी हुआ, धरती ने बीज देना छोड़ दिया। यह तो वही कहावत हुई कि कर्महीन सागर गये, जहाँ रतन को ठेर। कर लागत घोंघा भये, लखौ कर्म को फेर।

कर सेवा खा मेवा—अ० बूढ़ों की सेवा का उत्तम फल होता है। प्र० देखो पंकज, राम और लक्ष्मण अपने माता-पिता के आज्ञाकारी सुसेवक थे, इस कारण वन में भी उनका कल्याण हुआ। सच है, कर सेवा खा मेवा।

कर पानी न मुंह पानी—अ० ऐसा व्यक्ति जो हाथ धोवे न मुंह। प्र० बाबू लाल ऐसा मैला रहता है कि उसकी देह में से दुर्गन्ध आती है। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कर पानी न मुँह पानी।

कर भला हो भला, अंत भले का भला—अ० परोपकारी का हमेशा कल्याण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। प्र० गौरव ने नितिन से कहा, देखो, आशीष सबके दुःख दर्द में सहायक रहता है सो वह मिट्टी में हाथ डालता है तो सोना मिलता है। इस पर नितिन ने उत्तर दिया, क्यों न मिले, जानते नहीं, कर भला हो भला, अंत भले का भला।

करि खेती अरु बइ कचरा—अ० नीच काम में मेहनत करना। प्र० कुछ सुना राधे मोहन व्यापार करने बैठे तो काहे का बीर बहुही था। ठीक है, उनकी वही कहावत है, करि खेती अरु बइ कचरा।

करिये मन की, सुनिये सब की—अ० सब की बात सुन कर जो मन को अच्छा लगे वही करना चाहिए। प्र० मोहन ने सोहन से कहा, बड़े भय्या बैठे-बैठे सबकी बात तो सुन लेते हैं, पर करते वही हैं जो उनके मन को भला लगता है। इस पर सोहन ने जवाब दिया, 'बंधु, जानते हो कि सुनिये सब की करिये मन की।

करै कल्लू, भरै लल्लू—अ० करै कोई भरै कोई। प्र० एक वृक्ष पर एक हंस और एक कौवा साथ-साथ बैठे हुए थे। उसके नीचे एक शिकारी आराम कर रहा था। कौवे ने उस पर बीट कर दी। गुस्से में आकर शिकारी ने तीर छोड़ा। कौवा तो उड़ गया, पर हंस बेचारा मारा गाया। सच है, करै कल्लू, भरै लल्लू।

करै न खेती भरै न दंड, सबसे अच्छे मूसरचंद—अ० जो व्यक्ति कोई काम-धंधा नहीं करता उसे कोई हानि नहीं उठानी पड़ती है। प्र० पंकज ने रामलाल से कहा, हरीराम कोई कार-व्यवहार नहीं करता इसलिए उसे कोई दुःख नहीं उठाना पड़ता। इस पर रामलाल ने उत्तर दिया, जानते नहीं बंधु, करै न खेती भरै न दंड, सबसे अच्छे मूसरचंद।

करैं प्रपंच कहावैं पंच—अ० जो अन्याय करने पर भी न्यायकर्ता कहलाये। प्र० बंधु, गांव वाले महासिंह को पंच बनाकर उनसे न्याय करा लेते थे, पर वे तो बिल्कुल भी बात पर ध्यान न देकर लोगों को चला रहे हैं। उन्होंने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि करैं प्रपंच कहावैं पंच।

करते की विद्या है—अ० जब तक कोई व्यक्ति किसी कार्य को करता रहता है तब तक उसका अभ्यासी रहता है। छोड़ने पर सब भूल जाता है। प्र० जब तक मैं गणित की ट्यूशनें करता रहा, तब तक सब फार्मूले मुझे याद रहे। अब सब भूल गया। सच है, सब करते की विद्या है।

करनी करै, तो क्यों करै, करके क्यों पछिताइ—अ० पहले तो व्यक्ति कोई काम करे ही क्यों और जो कर डाले पछतावै क्यों? प्र० पहले तो तुमने तो सबके साथ बिगाड़ ली अब जब कोई बात नहीं करता तो रात-दिन पछताते क्यों हो? जानते नहीं, करनीकरे तो क्यों करै करके क्यों पछिताइ।

करनी ना करतूत, लड़ने को मजबूत—अ० काम तो कुछ न करे; किन्तु कलेश करने के लिए सदा तैयार रहे। प्र० तुम करते धरते तो कुछ हो नहीं, पर बात-बात पर घरवालों से झगड़ते रहते हो। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ना करतूत, लड़ने को मज़बूत ।

करनी ना ख़ाक की, बात मारे लाख की—अ० झूठी शान बघारना । प्र० श्याम ने रामू से कहा, तुम कमाते नहीं दो पैसे भी और कहते फिरते हो मैं यों कमाता हूँ ओं कमाता हूँ । वास्तव में तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि करनी ना ख़ाक की, बात मारे लाख की ।

करनी ना धरनी नाम कमेरी—अ० गुणों के अनुसार नाम न होना । प्र० संगीता ने नीलू से कहा, देखो बहन, मेरी मौसी की बेटी फोड़ती तो नहीं फली भी, पर नाम धरा है कमेरी । तब नीलू ने उत्तर दिया, अरी, इसमें अचम्भे की क्या बात है ? उसकी तो वही कहावत है कि करनी ना धरनी नाम कमेरी ।

करने को नौकरी, पर सोने को घर—अ० जो व्यक्ति कोई व्यवसाय तो करना चाहे, पर घर छोड़ कर बाहर जाना न चाहे । प्र० तुम चाहते तो हो खेती करना, पर ग्राम से बाहर पैर नहीं देना चाहते । तुम्हारी तो वही कहावत है कि करने को नौकरी, पर सोने को घर ।

कल करे सो आज कर—अ० जो कार्य करना हो शीघ्र कर लो । प्र० किसान रैली पर मैं दिल्ली जाने की इच्छा कर-रहा था, माताजी ने रोक लिया । अब आज तक जाना नहीं हुआ । सुन कर रामू ने कहा कि क्या जानते नहीं, कल करे सो आज कर ।

कल्लर का खेत और कपटी का हेत—अ० ऊसर ज़मीन की खेती ऐसी ही सारहीन होती है जैसे कपटी व्यक्ति की मैत्री । प्र० हरिया ने ऊसर ज़मीन में बीज बोया, जब उसमें कुछ न उगा तो पछताने लगा । उसने तो वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि कल्लर का खेत और कपटी का हेत ।

कल का लीपा देउ बहाय, आज का लीपन देखौ आय—अ० जो कार्य हो चुका हो उसे भूलो और जो करना है उसकी ओर ध्यान दो । प्र० बंधु, मैं कल की घटना पर विचार कर रहा हूँ । कैसी विचित्र घटना थी ! आज का कार्य भी उसी के विचार में पड़ा हुआ है । सुनकर नितिन ने कहा कि यह आपकी भूल है । क्या आपने सुना नहीं, कल का लीपा देउ बहाय, आज का लीपन देखौ आय ।

कल किसने देखी है—अ० कोई भी कार्य कल पर मत छोड़िये । प्र० राधे ने कल बारम्बार बम्बई जाने का प्रयास किया, पर आज शरीर पूरा हो गया । सच है, कल किसने देखी है ।

कल के जोगी पायन जटा—अ० जब छोटा व्यक्ति बड़ी बात कहे । प्र० तुम्हारी आय तो थोड़ी है पर नकल लखपतियों की करते-फिरते हो । तुमने तो वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि कल के जोगी पायन जटा ।

कलाल की दूकान पर दूध भी मदिरा—अ० नीच के प्रसंग से उत्तम भी नीच हो जाते हैं । प्र० महेन्द्र कल एक जेबकतरे के साथ जाने के कारण सब की आँखों में गिर गया । लोग उसे भी जेबकतरा समझने लग गए । सच है, कलाल की दूकान पर दूध भी मदिरा जाना जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित सोहै भाट, खेत सोहै जाट—अ० जिसका काम उसी को साजे। प्र० अरे, सुना रमाकांत, सुनार ने दूकान छोड़ कर ऊँट लादने शुरू किये थे। अंत को एक दिन गौन के नीचे दब गया। तब से सांस के रोग का मरीज हो गया। सच है कवित सोहै भाट, खेत सोहै जाट।

कसाई का कुत्ता—अ० जब कोई मुफ्त-खोरा व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट हो जाए। प्र० आशीष ने नितिन से कहा, देखो मदन कुछ करे न धरे पर कैसा मोटा-ताज़ा होता जा रहा है। इस पर नितिन ने उत्तर दिया, भय्या, क्यों न मोटा हो? जानते नहीं, वह तो कसाई का कुत्ता है।

कसाई की घास को कटड़ा नहीं खा सकता है—अ० निर्दयी सशक्त से सब डरते हैं। प्र० हरीश रात-दिन घर में आराम करता है और उसकी जंगल में एक तिनके की भी हानि नहीं होती है। सच है, कसाई की घास को कटड़ा नहीं खा सकता है।

कसाई के भरोसे शिकरा पले—अ० जो व्यक्ति स्वयं ही किसी वस्तु का लालची हो, वह दूसरों को क्या देगा। प्र० मैंने श्याम के भरोसे पर स्कूल के सामने पुस्तकों की दूकान खोल ली थी। पर अंत को न चली। सुनकर महेन्द्र ने कहा कि चलती कहाँ से, वह आप ला लाकर स्कूल में बेच देता है। कहीं कसाई के भरोसे शिकरा पलते देखा है?

कहँ कुम्भज कहँ सिंधु अपारा, सोखेउ सुयश सकल संसारा—अ० तेजस्वी छोटे होने पर भी बड़े काम करके यशस्वी कहलाते हैं। प्र० उसने तो कल पागल हाथी को वश में करके दिखा दिया। सब देख कर दंग रह गए। सच है, कहँ कुम्भज कहँ सिंधु अपारा, सोखेउ सुयश सकल संसारा।

कहत रहे थोड़े दिन, याद रहे बहुत दिन—अ० थोड़ी देर का दुःख बहुत दिनों तक नहीं भूला जाता है। प्र० चार दिन के ज्वर ने शांति को इतना दुःख दिया कि वह आज तक उसे नहीं भूली। उसने तो वास्तव में वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि कहत रहे थोड़े दिन, याद रहे बहुत दिन।

कहते हैं करते नहीं, मुंह के बड़े लबार। अंतिम धक्के खात हैं साईं के दरबार—अ० झूठे व्यक्ति को नर्क में भी जगह नहीं मिलती है। प्र० आजकल पंकज दिन-भर मारा मारा फिरता है, कोई काम धंधा क्यों नहीं करा देते? सुन कर उत्तर मिला कि कौन उसके मामले में पड़े, वह जो कहता है करता कभी नहीं। इस-लिए उसकी तो वहीं कहावत है कि कहते हैं करते नहीं, मुंह के बड़े लबार। अंतिम धक्के खात हैं साईं के दरबार।

कहना सुगम करना कठिन—अ० विचारना मुश्किल नहीं, पर विचारानुसार काम करना मुश्किल है। प्र० भावना औरों को तो रात-दिन काम करने की युक्तियाँ बताती रहती है, पर जब कल उसी से कहा गया कि करके तो दिखाओ, फिर तो आइ-बाई सब भूल गई। सच है कहना सुगम करना क़ठिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहवैया ते चाहिए सुनवैया बुधिमान—अ० कहने वाले से सुनने वाले की समझ अधिक होनी चाहिए। प्र० कल रामायण की कथा में पंडित जी ने तो उस के रहस्य को कई तरह से वर्णन किया पर सुनने वालों की समझ में नहीं बैठा। तब कमल की ओर से उत्तर मिला कि समझ में बैठता कैसे, जानते नहीं कहवैया ते चाहिए सुनवैया बुधिमान।

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा—अ० इधर-उधर से चीज़ें माँग कर बड़े बनना। प्र० अनिल ने पवन से कहा, देखा बंधु, महेश ने आज यार-दोस्तों के यहाँ से चीजें माँग-माँग कर कैसी दिखावट की है? क्यों नहीं, उसकी तो वही कहावत है, कहीं की ईंट कहीं का रोडा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा।

कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता—अ० जगत की रीत है कि कोई व्यक्ति जिस काम को हमेशा से करता आया हो उस को कहने से नहीं करता है। प्र० वंदना, तुम रोज सितार बजाती हो, आज तो कोई गीत सुनाओ। इस पर वह आनाकानी तो करती रही पर हाथ में सितार ही नहीं लिया। सुन कर रीता ने कहा कि भय्या कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ा करता है।

कहे से कोई कुएँ में नहीं गिरता—अ० किसी के कहने से कोई मुसीबत में नहीं फँसता है। प्र० पुनीत ने लोहे का धधा छेड़ा तो आप, अब जब टोटा आया तो मुनीम जी को दोष लगाने लगा। तुम्हीं बताओ संजय, क्या यह ठीक है? उत्तर मिला, नहीं, किसी के कहे से कोई कुएँ में नहीं गिरता है।

कहैं खेत की सुनैं पैर की—अ० जब बात कुछ की कुछ समझी जाए। प्र० कल स्वामी जी के व्याख्यान में श्रोताओं की विचित्र-सी स्थिति थी। सब उल्टा ही समझ पाए थे। सच है कहैं खेत की सुनै पैर की।

काक न कोयल ह्वै सकै कितनी सिखवै कोय---अ० नीच व्यक्ति लाखों उपाय करने पर भी ऊँचा नहीं हो सकता है। प्र० गुरुकुल में रह कर मोहन ने बहुत कुछ सीखा। गुरु के उपदेशों पर चलने का वचन भी दिया। किन्तु गुरुकुल से आते ही उसने अपनी पुरानी चाल पकड़ ली। सब कुछ सीखा सिखाया उसने ताक पर रख दिया। सच है काक न कोयल ह्वै सकै कितनी सिखवै कोय।

काका काहू के न भये—अ० चाचा से भतीजे को हानि पहुँचती ही है। प्र० भोज को उसके चाचा ने ही चाण्डालों के हाथ मरवाने को भेज दिया था। सच है काका काहू के न भये।

काका की भैंस भतीजे की तोंद—अ० पराये माल पर मौज लूटना। प्र० आजकल तो तुम्हारी पौ बारह हैं बंधु! सेठ जी के माल पर खूब आनन्द लूटा जा रहा है। सच है काका की भैंस भतीजे की तोंद।

काग़ज़ की नाव आज न डूबी कल—अ० बोदी या नकली चीज जल्दी ही ख़त्म हो जाती है। प्र० भीम ने अर्जुन को सम्बोधित करते हुए कहा, बंधु,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को बहुत उत्साहित किया, अन्त में सब मारे गए। इस पर अर्जुन ने उत्तर दिया, बंधु! कहीं कागज़ की नाव भी चली है, आज न डूबी, कल।

काग़ज़ के घोड़े दौड़ाता है—अ० इसका प्रयोग अधिक चिट्ठी-पत्री लिखने वाले के लिए किया जाता है। प्र० रमेश तो हर काम घर बैठे चिट्ठी-पत्री के बल पर ही करना चाहता है। भला ऐसा भी कहीं हुआ है? क्यों नहीं? मुझे ही देख लो। मैं भी काग़ज़ के घोड़े दौड़ाता-दौड़ाता इस पद पर पहुँचा हूँ।

कागा काके धन हरै, कोयल काको देइ—अ० कुपात्र और सुपात्र का अन्तर यहीं से पता चलता है। प्र० वीरेन्द्र को मिष्टभाषी होने के कारण सब चाहते हैं; किन्तु शिव को सब लोग दुर-दुर करते हैं, वह कटुवादी जो ठहरा। सच है कागा काके धन हरै, कोयल काको देइ।

कागा चला हंस की चाल मुश्रा अपनी भी भूला—अ० जब छोटा व्यक्ति बड़े व्यक्तियों की तरह रहने का प्रयास करता है तो वह अपना अस्तित्व भी भूल जाता है। प्र० प्रहलाद दत्त ने भी अपने धनवान मित्रों के रहन-सहन की नकल की। जो कुछ पूँजी पल्ले थी, वह कुछ ही दिनों में ठिकाने लग गई। बाद में रोटियों के भी लाले पड़ने लगे। सच है कागा चला हंस की चाल मुआ अपनी भी भूला।

कागा बोले पड़ गये रौले—अ० जब सवेरे कौवे बोलने लगते हैं तो जनता उठकर बोलती चलती है, जिससे रौला-सा मच जाता है। प्र० बंधु! रात कैसी निस्तब्धता थी; किन्तु सवेरे जब कौवे बोले तो कहीं शंख, कहीं घंटे, कहीं घड़ियाल बजने लगे। हर तरफ हर-हर शिव-शिव की ध्वनि और प्रजा तथा विहंगों के जागने पर कैसा शोर मचा है कि कान पड़ी नहीं सुनाई देती। इस पर मित्र ने उत्तर दिया, सुना नहीं बंधु, कागा बोले पड़ गए रौले।

कागे काग न भिखारी भीख—अ० ऐसा कंजूस व्यक्ति जो किसी का श्राद्ध भी न करे और भिक्षुक को भीख भी न डाले। प्र० महेश, आजकल सब लोगों को श्राद्ध-पक्ष में कौवों को बुलाते सुनता हूँ; किन्तु अविनाश को कभी नहीं सुना और भिक्षुक भी उसे खरी-खोटी कहते हुए जाते हैं। इस पर महेश ने जवाब दिया, बंधु, क्या तुमने सुना नहीं, उसकी तो वही कहावत है कि कागे क़ाग न भिखारी भीख।

काछे काछ नाचे नाच—अ० जैसा रूप बनाये वैसा ही काम भी करे। प्र० देव ऊपर से तो कैसा साधु भेष धारण किए हुए है, पर वैसे मन काला है। किसी के हित की नहीं सोचता। यह अनुचित है। मानव के लिए उचित है कि काछे काछ नाचे नाच।

काजल कजलौठी और फूलों का हार—अ० कुरूप जब सजे-धजे। प्र० कमली रूप में तो आबनूस से कम नहीं, पर श्रृंगार सब से बढ़िया करती है। उसकी तो वही कहावत है, काजल कजलौठी और फूलों का हार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काजल की कोठरी में कैसो हू चतुर जाय, एक रेख काजल की लागि है पै लागि है—अ० दुष्ट के साथ बैठने से कुछ ना कुछ दोष लगता ही है। प्र० रमण जेबकतरों की संगत में बैठता-उठता था। एक दिन पुलिस ने पकड़ लिया। बड़ी कठिनाई से दो दिन तक हवालात की सैर कर छुटकारा पाया। सच है काजल की कोठरी में कैसो हू चतुर जाय, एक रेख काजल की लागि है पै लागि है।

कातक बात कहाँ तक या कातिक बातिक—अ० कार्तिक का दिन इतना छोटा होता है कि बात करते चला जाता है। प्र० आज सवेरे पंकज दो प्रश्न लेकर बैठा, करते-करते सारा दिन बीत गया। सच है, कातक बात कहाँ तक या कातिक बातिक।

कातक सीत लाभा, भादों सीत तापा—अ० कार्तिक मास में छाछ लाभदायक है और भादों मास में पीने से ज्वर चढ़ आता है। प्र० विपिन ने ललित से कहा, बंधु! छोटन भादों के महीने में रोज छाछ पीता था, आज बुखार के मारे आई बाई बोल रहा है। इस पर ललित ने उत्तर दिया, क्या छोटन ने सुना नहीं था, कातक सीत लाभा, भादों सीत तापा।

कान छिदाय, सो गुड़ खाय—अ० जो व्यक्ति दुःख उठाता है सो सुख पाता है। प्र० शीतल ने कैसे-कैसे कष्ट उठाकर यह पद प्राप्त किया, अब आनन्द से जीवन बिता रहा है। सच है कान छिदाय, सो गुड़ खाय।

कान तो कुण्डल नहीं, कुण्डल तो कान नहीं—अ० जब पैसा हुआ तो उसे भोगने वाला कोई नहीं और भोगने वाला हुआ तो पैसा नहीं रहा। प्र० बन्धु, जब चढ़ने वाले नहीं थे तब तो घर में दो-दो घोड़ियाँ बँधी रहीं पर अब जब चढ़ने वाले हुए तो गधा भी नहीं। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया। बन्धु, ठीक है, तुमने सुना नहीं, कान तो कुण्डल नहीं, कुण्डल तो कान नहीं।

कान पर जूं नहीं रेंगती—अ० जो व्यक्ति किसी बात को न सुने। प्र० मैं आशीष को समझाते-समझाते थक गया, पर उसके कानों पर तो जूं तक नहीं रेंगी।

कान पर हाथ रखना—अ० हर काम को करने से बचना। प्र० अब कान पर हाथ रखने से नहीं चलेगा। मेरे साथ ज़िन्दगी काटनी है तो जैसा मैं कहूँ वैसा करते चलो, वरना अपना रास्ता नापो।

कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन—अ० जो चीज़ जिस काम के लिए ईश्वर ने बनायी है, वही उस काम को ठीक तरह से कर सकती है। प्र० रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहा, आज हनुमान से अनुष्ठान में मन्त्र उच्चारण कराये जायें तो कैसा हो? लक्ष्मण ने उत्तर दिया, महाराज! यह काम ब्राह्मण का है, क्षत्रिय का काम युद्ध करना है। फिर बनमेल बात किस तरह हो सकती है? आप जानते तो हैं कि कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन

काना टट्टू, बुद्धू नौकर दोनों दुखदाई—अ० काना घोड़ा और बेवकूफ नौकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों ही दुख देने वाले होते हैं। प्र० कल मुझे ज़रूरी काम से बड़े गाँव तक जाना था सो पटवारी जी से उनका टट्टू माँग लाया। वह काना था। रास्ते में एक पेड़ से रगड़ दिया सो उसका फल भोग रहा हूँ। सुनने वाले ने हँसकर कहा कि तुमने सुना नहीं था, काना टट्टू, बुद्धू नफ़र दोनों दुखदाई।

काना मुझको भाय नहीं, काने बिन व्यौसाय नहीं—अ० जो वस्तु अच्छी भी न लगे और छोड़ी भी न जाये। प्र० महेन्द्र के पास उसका ममेरा भाई रहता है। आर्थिक संकट के कारण चाहता है कि किसी तरह टल जाए पर माँ के डर से कुछ कह भी नहीं पाता है। उसकी तो वही कहावत है कि काना मुझको भाय नहीं, काने बिन व्यौसाय नहीं।

कानी अपने मनें सुहानी—अ० मूर्ख अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझता है। प्र० तुमने हमेशा हर काम में नुकसान ही उठाया है फिर भी किसी की सीख मानने के लिए तैयार नहीं। सच है कानी अपने मनें सुहानी।

कानी आँख देखै थौरा, दूखै तो मानौ पक्यौ फोरा—अ० जब कोई निकम्मा व्यक्ति कोई काम न करे और रात-दिन क्लेश करे। प्र० वैसे तो अतुल तुम फली नहीं फोड़ते पर परिवार को अधर उठाये रहते हो। सच है कानी आँख देखै थोरा, दूखै तो मानो पक्यौ फोरा।

कानी के व्याह को सौ जोखों—अ० जिस कार्य के होने की शंका हो, उसमें अनेक विघ्न उठते हैं। प्र० गोपीचन्द अपने मकान का सौदा कर रहा था कि इतने में लेने वाले का कहीं से मित्र आ टपका। उसने घर को भूतों का डेरा बता दिया। पूछने पर गोपीचंद से कुछ कहते नहीं बना। सौदा टूट गया। सच है कानी के व्याह को सौ जोखों।

कानी कै कुनक गिरा—अ० एक ही वस्तु थी उसी को निकम्मी कर डाले। प्र० बेचारे रामू की एक टाँग तो पहले ही एक्सीडेंट में चली गई थी, कल दूसरी में भी चोट लगा बैठा। अब चलने फिरने से भी बेकार है। सच है कानी कै कुनक गिरा।

कानी को काना प्यारा, रानी को राना प्यारा—अ० सबको अपनी चीज प्यारी होती है। प्र० सविता अन्धी है फिर भी उसकी अपाहिज माता उतना ही प्यार करती है, जितना अमिता की माता अपनी सुन्दर बेटी को करती है। सच है कानी को काना प्यारा, रानी को राना प्यारा।

काने के एक रग सिवा होती है—अ० काने व्यक्ति में एक गुण ज्यादा होता है। प्र० कल पंकज सजधज कर अपने काने नौकर शिवकुमार के साथ बाजार जाने के लिए निकला। रास्ते में शिवकुमार ने बन्दरों को छेड़ दिया। खुद तो किसी तरह उनके चंगुल से निकल गया पर पंकज को बन्दरों ने चिढ़कर तंग कर डाला। उसके कपड़े फाड़ दिए और पैर में काट भी खाया। सच है काने के एक रग सिवा होती है।

काने चोट कलौंडे भेट—अ० चोट पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोट ज़रूर लगती है और जिसका देना होता है, उससे छिपने पर भी ज़रूर मेल होता है। प्र० कई दिन हुए गोपाल के पैर में कील घुस गई थी, ठीक भी न होने पाया था कि आज उसी पैर पर बाँट गिर पड़ा। बेचारा पैर पकड़कर बैठ गया। सच है काने चोट कलौंडे भेट।

काने पांडे पालागन—अ० आदर और बिरादर दोनों एक साथ किए जाएँ। प्र० अजी लंगड़दीन साहब इधर पधारिये। इतना सुनते ही महेश आग-बबूला हो उठा। सच है, काने पांडे पालागन।

काटे कटै न मारे मरै—अ० जब किसी से किसी तरह भी पीछा न छूटे। प्र० बन्धु! कुछ दिन मैंने भगवाना के काले धन्धे में साथ क्या दे दिया, जी का जंजाल बना लिया। किसी तरह पीछा ही नहीं छोड़ना चाहता और ऊपर से जानमाल की धमकी भी देता है। सुनकर मोहनलाल ने उत्तर दिया, तुम्हारा ग़लत आदमी के साथ पाला पड़ गया है। उसकी तो वही कहावत है, काटे कटै न मारे मरै।

काटे पै कदली फलै—अ० दुष्ट व्यक्ति डाँटने पर ही काम करता है। प्र० जब तक श्रीराम ने सागर के किनारे बैठकर उससे विनती की, तब तक उसने उनकी एक न मानी। किन्तु जब उन्होंने उसे चुप देखकर आग्नेयास्त्र ताना तो हाथ जोड़कर आगे आ गया। सच है काटे पै कदली फलै।

काटे वार नाम तलवार का—अ० छोटे व्यक्ति काम करें और बड़ों का नाम हो। प्र० इस बार हमारे विद्यालय का परिणाम बहुत अच्छा रहा है। प्रधानाचार्य बड़े ही परिश्रमी हैं। सुनकर किसी ने प्रबन्धक महोदय को जवाब दिया, ठीक कह रहे हो भय्या, काटे वार नाम तलवार का।

काटो तो ख़ून नहीं—अ० जब व्यक्ति डर के मारे सूख जाए। प्र० वैसे तो बहुत शेखी बघार रहे थे। रीछ को देखते ही डर के मारे ऐसे हो गए मानो काटो तो खून नहीं।

काठ का उल्लू—अ० महामूर्ख। प्र० मैंने प्रदीप को बहुतेरे सवाल समझाये पर उसकी समझ में एक नहीं बैठा। वह तो निरा काठ का उल्लू निकला।

काठ का घोड़ा नहीं चलता—अ० आलसी व्यक्ति से काम नहीं होता है। प्र० कल कुछ कागज़ उसे नकल करने के लिए दिये थे पर उसने एक अक्षर भी नहीं लिखा। उसने तो वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि काठ का घोड़ा नहीं चलता।

काठ का घोड़ा लोहे की ज़ीन, ता पर बैठे लंगड़दीन—अ० सभी वस्तुएँ निकम्मी मिलना। प्र० श्रेय ने श्रुति से कहा, राजन ने कुत्ते के दो पिल्ले हल में जोड़े और सूत के नाड़े और कागज़ का हल बनाकर खेत जोतने की तैयारी की है। इस पर श्रुति ने जवाब दिया, ठीक कह रहे हो भय्या! यह तो वही कहावत हुई कि काठ का घोड़ा लोहे की ज़ीन, ता पर बैठे लंगड़दीन।

काठ की तलवार है—अ० जब अयोग्य व्यक्ति को किसी काम के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियुक्त किया जाए। प्र० रायसाहब ने अपने सेक्रेटरी को छंगू से ज़मीन खाली कराने के लिए भेजा है। देखो, क्या करके आता है ? सुनकर चन्दू बोला, अरे, तुम जोरावरसिंह की बात कर रहे हो वह क्या करेगा, वह तो काठ की तलवार है।

काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती—अ० धोखे से काम सिर्फ़ एक बार ही होता है। प्र० नलिन कुछ काम-धन्धा करने के बहाने पहले अपने मित्र से पाँच सौ रुपये ले आया था सो वे तो जुए में ठिकाने लगा दिए। कुछ दिन बाद फिर कुछ लेने के लिए मित्र के पास गया; किन्तु उसने कौड़ी भी नहीं दी। सच है काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।

काढ़ै नीर पताल ते जो घट गुनयुत होय—अ० गुणवान दुष्कर से दुष्कर कार्य कर लेता है। प्र० तुम्हारे भाई ने अपना कठिन से कठिन काम कैसे चातुर्य से निकाला था और एक तुम हो जो छोटा-सा काम भी नहीं कर पाये। सच है काढ़ै नीर पताल ते जो घट गुनयुत होय।

का पर करूँ सिंगार पिया मोर आंधर—अ० जब सेवक के काम की स्वामी कद्र न करे। प्र० बेचारा प्रवीण रात-दिन पिलता है फिर भी सेठ जी उसके काम की कद्र नहीं करते। उस बेचारे पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है, का पर करूँ सिंगार, पिया मोर आंधर।

काबुल गये मुग़ल बन आए बोलन लागे बानी। आब आब कर मर गये सिरहाने होते पानी—अ० जब कोई व्यक्ति जिनके बीच रहता हो और उनकी भाषा न जानता हो। प्र० अतुल बीस वर्ष अफ़गानिस्तान में क्या रहा, वहाँ जाकर अपनी बोली भूल गया। जब उसको प्राणघातक ज्वर आया तो पानी उसके पास ही रखा था किन्तु वह पानी न कहकर आब-आब कहता रहा। न उसकी बात किसी की समझ में बैठी और न किसी ने उसे पानी दिया। अन्त को प्यासा ही मर गया। सच है काबुल गये मुग़ल बन आये बोलन लागे बानी। आब-आब कर मर गये सिरहाने होते पानी।

काम करेगी बेटी, सुख से खायेगी रोटी—अ० परिश्रम करने से ज़िन्दगी आनन्द से कट जाती है। प्र० हरिया ने अपने दोनों बेटों को लेकर खूब श्रम किया। भगवान ने उसे श्रम का फल दिया। कृषि पंडित की उपाधि से सुशोभित किया गया। उसका जीवन सुख से कटने लग गया। उसका सपना साकार हो गया। उस पर वही कहावत चरितार्थ हो गई, काम करेगी बेटी, सुख से खायेगी रोटी।

काम करै नथ वाली, पकड़ी जाय चिरकुट वाली—अ० धनवान का दोष निर्धन पर डाला जाये। प्र० बुद्धू और कल्लन पास-पास रहते थे। बुद्धू ने ग़लत कामों से चार पैसे इकट्ठे कर लिए थे सो मौहल्ले में कद्र पाने लग गया था। कल्लन बेचारा जो रोज़ कमाता उसी से बच्चों का पेट पालता था। एक दिन बुद्धू ने पड़ोस में ही हाथ साफ़ कर दिया। रपट लिखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पुलिस ने कल्लन को धर दबाया। सच है काम करें नथ वाली पकड़ी जाय चिरकुट वाली।

काम का न काज का ढाई सेर नाज का—अ० काम कुछ करे नहीं और खाने को सबसे अधिक माँगे। प्र० धनीराम सारे दिन पड़ा-पड़ा खाट तोड़ता है और करता धरता कुछ भी नहीं। फिर खाने को भी सबसे अधिक चाहिए। सच है उसकी वही कहावत है, काम का न काज का, ढाई सेर नाज का।

काम को काम सिखाता है—अ० जो व्यक्ति काम करता रहता है वह उसमें चतुर हो जाता है। प्र० बसन्त को पहले कुछ आता-जाता नहीं था; किन्तु अब नक़ल करते-करते अच्छा लिखने लग गया। सच है काम को काम सिखाता है।

काम जु आवै कामरी, का लै करूँ कमाँच—अ० जब अपनी चीज़ से काम निकल सकता हो तो दूसरे की बढ़िया चीज़ लेने की क्या ज़रूरत है ? प्र० तुलसीदास जी चित्रकूट पर बैठे अवधी भाषा में रामायण लिख रहे थे। तभी एक साधु वहाँ से गुजरे और तुलसीदास से बोले कि तुम रामायण संस्कृत में क्यों नहीं लिखते ? इस पर तुलसीदास ने कहा कि बन्धु, जानते नहीं, काम जु आवै कामरी, का लै करूँ कमांच।

काम प्यारा है चाम प्यारा नहीं—अ० जब कोई सेवक इच्छानुसार काम न करे। प्र० बनवारी काम तो ठीक तरह करता नहीं था और वेतन सबसे पहले माँगता था। सो कल उसकी छुट्टी कर दी। हमें तो बन्धु काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं।

काम पड़े तब काजी नहीं तो पाजी—अ० जब किसी व्यक्ति का किसी से काम पड़ता है तो वह उसका आदर करता है, अन्यथा बात भी नहीं पूछता। प्र० जब तक श्याम का मुझसे काम निकलता रहा तब तक आठों पहर यहीं बना रहा। अब मिलने पर भी बात नहीं करता। उसने तो वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि काम पड़े तब काज़ी नहीं तो पाजी।

काम पड़े ही जानिये जो नर जैसो होय—अ० काम पड़ने पर ही भले बुरे की पहचान हो पाती है। प्र० मैंने बूटासिंह को सज्जन समझकर उसकी हर प्रकार से सहायता की। पर कल जब मेरा एक काम पड़ा तो उसने दो टूक जवाब दे दिया। उसकी असलियत मेरे सामने आ गई। सच है काम पड़े ही जानिये जो नर जैसो होय।

काया कष्ट है जान जोखों नहीं—अ० अधिक रोगी के लिए ज्योतिषी कहा करते हैं। प्र० प्रमोद को पन्द्रह दिन नर्सिंग होम में गये हो गये थे। उसका स्वास्थ्य दिन-दिन गिरता ही जा रहा था। सारा परिवार चिन्तित था। उसकी माता ने उसकी पत्नी कल ज्योतिषी को दिखाई थी। उसने पत्नी देखकर कहा था कि काया कष्ट है जान जोखों नहीं।

काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा—अ० कपटी से वह व्यक्ति अच्छा जिसकी देह में कोई रोग हो। प्र० अतुल ने संकल्प से कहा, बन्धु ! अखिलेश रोज बीमार रहने लगा है अब उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ छोड़कर दुर्जनसिंह के साथ खेला करेंगे। इस पर संकल्प ने कहा, कभी नहीं, वह मन का काला है, उससे दूर रहना ही अच्छा है। जानते नहीं, काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा।

काया माया का क्या भरोसा—अ० पैसा और काया दोनों ही क्षण भंगुर हैं। इनका गर्व नहीं करना चाहिए। प्र० राकेश धन के गर्व में किसी को कुछ नहीं समझता था। विधाता ने उसका गर्व चूर-चूर कर दिया। पैसा पास न रहा। ऐसी स्थिति में अब कोई भी उसकी बात नहीं पूछता है। सच है काया माया का क्या भरोसा ?

काया राखे धर्म पूंजी राखे बज—अ० देह के शुद्ध रहने से सब कुछ हो सकता है और पूँजी बनी रहने से व्यापार चलता रहता है। प्र० विष्णु ने हरीनाथ से कहा, श्याम ने कुकर्मों में पड़कर अपनी देह खो दी अब उससे कोई काम नहीं होता है। सुनकर हरीनाथ ने उत्तर दिया, बन्धु, जानते नहीं, काया राखे धर्म पूंजी राखे बंज।

कारी भली न सेत, मारौ दारिन एकहि खेत—अ० भेस से कोई अन्तर नहीं पड़ता है। जो स्वभाव से खोटे होते हैं भेस बदलने पर भी खोटे होते हैं। प्र० भूषण ने मनीष से कहा, बंधु, एक बार पवन और विनीत ने एक लड़के का पीछा किया। विनीत गौर वर्ण और सुन्दर था। जब उस लड़के के साथी आ गए और उन दोनों को पकड़ लिया तो एक ने कहा कि भाई यह सुन्दर-सा लड़का तो सीधा जान पड़ता है, इसे छोड़ दो। तभी दूसरे ने कहा कि नहीं, तुमने सुना होगा कारी भली न सेत, मारौ दारिन एकहि खेत।

काल का मारा सब जग हारा—अ० मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती है। प्र० प्रमोद कैसा हृष्ट-पुष्ट युवक था ? दो दिन में ही चल बसा। सच है काल का मारा सब जग हारा।

काल की कुटिल गति—अ० समय-चक्र का हाल किसी से जाना नहीं जाता। प्र० आजकल कुछ ऐसा दिनों का फेर आया है कि राधेश्याम जिस काम को हाथ लगाता है, वही उल्टा होता है। सच है काल की कुटिल गति।

काल गया पर कहावत रह गई—अ० वक्त बीत गया पर बात रह गई। प्र० कैकई ने श्रीराम को वन भेजा। वह समय तो गया पर कैकई का कलंक न गया। सच है काल गया पर कहावत रह गई।

काल टले पर कलाल न टले—अ० मदिरापान करने वाला व्यक्ति मृत्यु का भी डर न मानकर कलाल के यहाँ पहुँचकर मदिर-पान करता है। प्र० बंधु, कलुवा मरने के घाट पर है पर मदिरा पीना फिर भी नहीं छोड़ता। उसने तो वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि काल टले पर कलाल न टले।

काल न छोड़े राजा, न छोड़े रंक या काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान—अ० मृत्यु के लिए गरीब अमीर सब एक समान हैं। प्र० सेठ जी के उपचार में लाखों रुपये खर्च किए गए। विदेश से डाक्टरों को बुलाया गया। पर अन्त को मर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए । सच है काल न छोड़े राजा, न छोड़े रंक या काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान ।

काल परे पै कोदों मीठा—अ० भूख में पत्थर भी पापड़ लगते हैं । प्र० बंधु, कल जब हम यात्रा से आ रहे थे तो संध्या समय तक खाने को कुछ न मिला, दिन भर ऐसे ही बीता । संध्या समय गुड़ चने मिले पर उस वक्त वे भी बहुत अच्छे लगे । सच है काल परे पै कोदों मीठा ।

काला अक्षर भैंस समान—अ० जो पढ़ना लिखना बिल्कुल न जानता हो । प्र० तुम्हें तो कुछ भी नहीं आता जाता, तुम्हारे लिए तो काला अक्षर भैंस समान है ।

काला ब्राह्मण गोरा शूद्र, इनसे डरपैं ब्रह्मा रुद्र—अ० खोटों में विधाता पहचान के पहले ही चिह्न बना देता है । प्र० बंधु, चेता चमार रंग का तो गोरा-चिट्टा चाँदना है पर वैसे बड़ा खोटा है । इस पर संजय को उत्तर मिला, बंधु, जानते नहीं, काला ब्राह्मण गोरा शूद्र, इनसे डरपैं ब्रह्मा रुद्र ।

काली गाय श्वेत बछड़ा—अ० कुपात्र के सुपात्र का पैदा होना । प्र० श्यामसुन्दर तो महाकुटिल है पर उसकी सन्तान कैसी सुपात्र हुई है । सच है काली गाय श्वेत बछड़ा ।

काली घटा डरावनी, सेत भरेगी खेत—अ० वास्तविक और बनावटी वस्तुओं में बहुत अन्तर होता है । प्र० वैसे तो दीपक योद्धाओं का-सा रूप बनाये फिरता है । पर जब वक्त पड़ा तो हाय-हुल्ला ही मचाकर रह गया और पतले-दुबले संजय ने वो हाथ दिखाये कि लोग चकित ही रह गए । सच है, काली घटा डरावनी, सेत भरेगी खेत ।

काले का काटा पानी नहीं माँगता—अ० दुष्ट व्यक्ति अपनी सम्मति से दूसरे को जड़ से खो देता है । प्र० बन्धु ! दुष्ट पवन ने शिव को ठगों की संगति में डालकर नष्ट करा दिया । सच है, काले का काटा पानी नहीं माँगता ।

काले के आगे चिराग़ नहीं जलता—अ० शक्तिशाली के आगे सब भाग जाते हैं । प्र० तुमने देखा बंधु, महादेव कैसा हम लोगों को डरा धमका लेता था किन्तु जब सुलतान सिंह के सामने आया तो उसने उसके आगे सिर नीचा कर लिया और भागता ही नज़र आया । सच है काले के आगे चिराग़ नहीं जलता ।

काले सिर की जो करै सो थोरा—अ० औरत क्या नहीं कर सकती है, वह हरेक काम कर सकती है । प्र० कैकेई ने राम वनवास कराकर कैसा उपद्रव मचाया । सच है, काले सिर की जो करै सो थोरा ।

का वर्षा जब कृषी सुखाने—अ० वक्त के बाद किसी काम का होना व्यर्थ है । प्र० जब परीक्षा शुरू हुए आधा घंटा बीत गया तो चन्द्र परीक्षा हाल में पहुँचा । परीक्षा अधिकारी ने उसे बैठने की अनुमति नहीं दी । बेचारे का साल मारा गया । सच है, का वर्षा जब कृषि सुखाने ।

कासा दीजै बासा न दीजै—अ० जिसे नहीं जानते उसे भोजन तो करा दो, पर घर पर मत ठहराओ । प्र० बंधु, मेरे घर पर एक दिन एक मेहमान आया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने उसे भोजन कराकर एक कमरे में सुला दिया। सवेरे उठकर देखा तो न मेहमान था और न बिस्तर। सच है कासा दीजै बासा न दीजै।

कासा भर खाना आशा भर निद्रा—अ० सब तरह से सुखी होना। प्र० मैं तो सदा खुश रहता हूँ और अचिन्तित रहता हूँ। सच पूछो तो मेरी वही कहावत है, कासा भर खाना आशा भर निद्रा।

किस की मां ने धोंसा खाया—अ० ऐसा कौन शक्तिशाली है जो मेरे सामने आवै? प्र० रंजन को एक दिन कई व्यक्तियों ने घेर लिया। तभी मैं भी पहुँच गया। मुझे देख कर रंजन कहने लगा कि भय्या ये मुझे मारेंगे। सुन कर मैंने उत्तर दिया कि घबरा मत, किसकी माँ ने धोंसा खाया है?

किस गली की मूली है—अ० जिस व्यक्ति की कुछ भी इज्जत न हो। प्र० श्याम के यहाँ आज सत्संग है, पता नहीं उसने केवल को बुलाया है या नहीं। हरी ने कहा। प्रकाश ने उत्तर दिया, तुमने किस का नाम ले लिया बंधु। उसे कौन बुलाता है? वह किस गली की मूली है?

किस विर्ते पै तत्ता पानी—अ० जो कोई व्यक्ति अपनी वास्तविकता से अधिक की इच्छा करता है। प्र० वंधु, मेरा नौकर तीसरे दिन घर बैठा रहता है और काम भी ऐसा ही करता है। उसने तो वही कहावत चरितार्थ करके दिखा दी कि किस विर्ते पै तत्ता पानी।

किसी का अवा बिगड़े इनका खुदा ना बिगड़ा—अ० जिस कुल में सभी लोग खोटे हों। प्र० महेश के घर में तो छोटे से लेकर बड़े तक सभी क्रूर स्वभाव के हैं। सच है, किसी का अवा बिगड़े इनका तो खुदा ना बिगड़ा है।

किसी का घर जले कोई तापै—अ० जब कोई व्यक्ति दूसरे की हानि से फायदा उठाये। प्र० वंधु! प्राण के घर की चोरी का माल चोर राजीव के घर में डाल गए, अब राजीव उसकी ओर देख कर हँसता है। सच है, किसी का घर जले कोई तापै।

किसी के पौ बारह किसी के तीन माने—अ० किसी को हानि उठानी पड़े और किसी को महान् लाभ हो। प्र० राम और श्याम के खेत पास-पास हैं। दोनों ने एक साथ ही मटर वोई। राम के खेत में ओले पड़ गए और श्याम का खेत ऐसा हुआ कि घर भर गया। सच है, किसी के पौ बारह किसी के तीन माने।

किसी को बैंगन पच किसी को कुपच—अ० एक ही वस्तु के भिन्न-भिन्न गुण होना। प्र० पंकज स्मगलिंग के धंधे में वन गया। उसे देखकर पवन ने भी हाथ डाला। पहली ही बार में माल पकड़ा गया। जो पास में था लाभ के लालच में वह भी चला गया और परेशानी अलग से भुगतनी पड़ी। सच है किसी को बैंगन पच किसी को कुपच।

किसी ने यह भी नहीं पूछा कि तुम्हारे मुंह में कै दाँत हैं—अ० जब किसी व्यक्ति के दुःख में कोई भी सहायक न हो। प्र० मैंने एक सप्ताह खटिया तोड़ी, पर कोई बात पूछने भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया, वैसे सारे दिन यहीं पसरे रहते थे। उन्होंने वही कहावत चरितार्थ कर दी कि किसी ने यह भी नहीं पूछा कि तुम्हारे मुँह में कै दाँत हैं।

कीजे कहा पयोधिकों जाते प्यास न जाय—अ० उस धनाढ्य का कोई क्या करे, जिससे किसी को लाभ न पहुँचे? प्र० हरलाल धनवान होते हुए भी किसी भिक्षुक को भीख नहीं देता है। सच है, कीजे कहा पयोधिकों जाते प्यास न जाय।

कीया चाहे चाकरी, सोया चाहे घर—अ० दो काम एक साथ नहीं हो सकते हैं। प्र० पंडित जी ने लाला जी के यहाँ नौकरी तो कर ली, पर घर से बाहर जाने में लाज करते हैं। यह तो वही कहावत हुई कि कीया चाहे चाकरी, सोया चाहे घर।

कुआँ बेचा है कुंए का पानी नहीं—अ० जब कोई व्यक्ति अधर्म से झगड़ा उठाये। प्र० रहीम ने अपनी ज़मीन अहमद को बेच दी। जब वह उस पर के पेड़ काटने लगा तो उसने कहा कि अहमद मियाँ यह क्या करते हो? उसने जवाब दिया कि पेड़ मेरे हैं, काटता हूँ। इस पर रहीम बोला कि मैंने ज़मीन बेची है पेड़ नहीं। तब अहमद कह उठा कि यह तो वही बात हुई कि कुआँ बेचा है कुएँ का पानी नहीं।

कुंए का ब्याह गीत गावै मसजिद का—अ० बिना मौके की बात करना। प्र० बंधु, कल हमारे यहाँ हवन था। उस समय जो भजनीक आया था, उससे भजन सुनाने के लिए कहा गया तो वह रसिया सुनाने लगा। इस पर सभी उपस्थित लोगों ने कहा कि भजनीक महोदय आपने तो वही कहावत कर दी कि कुएँ का ब्याह गीत गावै मसज़िद का।

कुंए की मिट्टी कुंए को लग जाती है—अ० जिस वस्तु की कमाई हो वह उसी में लग जाती है। प्र० बंधु! मेरी आय को देखकर सब यही सोचते हैं कि न जाने मेरे पास कितना रुपया है! वे यह नहीं जानते कि कुँए की मिट्टी कुँए को लग जाती है।

कुंए की मेंढकी करे सिंधु की बात—अ० जब कोई छोटा व्यक्ति बड़ी-बड़ी बातें बनावे। प्र० सोहन के पूर्वजों ने तो सदा माँग-माँग कर पेट भरा है, पर अब वह लखपतियों की सी डींगे मारता है। उसकी तो वही कहावत है कि कुँए की मेंढकी करे सिंधु की बात।

कुओं में जाल डलवा दिये—अ० जब कोई व्यक्ति बहुत ढूँढ़ने पर मिले। प्र० कल तुम्हें भूषण बहुत खोजता फिरा। कहता था कि उनके लिए मैंने कुओं में जाल डलवा दिए हैं।

कुंजड़ी अपने बेरों को खट्टे नहीं बताती—अ० कोई व्यक्ति अपनी चीज़ को बुरी नहीं कहता है। प्र० बंधु! गुलाटी साहब ने कोट का कपड़ा बड़ी बढ़ाई करके दिया था पर गला हुआ निकला। इस पर सतीश ने जवाब दिया कि तुमने पढ़ा नहीं, कुँजड़ी अपने बेरों को खट्टे नहीं बताती है।

कुचाल संग हांसी, जीव-जान की फाँसी—अ० दुष्ट के साथ हँसी करने से मनुष्य को दुःख होता है। प्र० भोले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कुप्रवृत्ति को तो तुम अच्छी तरह जानते ही हो। शंकर उसे एक दो वात हँसी की कह वैठा। इस पर उसने चिढ़ कर दो चपत शंकर को लगा दी। सच है, कुचाल संग हाँसी, जीव-जान की फांसी।

कुछ कमान झुकै, कुछ गोशा—अ० जब किसी हिसाब को निबटाना हो तो दोनों ही को थोड़ा-थोड़ा दबना पड़ जाता है। प्र० महेश और सतीश ने साझे का व्यापार किया था। कुछ दिनों के वाद दोनों में बिगड़ गई। व्यापार ख़त्म हो गया पर हिसाब न हो सका। उसका झगड़ा काफी दिनों तक चलता रहा। अंत में दोनों ने कल वैठकर आपसी छूट-छुटाव करके उसे निबटा लिया। सच है, कुछ कमान झुकै, कुछ गोशा।

कुछ खोकर ही सीखते हैं—अ० विना ठोकर लगे इंसान की वुद्धि नहीं सुधरती है। प्र० यतीन्द्र को वहुत समझाया कि वुरे लड़कों की संगति में उठा वैठा न करे, पर उसने एक न मानी। अव जब परीक्षा में सव से कम अंक आये तो सव का साथ छोड़ कर पढ़ाई में जुट गया। सच है, कुछ खोकर ही सीखते हैं।

कुछ तुम समझे कुछ हम समझे—अ० एक दूसरे के मन की वात को जान लेना। प्र० कल राम और श्याम एक गेंद को धोखे से लेना चाहते थे। दोनों ही अपनी-अपनी घात में थे। जब दोनों को ही एक दूसरे का आन्तरिक भाव खुल गया तो हँस पड़े और एक दूसरे से मिल कर चले आए। कहा, कुछ तुम समझे कुछ हम समझे।

कुछ तो खरबूजा मीठा कुछ ऊपर से कंद—अ० जब कभी-कभी अच्छी वात की अधिकता हो। प्र० कल रवि को वी० ए० में उत्तीर्ण होने की खबर मिली। साथ ही यह भी पता लगा कि डी० सी० एम० की ओर से नौकरी का ऑफर भी है। फिर क्या, उसके घर में आनन्द की सीमा न रही। सच है, कुछ तो खरबूजा मीठा कुछ ऊपर से कंद।

कुछ तो बावली कुछ भूतों खदेड़ी—अ० विलल्ली महिला के लिए ऐसा कहा जाता है। प्र० रतन की पत्नी प्रिया वहुत ही सीधी है और कुछ काम-काज भी ऐसा ही जानती है, इसलिए सास और ननद उसके पीछे पड़ी रहती हैं। अन्त में दुःखी होकर घर छोड़ गई। वेचारी क्या करती? उसकी वही कहावत हुई, कुछ तो वावली कुछ भूतों खदेड़ी।

कुछ दाल में काला है—अ० जहाँ किसी काम में सन्देह उत्पन्न हो। प्र० राम और श्याम एक जंगल में से गुजर रहे थे। वहाँ अचानक राम ने एक थाल में अच्छे-अच्छे पकवान परोसे देखे। उन्हें देखकर उसका जी ललचाया। तभी श्याम ने कहा कि इन्हें छूना मत। जंगल में पकवानों का होना बताता है कि कुछ दाल में काला है।

कुछ वसन्त की भी खबर है—अ० जब किसी व्यक्ति को किसी कार्य के विषय में, जिसका उससे सम्बन्ध हो, कुछ भी ज्ञान न हो। प्र० चन्द्रकिशोर पर एक दुष्ट ने एक अभियोग चला दिया, पर उसे उसके विषय में कुछ भी मालूम नहीं था। कुछ दिन वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका एक मित्र मिला, पूछा, तुम्हें कुछ वसन्त की भी ख़बर है ! तुम्हारे ऊपर अभियोग चला दिया गया है ।

कुछ लोहा खोटा कुछ लुहार—अ० जब दोनों ही ओर के व्यक्तियों में दोष हो । प्र० कल कलावती से एक पत्र लिखने के लिए उसके पति ने कहा । कुछ तो कलावती को लिखना ही नहीं आता था, फिर लिखाने वाला भी ऐसा ही था । बस लिखे पत्र को देखकर हँसी आती थी । सच है, कुछ लोहा खोटा कुछ लुहार ।

कुछ स्वार्थी कुछ परमार्थी—अ० जब किसी की आय का कुछ भाग दान में जाता हो और कुछ गृहस्थ कार्य में । प्र० बन्धु, तुम्हारी कमाई कैसी है ? उत्तर मिला कि आधी दान में और आधी घर गृहस्थी में उठती है । इसलिए मेरी कमाई कुछ स्वार्थी और कुछ परमार्थी है ।

कुतिया चोरों मिल गई अब को पहरा देय—अ० जब रखवाला ही चोरी कराने लग जाए तो फिर माल को कौन बचाये । प्र० विष्णु के घर जो नौकर रहता था, उसने एक चोर को घर का सब भेद बता दिया और किसी तरह की कोई बात प्रगट नहीं की । चोर मौका देखकर आसानी से चोरी कर ले गया और वह जागता हुआ भी सोया-सा पड़ा रहा । जब भेद खुला तो पड़ोसियों ने कहा कि कुतिया चोरों मिल गई अब को पहरा देय ।

कुत्ता खाय तो सवा मन खाय, नहिं तो दिया चाट रहि जाय—अ० या तो कोई काम करे ही नहीं या करे तो पूरा साका ही करे । प्र० सोहन को कभी किसी ने लड़ते-भिड़ते नहीं देखा था, पर कल ऐसा लड़ा कि कई के सिर रंग दिये । सच है, कुत्ता खाय तो सवा मन खाय, नहिं तो दिया चाट रहि जाय ।

कुत्ता घसीटी में पड़ना—अ० जब कोई व्यक्ति किसी अप्रतिष्ठा के काम में फँस जाये । प्र० ललित ने मुंशी की जगह के लिए अर्जी दी थी; किन्तु कोई स्थान रिक्त न होने के कारण उसे दफ्तरी का काम दे दिया गया । इस पर उसके दोस्तों ने कहा कि तुम किस कुत्ता घसीटी में पड़ गए ।

कुत्ता घास खाये तो सभी पाल लें— अ० अगर खर्च का डर न हो तो सभी धूम-धाम से रहने लग जाएँ । प्र० प्रेमशंकर ने रईस पड़ोसी का रहन-सहन देखकर एक मोटरगाड़ी मोल ले ली; किन्तु जब खर्च बढ़ने लगा तो उधार लेने तक की नौबत आ गई । उधार भी कब तक मिलता ? अन्त में मोटर गाड़ी बेच कर जान छुड़ाई और साधारण चाल पर आ गया । उस पर तो वही कहावत हुई कि कुत्ता घास खाये तो सभी पाल लें ।

कुत्ता चौक चढ़ाए, पर अपनी चाटन आए—अ० नीच व्यक्ति की कितनी भी इज्जत की जाए पर वह अपने नीच स्वभाव को नहीं छोड़ता है । प्र० अपनी सुन्दरता के कारण जुलेखा नवाब साहब की बेगम बन गई थी । वहाँ उसे भाँति-भाँति के बढ़िया पकवान खाने को मिलते थे । जब उसका मन उनसे न भरा तो एक दिन छिप कर अपने हाथ से माड़ी बना कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिये बिना न मानी। सच है, कुत्ता चौक चढ़ाये, पर चपनी चाटन आये।

कुत्ता जमाई सुसरे द्वार—अ० ज्यादा दिन किसी सम्बन्धी के यहाँ रहने से जो ज्यादा प्रिय होते हैं वे भी अप्रिय हो जाते हैं। प्र० अखिलेश भाग्यवश अपनी सुसराल चला गया। वहाँ उसे दो मास रहना पड़ गया। शुरू-शुरू में तो उसका इतना सम्मान हुआ कि जिसका कुछ ठिकाना न था, अन्त को दिन-दिन घट कर तिरस्कार में वदल गया। सच है कुत्ता जमाई सुसरे द्वार।

कुत्ता भान्जा मामा घर—अ० अगर कोई भान्जा मामा के घर जाकर रहे तो उसकी वहाँ प्रतिष्ठा कुत्ते के समान ही समझो। प्र० सूरज अपने मामा के घर जाकर तो रहने लगा किन्तु उसकी भाभी और ममेरी भाभियाँ उसे जूते की धरी रोटियाँ देती हैं। सच है, कुत्ता भान्जा मामा घर।

कुत्ता भी पूँछ फिराकर बैठता है—अ० साफ़-सुथरा न रहने वालों को कहा जाता है। प्र० हरदयाल की बैठक और वहाँ का सामान धूल से अटा रहता था। एक दिन संजय उसके यहाँ चला गया। वहाँ का रंग-ढंग देखकर उससे चुप न रहा गया। बोला, बन्धु! तुम तो बड़ी गन्दगी रखते हो, लाज नहीं आती। देखो, कुत्ता भी पूँछ फिराकर बैठता है।

कुत्ता भैया वहन द्वार—अ० अनुचित व्यवहार ठीक नहीं होता है। प्र० प्रमोद का साला कुछ दिनों से उसके पास आ गया है। अब उसकी सगी बहन भी उसको दूर से ही देखकर मुँह फेर लेती है। बेचारे का कोई आसरा नहीं, जाये तो कहाँ जाए? सब कुछ मज़बूरी में सहन करना पड़ रहा है। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ हो गई कि कुत्ता भैया वहन द्वार।

कुत्ता ससुर जमाई द्वार—अ० जहाँ रहना शुरू से ही वर्जित हो वहाँ रहने से निरादर होता है। प्र० यद्यपि सेठ मुरलीधर ने अपनी सारी सम्पत्ति इकलौती पुत्री भावना के नाम कर दी थी; किन्तु हाड़ थक जाने पर जब उन्हें पुत्री की चौखट का मुँह देखना पड़ा तो वहाँ महान् दुख भोगे। दो वक्त की रोटी मिलनी भी मुश्किल हो गई। सच है, कुत्ता ससुर जमाई द्वार।

कुत्ते का सिर—अ० जो व्यक्ति अधिक बकवास करने वाला होता है, उसके लिए यह प्रयोग किया जाता है। प्र० बधु! हमसे तो चार घंटे से अधिक नहीं पढ़ा जाता है, पर सोमेश का सिर न जाने काहे का है कि रात-दिन बोलता रहता है। सुनकर रवीन्द्र ने कहा, अरे बंधु! जानते नहीं, उसका तो कुत्ते का सिर है।

कुत्ते की पूंछ बारह वर्ष नलकी में रखो तो भी टेढ़ी—अ० किसी का स्वाभाविक गुण अनेक प्रयास करने पर भी दूर नहीं होता। प्र० नाम तो उसका मधुर था पर प्रवृत्ति उसकी नीच थी। इतने दिन सज्जन पुरुषों की संगति में रहकर भी उसने अपनी प्रवृत्ति नहीं बदली। सच है, कुत्ते की पूँछ बारह वर्ष नलकी में रखी तो भी टेढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्ते की मौत आवै तो मन्दिर में मूतन जावै—अ० जब मनुष्य को पिटना हो तो खोटा काम करना चाहिए। प्र० कल महेश के घर हवन था। जब पंडित जी ने सामग्री तैयार की और अग्नि-संस्कार किया तो हरिया ने वहाँ पर कुल्ला कर दिया। इस पर उपस्थित जन उसे पीटने के लिए दौड़ पड़े और उसकी अच्छी-खासी मरम्मत कर दी। सच है, कुत्ते की मौत आवै तो मन्दिर में मूतन जावै।

कुत्ते की मौत मरना—अ० इस मायावी जगत् से बिना नाम छोड़े उठ जाना। प्र० सेठ रामकृष्ण ने अपना जीवन ऐसी रीति से बिताया कि उन्हें मरते समय तक भी किसी ने नहीं जाना। बेचारे कुत्ते की मौत मर गए।

कुत्ते के भौंके हाथी नहीं डरते—अ० बुद्धिमान व्यक्ति नीच की बकवास पर ध्यान नहीं दिया करते हैं। प्र० महानंद हमारे गाँव के पंच है। अधिकांश लोग उन्हें बुरा कहते हैं, पर उन्हें इतना भी पता नहीं कि क्या हो रहा है। सच है, कुत्ते के भौंके हाथी नहीं डरते हैं।

कुत्ते को घी नहीं पचता—अ० ओछे आदमी के पेट में बात नहीं रहती। प्र० अरे, सतीश तो बड़ा छिछोरा है। उसके सामने एक बात मुंह से निकल गई। झट जाकर सारे मोहल्ले में कह आया। यह तो उसने वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कुत्ते को घी नहीं पचता है।

कुत्ते को मारै सो कुत्ता—अ० नीच के साथ जो लड़ता है, वह भी नीच कहलाता है। प्र० सतीश ने स्वयं न तो सोचा न विचारा, हरिजनों के पड़ोस में घर बना लिया। अब उनके साथ रोज़ तू-तू मैं-मैं होती है। कोई उनके बच्चों को मारता है तो उनकी औरतें कोसती हैं। यह तो वही कहावत हुई कि कुत्ते को मारै सो कुत्ता।

कुत्ते को हड्डी प्यारी है—अ० नीच व्यक्ति को नीच वस्तु से ही प्यार होता है। प्र० हरिया जुलाहे के आगे अच्छी से अच्छी वस्तु खाने के लिए दी गई, पर जब उससे पूछा गया और क्या लोगे तो उसने कहा कि प्याज चाहिए। इस पर अन्य लोगों ने कहा कि सच है, कुत्ते को हड्डी ही प्यारी है।

कुत्ते पैर जाना, बिल्ली पैर आना—अ० जल्दी आना और जल्दी जाना। प्र० पंकज ने कल अपने नौकर को संतरे लाने के लिए भेजा। वह इतनी जल्दी लौट आया मानो गया ही नहीं हो। उसने तो वही कहावत पूरी कर दी कि कुत्ते पैर जाना, बिल्ली पैर आना।

कुत्ते यह तेरा मुंह नहीं तेरे साईं का है—अ० जब किसी का नौकर उसके सिखाने पर ज्यादा बोलता है, तब उसके लिए यह प्रयोग होता है। प्र० कल मनोज ने अपने नौकर को शह दे दी कि आज जब धन्नो आए तो उसे अच्छी तरह फटकार देना। उसने वैसा ही किया। तब धन्नो ने कहा कि अरे, कुत्ते यह तेरा मुँह नहीं तेरे साईं का है।

कुनवती के चारों पल्ले कीच में—अ० कुटुम्बी व्यक्ति को हर वक्त किसी-न-किसी तरह की चिन्ता घेरे रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि घर में कोई ऐमा काम न कर बैठे जो प्रतिष्ठा भंग हो जाए । प्र० एक दिन चौपाल पर बैठा हरिया सब लोगों के कुलों में दोष निकाल रहा था कि इतने में रमाकांत आ गया और बोला कि अरे, यह क्या गीत गा रहे हो। तुम भी तो कुटुम्बी हो। तुम्हारे कुल में क्या कोई दोष नहीं है। देखो तुम्हारे बाप ने उस हरिजन की लड़की को कोई निषिद्ध बात कह दी थी, जिसका कलंक अभी तक नहीं उतरा है। इस पर दूसरे लोग कहने लगे कि ठीक है, कुनवती के चारों पल्ले कीच में होते हैं।

कुम्हार की कुम्हारी पै पार न बसाय गधैया कान जा मरोड़ै अ० शक्तिशाली का तो कोई कुछ नहीं कर सकता, पर कमज़ोर पर गुस्सा उतरता है। प्र० शिवशंकर को कल उसके बड़े भाई ने किसी अपराध पर दण्ड दिया, जिससे उसे बड़ा गुस्सा आया। जब वह बड़े भाई का कुछ न कर सका तो उनके चले जाने पर अपने छोटे भतीजों पर तनिक-सी बात पर गुस्सा उतार लिया। सच है, कुम्हार की कुम्हारी पै पार न बसाय, गधैया कान जा मरोड़ै।

कुम्हार के घर बासन का काल—अ० जहाँ जो वस्तु हर समय रहती हो वहाँ पर वह वस्तु न मिले। प्र० श्याम वैद्य प्रह्लाद दत्त के घर चूर्ण माँगने गया तो उन्होंने कहा कि यहाँ तो कोई चूर्ण नहीं है। इस पर उसने कहा कि वैद्य जी यह तो वही कहावत हुई कि कुम्हार के घर बासन का काल।

कुरसी का अनाड़ी—अ० जब कोई मूर्ख ऊँचे पद पर पहुँच जाए। प्र० लाला घसीटामल मजिस्ट्रेट बना दिए गए। पहले ही दिन उन्होंने एक मुकद्दमे में बड़ा अधर्म किया। उन्होने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कुरसी का अनाड़ी।

कुल का दीपक—अ० सपूत जो कुल की कीर्ति को चार चाँद लगाता है। प्र० पारूल ने अपने कुल में उत्पन्न होकर उसे उज्ज्वल कर दिया। वास्तव में वह कुल का दीपक निकला।

कुल में क्या गधे नहीं होते—अ० भले बुरे सभी स्थानों पर होते है। प्र० बन्धु, कुरू-कुल कैसा उत्तम था, पर उसमें भी दुष्ट दुर्योधन उत्पन्न हो गया। इस पर उत्तर मिला कि बंधु, कुल में क्या गधे नहीं होते ?

कुल्हियाँ में भेली नहीं फूटती—अ० कोई बड़ा कार्य छिपकर नहीं होता है। प्र० मनोज ने रतनलाल की साइकिल चुराकर झोंपड़ी के पास पेड़ों के झुरमुट में छिपा दी। लोगों की नज़र वहाँ भी पड़ गई। इस पर मनोज को लज्जित होना पड़ा और सुनना भी पड़ा कि बड़ा मूर्ख है, कहीं कुल्हियाँ में भेली फूटी है।

कुसमय परे शत्रूहू मीन—अ० बुरा वक्त आने पर शत्रु को भी मित्र बना लेने में भलाई है। प्र० एक दिन मैं उपवन में घूम रहा था कि अचानक पंकज और रमण दोनों वहाँ आ गए। उनके साथ मेरी अनबन थी। देखकर डरा कि कहीं आज मेरी पिटाई न कर दें। इस भय के आते ही मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंकज को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। उसने भी मुझे छाती से लगा लिया। यह देखकर रमण मेरा कुछ नहीं कर सका। खून का घूंट पीकर रह गया। सच है, कुसमय परे शत्रूहू मीत।

कुसुम का रंग तीन दिन फिर बदरंग—अ० मुलम्मा कुछ दिन ही ठहर पाता है। प्र० गीता ने थोड़े ही दिन अपनी चूड़ियों की भड़क दिखाई। अब तो उनका रंग पीला पड़ता जाता है। इस पर राधा ने कहा कि उन पर चढ़ा मुलम्मा उतर गया होगा। जानते नहीं, कुसुम का रंग तीन दिन फिर बदरंग।

कूजे ढलै कि माट—अ० यह कौन बता सकता है कि पहले बूढ़ा मरे कि जवान? प्र० धर्मवीर ने गोपीचन्द से कहा, भाई देखा, प्रमोद कल चल दिया और बाबा बैठा है। तब गोपीचन्द ने जवाब दिया, बन्धु जानते नहीं, कूजे ढलै कि माट।

कूत थोड़ा मार्ग बड़ा—अ० जब कमजोर को ज़्यादा काम करना पड़े। प्र० मैंने रात दिन उस चट्टान को काटने का प्रयास किया पर वह काटे नहीं कटती है। इस पर सुनने वाले ने कहा कि बन्धु, तुम्हारी तो वही कहावत है, कूत थोड़ा मार्ग बड़ा।

कूद-कूद मछली बगुले को खाय—अ० जब किसी व्यक्ति का उल्टा वक्त आता है, तब कमज़ोर भी शक्तिशाली हो जाता है। प्र० मुसीबत के समय में तीतर राजा नल की आधी धोती लेकर उड़ गए थे। सच है कि कूद-कूद मछली बगुले को खाय।

कूदैं फाँदैं तोड़ैं तान, वाको दुनिया राखै मान—अ० गुणवानों की प्रतिष्ठा नहीं होती और बदमाशों का आदर होता है। प्र० रामचरितमानस में कैसे-कैसे उत्तम उपदेश हैं। उनको कोई नहीं सुनता, पर नटनी के नाच पर सब रीझते हैं। सच है, कूदे फाँदे तोड़े तान, वाको दुनिया राखै मान।

कूटन वारी कूट गई, सास बहू दोऊ एक भईं—अ० जब कोई अन्य व्यक्ति दो व्यक्तियों में झगड़ा करा दे और झगड़ने वाले फिर एक हो जाएँ। प्र० प्रताप ने पहले तो दोनों भाइयों को भड़काकर झगड़ा करवा दिया। जब फिर वे दोनों एक हो गए तो प्रताप को फटकार मिली। सच है, कूटन वारी कूट गई, सास बहू दोउ एक भईं।

कूड़ी में कमल होना—अ० बुरे व्यक्ति के अच्छी सन्तान होना। प्र० बन्धु! हरीराम तो जैसा है वैसा है ही, पर पुत्र कैसा सुन्दर हुआ है। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया कि वह तो बन्धु कूड़ी में कमल हुआ है।

कूड़े पर फुलेल डालना—अ० कृतघ्न के साथ भलाई करना। प्र० बन्धु, मोहन मुझसे कुछ आर्थिक सहायता लेना चाहता है, आपकी क्या राय है? सुनकर रतिमोहन ने उत्तर दिया, मोहन को सहायता देना कूड़े पर फुलेल डालना है।

कूप मेंढक जाने कहा सागर को विस्तार—अ० मूर्ख विद्वानों के भण्डार को क्या जानें। प्र० प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने समान विद्वान् ही किसी को नहीं मानता। वह शम्भु जी को भी मूर्ख ही समझता है। सच है, कूप मेंढक जाने कहा सागर को विस्तार।

कोई ओढ़े शाल दुशाला, कोई कम्बल काला—अ० सभी का भाग्य एक-सा नहीं होता है। प्र० यह मायावी जगत कैसा विचित्र है, कोई हाथी पर चढ़ता है और कोई पैदल घिसटता है। सच है, कोई ओढ़े शाल-दुशाला, कोई कम्बल काला।

कोई काम करैं दाम से, हम दाम करैं काम से—अ० कोई धन लगाकर धन्धा करता है, पर हम श्रम से धन पैदा करते हैं। प्र० सूद साहब ने रुपया लगाकर कुआँ खुदवाया और मैंने कुआँ खोदकर रुपया कमाया। वास्तव में तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कोई काम करैं दाम से, हम दाम करैं काम से।

कोई खैंचे लांग लंगोटी, कोई खैंचे मूछरियाँ। कोठे चढ़के देत दुहाई, कोई मत करियो दोजनियाँ—अ० दो स्त्रियों वाले पुरुष की दुर्दशा होती है। प्र० कल पराग की उसकी दोनों स्त्रियों ने वह दुर्गति की कि देखने वालों ने दाँतों तले अंगुली दवा ली, पर उसके मुख से आवाज तक न निकली। सच है, कोई खैंचे लाँग लंगोटी, कोई खैंचे मूछरियाँ। कोठे चढ़के देत दुहाई, कोई मत करियो दोजनियाँ।

कोई दम का दमामा है—अ० मानव-जीवन क्षण भंगुर है। प्र० वेचारा प्रदीप क्या-क्या आशाएँ कर रहा था; किन्तु कल पतंगबाजी ने उसकी जान ले ली। सच है, इस संसार में कोई दम का दमामा है।

कोई मरे कोई जिए, पेटू घोल बताशे पिए अ० स्वार्थी व्यक्ति के लिए किसी की क्षति हो कि लाभ; उसे अपने स्वार्थ से प्रयोजन। प्र० मयंक कैसा स्वार्थी है। घर वाले भूखे बैठे हैं, पर वह अपना आनन्द मनाने में ही मस्त है। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कोई मरे कोई जिये, पेटू घोल बताशे पिये।

कोई माँ के पेट से लेकर नहीं आया—अ० हरेक को काम सीखने से आता है जन्म से नहीं। प्र० श्याम ने श्रीयांस से कहा, बन्धु, तुम किसी से गणित सीखते हो और किसी से भाषा। इस पर श्रीयांस ने उत्तर दिया, ठीक है, कोई माँ के पेट से लेकर नहीं आया।

कोई माल में मस्त कोई खाल में मस्त—अ० बहुत से व्यक्ति धनाभिमानी होते हैं और बहुत से बलाभिमानी। प्र० सेठ घनश्यामदास धन के मद में आकर रोहित बाबू को दवाना चाहते हैं पर वे लेशमात्र भी चिन्ता नहीं करते। सच है, कोई माल में मस्त कोई खाल में मस्त।

कोउ न कोउ सुख दुःख कर दाता, निज कृत कर्म भोग सब भ्राता—अ० जो व्यक्ति जैसा करेगा वैसा भरेगा। प्र० अलख ने निरंजन से कहा, देखो वंधु, हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को कैसे-कैसे दुःख दिये। इस पर निरंजन ने कहा, बन्धु सुना नहीं, कोउ न कोउ सुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःख कर दाता, निज कृत कर्म भोग सब भ्राता।

कोउ नृप होहु हमैं का हानि, चेरि छाँड़ि का हुइ हैंहि रानी—अ० जब नौकर स्वामी की भलाई की कहे और स्वामी न माने। प्र० मंथरा दासी ने जब कैकेई को राम के विरुद्ध भड़काया और वह न मानी तब उसने कहा था कि कोउ नृप होहु हमैं का हानि, चेरि छाँड़ि का हुइ हैंहि रानी।

को कहि सके बड़ेन सों, लखें बड़ी ओ भूल। दीने दई गुलाब की, इन डारन ये फूल—अ० बड़े व्यक्तियों के दोषों को देख कर भी कोई कुछ नहीं कह सकता है। प्र० जमींदार साहब इतने बड़े आदमी होने पर भी किसानों को सताते हैं, पर उनसे कोई कुछ नहीं कहता। सच है, को कहि सके बड़ेन सों, लखें बड़ी ओ भूल। दीने दई गुलाब की, इन डारन ये फूल।

कोतवाल को कोतवाली ही सिखाती है—अ० काम को काम सिखाता है। प्र० बनवारी लाल जब पटवारी हुआ तो कुछ नहीं जानता था; किन्तु अब तो अच्छे अच्छों के कान काटने लगा है। सच है, कोतवाल को क़ोतवाली ही सिखाती है।

कोता गर्दन तंग पेशानी, हरामज़ादे की यही निशानी—अ० जिस की छोटी गर्दन और माथा छोटा होता है, वह अपने पिता का पुत्र नहीं होता है। प्र० संगीता ने मोहिनी से कहा, अरी, तूने गिरिराज की गर्दन देखी है। चार अंगुल की है, पर कुकर्मी भी इतना ही है। इस पर मोहिनी ने कहा, हाँ, तू जानती नहीं, कोता गर्दन तंग पेशानी, हरामज़ादे की यही निशानी।

कोदों देकर पढ़े हो—अ० यह कम पढ़े-लिखे के लिए कहा जाता है। प्र० कमला की माता ने उससे चिट्ठी लिखवाई। कमला ने टूटे-फूटे अक्षरों में यह चिट्ठी लिखी। माता ने देखकर कहा कि अरी क्या कोदों देकर पढ़ी है।

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहि बीच—अ० कोई कितना भी यत्न करे पर स्वभाव नहीं बदलता। प्र० बन्धु, जमींदर के घर की कहारिन जन्म से उनके पास रही और शुद्ध भोजन किया; किन्तु एक दिन जब उसे मछली मिल गई तो सब पदार्थ छोड़ कर उसी पर हाथ मारा। यह सुनकर नरेश ने कहा कि भाई सुना नहीं, कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहि बीच।

कोठी कुठले को हाथ न लगाना, बहू घर-बार तेरा ही है—अ० झूठा अधिकार देना। प्र० मयंक ने रोहित से कहा, रायसाहब ने कोठी का सब काम तो अपने साले पुनीत को दे दिया पर रोकड़ को हाथ नहीं लगाने पाता। इस पर रोहित ने उत्तर दिया, यह तो वही कहावत हुई कि कोठी कुठले को हाथ न लगाना, बहू घर-बार तेरी ही है।

कोठी में नाज घर में उपवास—अ० कृपण व्यक्ति के पास सब कुछ होते हुए भी भूखा ही रहता है। प्र० ईश्वर की कृपा से तुम्हारे पास सब कुछ है फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे पैसे-पैसे को भटकते फिरते हैं। यह तो वही कहावत हुई कि कोठी में नाज घर में उपवास।

कोठी में से पोटी नहीं निकली—अ० पूंजी में से कुछ व्यय नहीं मिला। प्र० रमेश तो बड़ी बातें मारता है। मारे भी क्यों न, अभी कोठी में से पोटी नहीं निकली है।

कोठे के रहने वालियाँ ज़ीने पै आ गईं, रफ्ते-रफ्ते अपने क़रीने पै आ गईं—अ० नीच को उच्च पद मिल जाय और फिर अपनी स्थिति में आ जाने पर ऐसा कहा जाता है। प्र० सोमेश को मामा की सम्पति मिल जाने से कितना अभिमान हुआ था, पर दूसरे दावेदार के कारण छिन जाने से वह फिर वही फाटे खाँ हो गया। उसकी तो वही कहावत है कि कोठे की रहने वालियाँ ज़ीने पै आ गईं, रफ्ते-रफ्ते अपने क़रीने पै आ गईं।

कोठे वाला रोवै, छप्पर वाला सोवै—अ० पैसे वाले की अपेक्षा ग़रीब सुखी रहता है। प्र० सेठ जी को तो चिन्ता के मारे नींद नहीं आती, पर कमल बाबू पैर फैला कर सोते हैं। सच है, कोठे वाला रोवै, छप्पर वाला सोवै।

कोठे से गिरा सम्भलता है, पर नज़रों से गिरा नहीं सम्भलता है—अ० व्यक्ति हर प्रकार के दुःखों को तो सहन कर लेता है; किन्तु परिवार व समाज के तिरस्कार को सहन नहीं कर पाता। प्र० भावना जब बिना बुलाए पिता के घर गई तो किसी ने भी ढंग से उससे बात नहीं की। सुसराल से वह पहले से ही तंग थी। पीहर के व्यवहार से तंग आकर उसने कुएँ में कूदकर जान दे दी। सच है, कोठे से गिरा सम्भलता है, पर नज़रों से गिरा नहीं सम्भलता है।

कोढ़ में खाज—अ० कष्ट में कष्ट पैदा होना। प्र० कमल बेचारा सिर दर्द से तो परेशान रहता ही था कि कल से आँखें और आ गईं। सच है कि कोढ़ में खाज।

कोयल काले कौए की जोरू—अ० जब पति पत्नी दोनों ही एक से हों। प्र० अरी बहन, सत्यप्रकाश तो जैसा है वैसा है ही, पर उसकी औरत कमला तो दो हाथ उससे बढ़कर है। सच है कि कोयल काले कौवे की जोरू होती है।

कोयला होय न ऊजरौ, सौ मन साबुन धोय—अ० कोई कितना भी प्रयास करे किन्तु रूप व स्वभाव नहीं बदला करता है। प्र० सुरेश नित्य साबुन मल-मल कर नहाता है फिर भी वह काले का काला ही है। सच है, कोयला होय न ऊजरौ, सौ मन साबुन धोय।

कोयले की दलाली में हाथ काले—अ० नीच की संगति का नीचा ही फल निकलता है। प्र० मेरे प्रयत्न से सुमन कुमार बैंक में लग गया था पर वहाँ भी अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आया। ग़बन के केस में फँस गया। उसकी वजह से मैनेज़र के सामने मुझे लज्जित होना पड़ा। मेरे ऊपर तो वही कहावत चरितार्थ हो गई कि कोयले की दलाली में हाथ काले।

कोरे गरजे बूंद न एक—अ० डींग बहुत मारे पर करे कुछ नहीं। प्र० भुवनेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे तो बहुत डींगे मारता फिरता है पर करके कुछ नहीं दिखलाता। यह तो वही कहावत हुई कि कोरे गरजे बूंद न एक।

कोली का घर जले कलंदर मांगे गाढ़ा - अ० ऐसा स्वार्थी व्यक्ति के लिए कहा जाता है। प्र० बंधु, सतीश को तो ज्वर ने दबा रखा था और बीना उससे कह रही थी कि मुझे सवाल समझा दो। यह तो वही कहावत हुई कि कोली का घर जले कलंदर मांगे गाढ़ा।

कोली के गाँव में धोबी पटवारी—अ० मूर्ख के यहाँ मूर्ख ही नौकर। प्र० यतीन्द्र तो मूर्खानन्द है ही, उसे वैसा ही एकाउन्टेंट मिल गया है। सच है कि कोली के गाँव में धोबी पटवारी।

कोल्हू का बैल—अ० रात-दिन मेहनत करने कला व्यक्ति। प्र० रामलखन को घड़ी भर भी चैन नहीं है। सवेरे से उठ कर कामकाज में कोल्हू के बैल की तरह लगा रहता है।

कोल्हू के बैल को घर में भी पचास कोस—अ० जो व्यक्ति घर में भी हर वक्त काम करता रहता है। प्र० बेचारे महेन्द्र को छुट्टी के दिन भी एक घड़ी चैन नहीं मिलता। कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। सच है कि कोल्हू के बैल को घर में भी पचास कोस चलना पड़ता है।

कोल्हू से खल उतरी तो भई बैल के जोग—अ० पद से गिरा व्यक्ति किसी काम का नहीं रहता है। प्र० बेचारे सोहन बाबू की नौकरी क्या गई, बहू बेटों की नजरें ही फिर गईं। तनिक-तनिक सी बात के लिए सुनना पड़ने लगा। सच है, कोल्हू से खल उतरी तो भई बैल के जोग।

कोस चली नहिं बाबा प्यासी—अ० जब कोई व्यक्ति थोड़े ही श्रम से थक कर हाय हुल्ला मचावे। प्र० बुद्धू ने अपने दोनों बेटों से कुआँ खोदने के लिए कहा था। दोनों ने मिल कर चार पाँच टोकरे ही मिट्टी निकाली होगी कि थक कर हाँफने लगे। यह तो वही बात हुई कि कोस चली नहीं बाबा प्यासी।

कोसे जियें असीसे मरें—अ० कलियुग में जगत की उल्टी रीति है। प्र० बेचारे जितेन्द्र को उसकी ताई रात-दिन मरा जला कहा करती है, कभी आशीष नहीं देती। सुनने वाले ने जवाब दिया, यह कौन-सी नई बात है, औरतें कहा करती हैं कि कोसे जियें असीसे मरें।

कौआ अपने शिशुन को, जानै सब सों स्वेत—अ० अपनी औलाद कैसी भी कुरूप हो, दुनिया भर की औलाद से प्यारी लगती है। प्र० चेता चमार का लड़का इतना कुरूप है कि देखने से ही मन बिगड़ जाता है, पर उसकी माँ फिर भी उसके मस्तक पर नज़र का टीका लगाती है। सच है कि कौआ अपने शिशुन को, जानै सबसों स्वेत।

कौआ चला हंस की चाल, मुआ अपनी भी भूला—अ० जो कोई बड़ों की नक़ल करता है वह अपनी वास्तविक स्थिति को भी भूल जाता है। प्र० नकुल सेठजी की बगल में रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके ठाठ बाट देखकर उसने भी अपना रहन-सहन बदल डाला। कुछ ही दिनों बाद वह अपनी स्थिति को भी भुला बैठा। इससे कर्ज़ के भार से दब गया। सच है, कौआ चला हंस की चाल, मुआ अपनी भी भूला।

कौआ टरटराता ही है, धान सूखता ही है—अ० कोई भी व्यक्ति अपने स्वाभाविक गुणों को नहीं त्यागता है। प्र० तुम्हें कितनी बार समझाया कि बड़ों के बीच में मत बोला करो, पर तुम्हारे कानों पर जूं तक नहीं रेंगी। सच है कि कौआ टरटराता ही है, धान सूखता ही है।

कौड़ी के तीन-तीन—अ० जब किसी की अप्रीत होती है। प्र० कचहरी में तुम्हें नौकरी क्या मिल गई, किसी को कुछ समझते ही नहीं। इसके छूटने के बाद कोई कौड़ी के तीन-तीन भी नहीं पूछेगा।

कौड़ी कौड़ी को मोहताज—अ० अत्यधिक आर्थिक संकट में। प्र० जब पैसा था तो किसी को कुछ नहीं समझा। अब सब कुछ बर्बाद करके कौड़ी-कौड़ी को मोहताज हो गया। ऐसी स्थिति में मदद की बात तो दूर रही, कोई उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखना चाहता है।

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, संग न जाय अधेला—अ० मानव व्यर्थ में ही पैसा इकट्ठा करता फिरता है। प्र० सिकन्दर भारत से इतनी धन दौलत लेकर लौटा पर भोगना नसीब नहीं हुआ। सब कुछ यहीं छोड़ कर खाली हाथ दुनिया से चला गया। सच है कि कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, संग न जाय अधेला।

कौड़ी नहीं पास, मेला लगे उदास—अ० पैसे के अभाव में अच्छी चीज़ भी बुरी लगने लगती है। प्र० शिव ने मोहन से पूछा, आज दिवाली मेला देखने नहीं चलोगे। इस पर मोहन ने कहा, बन्धु ! कैसा मेला, यहाँ तो कंगाली का राज्य है और यह तुम जानते ही हो कि कौड़ी नहीं पास, मेला लगे उदास।

कौड़ी नहीं पास, लगी अफीम की चाट—अ० कंगाली में व्यसन का लगना। प्र० वैसे तो तुम्हारा रोटियों का सहारा नहीं है और इत्र फुलेल लगाने को तुम्हें रोज़ चाहिए। सच है कि कौड़ी नहीं पास, लगी अफीम की चाट।

कौन किसी के आवै जावै, दाना पानी खींच बुलावै—अ० अन्न जल बड़ा बलवान है। प्र० कमलेश्वर पहले कभी किसी के यहाँ नहीं आता जाता था, पर अब तो ताऊ जी के यहाँ तीन मास से ठहरा हुआ है। यह तो वही कहावत हुई कि कौन किसी के आवै जावै, दाना पानी खींच बुलावै।

कौन गिने उडगन आकाश—अ० अधिक संख्या में चीज़ नहीं गिनी जाती है। प्र० कल टिड्डी दल ने जो हमला बोला, कोई उनकी संख्या की गिनती नहीं कर सका। सच है कि कौन गिने उडगन आकाश।

कौन-सी चक्की का पिसा खाया है—अ० बहुत मोटे व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। प्र० आज भवानी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मल के मुटापे को देखकर बाज़ार में लोग कहने लगे कि कहो लाला कौन-सी चक्की का पिसा खाया है।

कौन है जिसे हवा न लगी हो—अ० ऐसा कौन व्यक्ति है जिसे थोड़ा बहुत शौक कभी न लगा हो? प्र० देव तो बड़ा साधु दिखाई पड़ता था पर वह तो कुछ और ही निकला। सच है, कौन है जिसे हवा न लगी हो।

क्या कन्या का विवाह करके सोये हो—अ० बेटी के विवाह से निपटकर पिता चन की नींद सोता है अर्थात् निश्चिन्तता की नींद लेता है। प्र० बन्धु! तुम्हें कितनी देर से जगा रहा हूँ पर तुम उठने का नाम ही नहीं लेते। तुम्हारी नींद तो ऐसी है जैसे कन्या का विवाह करके सोये हो। सच कह रहे हो गौरव। तुम्हारी इस कहावत पर मुझे पचौरी का एक दोहा याद आ गया, सुनोगे? क्यों नहीं? तो सुनो—

सुता धरोहरि जग कहत,
रक्षक पिता सुजान।
अरपत जब वाके धनी,
तब सुख लहत महान्॥

क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ ले उस हाथ दे—अ० जब कर्म का फल तत्काल मिल जाता है। प्र० सुखवीर ने भगवती की किताब चुरायी थी आज उसका पार्कर पैन चोरी हो गया। सच है, कलियुग नहीं करजुग है ये, यहाँ दिन को दे और रात ले। क्या खूब सौदा नक़द है बना, इस हाथ ले उस हाथ दे।

क्या गोमती का पानी पिया है—अ० जिस व्यक्ति में स्त्रियों के से भाव होते हैं, उसके लिए प्रयोग किया जाता है। प्र० सोमेश तो ऐसी चाल-ढाल से रहता है कि औरतों ने भी उससे हार मान ली है। उस पर तो वही कहावत हुई कि क्या गोमती का पानी पिया है!

क्या घोड़े बेचकर सोये हो—प्र० निश्चित होकर सोने वाले के लिए कहा जाता है। प्र० मैं जब प्रमिल के घर गया तो वह अचेत सोया हुआ था, उसे अपने कपड़ों की भी सुध नहीं थी। तब मैंने कहा कि क्या घोड़े बेचकर सोये हो।

क्या पानी मथने से घी निकलता है—अ० व्यर्थ में किये गये कार्य का कोई फल नहीं होता है। प्र० कल परमेश्वर तेली ने इस इच्छा से कि तेल निकलेगा बालू (रेत) को कोल्हू में घंटों पेला पर अंत में हताश हो गया। सच है, क्या पानी मथने से घी निकलता है?

क्या मक्खी ने छींक दिया—अ० जब कोई व्यक्ति कार्य करते-करते छोड़ बैठे। प्र० रमेश ने पहले तो बड़े उत्साह से पढ़ना शुरू किया था किन्तु अब किताब उठाने का भी नाम नहीं लेता। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ हो गई कि क्या मक्खी ने छींक दिया।

क्या मुंह और क्या मसाला—अ० जब किसी व्यक्ति को ऐसी वस्तु मिल जाए जो उसके योग्य न हो। प्र० श्याम एक दिन गैबेडीन का कोट पहनकर गुलाब को सूँघता हुआ आया। उसकी भोंडी सूरत और बनावट देखकर मेरे मुख से निकल गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वाह-वाह, क्या मुंह और क्या मसाला।

क्या मुंह से फूल झड़ते हैं—अ० जब कोई व्यक्ति किसी से कटु और चुभती हुई बात ताने के रूप में कहे। प्र० परशुराम जी के कटु वाक्यों को सुनकर लक्ष्मण से न रहा गया। वह मर्यादा को लांघ कर बोले, वाह कृपा मूरति अनुकूला, बोलत बचन झारत जनु फूला।

क्या साँप सूंघ गया—अ० जब किसी से कोई बात पूछी जाए और उसका उत्तर न मिले तब ऐसा कहा जाता है। प्र० क्या यह प्लेट तुमने तोड़ी है, बोलते क्यों नहीं? क्या साँप सूँघ गया है?

क्या सासू जी अटको मटको, क्या मटकाओ कूल्हा। डोली में से जब उतरूँगी अलग धरूँगी चूल्हा—अ० जब कोई वधू सुसराल में आते ही न्यारी हो जाती है। प्र० तुम तो चार दिन में ही जोरू के गुलाम हो गए जो शादी के होते हीं रसोई अलग कर ली। वास्तव में तुमने तो यह कहावत सच्ची करके दिखा दी कि क्या सासू जी अटको मटको, क्या मटकाओ कूल्हा। डोली में से जब उतरूँगी, अलग धरूँगी चूल्हा।

क्या सोवै राजा का पूत, क्या सोवै जोगी अवधूत—अ० राजकुमार और त्यागी ही निश्चिन्त होकर जीवनयापन करते हैं। प्र० हरिया को खेत काटने जाना था मगर उसका पुत्र उस समय तक सोया पड़ा था। यह देख उसने बेटे को जगाते हुए कहा कि क्या सोवै राजा का पूत, क्या सोवै जोगी अवधूत। तुम्हें चैन कहाँ, तुम तो ग़रीब किसान के बेटे हो।

क्या सौ की धनवती, क्या एक से पुत्रवती अ० सौ रुपये का क्या धनाढ्य, एक पुत्र का क्या सपूत? प्र० चुन्नू ने अपनी इच्छा मार मारकर साल भर में सौ रुपये जोड़े थे, सो उसका शराबी चाचा उठा ले गया। सच है, क्या सौ की धनवती, क्या एक से पुत्रवती।

क्यों काँटों में घसीटते हो—अ० जब कोई बड़ा व्यक्ति किसी छोटे व्यक्ति की उसके मुख पर प्रशंसा करता है तब छोटा व्यक्ति लज्जित होकर ऐसा कहता है। प्र० कल जब मैं सेठ जी के दर्शन करने गया तो उन्होंने सबके बीच मेरी प्रशंसा करनी शुरू कर दी। तब मैंने कहा कि सेठ जी मुझे क्यों काँटों में घसीटते हो।

क्यों दो कहीं और चार कहलाईं—अ० झगड़े से बचना और शान्त रहना। प्र० महेश मौहल्ले में लड़कों से झगड़ रहा था। तभी उसके बड़े भाई ने आकर कहा कि इनसे क्यों उलझ रहे हो, घर चलो। क्यों दो कहीं और चार कहलाईं।

क्वार जाड़े का द्वार—अ० असौज मास से सर्दी पड़ने लगती है। प्र० श्राद्ध पक्ष में अमित वर्षा में भीग कर काँपने लगा। तभी उसकी माँ ने कहा कि कपड़े बदल, जानता नहीं, क्वार जाड़े का द्वार।

क्वारी खाय रोटियाँ, ब्याही खाय बोटियाँ—अ० अनब्याही बेटी तो रोटी ही खाती है किन्तु ब्याही बेटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो तीज़-त्यौहार भी माँगती है। प्र० वन्धु ! मैं तो मालती के हाथ पीले करके अपने को निश्चिन्त समझ बैठा था, पर शादी के कुछ दिन वाद से ही वह और अधिक दुःख देने लगी। सब तीज-त्यौहार पर मिठाई आदि भेजने के लिए कहती रहती है। कुछ मास बाद बाल-बच्चा होने वाला है, उसके छूछक की भी फिक्र पड़ गई है। कम-से-कम पाँच सौ का खर्चा है। सच है, क्वारी खाय रोटियाँ, व्याही खाय वोटियाँ।

ख

खग जानै खग ही की भाषा—अ० बेवकूफ ही वेवकूफों के दोषों को जानता है। प्र० वन्धु, एक जेवकतरे को सभ्य पोशाक में होने पर भी रामदयाल ने तुरन्त पहचान लिया। तभी उत्तर मिला कि ठीक तो है, खग जानै खग ही की भाषा।

ख़ता करै वीवी, पकड़ी जाय बाँदी—अ० दोष किसी का हो और दण्ड किसी को मिले। प्र० बन्धु, अपराध तो रानी कैकेई का था और प्राण गए महाराज दशरथ के। सच है कि ख़ता करै वीवी, पकड़ी जाय बाँदी। इतना सुनकर अमित ने कहा कि लोकनायक तुलसी ने भी ऐसा ही कहा है :

और करै अपराध कोउ,
और पाव फल भोग।
अति विचित्र भगवन्त गति,
को जग जानन जोग॥

खत्री से गोरा सो पिण्ड रोगी—अ० जब कोई दुराचारी अत्यन्त सभ्य भेष बना कर किसी महान् आत्मा को ठगने या उसके साथ दुराचार करने की चेष्टा करे तब ऐसा कहा जाता है। प्र० प्रदीप ने रमेश से कहा, बन्धु, आज तो पंडितभेषी ठग गुरुजी को छलने के लिए आया था पर कुछ न हुआ। कैसी अनोखी वात है! इस पर रमेश ने कहा, इसमें आश्चर्य की क्या बात है, तुमने सुना नहीं कि खत्री से गोरा सो पिण्ड रोगी।

खरबूजे को देखकर ख़रबूजा रंग वदलता है—अ० जब कोई किसी को देखकर उसकी नक़ल करने का प्रयास करता है। प्र० सोहन जेबकतरों के पास बैठकर जेबें काटने लगा है। सच है, ख़रबूजे को देखकर ख़रबूजा रंग बदलता है।

ख़रबूजे को धूप भली, आम को मेंह। नारी को पति ही भलौ, ज्यों बालक को नेह—अ० सबको अपनी प्रकृति के अनुसार वस्तु के मिलने से ही लाभ पहुँचता है। प्र० अरी संध्या, करेली धूप में कैसी बढ़ रही है। इस पर संध्या ने उत्तर दिया, तूने सुना नहीं, ख़रबूजे को धूप भली और आग को मेंह। नारी को पति ही भलौ, ज्यों बालक को नेह।

खरसैली कुतिया मखमली झूल—अ० जब बदसूरत सुन्दर पोशाक को धारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे, तब ऐसा कहा जाता है। प्र० हरिया का पोता कितना काला है, खिलाने को तबीयत नहीं करती, पर वह उसे बढ़िया पोशाक पहनाकर और कामदार टोपी सिर पर लगाकर, लेकर निकलता है। उसकी तो वही कहावत है कि खरसैली कुतिया मखमली झूल।

ख़लक़ खुदा का, मुल्क बादशाह का—अ० यह सृष्टि प्रभु की और धरती राजा की। प्र० रामसिंह जमींदार ने अपनी जनता पर खूब अत्याचार किए। सब लोग उसका गाँव छोड़कर दूसरे गाँवों में जा बसे, वह किसी को न रोक सका। सुनने वाले ने जवाब दिया कि गाँव वालों पर उसका क्या बस, उसकी तो धरती होती है। तुमने सुना नहीं ख़लक खुदा का, मुल्क बादशाह का।

खरा खेला फर्रुखाबादी—अ० किसी के न लेन में और न देन में। प्र० गुलाटी एण्ड सन्स की दूकान पर एक परिचित ने एक सूट का कपड़ा उधार माँगा। इस पर उसने स्पष्ट इन्कार करते हुए कहा कि मेरी दूकान पर तो खरा खेल फर्रुख़ाबादी है। थोड़ा मुनाफा लेता हूँ और नक़द बेचता हूँ।

खरादी का काठ काटे ही से कटता है—अ० कर्ज़ चुकाने से ही चुकता है। प्र० कासिम ने किसी महाजन से सौ रुपये कर्ज़ लिए थे। साल भर तक वह उन्हें न लौटा सका। महाजन ब्याज माँगने आया। वह भी उसे नहीं मिला। हारकर उसने नालिश कर दी। अब उसे ढाई सौ रुपये देने पड़ेंगे। सच है, खरादी का काठ काटे ही से कटता है।

खरी कहैया डाढी जार—अ० सच कहने वाला बुरा हो जाता है। प्र० महीप हमेशा सच बोलता है इसलिए सब बुरा कहते हैं। सच है, खरी कहैया डाढी जार।

खरी कि होय सुरधेनु समाना—अ० नीच व्यक्ति साधु के समान नहीं हो सकता है। प्र० बलवन्तसिंह हमारे पंडित जी की बराबरी करना चाहता है, पर ऐसा कैसे हो सकता है? तुमने तो सुना ही होगा, खरी कि होय सुरधेनु समाना।

खरी मजूरी चोखा काम—अ० नक़द पैसा देना और अच्छा काम लेना। प्र० श्याम स्टोर पर माल तो अच्छा मिलता है पर दाम ज़्यादा देने पड़ते हैं, राहुल ने कहा। सुनने वाले ने उत्तर दिया, ठीक है, वह तो खरी मजूरी चोखे काम पर विश्वास करता है। इसीलिए अच्छे पैसे लेता है और बढ़िया माल देता है।

खाइये मन भाता, पहरिए जग भाता—अ० खाना इच्छानुसार अच्छा होता है और पोशाक दूसरों की पसन्द की। प्र० भावना इतनी बढ़िया पोशाक पहनती है कि सब उसे पास बैठाना पसन्द करते हैं। सच है, ख़ाइए मन भाता, पहरिये जग भाता।

खाई करै कमाई—अ० जो खायेगा सो कमायेगा। प्र० रामसिंह की खुराक सबसे ज़्यादा है पर काम भी वह दो आदमियों का निबटाता है। सच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, खाई करै कमाई ।

ख़ाक उड़ाना—अ० जब कोई व्यक्ति कार्य ठीक नहीं करता है तब ऐसा कहा जाता है। प्र० महेश के पिता जी आज उस पर बहुत नाराज़ हो रहे थे । उससे जब सहन न हुआ तो कह दिया कि आप नाराज़ न हों। मैं बम्बई जाकर कोई धन्धा देख लूंगा । इस पर उन्होंने कहा कि वहाँ जाकर और ख़ाक उड़ायेगा ।

ख़ाउ बजारी ओढ़ दुशाला, जल्दी निकले पूत दिवाला—अ० जो मध्यमवर्गीय व्यक्ति रईसों का-सा आचरण करे वह शीघ्र ही ग़रीब हो जाता है। प्र० हितेन्द्र की स्थिति ऐसी नहीं है कि वह रोज़ाना होटलों में पार्टी उड़ाता फिरे, पर वह ऐसा करता है। तब वह दिन दूर नहीं, जब उस पर यह कहावत चरितार्थ होगी कि खाउ बजारी ओढ़ दुशाला, जल्दी निकले पूत दिवाला ।

ख़ाक छानते बेर बीनते—अ० व्यर्थ का काम करना । प्र० वन्धु, अपने भविष्य की सोचो। इस तरह ख़ाक छानते बेर बीनते कब तक फिरोगे ?

ख़ाक न धूल बकायन के फूल—अ० अत्यन्त दरिद्र व्यक्ति । प्र० हरिया बाज़ार में तो छैला बना फिरता है, पर घर में ख़ाक न धूल बकायन के फूल ।

ख़ाक डालना—अ० किसी चीज़ को छोड़ देना । प्र० अरे, तुम अपना सामान राजेन्द्र से नहीं माँगते । इस पर धर्मेन्द्र ने उत्तर दिया, उस पर ख़ाक डालो और कोई बात करो ।

ख़ाक डाले चाँद नहीं छिपता—अ० सज्जन की निन्दा करने पर भी उसकी हानि नहीं होती है । प्र० भावना ने कविता से कहा, तुमने कल वाली पत्रिका देखी है कविता । उसमें लोकनायक तुलसीदास को पथभ्रष्टा कहा गया है। तब कविता ने उत्तर दिया, अरी पगली, ख़ाक उड़ाने से चाँद नहीं छिपता है ।

ख़ाका उड़ाना—अ० हँसी उड़ाना । प्र० आजकल तुम लोगों का खूब ख़ाका उढ़ाते फिर रहे हो ।

ख़ाकी अण्डे में बच्चे नहीं होते—अ० इस का प्रयोग थोथे व्यक्ति के लिए किया जाता है। प्र० मैंने महेश से एक बात कही थी, वही उसने सारे में फैला दी । सच है कि खाकी अण्डे में बच्चे नहीं होते हैं ।

खात निबौली दाख बतावै—अ० जो व्यक्ति सूखा आहार करके उसकी बड़ाई करता फिरे। प्र० बन्धु ! मैंने तुम्हें भुने चने खाते हुए अपनी आँखों से देखा है, तुम कहते हो कि किशमिश खाकर आया हूँ । सच है, खात निबौली दाख़ बतावै ।

खाता भी जाय और गुर्राता भी जाय—अ० जब कोई व्यक्ति कुछ करे न धरे और घरवालों पर हावी होना चाहे। प्र० सारा दिन तो तुम निठल्ले फिरते हो और खाते समय तुम अपनी भाभी को नखरे दिखाते हो । ज्यादा दिन ऐसा नहीं चलेगा कि खाता भी जाय और गुर्राता भी जाय ।

खाते कमाते कोई नहीं मरता—अ० नीरोगी काया वाला व्यक्ति कभी हार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मानता है। प्र० रामलाल अच्छी खेती बाड़ी कर रहा है। उसके सुख से दिन कट रहे हैं फिर भी परिचितों के सामने रोता ही रहता है मरा-मरा। सच तो यह है कि खाते कमाते कोई नहीं मरता।

खाते पीते जग मिलै, विपति मिलै नहिं कोय—अ०. सुख के तो सब साथी बन जाते हैं पर दुःख का कोई साथी नहीं बनता है। प्र० जब मेरे दिन अच्छे थे तो सब मेरी खुशामद किया करते थे, पर इन दुर्दिनों में कोई पास भी नहीं फटकता है। सच है भय्या, खाते पीते जग मिलै, विपति मिलै नहिं कोय।

खाना न कमाना सेंत का भर्ता—अ० निखट्टू पति के लिए ऐसा कहा जाता है। प्र० कर्मचन्द संस्था के लिए जेब से तो कुछ निकालना न चाहे और बनना चाहता है प्रधान। सच है, उसकी वही कहावत है कि खाना न कमाना सेंत का भर्ता।

खाने की सुध न पीने का होश—अ० जो व्यक्ति अपने काम धन्धे में रोटी पानी भी भूल जाए। प्र० अरे भय्या! सूरज डूबने को आया, अब तो काम बन्द करो। तुम्हें तो आज न खाने की सुध रही न पीने का होश।

खाने के दाँत और दिखाने के और—अ० जो व्यक्ति ऊपर से कुछ होता है और अन्दर से कुछ। उसके लिए ऐसा कहा जाता है। प्र० वैसे तो हरीचन्द तुम बड़ी मीठी-मीठी बात बनाते रहते हो पर वक्त पड़ने पर आँख दिखा देते हो। तुम्हारी तो वही बात है कि खाने के दाँत और दिखाने के और।

खाने को ऊद और कमाने को मजनू—अ० खाने को सबसे आगे और करने को सबसे पीछे। प्र० तुम खाने में तो हमेशा सबसे आगे रहते हो और काम करने के वक्त बीमार बन जाते हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि खाने को ऊद और कमाने को मजनू।

खाने को सिंह कमाने को बकरी—अ० जो व्यक्ति खाता ज्यादा हो और करता धरता कुछ भी नहीं हो। प्र० भय्या, महेश को खाने को तो सबसे बढ़िया और ज्यादा चाहिए, पर करता धरता कुछ नहीं। हमारे पीछे उसकी ज़िन्दगी कैसे चलेगी? यही फिक्र खाये जाती है। सुनने वाले ने कहा कि तुम्हारी फिक्र करने से क्या होगा भय्या। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी है, खाने को सिंह कमाने को बकरी।

खांड की रोटी जिधर से खाओ उधर से मीठी—अ० अच्छी बातें जिधर से सुनो उधर से ही अच्छी लगती हैं। प्र० आज की सीता स्वयंवर की लीला तो देखते ही बनती थी। विभावना ने बड़ा अच्छा पार्ट किया। सुनने वाले ने कहा कि वह तो खांड की रोटी थी, जिधर से खाओ उधर से मीठी।

खांड खूंदेगा सो खायेगा—अ० जो मेहनत करेगा सो सुख पायेगा। प्र० महेश खूब मेहनत करता है और आनन्द लूटता है। सच है, खांड खूंदेगा सो खायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खांडा बाजे रण पड़ै, दाँता बाजै घर पड़ै—अ० तलवार से तो सिर्फ़ शत्रु की फौज ही खत्म की जा सकती है पर क्लेश से तो घर नष्ट हो जाता है। प्र० भाई-भाई में सवेरे ही ऐसा दाँता पड़ा कि दिन भर चूल्हा नहीं जला। सच है खांडा बाजे रण पड़ै, दाँता बाजै घर पड़ै।

खाय घोड़ा कै रोड़ा—अ० घोड़ा खड़ा खाता है और घर में भी रुपया अनुमान से अधिक लगता है। प्र० प्रीतमपुरा में छोटे-छोटे दो कमरे ही डाले हैं। उनमें ही मैं बोल गया। सच है कि खाय घोड़ा कै रोड़ा।

खाय तो पछताय न खाय तो पछताय—अ० दिखावे की वस्तु के लिए प्रयोग किया जाता है। प्र० आजकल लोग इंजीनियरिंग की ओर दौड़ रहे हैं, पर पास होने पर नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। उस समय पछताते हैं। उन पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है, खाय तो पछताय न खाय तो पछताय।

खाय पान टुकड़े को हैरान—अ० आय से अधिक व्यय करना। प्र० अर्जुन वैसे तो मेरे तेरे से खा लेता है, पर सूट के बिना बाहर नहीं निकलता। सच है कि खाय पान टुकड़े को हैरान।

खाय बकरी की तरह सूखै लकड़ी की तरह—अ० रात दिन खाने पर भी जो व्यक्ति सूखता जाता है, उसके लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। प्र० आजकल देख रहा हूँ कि तुम्हारी वही दशा होती जा रही है कि खाय बकरी की तरह सूखै लकड़ी की तरह।

खाए मूंग रहे ऊँघ—अ० हल्का आहार लेने वाला कभी शक्तिशाली नहीं होता है। प्र० बन्धु, जिस दिन से तुमने परहेज का आहार लेना शुरू किया है, उस दिन से तुम सुस्त होते जा रहे हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि खाय मूंग रहे ऊंघ।

खाया पीया दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए—अ० जो व्यक्ति जितना कमाये उतना ही व्यय कर दे तो उस पर यह कहावत चरितार्थ होती है। प्र० दो वर्ष तक तुम परदेस रहे, कितना कमाकर लौटे हो? उत्तर मिला, दद्दा कुछ भी नहीं, तब दद्दा ने कहा कि तुम्हारी तो वही कहावत हुई, खाया पीया दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आये।

खाए के गाल और नहाए के बाल नहीं छिपते—अ० जब कोई व्यक्ति काम करके छिपाता है तो उस काम का करना उसके चेहरे से प्रगट हो जाता है। प्र० कपिल ने गुरू जी का बटुवा साफ़ कर दिया किन्तु जब उससे पूछा गया तो उसने मना कर दिया, पर उसके चेहरे के रंग से यह स्पष्ट हो रहा था कि चोरी उसी ने की है। सच है, खाये के गाल और नहाये के बाल नहीं छिपते।

खाल ओढ़ के सिंह की, स्यार सिंह नहीं होय—अ० बलवान का भेस धारण करने से कोई बलवान नहीं हो जाता। प्र० कल उमेश अपने अंकल की फ़ौजी वर्दी पहनकर बड़ी शेखी बघार रहा था। इतने में उसे एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँप दिखाई दे गया। उसे देखते ही उसके प्राण सूख गए। तभी नौकर ने उसे मार कर फेंका। तब अंकल ने कहा कि बेटा, खाल ओढ़ के सिंह की, सिंह स्यार नहीं होय।

खाला का दम और किवाड़ों की जोड़ी—अ० अति दरिद्रता। प्र० रमेश से पचास रुपये उधार ले आओ। इस पर सुनने वाले ने कहा कि उस पर क्या रखा है, वहाँ तो खाला का दम और किवाड़ों की जोड़ी है।

खाला जी का घर नहीं है—अ० सख्त काम सामने आने पर ऐसा कहा जाता है। प्र० बंधु, मैंने पहले ही बतलाया था कि ठेकेदारी करना खाला जी का घर नहीं है।

खाली बनियाँ बाट बट्टी हाड़े—अ० मेहनती व्यक्ति कुछ-न-कुछ करता ही रहता है। प्र० नौकरी से अवकाश प्राप्त होने पर उसने स्कूल खोल लिया। सच है, खाली बनियाँ बाट बट्टी हाड़े।

खिचड़ी खाते पहुँचा उतरे—अ० ऐसा कमज़ोर व्यक्ति के लिए कहा जाता है। प्र० मोहन, चारपाई लाकर यहाँ बिछा दो। इस पर मोहन ने कहा कि चारपाई उठाना मेरे बस की बात नहीं है। तब उसके बड़े भाई ने कहा कि खिचड़ी खाते तो पहुँचा उतरता है।

ख़िदमत से अजमत—अ० जो व्यक्ति दूसरों के आदेश का पालन करता है और उसके आदेश का पालन दूसरे करते हैं। प्र० बंधु, प्रभात कुमार के दोनों बच्चे सवेरे उठते ही नमस्कार करते हैं। इस पर सुनने वाले ने कहा कि तुम भी तो माता पिता को नमस्कार किया करते थे। जानते नहीं, ख़िदमत से ही अज़मत है।

खिलाये का नाम नहीं रुलाए का नाम—अ० भलाई के विषय में कोई कुछ नहीं कहता है; किन्तु बुराई के विषय में गाते फिरते है। प्र० बन्धु, मैंने बुआ जी के लड़के को तीन वर्ष तक अपने पास रखकर बी० ए० कराया, पर एक दिन किसी बात पर दो शब्द क्या कह दिए, उसका नाम सारे में हो गया। सच है कि खिलाये का नाम नहीं, रुलाये का नाम है।

खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे—अ० जब कोई व्यक्ति शर्मिन्दा होकर गुस्सा दिखाता है। प्र० प्रदीप को लोगों ने कल की घटना पर बहुत शर्मिन्दा किया, तब वह क्रोधित होकर अपनी चीजों को इधर-उधर फेंकने लगा। इस पर लोगों ने कहा कि यह तो वही बात है कि खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे।

ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने—अ० भगवान के रहस्य को भगवान ही जानता है। प्र० अमित ने सोहन से कहा कि हमारे पण्डित जी कितने विद्वान हैं, पर अच्छी तरह पेट का समाधान नहीं कर पाते और श्याम निरा भट्टाचार्य होने पर भी चैन की वंसी बजाता फिरता है। सच है ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने।

ख़ुदा की लाठी में आवाज़ नहीं—अ० मुसीबत या मौत कहकर नहीं आती है। प्र० कल चौधरी हरीसिंह हुक्के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में दम मारते-मारते वहीं ढेर हो गए। सच है कि खुदा की लाठी में आवाज़ नहीं।

खुदा गंजे को नाखून न दे—अ० जुल्मी को जब अधिकार मिल जाता है तो बड़ा दुःख होता है। प्र० विष्णुदत्त पहले ही निर्मोही था। पुलिस इंस्पेक्टर बन जाने पर तो वह लोगों को चैन से नहीं बैठने देता है। सच है कि खुदा गंजे को नाखून न दे।

खुदा मेहरबान तो जग मेहरबान—अ० प्रभु की कृपा होती है तो सब लोग कृपा करते हैं। प्र० आजकल तो वसन्तकुमार पर मैनेजर साहब बहुत मेहरबान हैं। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि जब खुदा मेहरबान तो जग मेहरबान।

खुदा लगती कोई नहीं कहता, मुंह देखी सब कहते हैं—अ० धर्मानुसार कोई नहीं कहता, झूठी प्रशंसा सब करते हैं। प्र० सब कुछ जानते हुए भी पटवारी जी के सामने सच्ची बात न कहकर उनकी-सी कहने लगे। सच है कि खुदा लगती कोई नहीं कहता, मुँह देखी सब कहते हैं।

खुड़का हुआ चोर उभरा—अ० पापी के पैर नहीं होते हैं। प्र० कल मैंने विचित्र नजारा देखा कि एक कौआ जो एक कबूतरी के अण्डे लेने आया था, उसको उसने ऐसा दबाया कि वह उड़ता ही नजर आया। सच है कि खुड़का हुआ चोर उभरा।

खुदा लड़ने की रात सबको दे, बिछुड़ने का दिन न दे—अ० जहाँ दो बर्तन होते हैं, खड़कते ही हैं पर कोई छीजे नहीं। प्र० सुग्रीव और वालि में कितनी शत्रुता थी, फिर भी श्रीराम के द्वारा वालि के मरने पर सुग्रीव कैसा रोया? सच है कि खुदा लड़ने की रात सबको दे, बिछुड़ने का दिन न दे।

खुदी और खुदाई में बैर है—अ० गर्व और प्रभु भक्ति में सदैव विरोध रहता है। ईश्वर भक्त पांडवों ने दुष्ट दुर्योधन का घमण्ड चूर-चूर कर दिया। सच है, खुदी और खुदाई में बैर है।

खुशबू छिपाये नहीं छिपती—अ० व्यक्ति के अच्छे गुण छिपाये नहीं छिपते हैं। प्र० मुकेश ने परदेश में जाकर अपनी विद्वत्ता को बहुतेरा छिपाया, पर अन्त को खुल ही गई। सच है कि खुशबू छिपाये से नहीं छिपती है।

खुशामद से आमद है—अ० चाटुकारों को हर चीज़ मिल जाती है। प्र० पंडित जी हर रोज सेठ जी की चाटुकारिता करके अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। सच है कि खुशामद से आमद है।

खूटे के बल बछड़ा कूदे—अ० जब स्वामी सहायक होता है तो सेवक सब कुछ कर लेते हैं। प्र० कल रायसाहब के सेवकों ने कितना साहसी काम करके दिखाया है? सच है कि खूंटे के बल बछड़ा कूदता है।

खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो—अ० जब दो व्यक्ति एक ही प्रकृति के मिल जाते हैं तो उनकी ज़िन्दगी सुख से बीतती है। प्र० श्याम और मदन दोनों एक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभाव के व्यक्ति हैं सो सुख से अपना समय काट रहे हैं। सच है खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो।

खूब दुनिया को आजमा देखा, जिसको देखा बेवफ़ा देखा—अ० यह मायावी जगत् स्वार्थी है। प्र० मैंने रात दिन श्याम की सहायता की पर बीमार पड़ने पर वह देखने तक नहीं आया। सच है कि खूब दुनिया को आज़मा देखा, जिसको देखा बेवफ़ा देखा।

खेत गये सो किसान—अ० काम पर ही व्यक्ति का नाम पड़ जाता है। प्र० मधुकर पण्डित होते हुए भी पान की दुकान करने से पनवाड़ी ही कहलाता है। सच है कि खेत गये सो किसान।

खेत बिगाड़े खरतुआ, सभा बिगाड़े दूत —अ० नीच की सगति से उत्तम भी नीच हो जाते हैं। प्र० मदन जुआरियों के बीच क्या बैठने लगा है कि खुद भी जुआरी हो गया है। सच है कि खेत बिगाड़े खरतुआ, सभा बिगाड़े दूत।

खेत में उपजै सब कोई खाय, घर में उपजै घर बह जाय—अ० फूट जब खेत में पैदा होती है तो सब खाते हैं और जब घर में पड़ जाती है तो वह उसे ले डूबती है। प्र० बंधु, रावण विभीषण में फूट पड़ी तो लंका जल गई। इस पर सुनने वाले ने कहा कि तुम जानते नहीं कि खेत में उपजै सब कोई खाय, घर में उपजै घर बह जाय।

खेती करैं न बजी जाएँ, विद्या के बल बैठे खाएँ—अ० शिक्षित लोग कोई कठिन कार्य नहीं करते हैं फिर भी सुख से जीवनयापन करते हैं। प्र० रतिमोहन ने शिवराम से कहा, भाई, पंडित जी कुछ भी नहीं करते हैं। पर उनके शिष्य उनकी सेवा रात-दिन करते रहते हैं। हाँ, भाई! ठीक कहते हो, जानते नहीं कि खेती करैं न बंजी जाएँ, विद्या के बल बैठे खाएँ।

खेती खसम सेती अ० कोई भी कार्य जिसकी सुचारू रूप से देखभाल न की जाये तो बिगड़ जाता है। प्र० रामसेवक ने अपना सारा कारोबार नौकरों पर छोड़ दिया था। उन्होंने थोड़े ही दिनों में उसे ठिकाने लगा दिया। सच है कि खेती खसम सेती।

खोदा पहाड़ निकला चूहा—अ० मेहनत अधिक करने पर भी लाभ कम होना। प्र० पैतृक धन सम्पत्ति के लिए सारा घर-बार खोद डाला, पर निकले खाली पीतल के दो बर्तन। यह तो वही कहावत हुई कि खोदा पहाड़, निकला चूहा।

खोटा बेटा और खोटा पैसा समय पर काम आता है—अ० इस मायावी जगत् में कोई भी चीज़ वृथा नहीं है। प्र० एक दिन श्यामसुन्दर को राह में चलते-चलते देर हो गई तो वह अपने एक ऐसे मिलने वाले के पास गया, जिससे उसे कोई आशा न थी। पर उसने उसे सम्मान के साथ भोजन कराकर आराम करने के लिए शय्या भी दी। सच है खोटा बेटा और खोटा पैसा समय पर काम आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग

गई जवानी फेर न आवै लाख मलीदा खाय अ० जो बात हो जाती है वह भरसक प्रयास करने पर भी वापस नहीं आती है। प्र० रम्भा दवाओं का सेवन करके फिर युवती होना चाहती है। वह यह नहीं जानती कि गई जवानी फेर न आव लाख मलीदा खाय।

गई सो गई अब राखु रही को—अ० जो हो चुका उसे भूलकर अब आगे की सम्भाल करो। प्र० अरे बंधु! जो होना था सो हो चुका, अब आगे की सुध लो। क्या तुमने सुना नहीं कि गई सो गई अब राखु रही को।

गऊ के मुंह में दूध है—अ० जितना गुड़ डालो उतना ही मीठा होता है। प्र० सेठ जी अपने सेवकों को अच्छी तनख्वाह देते हैं। वे भी जी तोड़ कर मेहनत करते हैं। सच है कि गऊ के मुँह में दूध है।

गंगा किसकी खुदाई है—अ० गंगा पर सबका समान अधिकार है, क्योंकि वह ईश्वर की देन है। प्र० ललित और भूषण दोनों ही सड़क पर चल रहे थे। ललित ने भूषण से कहा कि तुम सड़क पर मत चलो। इस पर भूषण ने उत्तर दिया, क्यों, कहो तो गंगा किसकी खुदाई है।

गंगा को आना भगीरथ को जस लेना—अ० होनहार होकर रहती है पर मनुष्य को मुफ्त में ही वड़ाई मिल जाती है। प्र० भावना को तो प्रथम आना ही था, पर ट्यूटर महोदय को मुफ्त की वड़ाई मिल गई। सच है, गंगा को आना भगीरथ को जस लेना।

गंगा को पैरिबौ, विप्रन कौ त्यौहार। पार गये तो पार है, डूब गये तो पार—अ० शुभ कार्य में सब तरह की भलाई है। प्र० योगीराज कृष्ण ने धनुर्धारी अर्जुन से कहा, बंधु, युद्ध करते मर गए तो स्वर्ग को गए और विजयी हुए तो राज्य मिला। तुम्हारी तो वही कहावत है कि गंगा को पैरिबौ, विप्रन कौ त्यौहार। पार गये तो पार है, डूब गये तो पार।

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुना दास—अ० जिससे संसर्ग किया उसी का राग अलापा। प्र० सत्यवीर का तो कोई ठिकाना नहीं, जिसके पास जाता है उसी की मिलती-मिलती कहता है। इस पर सुनने वाले ने कहा, अरे बंधु, उसकी भली कही, उसकी तो वही कहावत है कि गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमनादास।

गंगा गये मुड़ाये सिद्ध—अ० जब कोई परदेश जाता है तो कोई न कोई वस्तु लानी ही पड़ती है। प्र० जब प्रवीण बम्बई गया था तो वहाँ से बहुत-सा सामान घरवालों के लिए लेकर आया। भाभी ने कहा कि इतना क्यों खर्च आये? इस पर प्रवीण ने उत्तर दिया कि आपने सुना नहीं भाभी, गंगा गए मुड़ाये सिद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा नहाना—अ० मुसीबत से छुट्टी पाना। प्र० हरिया साहूकार का हिसाब चुकता करके गंगा नहा गया।

गँवार की अक्ल गुद्दी पीछे—अ० मूर्ख को काम बिगाड़कर सूझती है। प्र० अरे, तुझे पूंजी गँवाकर अब तो अक्ल आ गई। सच है कि गँवार की अक्ल गुद्दी पीछे।

गधा खेत खाय जुलाहा मारा जाय—अ० करे कोई भरे कोई। प्र० कैसा जमाना आ गया है। खेत तो क़ाटा जग्गू चौधरी ने और पकड़ा गया हरिया कहार। यह तो वही कहावत हुई कि गधा खेत खाय, जुलाहा मारा जाय।

गधा धोए से बछड़ा नहीं हो जाता—अ० नीच व्यक्ति उत्तम वस्त्र पहनने से उत्तम नहीं हो जाता है। प्र० मोहन कहार चन्दनादि लगाकर स्वयं को पंडित समझ बैठता है, पर कल जब सामने तली हुई मछली देखी तो मुंह में से राल टपकने लगी। सच है कि गधा धोए से बछड़ा नहीं हो जाता।

गधे को अंगूर—अ० जब किसी व्यक्ति को ऐसी कोई वस्तु दी जाए जिसके वह योग्य न हो। प्र० अरे बंधु! अब यह कोट चेता चमार को दे दो। सुनने वाले ने उत्तर दिया, वाह, गधे को अंगूर।

गधे को गधा ही खुजाता है—अ० नीच का साथ नीच से ही होता है। प्र० हरिया चेता चमार के साथ कैसा खुश रहता है। सच है कि गधे को गधा ही खुजाता है।

गधे को दिया नमक, उसने कहा, मेरी आँख फोड़ी—अ० भला करने पर भी किसी को बुरा लगे। प्र० बंधु, मैंने अभिमन्यु को खड़ा किया नौकरी के लिए। उसने कहा कि मुझसे दलेल ले रहे हो। सच है कि गधे को दिया नमक, उसने कहा, मेरी आँख फोड़ी।

गड्ढा भरना—अ० कमी पूरी करना। प्र० इतने दिन से मेहनत कर रहा हूँ फिर भी मेरा अभी तक गड्ढा नहीं भरा गया है।

गढ़े कुम्हार और भरै संसार—अ० कोई एक व्यक्ति काम करे और सारा जगत उससे लाभान्वित हो। प्र० अर्जुन ने बलबीर से कहा, बंधु, खेती तो करें हम, खायें सारे जीव जन्तु। इस पर बलवीर ने उत्तर दिया, यह तो वही बात है कि गढ़े कुम्हार और भरै संसार।

गढ़े मुर्दे उखाड़ना—अ० अतीत की चर्चा फिर से करना। प्र० जो कुछ हो चुका है उसे भुला दो भावना। भविष्य को देखो। अब गढ़े मुर्दे उखाड़ना तुम्हारे हित में नहीं है।

गया मर्द जिन खाई खटाई, गई नारी जिन खाई मिठाई—अ० खटाई खाने वाला और मिठाई खाने वाली दोनों ही अपना अस्तित्व खो देते हैं। प्र० अब्दुल्ला हाजी कहलाता था। मुहल्ले भर में उसकी इज्ज़त थी। थोड़े से लालच में आकर उसने अपने आपको ख़त्म कर लिया। सच है कि गया मर्द जिन खाई खटाई, गई नारी जिन खाई मिठाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया वक्त फिर हाथ नहीं आता—अ० बीता हुआ समय कभी भी नहीं लौटता है। प्र० खेल-कूद से ध्यान हटाकर पढ़ने-लिखने में लगाओ, वरना पछताओगे। जानते नहीं, गया वक्त फिर हाथ नहीं आता।

गये ऊन के लेन को आये सीस मुड़ाय—अ० कमाने के लिए निकले थे, घर की पूँजी खोकर घर आ बैठे। प्र० प्रमोद ने फैक्टरी लगाई थी कुछ कमाने के लिए, वह कुछ ही महीनों में पूँजी भी खा गई। सच है कि गये ऊन के लेन को आये सीस मुड़ाय।

गये थे रोजे बख़शवाने नमाज़ गले पड़ी—अ० जब कोई व्यक्ति सुख की आशा से जाए और वहां उसमें दु.ख निकले। प्र० बंधु, हरीराम गया तो था इसलिए कि उससे नम्बरदारी ले ली जाए, पर मुखिया और बना दिया गया। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ हो गई कि गये थे रोज़े बख़शवाने नमाज़ गले पड़ी।

गयौ वक्त अब तीर कौ आय गई बन्दूक—अ० देसी राज्य गया और फिरंगियों का राज्य आ गया। प्र० अरे, हरिया अब क्या पंख देखता फिरता है। जानता नहीं कि गयौ वक्त अब तीर कौ, आय गई बन्दूक।

गर्द को भी न पहुँचना—अ० बहुत पीछे रहना। प्र० कल तो तुम्हारा घोड़ा सुरेश के घोड़े की गर्द को भी न पहुँच सका।

गर्दन पर सवार रहना—अ० हर वक्त देखभाल करना। प्र० अब वह वक्त आ गया है कि नौकरों की गर्दन पर सवार रहकर ही काम करा सकते हो।

गर्दन फँसाना—अ० किसी मुसीबत में फँसना। प्र० मैं तुम्हारे किसी मामले में अपनी गर्दन फँसाना नहीं चाहता हूँ।

गर्म खाय ठंडा नहाय, ओस बसै, उसके वैद्य सामने हँसै—अ० जो व्यक्ति ठीक विधि से नहीं रहते वे रोगी रहते हैं। प्र० लल्ला घर के अन्दर न सोकर ओस में सोता है, जलता-भुनता आहार करता है और बर्फ़ का ठंडा पानी पीता है, सो सदा खाट पर बना रहता है। सच है कि गर्म खाय, ठंडा नहाय, ओस बसै, उसके वैद्य सामने हँसै।

गर्म लोहे को ठंडा लोहा काटता है—अ० गुस्से को शांति से जीता जा सकता है। प्र० परशुराम को श्रीराम ने विनय से ही जीत लिया। सच है कि गर्म लोहे को ठंडा लोहा काटता है।

गरजते हैं सो बरसते नहीं—अ० जो कहते हैं सो करते नहीं। प्र० वैसे तो तुम बड़ी डींगें मारा करते थे कि मेरी उपराज्यपाल तक पहुँच है, जब काम पड़ा तो मुँह छिपाने लगे। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी, गरजते हैं सो बरसते नहीं।

गरीब की जोरू सबकी भाभी—अ० ग़रीब व्यक्ति को सब दबाते हैं। प्र० बेचारा रमला ग़रीब है, सबकी उसी पर तान टूटती है। सच है कि ग़रीब की जोरू सबकी भाभी।

गरीब की हाय बुरी है—अ० दीनों का कोसना बहुत बुरा है। प्र० सेठ जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने ग़रीब रामा को सताया था, सो अब उसका फल पा रहे हैं। सच है कि ग़रीब की हाय बुरी है।

ग़रीबी तेरे तीन नाम लुच्चा, गुण्डा, बेईमान—अ० ग़रीब व्यक्ति को जिसके जो जी में आता है वही कहता है। प्र० बन्धु ! लक्ष्मी नारायण को कंगाली के कारण सब लच्छू-लच्छू कह कर पुकारते हैं। ठीक है, ग़रीबी तेरे तीन नाम, लुच्चा, गुण्डा, बेईमान।

गला छुड़ाना--अ० पीछा छुड़ाना। प्र० किरोड़ीमल ठीक व्यक्ति नहीं है, जितनी जल्दी हो सके उससे गला छुड़ा लो भय्या।

गले का हार होना—अ० अति निकट होना। प्र० आजकल तो घनश्याम तुम्हारे गले का हार हो रहा है।

गागर में सागर भरना—अ० छोटी-सी बात में महान् अर्थ निकलना। प्र० विहारी के दोहे गागर में सागर हैं।

गाजर मूली समझना—अ० किसी व्यक्ति को छोटा समझना। प्र० तुम्हारा हरेक को गाजर मूली समझना ठीक नहीं है।

गाँठ का पूरा अक़ल का अधूरा—अ० धनी मूर्ख। प्र० महेश तो नाना की सम्पत्ति को उड़ाये दे रहा है। सुनने वाले ने उत्तर दिया, उसकी क्या बात है, वह तो गाँठ का पूरा अक़ल का अधूरा है।

गाँठ न कुट्ठी फड़फड़ाय उट्ठी—अ० जब पैसा पास न हो और सब चीजों की इच्छा हो। प्र० बंधु, कल तो प्रगति मैदान में अनेक चीज़ें देखकर मेरा मन उन्हें लेने के लिए ललचा उठा था पर गाँठ में कुछ न था, सो मन मारकर रह गया है। सच है कि गाँठ न मुट्ठी फड़फड़ाय उट्ठी।

गाँठ बाँधना अ० न भूलना। प्र० अगर जीवन में उन्नति करना चाहते हो तो मेरी बात गाँठ बाँध लो।

गाँठ में पैसा नहीं बाँकीपुर की सैर—अ० ग़रीब को अच्छी वस्तु भी खुशी नहीं देती है। प्र० बन्धु, कल मेरी जेब खाली थी, इसलिए वसन्त का मेला भी फीका लगा। सच है कि गाँठ में पैसा नहीं बाँकीपुर की सैर।

गाढ़ी छानना—अ० अधिक मित्रता। प्र० आजकल तो श्रीयांस और श्याम की गाढ़ी छन रही है।

गाय का दूध सो माय का दूध—अ० गऊ का दूध माता के समान गुणकारी होता है। प्र० क्या कहूँ भय्या, जिस दिन से नितिन ने जन्म लिया है, उसी दिन से सावित्री बीमार है, बेचारा गाय के दूध पर ही जी रहा है। सच है कि गाय का का दूध सो माय का दूध।

गाय को अपने सींग भारी नहीं होते—अ० अपना परिवार किसी को भारी प्रतीत नहीं होता है। प्र० ललित मोहन के ग्यारह बेटे-बेटियाँ है फिर भी उसके माथे पर चिन्ता की रेखा नहीं देखी। सच है कि गाय को अपने सींग भारी नहीं होते हैं।

गाल बजाना गाल मारना—अ० बहुत डींगें मारना। प्र० महेन्द्र की बातों पर मैं तो यकीन नहीं करता, तुम बेशक करो। वह तो गाल बजाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहल्ले भर में मशहूर है।

गाल वाला जीते माल वाला हारे—अ० अधिक बकवासी व्यक्ति अपना कार्य सिद्ध कर लेते हैं। प्र० गिरधारी लाल ने आखिर मकान मालिक के साथ वाला मुकद्दमा बावैला मचाकर जीत ही लिया। सच है कि गाल वाला जीते, माल वाला हारे।

गाली और सब्जी तो खाने के ही लिए हैं—अ० गाली सुनकर गुस्सा नहीं करना चाहिए प्र० अरे, तूने सतीश को क्यों मारा ? भय्या ! उसने मुझे गाली दी थी। इस पर उसने कहा, पगले, गाली और सब्ज़ी तो खाने के ही लिए हैं।

गाँव में घर न जंगल में खेती अ० अति निर्धन। प्र० जगदीश के पुत्र की सगाई तो आ गई, पर उसके तो गाँव में घर न जंगल में खेती है।

गाँव में धोबी का छैल—अ० गरीबी में जिसे माँगी हुई चीज मिल जाए। प्र० अरे, तुमने देखा कि हरीमोहन माँगे-ताँगे कपड़े पहनकर कैसा साफ़-सुथरा बना फिरता है। सच है कि गाँव में धोबी का छैल।

गिन पोई सम्भाल खाई—अ० सारी आय को खाने पीने में ख़त्म कर देना और भविष्य के लिए न बचाना। प्र० मैंने राधेश्याम से पचास रुपये माँगे थे सो हंसकर बोला कि मेरे पास कहाँ हैं, मेरी तो वही बात है कि गिन पोई सम्भाल खाई।

गिनी रोटी नपा शाक—अ० नपा तुला खर्च रखना। प्र० रमेश कितना समझदार है, थोड़े से वेतन में भी पच्चीस रुपये सुख-दुःख के लिए रख छोड़ता है। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है कि गिनी रोटी नपा शाक।

गिरगिट की दौड़ बिटौरे लों—अ० कोई भी व्यक्ति अपनी ताकत से बढ़कर काम नहीं कर सकता है। प्र० आशीष, तुम्हारे भाई गौरव पर आपदा आ पड़ी है, तुम्हें उसकी सहायता करनी चाहिए। इस पर आशीष ने उत्तर दिया, अंकल, मैं क्या कर सकता हूँ ? थोड़ी बहुत मदद के लिए दादा जी को कह सकता हूँ। आप तो जानते ही हैं कि गिरगिट की दौड़ बिटौरे लों।

गिरगिट के से रंग बदलना—अ० बात-बात पर अपना ढंग दिखलाना। प्र० बाघेरिया से पूछकर देखो, शायद इस काम में वह तुम्हारी कुछ मदद कर दे। सुनने वाले ने उत्तर दिया, उसकी बात जाने दो यार, वह तो गिरगिट के से रंग बदलता है।

गिरा अनैन नैन बिनु बानी—अ० नेत्रों की जिह्वा नहीं और जिह्वा के नेत्र नहीं। जब कोई व्यक्ति आँखों देखी बात का वर्णन न कर सके। प्र० राम और लक्ष्मण के सौन्दर्य को निहार कर भी सीता की सखी उनके रूप लावण्य का वर्णन न कर सकी, तो कहा कि श्याम गौर किमि कहैं वखानी, गिरा अनैन नैन बिनु पानी।

गिरि सम होंहि कि कोटिक गुंजा—अ० बहुत-सी छोटी-छोटी वस्तुएँ मिलकर भी पर्वत के समान नहीं हो सकतीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। प्र० गुलशन अपने चार-पाँच कुत्तों को मिलाकर हाथी की बराबरी करावे सो वृथा है। क्या उसने सुना नहीं कि गिरि सम होंहि कि कोटिक गुंजा।

गिरे का क्या गिरेगा—अ० जो ग़रीब है उसका और क्या कोई लेगा? प्र० हरिया गिरधारी से कहता है कि मैं तुझे मिट्टी में मिला दूंगा। भला गिरे का क्या गिरेगा, यह उसने नहीं सोचा।

गिलोय और नीम चढ़ी—अ० जब किसी व्यक्ति का स्वभाव तो कटु हो और उसे साथी भी वैसा ही मिल जाए। प्र० हरीश स्वयं तो जैसा है, तुम जानते ही हो, पर अब तो मुकेश जुआरी और मिल गया है। बस, तो फिर क्या है, गिलोय और नीम चढ़ी।

गीदड़ की मौत आये तो गाँव की ओर दौड़े—अ० जैसी होनी होती है, वैसी ही बुद्धि हो जाती है। प्र० जब लंकापति के बुरे दिन आये तो महारानी सीता का हरण कर ले गया। सच है कि जब गीदड़ की मौत आये तो गाँव की ओर दौड़े।

गीदड़ गिरा झोरे में, आज यहीं विश्राम—अ० लाचारी में संतोष दिखाना। प्र० कल जंगल में राह भूल जाने के कारण पेड़ के नीचे रात बितानी पड़ी। सुनने वाने ने उत्तर दिया, तुम्हारे पर तो वही बीती कि गीदड़ गिरा भोरे में, आज यहीं विश्राम।

गीदड़ भबकी—अ० झूठी धमकी। प्र० रमेश तुम्हारी गीदड़ भबकी में आने वाला नहीं है।

गीधी गाय गिलोंदे खाय, दौरि-दौरि महुआ तर जाए—अ० जहाँ जिसे कुछ मिलता है, वह वहाँ बारम्बार जाता है। प्र० हरीराम सेठ जी के पास जब भी जाता है, कुछ न कुछ लेकर ही आता है। तुम सदा उसे उन्हीं के द्वार पर खड़ा देखोगे। सुनने वाले ने कहा कि ठीक ही तो है, गीधी गाय गिलोंदे खाय, दौरि-दौरि महुआ तर जाय।

गीली लकड़ी जिधर चाहो मोड़ो—अ० गीली लकड़ी को इच्छानुसार रूप दिया जा सकता है। प्र० रमेश हर वक्त गाली बकता रहता था, उसका बेटा भी सीख गया। अब बेटे के मुख से गाली सुनकर पछताता है। सच है कि गीली लकड़ी जिधर चाहो मोड़ लो।

गीली सूखी सब जलती है—अ० जुल्मी को किसी पर दया नहीं आती है। प्र० महाजन भी अजीब व्यक्ति है, सबको एक लाठी हाँकता है। सुनने वाले ने उत्तर दिया, घबराते क्यों हो, उसके यहाँ गीली सूखी सब जलती है।

गुज़र गई गुज़रान क्या झोंपड़ी और क्या मैदान-- अ० जो व्यक्ति स्थिति की परवाह न करके वक्त गुज़ार दे। प्र० स्वामी जी, आप खुले में न सोइये, आपके लिए बिस्तर कमरे में लगा दिया गया है। स्वामी जी ने उत्तर दिया, वत्स ! अपना क्या है। गुज़र गई गुज़रान, क्या झोंपड़ी और क्या मैदान।

गुनाह और बेलज्जत—अ० जिस कुकृत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भी कोई फायदा न पहुंचे। प्र० चुगली खाने पर भी तुम्हारा काम नहीं बना। सच है कि गुनाह और बेलज्जत।

गुड़ खाय गुलगुलों की आन—अ० जो व्यक्ति दिखावे मात्र के लिए परहेज़ करता हो। प्र० तुम भी अजीब हो भय्या, बेटी के घर तो खा-पी आते हो और मेरे घर पानी भी नहीं पीते। सच है कि गुड़ खाय गुलगुलों की आन।

गुड़ दिए मरे तो विष क्यों दे—अ० यदि भलाई करने से ही शत्रु वश में किया जा सके तो उसके साथ बुराई करने की आवश्यकता नहीं है। प्र० विवेक की अभिमन्यु के साथ शत्रुता थी पर विवेक ने उसकी ज़मानत देकर उसे अपने वश में कर लिया। ठीक तो है, गुड़ दिये मरे तो विष क्यों दे?

गुड़ न दे पर गुड़ की सी बात तो कहे—अ० यदि किसी के साथ भलाई न कर सको तो उसके साथ मीठे वचन तो बोलो। प्र० तुम अजीब इंसान हो, बच्चे ने आकर तुम्हें प्रणाम किया और तुम उसे खाने को दौड़े। सच है कि गुड़ न दे, पर गुड़ की सी बात तो कहे।

गुड़ भरी दराती, खाते बने न उगलते—अ० जब कोई कार्य ऐसा आ पड़े कि न तो छोड़ा ही जाय, न किया जाय। प्र० इधर महेश दस हजार की ज़मानत देने के लिए विवश कर रहा है, उधर मकान मालिक कहता है कि तुमने महेश की मदद की तो मैं तुम्हें देख लूंगा। मेरी स्थिति तो वही है कि गुड़ भरी दराती, खाते बने न उगलते।

गुड़ सा मीठा है भगवान, बाहर भीतर एक समान—अ० प्रभु भक्ति हर प्रकार से सुखदायी है। प्र० रामलखन का अधिकांश समय तो प्रभु भक्ति में ही चला जाता है। सुनने वाले ने उत्तर दिया, क्यों न जाए, सुना नहीं, गुड़ सा मीठा है भगवान, बाहर भीतर एक समान।

गुड़ियों के ब्याह में चीओं की बखेर—अ० जैसा काम वैसा साज। प्र० कपिल ने मजदूरों को रोटी खिलायी सो बाजरे की थी। ठीक है, गुड़ियों के ब्याह में चीओं की बखेर।

गुरु गुड़ ही रहे चेले शक्कर हो गए—अ० जब शिष्य गुरु से बढ़ जाये। प्र० बंधु, गुरु जी तो अब तक लड़के ही पढ़ाते हैं, पर उनके शिष्यों को देखा, मंत्री तक हो गए। सच है कि गुरु गुड़ ही रहे चेले शक्कर हो गए।

गुरु गुरु विद्या, सुरसुर ज्ञान—अ० एक ही व्यक्ति में सब गुण नहीं मिलते हैं। प्र० बंधु! दत्तात्रेय ने चौबीस गुरु किये थे। इससे सिद्ध है कि गुरु गुरु विद्या, सुरसुर ज्ञान।

गुरु जी चेले बहुत हो गए, बच्चा, भूखे मरेंगे तो सब चले जाएँगे—अ० जब आवश्यकता से अधिक परिवार बढ़ जाता है तो सदस्य स्वयं ही अलग होना शुरू कर देते हैं। प्र० ठाकुर की हवेली छोटी होने के कारण सब अलग-अलग रहने लग गए। अब वहाँ ठाकुर ठकुराइन के अलावा कोई नहीं रहा। इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनने वाले ने उत्तर दिया, यह तो वही बात हुई कि गुरुजी चेले बहुत हो गए, बच्चा, भूखे मरेंगे तो आप चले जाएँगे।

गुरु तो ऐसा होना चाहिए जो सिकलीगर होय। जन्म-जन्म का मोरचा छिन में डारे धोय—अ० गुरु ऐसा ज्ञानी होना चाहिए जो जन्म जन्मान्तर के पापों का हरण कर दे। प्र० महात्मा बुद्ध ने अंगुलीमाल डाकू को एक पवित्र आत्मा बना दिया। सच है कि गुरु तो ऐसा चाहिए जो सिकलीगर होय। जन्म-जन्म का मोरचा छिन में डारे धोय।

गुरु बिन व्याकुल चेलवा, कंठ बिना ज्यों गीत—अ० निगुरे का निश्चय नहीं होता, जैसे बेसुरे का गाना नहीं होता है। प्र० अरे, सारा इतिहास घोट लेने पर भी डावांडोल ही हो। सच है, गुरु बिन व्याकुल चेलवा, कंठ बिना ज्यों गीत।

गुरु से कपट मित्र से चोरी, कै हो निर्धन कै हो कोढ़ी—अ० गुरु से बात की चोरी रखना और मित्र को धोखा देना दोनों ही दुखदायी हैं। प्र० महेश को धोखा कर विकल अब पछता रहा है। ठीक है कि गुरु से कपट मित्र से चोरी, कै हो निर्धन कै हो कोढ़ी।

गूंगे की दर गूंगा जानै कै गूंगे के घर के—अ० जैसे की बात तैसा ही समझ सकता है। प्र० भद्रसैन ने मित्रसैन से कुछ कहा और कोई कुछ न समझा, पर वह उठकर उसके साथ चल दिया। ठीक है कि गूंगे की दर गूंगा जानै कै गूंगे के घर के।

गू का कीड़ा गू में ही खुश रहता है—अ० नीच नीचों के साथ ही अच्छा रहता है। वीरेन्द्र को बहुत रोकते हैं, पर वह आवारा लड़कों के ही पास जाकर बैठता है। सच है, गू का कीड़ा गू में ही खुश रहता है।

गू की दारू मूत—अ० जैसे को तैसा जवाब मिलना। प्र० महेश ने नरेश को मारने के लिए चप्पल उठाई, उसने लाठी। बस फिर क्या था, महेश भागता ही दिखाई दिया। सच है कि गू की दारू मूत।

गू में ईंट डालना और छींट खाना—अ० नीच व्यक्ति को छेड़ना और नीच कहलाना। प्र० हरिया एक दिन चेता चमार से अड़ गया। इस पर उसे देखकर सुखदेव ने कहा, बन्धु चलो, क्यों गू में ईंट डाली और छींट खाई।

गेहूँ की रोटी को फौलाद का पेट चाहिए—अ० पैसा होने पर निराभिमान होना कठिन है। प्र० बन्धु, जिस दिन से तुम्हें दादा का माल मिला है, उस दिन से तुम किसी को कुछ समझते ही नहीं हो। सच है कि गेहूँ की रोटी को फौलाद का पेट चाहिए।

गेहूँ के साथ घुन पिस जाता है—अ० दुर्जनों के साथ रहकर सज्जन भी दुःख पाता है। प० अब्दुल्ला कितना नेक इंसान है, पर कुछ बदमाशों के साथ रहने से उसके झोंपड़े की भी तलाशी हुई। सच है कि गेहूँ के साथ घुन पिस जाता है।

ग़ैर का सिर पंसेरी बराबर—अ० किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चोट को चोट ही न समझना। प्र० आज तो नरेन्द्र ने कपिल की पीठ पर बहुत घूंसे मारे। सुनने वाले ने उत्तर दिया, अरे बन्धु, वह तो ग़ैर के सिर को पंसेरी बराबर समझता है।

गोझे का घाव, रानी जाने कै राव—अ० किसी भेद की बात को दूसरा कोई न जानता हो। प्र० बन्धु, राधेश्याम और प्रेम दोनों के बीच में कोई नहीं कह सकता कि क्या बात है। इस पर सुनने वाले ने कहा कि गोझे का घाव, रानी जानें कै राव।

गोद के को छोड़ कर पेट के की आस करे—अ० आने वाले माल के लिए पास रखे माल को ख़त्म कर देना। प्र० रवीन्द्र मामा के माल की आशा में अपना सारा धन लुटा रहा है। उसकी तो वही स्थिति है कि गोद के को छोड़ कर पेट के की आस करे।

गोबर गणेश—अ० बेवकूफ। प्र० महेश से कुछ आशा मत रखो। वह तो गोबर गणेश है।

गोरी का माँस चुटकियों में जाय—अ० किसी के पैसे को मित्र मंडली चट कर जाये। प्र० उस बेचारे के जो कुछ पल्ले था, वह सब मित्र मंडली ने साफ़ कर दिया। सच है कि गोरी का माँस चुटकियों में जाय।

गोरे बरात बहू पीपलियों—अ० काम के समय रफूचक्कर हो जाना। प्र० तुम्हारे घर पर तो पार्टी चल रही है और तुम यहाँ फिर रहे हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि गोरे बरात बहू पीपलियों।

गोला बारूद कहीं जाय, अपनी तलब से काम—अ० मालिक को फायदा हो या नुकसान, अपनी तनख्वाह से मतलब। प्र० वाह रे बन्धु, तुम पड़े ऐंड़ते हो, दूकान में से कुत्ते घुस-घुस निकलते हैं। तुम्हारी तो वही कहावत है कि गोला बारूद कहीं जाय, अपनी तलब से काम।

गौं निकली आँख बदली—अ० जब काम निकल जाता है तो कोई भी बात नहीं करता है। प्र० हरीमोहन पहले तो भगतराम के घर पड़ा रहता था, पर जबसे उसने रुपये उधार दिये, तब से उसने शक्ल दिखानी भी छोड़ दी। सच है कि गौं निकली आँख बदली।

घ

घड़ी में औलिया घड़ी में भूत—अ० जिस व्यक्ति का स्वभाव ठिकाने न हो, उसके लिए इसका प्रयोग किया जाता है। प्र० मैंने राममनोहर से एक काम करने के लिए कहा था सो उसने नहीं किया। अरे बन्धु! तुमने भी काम के लिए किस व्यक्ति को चुना। जानते नहीं। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है कि घड़ी में औलिया घड़ी में भूत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी में घर जले नौ घड़ी में भद्रा—अ० जब वक्त पर टाल मटोल हो। प्र० मैंने रमेश को कुछ पृष्ठ टाइप करने के लिए कहा, सो उसने उत्तर दिया कि मैं एकाध घंटे बाद करके दूंगा। सच है कि घड़ी में घर जले नौ घड़ी में भद्रा।

घड़े में घड़ियाल—अ० अनहोनी बात का होना। प्र० बन्धु! आजकल ऐसे दुर्दिन आ गए हैं कि घर में भी घूस की अधिकता हो गई। इस पर उसने उत्तर दिया कि बन्धु, क्या तुमने सुना नहीं कि घड़े में घड़ियाल।

घमण्डी का सिर नीचा—अ० अभिमान को शर्मिन्दा होना पड़ता है। प्र० महेश अपने अभिमान में किसी को नहीं गिनता था, पर कल उसका ऐसा मान भंग हुआ कि सिर नीचा हो गया। सच है कि घमण्डी का सिर नीचा।

घर आई लक्ष्मी को कोई लात नहीं मारता—अ० घर में आये पैसे को कोई उल्टा नहीं फेरता है। प्र० नलिन को तीन सौ रुपए की नौकरी का पत्र आया, वह उसे उल्टा फेरने लगा। इस पर उसके अंकल ने कहा कि लक्ष्मी को कोई लात नहीं मारता है, आगे कोशिश करते रहना।

घर आया नाग न पूजिए बामी पूजन जाय—अ० असली वस्तु को छोड़ कर और-और वस्तुओं का इकट्ठा करना। प्र० महेन्द्र के घर जब महाराज जी आये थे, उस वक्त तो उनकी सेवा की नहीं, अब उपाश्रय में जाकर रोज माथा रगड़ता है। सच है कि घर आया नाग न पूजिये बामी पूजन जाय।

घर आया बैरी न मारिये समझो मां जाया—अ० घर पर आये दुश्मन के साथ भी भाई का-सा व्यवहार करना चाहिए। प्र० सुरेन्द्र ने इन्द्रसैन को घर आने पर भी छोटे भाई से छुड़वा दिया और कहा कि घर आया बैरी न मारिये समझो मा जाया।

घर आए कुत्ते को भी नहीं निकालते—अ० घर आये हुए मेहमान का आतिथ्य सत्कार करना चाहिए। प्र० कल विष्णु रमाकांत के घर गया था, उसने जाते ही विष्णु को लगे हाथों ले लिया। इस पर विष्णु ने कहा कि वाह-वाह, घर आये कुत्ते को भी नहीं निकालते हैं।

घर आये मेहमान बीवी गई करोंदे खान—अ० वक्त पर काम न आना। प्र० मैंने मोहन से बाज़ार जाकर दवा लाने के लिए कहा। उसने फौरन ही जवाब दे दिया कि वह अभी नहीं जा सकता है, दो घंटे पीछे लाकर दे देगा। इस पर मैंने कहा कि ठीक है बंधु, घर आये मेहमान बीवी गई करोंदे खान।

घर का आटा कौन गीला करै—अ० अपने पास से कौन व्यय करे। प्र० हरबंस के घर में मेहमान आये, पर उसने रोटी की बात नहीं पूछी। सच है कि घर का आटा कौन गीला करै।

घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध—अ० घर की वस्तु की कद्र नहीं होती है। प्र० जगमोहन पंडित इसी कस्बे में रहते हैं। इतने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान होने पर भी उनकी इतनी प्रतिष्ठा नहीं, जितनी उस धूर्त पुजारी की है। सच है कि घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध।

घर का भेदी लंका ढावै—अ० आपस की फूट से घर तबाह हो जाता है। प्र० लंकाधिपति का भाई विभीषण श्री राम से आ मिला। रावण का नाश ही हो गया। सच है कि घर का भेदी लंका ढावै।

घर का परसैया अंधेरी रात—अ० जब कोई व्यक्ति दूसरे की वस्तु को अपनों ही को दे और कोई देखने वाला न हो। प्र० जमींदार साहब ने अपने पौत्र के जन्म दिन की मिठाई हरिया को स्कूल के बच्चों में बाँटने के लिए दी। हरिया ने घूम फिर कर सारी मिठाई अपने बच्चों ही को दे दी। सच है कि घर का परसैया अँधेरी रात।

घर की आधी भली—अ० परदेश में ज़्यादा लाभ भी घर के थोड़े लाभ से अच्छा नहीं होता है। प्र० अरे बंधु! कलकत्ते नौकरी पर क्यों नहीं गए, वहाँ तो यहाँ से दुगुने पैसे मिल रहे थे? इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि भाई घर की आधी भली अच्छी है।

घर की छोड़के तये की, की आस करै—अ० मिली हुई वस्तु को छोड़कर न मिली की आशा करे। प्र० तुमने सुना कुछ, सुरेश हमारे यहाँ की साठ रुपये की नौकरी को इस आशा पर छोड़ना चाहता है कि कुछ दिन में उसे सौ रुपये की मिल जाएगी। उसकी तो वही कहावत है कि घर की को छोड़के तये की, की आस करै।

घर की खाँड किरकिरी लागे बाहर का गुड़ मीठा—अ० जबकि अच्छी वस्तु भी बाहर की बुरी वस्तु से अच्छी लगती है। प्र० वसन्त भी अजीब लड़का है। घर पर बने पकोड़े तो खाता नहीं है, पर बाज़ार की घटिया तेल की पकौड़ी फौरन चट कर जाता है। सच है कि घर की खांड किरकिरी लागे बाहर का गुड़ मीठा।

घर कीन्हें घर जात है—अ० सांसारिकता में फँसने से स्वर्ग नहीं मिलता है। प्र० हरिया की सारी उम्र तो घर-गृहस्थी के धन्धे में बीत गई। अब जब अन्तिम समय निकट आया तो सोच पड़ा कि आगे क्या होगा, सो नर्क ही मिलेगा। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि पहले सुना नहीं था, घर कीन्हें घर जात है।

घर की नारि की क्या चौकी—अ० जिसके हाथ में सर्वस्व सौंप दिया हो, उसका आगा पीछा नहीं लिया जाता है। प्र० मैंने दफ्तर का सारा काम-काज मैनेजर के हाथों में सौंप दिया था। उसने कुछ ही दिनों में सारा कारोबार ठिकाने लगा दिया और कुछ पता नहीं लगता। ठीक है कि घर की नारि की क्या चौकी।

घर की बिल्ली घर में ही शिकार—अ० जब घर का ही व्यक्ति घरवालों को नुकसान पहुँचाये। प्र० धर्मेन्द्र ने वकालत क्या शुरू की, अपने बाबा जी पर ही चाचा से मुकद्दमा चलवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। सच है कि घर की बिल्ली घर में ही शिकार।

घर की बीवी हांडनी, घर कुत्तों के जोग—अ० जब घर का स्वामी अपने घर की चौकसी नहीं करता तो फिर कोई भी रहे। प्र० बंधु ! जब से तुमने अपनी बैठक में बैठना छोड़ा है तब से आने जाने वालों ने उसमें डेरा जमा लिया है। इस पर उसने उत्तर दिया, हाँ भाई, ठीक तो है, घर की बीवी हांडनी, घर कुत्तों के जोग।

घर की मुर्गी दाल बराबर—अ० घर की चीज़ मुफ्त बराबर समझी जाती है। प्र० रामकरण ने लड़की का विवाह बड़ी धूमधाम से किया। उसे लेशमात्र भी किसी बात की चिन्ता नहीं थी। होती भी क्यों, कपड़ा और ज़ेवर जो अन्दर से निकल आया। इस पर सबने कहा, हाँ जी, घर की मुर्गी दाल बराबर।

घर की मूछें ही मूछें—अ० अपने पास से कुछ न लगाकर दूसरों के पैसे पर व्यापार करना। प्र० महेन्द्र ने सुरेन्द्र से पूछा, बन्धु, निखलेश की दूकान में तो सब कुछ दिखाई देता है, यदि तुम कहो तो पैसे से उसकी मदद कर दूं। सुरेन्द्र ने कहा कि ऐसा मत कर बैठना, उसकी तो घर की मूछें ही मूछें हैं।

घर की मेरी, तये की तेरी—अ० जो व्यक्ति घर से प्राप्त वस्तु को तो आप ले ले और अप्राप्त वस्तु के लिए अन्य को कहे। प्र० मधु ने घर में रखे सन्तरे तो खुद खा लिए और सुधा से कह दिया कि मम्मी जब लायेगी उन्हें तुम खा लेना। उसकी तो वही कहावत हुई कि घर की मेरी, तये की तेरी।

घर के खीर खाएँ देवता भला मानें—अ० जब कोई व्यक्ति ऐसा कार्य करे, जिससे घरवालों को लाभ हो और दूसरे कृतज्ञ हों। प्र० बंधु ! तुम श्राद्ध क्यों किया करते हो ? इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया, इसलिए कि घर के खीर खायें देवता भला मानें।

घर के घर न समाय, मेहमान और आय—अ० अपना गुज़ारा तो होता नहीं, बाहर के लोग और आ जाएँ ! प्र० महेन्द्र के पास वैसे ही घर छोटा है, भय्या भावज और रहने के लिए आ गए। बड़ी मुश्किल से समय काटा। सच है कि घर के घर न समाय, मेहमान और आय।

घर के घर रहे—अ० जब किसी कार्य में लाभ हानि न हो। प्र० रमेश मेले में दूकान लगाकर भी घर के घर रहा।

घर के जलते वन गए और वन में लागी आग। घर बेचारा क्या करे, जो उल्टो हो भाग—अ० मुसीबत पर मुसीबत आना। प्र० घनश्याम खटमलों से बचकर बाग़ में सोने के लिए गया। वहाँ उसे मच्छरों ने तंग कर डाला। वहाँ से भी बेचारा उठकर भागा। सच है कि घर के जलते वन गए और वन में लागी आग। घर बेचारा क्या करे, जो उल्टो हो भाग।

घर के पीरों को तेल का मलीदा—अ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने ही व्यक्तियों के साथ बुरा व्यवहार करना। प्र० कल सेठ जी के यहाँ दावत थी। मेहमानों को तो वढ़िया-वढ़िया चीजें खाने को मिलीं और घरवालों को सिर्फ़ आलू पूरी ही। सच है कि घर के पीरों को तेल का मलीदा।

घर खीर तो बाहर भी खीर—अ० धनवान का सब जगह सम्मान होता है। प्र० जब से शान्तिबाबू लन्दन से डाक्टर होकर लौटे हैं, तब से उनके घरवाले फूले नहीं समाते। घर वाले और मित्र मण्डली उनके सम्मान में भोज दे रही है। सच है घर खीर तो बाहर भी खीर।

घर खुल जाना—अ० ब्याह हो जाना। प्र० हरिया का ब्याह हो गया। अच्छा हुआ, बेचारे का घर खुल गया।

घर खोया सालों ने दीवार खोई आलों ने—अ० जिस घर में साले का दखल रहता है, उसमें कंगाली आ जाती है। प्र० सोहन के घर उसके साले पड़े ही रहते हैं और अपनी बहन से कुछ न कुछ उधार ले जाते हैं। सच है कि घर खोया सालों ने दीवार खोई आलों ने।

घर घर के जाले झाड़ना—अ० रोज़-रोज़ घर बदलना। प्र० आज फिर राजीव ने घर बदल लिया है। सुनने वाले ने उत्तर दिया, उसकी क्या बात है, वह तो घर-घर से जाले झाड़ता फिरता है।

घर घर घल्लो मूसर मल्लो—अ० जो औरत अपने घर का काम छोड़कर घर-घर मारी फिरे। प्र० सरला की मामी एक दिन अपने घर नहीं बैठती, वैसे ही मारी-मारी फिरती है। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि उसकी भली कही, वह तो घर-घर घल्लो मूसर मल्लो है।

घर घर मटियाले चूल्हे—अ० जितनी आय उतना ही व्यय। प्र० अब तो तुमने खूब पूंजी जोड़ ली होगी। इस पर सुनने वाले ने कहा कि बन्धु कहाँ से, जानते नहीं, घर-घर मटियाले चूल्हे हैं।

घर घर शादी घर घर ग़म—अ० सुख-दुःख सब जगह होता है। प्र० आज तो भाई-भाई में बड़ा झगड़ा हुआ, क्या बात थी? सुनने वाले ने उत्तर दिया कि कुछ भी तो नहीं, घर-घर शादी घर-घर ग़म।

घर घर यही लेखा है—अ० सुख-दुःख सबके घर में होता है। प्र० आज तो तुम्हारे घर बड़ा क्लेश हुआ। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि बंधु, घर-घर यही लेखा है।

घर जले तो जले चाल न बिगड़े—अ० चाहे सर्वस्व चला जाय, पर परम्परागत रीति को नहीं छोड़ेंगे। प्र० बन्धु! घनश्याम का इतना रुपया ब्याह-शादियों में उठता है, पर पुरानी रीति जो चली आ रही है, उसे नहीं छोड़ना चाहता। इस पर उसने जवाब दिया कि बंधु, उसकी तो वही कहावत है, घर जले तो जले चाल न बिगड़े।

घर जले पे चूड़ियाँ पूछीं—अ० दिखावट को प्रगट करने के लिए अपना नुकसान कर लेना। प्र० चेता चमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पुत्रवधू ने चूड़ियाँ पहनीं, उससे किसी ने पूछा नहीं कि चूड़ियाँ कब पहनीं। इस पर उसने घर में आग लगा दी और हाथ फेंक कर कहने लगी, दौड़ो, घर में आग लग गई। तब किसी ने पूछा कि तूने चूड़ियाँ कब पहनीं। उसने झट से उत्तर दिया कि घर जले पे चूड़ियाँ पूछीं।

घर जाय पर दर न जाय—अ० चाहे सब कुछ चला जाय पर सम्मान न जाय। प्र० आजकल अवन्त बहुत रुपया उड़ा रहा है। समझाने पर कह देता है कि यह तो मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है अंकल। तुम्हारा अवन्त जुआ नहीं खेलता, सुरापान नहीं करता। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि घर जाय पर दर न जाय।

घर देखकर चलो—अ० जब आय से अधिक व्यय किया जाए तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। प्र० सुरेश को अन्धाधुन्ध रुपया लुटाते देखकर उसके अंकल ने कहा कि बेटा, घर देखकर चलो।

घर फूंक चूहा मारे—अ० थोड़े लाभ के लिए ज्यादा खर्च करना। प्र० कल हरिया ने ईख के कीड़े मारने के लिए उसके खेत पर तेज़ाब छिड़क दिया। सारी फसल नष्ट हो गई। सच है कि घर फूंक चूहा मारे।

घर फूंक तमाशा देखना—अ० रुपया लगाकर खुश होना। प्र० ललित मोहन इंजीनियर बनकर विदेश से लौटा है। नौकरी भी साथ लेकर आया। घरवाले खुशी के मारे फूले नहीं समा रहे हैं। कई दिन से जश्न मनाये जा रहे हैं। यह तो वही कहावत हुई कि घर फूंक तमाशा देखना।

घर ब्याह बहू गई कंडों—अ० वक्त पर काम न आना। प्र० आजकल तो तुम्हें भी आराम मिल रहा होगा। रंजन की बहू ने घर सम्भाल लिया होगा। सुनने वाले ने हँसकर कहा कि उसकी तो वही कहावत है कि घर ब्याह बहू गई कंडों।

घर बैठे गंगा आना - अ० बिना कुछ किए ही फायदा होना। प्र० रमेश घर बैठा था कि अचानक पोस्टमैन ने आकर नौकरी की रजिस्ट्री पकड़ा दी। तब सबने कहा कि लो भाई, घर बैठे गंगा आई है।

घर मटकी तो बाहर मटका—अ० जो घर के अच्छे हो तो बाहर भी सब कुछ मिल जाएगा। प्र० चिन्ता मत करो वीरेन्द्र! जहाँ जाओगे सफलता तुम्हारे पग चूमेगी। जानते नहीं, घर मटकी तो बाहर भी मटका मिलता है।

घर मिले तो वर न मिले, वर मिले तो घर न मिले अ० सोने में सुगन्ध नहीं होती, सर्वस्वामी और सर्वगुण सम्पन्न कोई नहीं होता है। प्र० महाराज जनक को अपनी प्यारी बेटी के लिए घर मिला तो वर न मिला और जो वर मिला तो घर न मिला। अन्त में हारकर स्वयंवर किया। सच है कि घर मिले तो वर न मिले, वर मिले तो घर न मिले।

घर में आई जोय तो टेढ़ी टोपी सीधी होय—अ० जब कोई भी व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थ में फँस जाता है तो फिर उसकी सारी अकड़ दूर हो जाती है। प्र० नानकचन्द विवाह से पूर्व कैसी तड़क भड़क से रहता था, पर अब वही खद्दर पर आ गया। इस पर सुनने वाले ने कहा कि बंधु, सुना नहीं, घर में आई जोय तो टेढ़ी टोपी सीधी होय।

घर में कुत्ता भी शेर है—अ० जहाँ जिसका अधिकार होता है, वहाँ निर्बल भी बलवान हो जाता है। प्र० कल मुकेश अपनी गली में हम लोगों के साथ कैसा अकड़ा था। इस पर सुनने वाले उत्तर दिया कि बंधु, घर में कुत्ता भी शेर है।

घर में खर्च नहीं, ड्योढ़ी पर नाच—अ० झूठी शान दिखाना। प्र० घर में खाने को तो रोटी नहीं, मोहल्ले में महेश कहता फिरता है कि सौ बीघे ज़मीन है उसके पास। उसकी तो वहीं कहावत है कि घर ख़र्च नहीं, ड्योढ़ी पर नाच।

घर में गधे का नाम मोहना—अ० गुणों के अनुसार नाम का न होना। प्र० ललित का कस्बे में घर तक नहीं और बेटे का नाम रखा है पृथ्वीराज। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया कि हाँ भाई ठीक है, घर में गधे का नाम मोहना है।

घर में घर लड़ाई का डर—अ० जब एक काम को कई व्यक्ति मिलकर करें तब झगड़े का डर होता है। प्र० मेरा और सतीश का काम साझे में है सो रोज़ कच-कच रहती है। इस पर सुनने वाले ने कहा कि बंधु, सुना नहीं, घर में घर लड़ाई का डर।

घर में चने का चून नहीं, गेहूँ की दो पो लाइयो—अ० झूठी शेखी बघारना। प्र० मुन्ना के घर में तो दाने नहीं, बच्चे के मुंडन पर गाँव को दावत देने की बात करता है। उसकी तो वही कहावत है कि घर में चने का चून नहीं, गेहूँ की दो पो लाइयो।

घर में चूहे एकादशी करते हैं—अ० झूठी तड़क-भड़क दर्शाना। प्र० अरे मोहन, यार दोस्तों को तुम दावत देते फिरते हो और घर में चूहे एकादशी करते हैं।

घर में चूहे कलाबाज़ी खाते हैं—अ० महा कंगाली। प्र० उसके घर में तो चूहे कलाबाज़ी खाते हैं।

घर में दिया तो मंदिर में दिया—अ० पहले स्वयं को सुधारो, तब दूसरों को सुधारने का प्रयास करना। प्र० नितिन स्वयं तो निराक्षरी भट्टाचार्य है, पर दूसरों को उपदेश देता फिरता है। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि वह जानता नहीं कि घर में दिया तो मंदिर में दिया।

घर में धन सिर पर ऋण—अ० कंजूस व्यक्ति, जो पैसा होते हुए भी अपना कर्ज़ न उतारे। प्र० महेन्द्र धनवान होते हुए भी पठान का ऋण नहीं चुकाता है। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है कि घर में धन सिर पर ऋण।

घर में नाहीं बोरिया सपने आई खाट—अ० किसी व्यक्ति को ऐसी वस्तु की प्राप्ति हो जाए जो उसने न देखी हो। प्र० अरे कपिल, तुम तो मामा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सम्पत्ति पाकर बड़े ही इतराने लगे हो। सच है, तुम्हारी तो वही कहावत है कि घर में नाहीं बोरिया सपने आई खाट।

घर में बीवी झोंके भार, बाहर मियाँ मुहल्लेदार—अ॰ घर के कंगाल पर ऊपर की बनावट। प्र॰ अरे बंधु! घर में तो तुम्हारे दाने नहीं पर लोगों से कहते फिरते हो कि आधी वस्ती मेरी है। तुम्हारी तो वही कहावत है कि घर में बीवी झोंके भार, बाहर मियाँ मुहल्लेदार।

घर में भूनी भांग न कड़वा तेल—अ॰ महाकंगाली के दिन काटना। प्र॰ वैसे तो हरीराम बड़ा बना ठना फिरता है, पर घर में भूनी भांग न कड़वा तेल।

घर रहे न तीरथ गए, मूंड़ मुड़ा के जोगी भये—अ॰ जो व्यक्ति एक कार्य को छोड़ कर दूसरा करने लगे और उसे भी पूर्ण न कर सके। प्र॰ हरीराम ने पहले खेतीबाड़ी करने के लिए ज़मीन ली, वह उससे न हो सकी। फिर ठेकेदारी करनी शुरू की, वहाँ भी मन न लगा। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि घर रहे न तीरथ गए, मूंड़ मुड़ा के जोगी भये।

घर ही के मर्द हो—अ॰ जब कोई व्यक्ति घर पर ही शौर्य दर्शाये और बाहर कुछ न कर सके। प्र॰ कल तो श्याम घर पर बड़ा अकड़ रहा था, पर आज बाज़ार में अपने से छोटे से पिट गया। सच है, वह तो घर ही का मर्द है।

घर ही वैद्य मरी मैया—अ॰ जबकि मुसीबत को दूर करने की वस्तु घर ही में हो। प्र॰ गौरव के घर में ही नौकरी की सिफ़ारिश करने वाले लोग हैं, पर वह जने-जने की खुशामद करता फिरता है। वाह-वाह, घर ही वैद्य मरी मैया।

घाट गए मुर्दे लौट कर नहीं आते—अ॰ जो वक्त निकल जाता है फिर हाथ नहीं आता। प्र॰ देवदत्त नौकरी से इस्तीफा देकर अब पछताता है। क्या इस्तीफा उल्टा आ सकता है? सुनने वाले ने उत्तर दिया कि घाट गए मुर्दे लौट कर नहीं आते।

घाट घाट का पानी पिया है—अ॰ अति चतुर। प्र॰ उसका क्या मुकाबला करोगे, वह तो घाट घाट का पानी पिये हुए है।

घायल की गति घायल जाने—अ॰ जिस पर बीतती है वही जानता है। प्र॰ धनवान व्यक्ति किसी कंगाल के दुःख को क्या समझ सकता है? घायल की गति तो घायल ही जान सकता है।

घी कहाँ गया खिचड़ी में—अ॰ जब अपनी चीज़ अपने ही काम आये। प्र॰ असगर ने अब्बा हजूर के लिए बेंत खरीदी थी। अगले दिन पैर फिसलने से पैर की हड्डी टूट गई। उसे ही बेंत का सहारा लेना पड़ गया। सच है कि घी कहाँ गया खिचड़ी में।

घी का लड्डू टेढ़ा भी भला—अ॰ अच्छी वस्तु सब तरह से अच्छी होती है। प्र॰ लक्ष्मीचंद को बरसों के बाद औलाद हुई, वह भी कुरूप। सुनने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले ने उत्तर दिया, अरे बंधु, तुमने सुना नहीं कि घी का लड्डू टेढ़ा भी भला होता है।

घी के कुप्पे से लग गया है—अ० जब किसी दीन व्यक्ति का सम्बन्ध धनवान से हो जाता है। प्र० जबसे हरिया की बहन सेठ घनश्यामदास के इकलौते बेटे से ब्याही गई है तब से पट्ठा खूब ऐश करता फिरता है। इस पर सुनने वाले ने कहा कि भाई वह तो घी के कुप्पे से लग गया है।

घी जाट का तेल हाट का—अ० कोई चीज़ कहीं अच्छी होती है और कोई कहीं। प्र० बंधु, घोड़े अरब के बढ़िया होते हैं तो बैल नागौर के। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया, बंधु सुना नहीं कि घी जाट का तेल हाट का।

घी भी खाओ और लाज भी बचाओ—अ० ऐसा खर्च करना कि जिससे प्रतिष्ठा भी बनी रहे और घर भी न बिगड़े। प्र० आजकल तुम्हारे खर्च बहुत बढ़ गए हैं, ऐसा न हो कि कंगाल हो जाओ। इस पर उसने जवाब दिया कि भय्या, लाज कैसे बचे ? ठीक है, क्या तुमने सुना नहीं कि घी भी खाओ और लाज भी बचाओ।

घी सुधारै काम बड़ी बहू का नाम—अ० गुण किसी दूसरे का और नाम किसी दूसरे का। प्र० बंधु, काम तो किया बच्चों ने और नाम हुआ मेरा ? इस पर सुनने वाले ने कहा कि तुमने सुना नहीं, घी सुधारै काम बड़ी बहू का नाम।

घुटने पेट ही को झुकते हैं—अ० अपना अपने की ही मदद करता है। प्र० बंधु, वैसे तो ललित और भारत में शत्रुता है पर जब ललित और हरीश झगड़ पड़े तो भारत ने हरीश को खूब मारा। सच है कि घुटने पेट ही को झुकते हैं।

घुसिया हाकिम, रूसिया चाकर—अ० घूसखोर अधिकारी और रूठने वाले सेवक से काम नहीं चलता है। प्र० जज महोदय ने विरोधी पार्टी से घूस खाकर मेरे विरुद्ध फ़ैसला दे दिया। सच है कि घुसिया हाकिम, रूसिया चाकर।

घूंसों में उधार क्या—अ० अपना पारिश्रमिक उसी समय ले लेना चाहिए। प्र० हरिया ने फसल काटते ही पैसे माँगे। ठीक ही तो है, घूसों में उधार क्या ?

घोकन्त विद्या, खोदन्त पानी—अ० विद्या रटने से और पानी खोदने से मिलता है। प्र० विकल रटते-रटते पंडित बन गया और एक तुम हो कि चार अक्षर भी याद नहीं रहते। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया कि घोकन्त विद्या, खोदन्त पानी।

घोघे में पकाया, सीपी में खाया—अ० नपा-तुला खर्च रखना। प्र० रमेश ने आज तक कभी उधार नहीं लिया। उसकी तो वही कहावत है कि घोघे में पकाया, सीपी में खाया।

घोड़ा घास से यारी करे तो खाये क्या—अ० मजदूरी लेने में क्या शर्म। प्र० प्रकाश ने दूकान पर दो दिन काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया और पैसे माँगने लगा। ठीक ही तो है घोड़ा घास से यारी करे तो खाये क्या ?

घोड़ा घुड़साल ही में बिकता है—अ० इंसान की इज्जत अपने ही घर पर बनी रहती है, पराये घर जाने पर विगड़ जाती है। प्र० रमाकांत ने पवन से कहा, भय्या ! जब तक मैं अपने घर पर रहा मेरी इज्जत बनी रही, पर जब बहन के घर रहना पड़ा तो जाती रही। सच है घोड़ा घुड़साल ही में बिकता है।

घोड़े गरे दलालन परे अ० जब कोई व्यक्ति झगड़ा मिटाने जाये पर वह झगड़ा उसी के सिर पर आन पड़े। प्र० वेचारा रमेश गया तो था मामा भांजे का झगड़ा निपटाने, पर उसी में जा फँसा। सच है घोड़े गरे दलालन परे।

घोड़े से गिरा सम्भलता है, पर दृष्टि से गिरा नहीं सम्भलता—अ० और हानि को व्यक्ति सह लेता है किन्तु समाज की दृष्टि में गिरने की हानि को नहीं सह सकता है। प्र० महेश ने लाखों का नुकसान उठा कर भी इतना दुःख नहीं माना, जितना तुम्हारी बातें सुन कर दीदी ! कहने से पहले कुछ तो सोचा होता। जानती नहीं कि घोड़े से गिरा सम्भलता है, पर दृष्टि से गिरा नहीं सम्भलता।

घोड़ों को घर कितनी दूर—अ० मेहनती व्यक्ति कार्य को शीघ्र कर लेता है। प्र० विजय ने अपनी परीक्षा दो मास में ही पास कर ली। सच है कि घोड़ों को घर कितनी दूर।

च

चंचल नारि की चाल छिपै नहिं, नीच छिपै न महापद पाये—अ० बदचलन औरत की चाल अनोखी ही होती है, इसलिए जल्दी ही पहचानी जाती है। ऐसे ही नीच व्यक्ति भी बड़ा पद पाकर अपने कुकृत्यों से शीघ्र ही पहचान लिया जाता है। प्र० गेंदा चमार को डिप्टी इंस्पेक्टर बना दिया पर अंत को अपशब्द बोल कर के उसने अपनी नीचता खोल ही दी। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया, क्या तुमने सुना नहीं कि चंचल नारि की चाल छिपै नहिं, नीच छिपै न महापद पाये।

चंदन की चुटकी न गाड़ी भर राख—अ० अच्छी वस्तु थोड़ी ही भली, बुरी बहुत भी अच्छी नहीं। प्र० अरे, तुमने सुना, सिंहनी एक पूत जन कर जंगल में निडर सोती है पर गधी दस पूत होने पर भी बोझ ढोती फिरती है। सच है कि चंदन की चुटकी न गाड़ी भर राख।

चंदन पड़ा चमार घर, नित उठ कूटै चाम। रो रो चंदन मरत है, परयौ नीच सों काम—अ० नीच व्यक्ति के साथ सज्जनों को भी दुःख भोगना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है। प्र० पुरुषोत्तम ने रामदयाल के यहाँ नौकरी कर ली। आख़िर है तो जात का कहार ही, अपनी आदत से कैसे बाज़ आये? सो पुरुषोत्तम का रोज़ ही उसकी गंदी ज़बान से वास्ता पड़ता है। बेचारा दिल मसोस कर रह जाता है। सच है कि चंदन पड़ा चमार घर, नित उठ कूटैं चाम। रो रो चंदन मरत है, परयी नीच सों काम।

चंडाल चौकड़ी—अ० दुर्जनों की सभा। प्र० उस चंडाल चौकड़ी से बच कर रहना, वरना पछताना पड़ेगा।

चंडी घर खोदेगी, नहीं निगोड़े लीपूंगी—अ० क्लेशकारी औरत हमेशा उल्टी बात कहती है। प्र० बेचारा शांति जिस दिन से शादी कर के आया है, उस दिन से उसकी नींद हराम हो गई है। दिन निकलता नहीं, महाभारत शुरू हो जाता है। उस बेचारे पर तो वही कहावत चरितार्थ हो गई कि चंडी घर खोदेगी, नहीं निगोड़े लीपूंगी।

चक्की तले घर तेरा और निकल सास घर मेरा—अ० बूढ़े की नववधू आकर सास के हाथ मे चक्की दे देती है और घर की मालकिन खुद बन जाती है। प्र० अरे, गोविन्द भय्या, जिस दिन से तुम कला भाभी को ब्याह कर लाये हो उस दिन से मौसी जी तो पिसनहारी हो गईं। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि चक्की तले घर तेरा और निकल सास घर मेरा।

चक्की में कौर डालोगे तो कुछ पाओगे—अ० दोगे तो कुछ लोगे। प्र० बंधु! आज तो कई जगह हाथ पसारा पर कहीं काम नहीं बना। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि चक्की में कौर डालोगे तो कुछ पाओगे।

चख डाल माल धन को, कौड़ी न रख क़फन को। जिसने दिया है तन को, देगा वही क़फन को—अ० जो व्यक्ति जितना कमाता है, उतना ही खर्च कर डालता है। उस के लिए ऐसा कहा जाता है। प्र० महेन्द्र बाबू ने आज तक जो कुछ कमाया वह सब तो खान-पान में उड़ा दिया। मकान लेने के लिए उसके पास क्या धरा है? उसकी तो वही कहावत है कि चख डाल माल धन को, कौड़ी न रख क़फन को। जिसने दिया है तन को, देगा वही क़फन को।

चचा बना कर छोड़ना—अ० अच्छी तरह बदला लेना। प्र० कल तो तुम्हें श्याम ने बहुत तंग किया। इस पर उसने उत्तर दिया, कोई बात नहीं, वक्त आने दो, मैं भी उसे चचा बना कर छोड़ूंगा।

चचेरे ममेरे, बड़ तले बहुतेरे—अ० पैसे वाले के असंख्य मीत हो जाते हैं। प्र० मक़वाना साहब के मंत्री बनते ही हर कोई उनका सम्बन्धी बन बैठा। सच है कि चचेरे ममेरे, बड़ तले बहुतेरे।

चतुर को चौगुनी और मूर्ख को सौगुनी—अ० दूसरों की आमदनी चतुर व्यक्ति को चौगुनी और बेवकूफ को सौगुनी प्रतीत होती है। प्र० हरीबाबू, आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा बिल्कुल भी ख्याल नहीं है। न जाने आपको मेरी आय कितनी जान पड़ती है। सच है, आपकी तो वही कहावत है, चतुर को चौगुनी और मूर्ख को सौगुनी।

चतुर नारि नर कूढ़सों, ब्याह भये पछिताय। जैसे रोगी नीम को नयन मींच पी जाय अ० अनमेल विवाह से एक न एक को दुःख अवश्य होता है। प्र० क्या बात है बन्धु, जबसे तुम्हारा विवाह हुआ है, तबसे उदास रहने लग गए हो। इस पर उत्तर मिला कि क्या तुम जानते नहीं कि चतुर नारि नर कूढ़सों, ब्याह भये पछिताय। जैसे रोगी नीम को, नयन मींच पी जाय।

चतुर शत्रु उपाय ही से नष्ट होता है—अ० होशियार दुश्मन को युक्ति से ही काबू किया जाता है। प्र० महेन्द्र ने अतुल को धमका फुसला कर वश में करना चाहा, पर वृथा। न्यायालय में पहुंचने पर उसके पीछे-पीछे फिरता है। सच है, चतुर शत्रु उपाय ही से नष्ट होता है।

चतुराई सब विद्या की मूल—अ० चतुर व्यक्ति सब विद्याओं में निपुण हो जाता है। प्र० हरीश ने थोड़े ही दिनों में सब विद्याएँ सीख लीं। सच है, चतुराई सब विद्या की मूल है।

चना और चुगल मुंह लगा नहीं छूटता—अ० चने को खाते और चुग़लखोर की बातें सुनते मन नहीं भरता है। प्र० यार, आज चने इतने स्वादिष्ट बने कि उन्हें खाता ही चला गया। इस पर उत्तर मिला कि बन्धु, क्या तुम जानते नहीं कि चना और चुग़ल मुँह लगा नहीं छूटता।

चना कहै मेरी ऊँची नाक, इक घर दलिए दूजे हाँक। जो खाओ मेरा इक टूक, पानी पीओ सौ-सौ घूंट—अ० चना खाने से प्यास ज़्यादा लगती है। प्र० अरे, आज तुम इतना पानी क्यों पी रहे हो? इस पर उसने उत्तर दिया कि आज मिस्सी रोटी खाई है। सच है कि चना कहै मेरी ऊँची नाक, इक घर दलिये दूजे हाँक। जो खाओ मेरा इक टूक, पानी पीओ सौ-सौ घूंट।

चना चबैना गंग जल जौ पूजै करतार, काशी कबहु न छाँड़िए, विश्वनाथ दरबार—अ० रूखा-सूखा खा कर भी काशी की सेवा नहीं छोड़नी चाहिए। प्र० बन्धु! इस बार मुझे बनारस में ठहरने का मौका मिला, देखा कि साधु लोग दो सौ ग्राम चने चबा कर दिन काटते हैं और काशी को छोड़कर कहीं नहीं जाते। इस पर उसने उत्तर दिया, क्या जानते नहीं, चना चबैना गंग जल जौ पूजै करतार, काशी कबहु न छाँड़िये, विश्वनाथ दरबार।

चने चिरौंजी हो गए, गेहूँ हो गए दाख। घर में गहरे तीन हैं, चरखा पीढ़ी खाट—अ० जब अकाल पड़ जाए और अनाज पुड़ियों में बिकने लगे, तब कंगाल व्यक्ति कहा करते हैं। प्र० बन्धु, मैंने सुना है कि आज कल आपको पेट भर दाने नहीं मिलते। इस पर उसने कहा, मिलें कहाँ से, चने चिरौंजी हो गए, गेहूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गए दाख। घर में गहरे तीन हैं, चरखा पीढ़ी खाट।

चटक न चाउत घटतहू, सज्जन नेह गम्भीर। फीकौ परै न बरु घटै, रंग्यौ चोल रंग चीर—अ० सज्जन व्यक्ति का स्नेह किसी दूसरे के बहकाने से दूर नहीं होता है जैसे मजीठ के रंग में रंगाए वस्त्र का रंग धोने से न तो फ़ीका ही पड़ता है और न उसकी चमक ही घटती है। प्र० बन्धु, तुमने देखा कि मेरे तुम्हारे स्नेह में विघ्न डालने के लिए प्रखर कैसी बाधाएँ पैदा कर रहा है, पर होता क्या है, वह जानता नहीं कि चटक न चाउत घटतहू, सज्जन नेह गंभीर। फ़ीकौ परै न बरु घटै, रंग्यौ चोल रंग चीर।

चटोरा खाय अपना घर, बटोरा खावै दोनों घर—अ० जो व्यक्ति बाजारी पत्ते चाटना सीख लेता है, वह तो अपना ही घर बिगाड़ता है; किन्तु जो इधर-उधर खाता फिरता है, वह दूसरों के घर भी बिगाड़ देता है। प्र० महेश की जिह्वा वश में नहीं थी सो अपना माल तो चाट लिया, अब मेरे तेरे खाता फिरता है सो यह दूसरों के घर भी बिगाड़ेगा। सच है कि चटोरा खाय अपना घर, बटोरा खावै दोनों घर।

चट्ट मँगनी पट्ट ब्याह—अ० तत्काल कार्य का हो जाना। प्र० देखो भय्या, तुम्हारा हरेक काम देर में होता है, पर मैं तो चट्ट मँगनी पट्ट ब्याह में विश्वास रखता हूं।

चट्टे-बट्टे लड़ाना—अ० इधर-उधर की मिलाना। प्र० रहीम ने कल मुझे बताया कि आपने मेरे विरुद्ध कोई कार्य किया है। इस पर उसने कहा, अरे, किसकी बातों पर जा रहे हो वह तो इसी तरह चट्टे-बट्टे लड़ाता फिरता है।

चढ़ते पित्त उतरते बाई, ताते गोरख भून के खाई—अ० भंग जब नशा करती है तब पित्त पैदा करती है और जब उतरती है तो वाय पैदा करती है। अतः इन दोनों बातों से डर कर गोरखनाथ ने इसे भून कर खाया। प्र० बंधु, आज पानी मुँह में भर-भर क्यों आता है ? इस पर उसने उत्तर दिया कि भांग का उतार है। अच्छा-अच्छा, क्या तुमने सुना नहीं कि जढ़ते पित्त उतरते बाई, ताते गोरख भून के खाई।

चढ़ते वर्षे आर्द्रा, उतरत वर्षे हस्त, कितना राजा दण्ड ले, आनन्द रहै गृहस्थ—अ० आर्द्रा नक्षत्र के आरम्भ और हस्त नक्षत्र के अंत में अगर वर्षा हो तो खेती अच्छी होती है। इसलिए राजा जितना चाहे कर ले, पर कृषक के पास फिर भी इतना बच जाता है कि खुशी के साथ जीवन-यापन कर सकता है। प्र० इस बार हरिया की इतनी अच्छी फसल हुई कि उसने मेरा सारा रुपया भी चुका दिया और बच्चों के लिए भी आनन्द के साथ खिलाने का जुगाड़ कर लिया। सच है कि चढ़ते वर्षे आर्द्रा, उतरत वर्षे हस्त, कितना राजा दण्ड ले, आनन्द रहै गृहस्थ।

चमका देना—अ० भड़का देना। प्र० आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल क्या तुमने हमें चमकाने का काम ले लिया है। याद रखो, होगा कुछ नहीं। हमारा प्यार उतना ही अधिक होता जाएगा।

चमगीदड़ के घर मेहमान आए, हम भी लटके तुम भी लटको—अ० जैसे की संगति मिले वैसा ही होना पड़ जाता है। प्र० कल मोटूराम के यहाँ मस्तराम जी पहुँचे। उसने उनके लिए भी आँगन में खटिया लगवा दी। सच है कि चमगीदड़ के घर मेहमान आए, हम भी लटके तुम भी लटको।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—अ० कंजूस व्यक्ति के चाहे प्राण चले जाएँ पर पैसा नहीं जाना चाहिए। प्र० अरे प्रभुदयाल की आजकल आय अच्छी होने लगी है अब तो उसे स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए कहो। इस पर उत्तर मिला, उसकी तो वही कहावत है कि चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाए।

चमड़े की जीभ है, चाहे जिधर को लौट गई—अ० जब कोई व्यक्ति पल-पल में बात को बदल दे। प्र० अरे बंधु, अभी कुछ कहते हो, थोड़ी देर बाद कुछ कहने लग जाते हो। सच है चमड़े की जीभ है, चाहे जिधर को लौट गई।

चमार की छोरी नाम चंदनिया—अ० जब गुणों के अनुसार नाम न हो। प्र० छोटू ने अपनी काली कलूटी लड़की का नाम रूपमती रखा है। सच है कि चमार की छोरी नाम चंदनिया।

चमार के कोसे ढोर नहीं मरते—अ० अपने स्वार्थ के लिए अगर कोई किसी का बुरा चाहे तो उसके कहने से कुछ नहीं होता। प्र० चौधरी रात दिन भजन करता है कि दद्दा मरें तो पूंजी हाथ लगे। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि चमार के कोसे ढोर नहीं मरते।

चमार को आकाश से बेगार—अ० दुःखी व्यक्ति को हर जगह दुःख मिलता है। प्र० रमेश काम से दुःखी होकर मामा के यहाँ चला गया। वहाँ पर मामा ने खेती बाड़ी उसके सिर डाल दी। सच है कि चमार को आकाश से भी बेगार मिलती है।

चमार चमड़े का यार—अ० नीच व्यक्ति से जूते से बात करो तो ठीक रहता है। प्र० मैंने भोंदूराम को बहुतेरा समझाया कि गली मुहल्ले में तेरी ये हरकतें ठीक नहीं हैं, पर बाज़ नहीं आया। अंत में मुझे उस पर जूते बरसाने पड़े। सच है कि चमार चमड़े का यार।

चर्बी छाई आँखन में, नाचन लगी आँगन में—अ० अभिमानी व्यक्ति की शर्म चली जाती है। प्र० वह तो नाना का माल पाकर मदान्ध हो गया है, सो किसी की बात नहीं सुनता। इस पर उसने उत्तर दिया, क्या बंधु, जानते नहीं कि चर्बी छाई आँखन में, नाचन लगी आँगन में।

चरसी यार किसके, दम लगाया खिसके—अ० स्वार्थी व्यक्ति स्वार्थ सिद्धि तक ही किसी से मतलब रखते हैं। प्र० जब तक मैंने मदनलाल का काम नहीं किया था, तब तक मेरे पीछे-पीछे ही लगा फिरता था, किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन से उसका काम हो गया, उस दिन से बुलाने पर भी नहीं आता। सच है कि चरसी यार किसके, दम लगाया खिसके।

चलत फिरत धन पाइये, बैठे पावै कौन—अ० परिश्रमी धनोपार्जन करता है और निकम्मा भूखा मरता है। प्र० रामकरण दिन भर इधर-उधर घूम कर दलाली का काम करता है, जिससे उसका घर चलता है, पर मदनलाल घर बैठा टुकड़े को तरसता है। सच है कि चलत फिरत धन पाइये, बैठे पावै कौन।

चलता चरखा—अ० कार्य का होते रहना। प्र० आजकल तुम्हारा चरखा खूब चल रहा है, तभी तुम खुश दिखाई दे रहे हो।

चलता पुरजा होना—अ० व्यवहार-चतुर। प्र० उसकी बात मत करो, वह तुम्हारे झांसे में आने वाला नहीं है। वह तो अब चलता पुरजा हो गया है।

चलती को गाड़ी कहैं, भुने दूध को खोया। गाड़ी को उखड़ी कहते, यह देख कबीरा रोया—अ० जगत् की चाल उल्टी है। प्र० मैं रात दिन मेहनत करता हूँ फिर भी बच्चों का पेट नहीं पाल पाता और तू घर में बैठ कर भी चैन की वंशी बाजता है। इस पर उत्तर मिला कि तूने दुनिया नहीं देखी, इसीलिए ऐसा कह रहा है। जानता नहीं, चलती को गाड़ी कहैं, भुने दूध को खोया। गाड़ी को उखड़ी कहते, यह देख कबीरा रोया।

चलती गाड़ी में रोड़ा लगाना—अ० चलते काम में विघ्न डालना। प्र० मनीष की दूकान अच्छी चल रही थी कि मैनेजर ने आकर ऐसी तोड़-फोड़ की कि चलती गाड़ी में रोड़ा लगा दिया।

चलती चाकी देख कै, दिया कबीरा रोय। दो पाटन के बीच में, साबित बचा न कोय—अ० आया है सो जायेगा। प्र० कल श्याम के नाना का स्वर्ग-वास हो गया। इस पर उसने उत्तर दिया, अचरज की क्या बात है, सुना नहीं, चलती चाकी देख कै, दिया कबीरा रोय। दो पाटन के बीच में, साबित बचा न कोय।

चलती में कौन कसर करता है—अ० हरेक व्यक्ति अपनी सामर्थ्यानुसार परिश्रम करता है। प्र० रमण ने मेहनत नहीं की, सो इस साल भी परीक्षा में रह गया। इस पर उसने उत्तर दिया, अरे, बंधु! चलती में कौन कसर करता है।

चलते चोर लंगोटी लाभ—अ० भागता हुआ चोर जो हाथ आता है, वही लेकर चल देता है। प्र० कल बाज़ार में दूकान के लिए माल खरीदने के लिए गया था लेकिन वहाँ थोड़ा ही सामान मिला, सो लेकर चला आया। सोचा कि चलते चोर लंगोटी लाभ।

चलते फिरते ना मरै, घर बैठे मर जाएँ—अ० कार्य करने वाला व्यक्ति सुखी रहता है, और निकम्मा दुःखी। प्र० घनश्याम रात दिन मेहनत करता है और मौज मारता है। ललित मेहनत से जी चुराता है सो कष्ट में रहता है। यह तो वही कहावत हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि चलते फिरते ना मरैं, घर बैठे मर जाएं।

चलते बैल के चूतड़ में आर—अ० जब कार्य करते हुए व्यक्ति को छेड़ा जाए। प्र० मालिक जो काम आपने बताया था उसे बराबर कर रहा हूँ फिर भी ठेकेदार चैन नहीं लेने देता। सच है कि चलते बैल के चूतड़ में आर।

चलते हाथ पैर उठ जाना—अ० कमाते-खाते ही स्वर्ग सिधार जाना। प्र० बेचारे रामलालजी कचहरी से आकर बैठे ही थे कि हार्टफेल हो गया। इस पर उसने कहा कि अच्छा हुआ, चलते हाथ पैर उठ गए।

चलना है रहना नहीं, चलना विश्वे बीस। ऐसे सहज सुहाग पै, कौन गुदावै सीस—अ० इस दुनिया में जो आया है सो अवश्य जायेगा। फिर इस प्रकृति के नियम के भरोसे पर इस मायावी जगत् के झगड़े में कौन पड़े। प्र० बन्धु, तुम तो मायावी जगत् के आमोद-प्रमोद से बिल्कुल ही अलग-थलग रहते हो, इसका क्या रहस्य है? इस पर उसने उत्तर दिया अरे, भाई! जानते नहीं, चलना है रहना नहीं, चलना विश्वे बीस। ऐसे सहज सुहाग पै, कौन गुदावै सीस।

चलनी में गाय दुहै कपाल को दोष दे—अ० जानबूझ कर कुकर्म करे और भाग्य को दोषी ठहराये। प्र० अरे भाई तुम स्वयं तो तिजोरी खुली छोड़ आये और जब उसमें से रुपये निकल गए तो भाग्य को कोस रहे हो। तुम्हारी तो वही कहावत हुई कि चलनी में गाय दुहै कपाल को दोष दे।

चल मरघट को लकड़ी सस्ती—अ० कृपण व्यक्ति सस्ता होने पर ही कार्य करता है। प्र० आज मटर खरीदने निकले हो जब रुपये की दो किलो हो गई। तुम्हारी वही कहावत है कि चल मरघट को लकड़ी सस्ती।

चल मेरे चरखे चर्रक चूं, कहाँ की बुढ़िया कहाँ का तूं—अ० जो करना हो अब कर लो, कल को न जाने हम कहाँ और तुम कहाँ। प्र० जब देखो तुम बच्चों को पढ़ाने के लिए बैठे होते हो, यह क्या बात है? इस पर उसने कहा, तुमने सुना नहीं बंधु! चल मेरे चरखे चर्रक चूं, कहाँ की बुढ़िया कहाँ का तूं।

चला चली की राह में भला भली कर लेहु—अ० इस आवागमन जगत् में जितनी भलाई हो सके उतनी कर लीजिए। प्र० मेरे दादा जी रात दिन जग भलाई में लीन रहते हैं। उनका कहना है कि चला चली की राह में भला भली कर लेहु।

चले जाहु यहाँ को करै, हाथिन को व्यौहार। नहिं जानत यहि पुर बसै, धोबी और कुम्हार—अ० मूर्खों में गुणवानों की प्रतिष्ठा नहीं होती है। प्र० कल पंचायतघर में स्वामी जी ने वेदान्त का उपदेश दिया। थोड़ी देर तो लोगों ने सुना फिर सब उठ कर चल दिए। उनकी वही तो कहावत हुई कि चले जाहु यहाँ को करै, हाथिन को व्यौहार। नहिं जानत यही पुर बसै, धोबी और कुम्हार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलै जोक जिमि वक्रगति यद्यपि सलिल समान—अ० कुटिल व्यक्तियों को सज्जन व्यक्तियों के आचरण भी खोटे ही दिखाई देते हैं। प्र० कैकेई को राम के शुद्ध वचन भी कपट भरे ही जान पड़े। सच है कि चलै जोक जिमि वक्रगति, यद्यपि सलिल समान।

चलै न जाने आँगन टेढ़ा—अ० स्वयं काम करना न जाने और दूसरों को दोषी ठहरावे। प्र० तुम्हारा लेख तो स्वयं का अच्छा नहीं और स्याही को दोष देते हो। सच है कि चलै न जाने आँगन टेढ़ा।

चलै रांड का चरखा और मूंजी का पेट—अ० आलसी को जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए कहा जाता है तब उसके मुख से निकलता है कि चलै रांड का चरखा और मूंजी का पेट। कहीं इंसान भी चलते सुने हैं।

चाँद की ओर धूल उड़ाने से क्या होता है—अ० जब किसी व्यक्ति को झूठा, दोषी ठहराया जाता है। प्र० बंधु! योगीराज कृष्ण पर लोग तरह-तरह के दोष लगाते हैं, पर चाँद की ओर धूल उड़ाने से क्या होता है।

चाँद को भी ग्रहण लगता है—अ० जब किसी यशस्वी के यश में धब्बा लग जाए। प्र० स्वदेश कुमार ने आज तक किसी के साथ बुराई नहीं की, फिर भी यह अचानक कलंक का टीका लग गया। सच है कि चाँद को भी ग्रहण लगता है।

चाँद निकलेगा तो सब देखेंगे—अ० जब काम पूरा हो जायेगा तो सब जान जायेंगे। प्र० बंधु! अपनी नौकरी के सम्बंध में किसी से मत कहना। जब चाँद निकलेगा तो सब देखेंगे।

चाँदी का जूता सिर पै—अ० पैसा सारे काम बना देता है। प्र० माधोराम रिश्वत देकर अपने सब काम निकाल लेता है। सच है कि चाँदी का जूता सिर पै।

चाकर के आगे कूकर और कूकर के आगे पेश खेमा—अ० जब मालिक नौकरों से काम करने के लिए कहे और वे दूसरे से कह दें। प्र० चौधरी साहब ने लाटू सिंह से तम्बाकू भरने के लिए कहा और उसने रामू को कह दिया। सच है कि चाकर के आगे कूकर और कूकर के आगे पेश खेमा।

चाकर से कूकर भला जो सोवै अपनी नींद—अ० सेवक को किसी वक्त भी चैन नहीं मिलता। प्र० तुमने यह कैसी नौकरी दिलाई, मुझे तो रात को भी फिक्र लगी रहती है। सच है कि चाकर से कूकर भला जो सोवे अपनी नींद।

चाकर है तो नाचा कर, ना नाचै तो ना चाकर—अ० नौकर है तो हर वक्त काम में लगा रहे ओर जो नहीं तो नौकरी छोड़ दे। प्र० जिस दिन से आलोक ने नौकरी की है, हर समय बेचारे को पिलना पड़ता है, और न पिले तो नौकरी छोड़े। सच है कि चाकर है तो नाचा कर, ना, नाचै तो ना चाकर।

चाकरी में नाकरी क्या—अ० नौकरी में उज्र कैसा। प्र० बंधु, तुम नौकरी करते हो और फिर बहाने भी करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। कहा भी तो है, चाकरी में नाकरी क्या ?

चाकी फेरी, चून की ढेरी—अ० मेहनत की और पैसा आया। प्र० अर्जुनदेव पहले मारा-मारा फिरता था तो भूखों मरता था; किन्तु अब जिस दिन से व्यापार में मेहनत की है उस दिन से पैसा आइंत पाइंत पड़ा रहता है। सच है कि चाकी फेरी, चून की ढेरी।

चार्चाहि चाचा क्यों कहै, सगा बाप नहिं बाप—अ० जो व्यक्ति अपने आत्मीयों का ही सत्कार नहीं करता वह दूसरों का क्या करेगा। प्र० हरीश तुम सगे भाई से तो लड़ते हो और ममेरे भाई को गले लगाते हो। इसमें कोई भेद है? यथा चार्चाहि चाचा क्यों कहै, सगा बाप नहिं बाप।

चाचा चोर भतीजा काजी, चाचा के घर नौबत बाजी—अ० जब किसी नीच का आत्मीय किसी ऊँचे पद पर पहुँच जाता है तो फिर वे नीच को भी प्रतिष्ठित धनवान बना देते हैं। प्र० ललित बाबू के मामा तो ठग थे; किन्तु जिस दिन से ललित बाबू जज बने हैं, उस दिन से मामा के घर में भी लहर पहर रहने लगी। सच है चाचा चोर भतीजा काज़ी, चाचा के घर नौबत बाजी।

चातुर का काम नहीं पातर से अटकै। पातर का काम यहीं, खाय पीय सटकै—अ० सज्जन व्यक्ति को कुसंगति से बचना चाहिए और दुर्जनों का धर्म है कि वे उसे नष्ट करके पहचानें भी नहीं। प्र० अरे बंधु! तुमने कल्लन शराबी के साथ मेल किया, उसने तुम्हें भी अपने रंग में रंग कर नाश कर दिया। अब वह तुम्हारी ओर को तकता भी नहीं। सच है कि चातुर का काम नहीं पातर से अटकै। पातर का काम यही, खाय पीय सटकै।

चातुर की चेरी मूरख की नारि से भली—अ० चतुर व्यक्तियों की दासी भी मूर्खों की औरतों से चतुर होती हैं। प्र० मैंने गोबिन्दा की अशिक्षिता पत्नी कला से कहा कि दवात में स्याही डाल देना। वह खड़ी-खड़ी देखती रही कि कैसे डालूं, पर उस की कहारिन ने आते ही डाल दी। सच है कि चातुर की चेरी मूरख की नारि से भली।

चातुर तो बैरी भलौ, मूरख भलौ न मीत। संत कहत है मत करौ, मूरख जन सों प्रीति—अ० चतुर व्यक्ति की दुश्मनी मूर्ख व्यक्ति की मैत्री से अच्छी है। प्र० श्याम जानते हो कि कौवे की संगति से हंस बेचारा मारा गया था। सच है कि चातुर तो बैरी भलौ, मूरख भलौ न मीत। संत कहत है मत करौ, मूरख जन सों प्रीति।

चाम के दाम—अ० जब कोई बहुत सस्ती चीज़ हो। प्र० अरे वाह! तुमने तो फटे पुराने कम्बल के बदले नई दरी ले ली। सच है कि चाम के दाम ही चला दिये।

चार अफ़ीमी तीन हुक्के—अ० ज़रूरत से कम चीज़ों का होना। प्र० हरीराम के घर में कमरे तो हैं तीन और बेटे बहू हैं आठ, सोवें तो कहाँ। इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनने वाले ने कहा कि यह तो वही कहावत हुई कि चार अफ़ीमी तीन हुक्के ।

चार चुहड़े चार चमार, दो चुगल चार चाण्डाल । इन चौदह का बाँधा धड़ा, तिसका नाम चौधरी पड़ा—अ० जब किसी बड़े व्यक्ति से अन्याय हो जाए तो दूसरे लोग कहा करते हैं । प्र० इस बार कल की पंचायत में चौधरी साहब ने चेता चमार का कैसा गला काटा है । सच है कि चार चुहड़े, चार चमार, दो चुगल चार चाण्डाल । इन चौदह का बांधा धड़ा जिस का नाम चौधरी पड़ा ।

चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात—अ० जब कोई व्यक्ति थोड़े ही दिन का पद पाकर घमण्ड करने लग जाता है । प्र० शर्माजी कुछ दिनों के लिए उप प्रधानाचार्य क्या बने कि आपे से ही बाहर रहने लग गए । वे यह नहीं जानते कि चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात ।

चार पाया बँधता है, दो पाया नहीं—अ० जानवर को बाँध कर रखा जा सकता है पर इंसान को नहीं । प्र० बंधु, बड़ा परेशान कर रखा है इस कपूत ने । समझाने पर भी बाज़ नहीं आता । रोज़-रोज़ की शिकायतों से तंग आ चुका हूँ । तुम्हीं बताओ क्या करूँ इसका ? इस पर उत्तर मिला, तुम्हारी परेशानी को समझता हूँ, पर क्या किया जा सकता है, तुम तो जानते ही हो कि चार पाया बंधता है, दो पाया नहीं ।

चारू सो भारू—अ० जो ज्यादा खाता है उसका डील-डौल भी बहुत होता है । प्र० अरे यार, तुम दिन भर कुछ न कुछ खाते रहते हो, सो दिन पर दिन कुप्पे की तरह फूलते जा रहे हो । सच है कि चारू सो भारू ।

चारों रास्ते मोकले हैं—अ० जब कोई आज़ाद कर दिया जाए । प्र० अब कहाँ जाने का विचार है ? उत्तर मिला, जहाँ मेरी इच्छा होगी बंधु, मेरे तो चारों रास्ते मोकले हैं ।

चालीस सेरा ऊत—अ० बेवकूफ । प्र० अरे, तुम श्याम से क्यों उलझते हो ? वह तो चालीस सेरा ऊत है ।

चालीस सेरी बात कहते हैं—अ० खरी बात कहना । प्र० बंधु, मैं तो चालीस सेरी बात कहता हूँ, चाहे किसी को अच्छी लगे या बुरी ।

चाह चमारी चूहरी, सब नीचन की नीच—अ० लालच बुरी बला है । प्र० जब तक तुम बिना लोभ के घनश्याम के पास जाते रहे तब तक आदर सत्कार पाते रहे, पर तुम्हारे में लोभ के आते ही भंगी की-सी स्थिति हो गई । सच है कि चाह चमारी चूहरी, सब नीचन की नीच ।

चाह घटी चिन्ता गई—अ० संतोषी व्यक्ति निश्चिन्त हो जाता है । प्र० बंधु ! आपकी प्रसन्नता का क्या रहस्य है, जबकि मैं उसी स्थिति में दुःखी रहता हूँ । इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, जानते नहीं, चाह घटी चिन्ता गई ।

चाह घटै नित के घर ज़ाये—अ० रोजाना किसी के घर जाने से सम्मान जाता रहता है । प्र० जब मैं ललित के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी जाता था तो वह सपरिवार बड़ी अच्छी तरह मिलता था। मेरी आवभगत करता था। किसी कारणवश रोज़ जाना पड़ गया तो पानी की बात भी नहीं पूछी गई। सच है कि चाह घटै नित के घर जाये।

चाहत की चाकरी कीजै, अनचाहत का नाम न लीजै—अ० जो आदर दे उसका दास हो जाए पर जो अपना अपमान करे उसका नाम भी न ले। प्र० चौधरी साहब मुझे इज्जत देते हैं, इसलिए मैं उनके आदेश का पालन करता हूँ, पर ठाकुर साहब का मुझे देखते ही खून सूख जाता है, इसलिए मैं भी उनके पास जाता हुआ कतराता हूँ। सच है कि चाहत की चाकरी कीजै, अनचाहत का नाम न लीजै।

चाहने के नाम गधी भी खेत खाना छोड़ देती है—अ० कुरूप भी अभिमानी हो जाते हैं। प्र० मुझे प्रदर्शनी के लिए भावना के कुछ फोटोग्राफ चाहिए थे। उसने यह कह कर स्पष्ट इंकार कर दिया कि गुंजन के ले लो, वह मुझसे ज़्यादा अच्छे पोज़ दे सकती है। यह तो वही कहावत हुई कि चाहने के नाम गधी भी खेत खाना छोड़ देती है।

चिकना घड़ा—अ० बेशर्म व्यक्ति। प्र० मैंने तुम्हें कितना समझाया कि बदलू अच्छा व्यक्ति नहीं है, उसका साथ छोड़ने में ही भलाई है, पर तुम सुनते ही नहीं। तुम तो चिकने घड़े हो।

चिकने मुंह को बिल्ली चाटती है—अ० पैसे वाले की सेवा सभी करते हैं। प्र० आजकल रामलाल सेठ चुन्नीलाल की बड़ी सेवा करता है। सच है कि चिकने मुँह को बिल्ली चाटती है।

चिन्ता सापिन काहि न खाया, को जग जाहि न व्यापी माया—अ० चिन्ता सबको सुखा देती है। प्र० श्याम आजकल दिन प्रतिदिन सूखता जा रहा है। शायद उसे बेटी के व्याह की चिन्ता खाये जा रही है। सच है कि चिन्ता सापिन काहि न खाया, को जग जाहि न व्यापी माया।

चिड़िया का दूध—अ० अप्राप्य वस्तु। प्र० अगर कोई मुझे पाँच सौ ग्राम मच्छर के हाड़ ला दे तो बड़ा इनाम पावे। इस पर उसने उत्तर दिया, कैसी बातें करते हो, चिड़िया का दूध कहाँ?

चिड़िया की जान गई, लड़कों का खेल—अ० किसी के आमोद-प्रमोद में दूसरे की क्षति होना। प्र० दरिया किनारे बैठ कर अनिल और पवन मेंढकों पर पत्थर फैंकने लगे, बेचारों की जानें जाने लगीं। सच है कि चिड़िया की जान गई, लड़कों का खेल।

चिड़िया के शिकार को शेर का सामान—अ० छोटे से काम के लिए बड़ी तैयारी करना। प्र० जुआरियों को पकड़ने के लिए इतने सिपाहियों को क्यों भेज रहे हो? उत्तर मिला कि कहीं भाग न जायें? वाह, बंधु! तुम्हारी तो वही कहावत है कि चिड़िया के शिकार के लिए शेर का सामान।

चिड़िया निकल गई—अ० जब कोई ठग किसी पैसे वाले को अपने पंजे में फँसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले और वह सौभाग्य से सजग हो जाए, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है । प्र० अहमद मियाँ अब अपने हाथों से चिड़िया निकल गई समझो, वरना अब तक कभी का आ गया होता ।

चिड़िया नोचन—अ० जिस व्यक्ति को ब त से लोगों का थोड़ा-थोड़ा देना हो । प्र० देखो बंधु ! किसी एक से पैसा लेकर सबका चुका दो । यह चिड़िया नोचन मुझे पसन्द नहीं है ।

चिड़िया फँसाना—अ० पैसे वाले को लूटने के लिए वश में करना । प्र० कोई चिड़िया फँसाना तो तुम्हारे से सीखे ।

चिड़ीमारों का टोला, भाँति-भाँति का पक्षी बोला—अ० कोई ऐसी जगह जहाँ देश-देश के लोग हों । प्र० इस बार दशहरे की छुट्टियों में मामा के यहाँ कलकत्ते गया था । वहाँ मुझे बाज़ार में तरह-तरह की बोलियाँ सुनाई दीं । इस पर सुनने वाले ने कहा, तुमने वहाँ की भली कही, जानते नहीं कि चिड़ीमारों का टोला, भाँति-भाँति का पक्षी बोला ।

चिराग गुल पगड़ी गायब—अ० अंधकार में हाथ की वस्तु भी दिखाई नहीं देती है । प्र० रमेश तुम यहाँ कैसे रहते हो ? यहाँ तो हाथ में बंधी घड़ी भी दिखाई नहीं पड़ती है । सच है कि चिराग़ गुल पगड़ी ग़ायब ।

चिराग गुल होना—अ० किसी ऐसे व्यक्ति का निधन हो जाना कि जिसके न होने से वंश नष्ट हो जाए । प्र० संजय का निधन होते ही उसकी पार्टी का भविष्य धूमिल हो गया । सच मानो तो उसका चिराग़ ही गुल हो गया ।

चिराग जला दाव गला—अ० उजाले में चोर चोरी नहीं कर सकता है । प्र० कल रात में चोरों ने श्यामसुन्दर के घर में सेंध लगायी, पर अचानक बत्ती के जलते ही भाग खड़े हुए । सच है कि चिराग़ जला दाव गला ।

चिराग़ तले अँधेरा—अ० जब कोई वस्तु आँखों के आगे रखी हुई भी दिखाई न दे । प्र० अरे, बेटा ! क्या ढूँढ रहे हो ? पैन नहीं मिल रहा मम्मी ! आशीष ने कहा । वह तो तुम्हारे ही सामने मेज़ पर रखा हुआ है बेटा । सावित्री ने उत्तर दिया । मम्मी मेरे साथ तो वही कहावत हो गई कि चिराग़ तले अंधेरा ।

चिराग़ में बत्ती और आँख में पट्टी—अ० संध्या होते ही सो जाना । प्र० क्या बात है, आजकल बहुत जल्दी बिस्तर पर चले जाते हो ? वास्तव में तुम्हारी तो वही कहावत है कि चिराग़ में बत्ती और आँख में पट्टी ।

चिराग़ लेकर ढूंढना—अ० कोई ऐसी वस्तु जो अच्छी तरह खोजने पर भी न मिले । प्र० साहब, यह अरबी घोड़ा है, चिराग़ लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलेगा, आप आँख बंद करके ले लीजिए ।

चिराग़ से चिराग़ जलता है—अ० इस मायावी जगत् में एक की मदद से दूसरे का काम बनता है । प्र० शिव की कृपा से पवन भी परीक्षा पास कर गया । सच है कि चिराग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिराग़ जलता है ।

चीज न राखे आपनी चोरों गारी देई—अ० अपनी ही असावधानी के कारण क्षति उठानी पड़े तो इसमें किसी का क्या दोष । प्र० आज सवेरे जल्दी में अपनी शाल तो बाहर छोड़ गए, अब कोई ले गया तो गाली देते फिर रहे हो । तुम्हारी तो वही कहावत है कि चीज़ न राखे आपनी चोरों गारी देई ।

चींटी को किनका, कुत्ते को टुकड़ा—अ० जिसका जितना पेट उतना ही आहार । प्र० बंधु ! तुम तो दो सौ रुपये की नौकरी करने के लिए ही तैयार हो गए । सच है चींटी को किनका, कुत्ते को टुकड़ा ।

चील का मूत ढूढना—अ० अप्राप्य चीज़ की खोज करना । प्र० कोई मुझे चन्द्रमा ला कर दे दे तो मैं उसे मालामाल कर दूं । इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया, तुम तो हमशा चील का मूत ढूंढने वाली बात करते हो ।

चील के घोंसले में और माँस—अ० जब कोई ऐसी वस्तु की किसी से पाने की आशा करे जो उसके पास हो ही नहीं । प्र० आज सवेरे हरिया के पास दस का नोट लेने गया पर न मिला । इस पर उसने उत्तर दिया, बधु, चील के घर में और मांस, वह आप ही सैंकड़ों उड़ा दे ।

चील सा मँडराया—अ० जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को लेने के लिए उसके चहूं ओर फिरता ही रहे । प्र० आज बेचारा मुन्ना भूखा था । जब तक उसे रोटी नहीं दी तब तक चील-सा मंडराता ही रहा ।

चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ियों की आस—अ० जो चीज़ हो ही न सके उसे पाने की आशा करना । प्र० अगर मेरी लाटरी निकल जाये तो विश्व की सैर कर आऊँ । इस पर उसने उत्तर दिया, ठीक है कि चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ियों की आस ।

चुप आधी मरज़ी—अ० यदि कोई व्यक्ति किसी बात को सुन कर चुप हो जाए तो समझ लो कि वह जो बात कही गई है उसको मानने के लिए आधा राज़ी हो गया है । प्र० मैंने मित्रसेन से पूछा था कि गर्मी की छुट्टियों में कन्याकुमारी चलोगे । उसने सुन कर कोई उत्तर नहीं दिया । बंधु जानते नहीं कि चुप आधी मरज़ी ।

चुप के राम सहाय—अ० जो व्यक्ति दूसरों के द्वारा मिले दुःखों को सहज ही सह ले तो प्रभु उसकी ममद करते हैं । प्र० दुर्योधन ने पाण्डवों को कितने कष्ट दिये पर अंत में वे ही विजयी हुए । सच है कि चुप के राम सहाय ।

चुपड़ी और दो दो—अ० अच्छी वस्तु और बहुतायत से या दुगुना लाभ । प्र० बड़े भाग्यशाली हो बंधु ! नौकरी के साथ-साथ सुन्दर पत्नी भी मिल गई । यह तो वही कहावत हुई कि चुपड़ी और दो दो !

चुरावै नथ वाली, पिटै चिथड़ा वाली—अ० अमीर अपराध करे और ग़रीब पकड़ा जाए । प्र० क्या जमाना आ गया है, चोरी का माल खरीदा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर ने, पर पकड़ा गया हरिया कहार। सच है कि चुरावै नथ वाली, पिटै चिथड़ा वाली।

चुल्लू चुल्लू साधेगा, द्वारै हाथी बाँधेगा—अ० थोड़ा-थोड़ा जोड़ने से व्यक्ति अमीर वन जाता है। प्र० गोविन्द ने पचास रुपये महीना डाकखाने में भेजा। आज वह कई हज़ार का मालिक है। इस पर उसने उत्तर दिया, क्या तुमने सुना नहीं ? चुल्लू चुल्लू साधेगा, द्वारै हाथी बाँधेगा।

चुल्लू भर पानी में डूब मरो—अ० जब किसी व्यक्ति को बहुत शर्मिन्दा किया जाता है। प्र० सारी उम्र तो तुम मेरी जड़ें काटते रहे अब हमदर्दी दिखाने आये हो। शर्म नहीं आती, कहीं चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

चुल्लू में उल्लू और लोटे में गड़-गप्प—अ० ऐसा शराबी व भंगड़ियों में कहा जाता है या थोड़ा पैसा पाते ही जिसे घमण्ड हो जाए। प्र० हरिया के पास जैसे-तैसे करके सौ रुपये हो गये हैं सो उसे तो उन्हीं का नशा मारे डाल रहा है। उसकी वही कहावत है कि चुल्लू में उल्लू और लोटे में गड़-गप्प।

चूक अजान करै, स्याना गाँठ करै—अ० मूर्ख तो मूर्खता करे, चतुर लोग शिक्षा लें। प्र० मदन ने प्रवीण से कहा, भूषण ने कल जो सभा में मूर्खता दिखाई उससे अनिल ने शिक्षा ली कि मैं भूल कर भी विद्वानों का अपमान नहीं करूँगा। सच है कि चूक अजान करै, स्याना गाँठ करै।

चूक अजान से परै, स्याना गाँठ बंधै—अ० छोटे अपराध करें और बड़ों-बड़ों के सिर पड़ें। प्र० वंधु, महेन्द्र तो कल लड़ कर आया और लोग उलाहना लाये उसके बावा पर। सच है कि चूक अजान से परै, स्याना गाँठ वंधै।

चूका और गया—अ० जो व्यक्ति ठीक वक्त पर काम नहीं करता है, वह ख़त्म हो जाता है। प्र० हरीश ने सुमतप्रसाद के कहने में आकर उस दिन दावा नहीं डाला। अब वेचारा कहीं का भी नहीं रहा। सच है कि चूका और गया।

चूना और चमार कूटे पै ठीक रहता है—अ० नीच व्यक्ति पिट कर ही ठीक काम करता है। प्र० वंधु, चेता कहार से जब तक ठाकुक-ठाकुर करता रहा तब तक उसने एक काम भी नहीं किया किन्तु जब सख्ती से पेश आया तो सब ठीक हो रहा है। इस पर उसने उत्तर दिया कि चूना और चमार कूटे पै ठीक रहता है।

चूनी कहे मुझे घी से खा—अ० नीच व्यक्ति भी अपनी इज्जत चाहता है। प्र० मैंने सुना है कि तुम भी सेठजी की बराबरी करने के लिए गाड़ी खरीद रहे हो। सच मानो तुम्हारी तो वहीं कहावत है कि चूनी कहे मुझे घी से खा।

चूम चाट के खा लिया—अ० जब किसी को लल्लो-पत्तो करके ख़त्म कर दिया जाए। प्र० पवन ने रामबहादुर के लड़के को चिकनी चुपड़ी बातों में लाकर लूट खाया और हमेशा के लिए बर्बाद कर दिया। सच है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूम चाट के खा लिया।

चूरा झाड़ खा लड्डू न टूटे—अ० लाभ से ही काम चलाओ ताकि पूँजी बनी रहे। प्र० श्याम अपनी आय से ही घर बार चला रहा है ताकि उसकी पूंजी बनी रहे। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि चूरा झाड़ खा लड्डू न टूटे।

चूल्हे आग न घड़िया पानी—अ० महा-कंगाली का वास। प्र० मम्मी कुछ दिन के लिए गाँव चलो। वहाँ चाचा के पास रहेंगे। इस पर मम्मी ने कहा कि पगले वहाँ क्या धरा है, वहाँ तो चूल्हे आग न घड़िया पानी।

चूल्हे का फूंकना और दाढ़ी का रखना—प्र० जो कार्य एक दूसरे के विरुद्ध हो, एक साथ नहीं हा सकते हैं। प्र० अरे, ग़जब कर दिया तुमने, प्लास्टिक के गोदाम में आग सिलगा रखी है। तुम्हारी तो वही कहावत है कि चूल्हे का फूंकना और दाढ़ी का रखना।

चूल्हे का राव, लाव ही लाव—अ० पेटू व्यक्ति हर समय खाना ही माँगता रहता है। प्र० तुम्हें तो हर समय कुछ न कुछ खाने को चाहिए। सच है कि चूल्हे का राव, लाव ही लाव।

चूहे की न चक्की की—ऐसी औरत जो घर का बिलकुल भी काम न करे। प्र० पता नहीं मेरे भाग्य में कैसी वहू लिखी थी, चूहे की न चक्की की?

चूल्हे में पड़ने दो—अ० जब किसी का किसी से कोई मतलब न रहे। प्र० क्या तुम इतना होने पर भी देवराज के घर जाओगे? कभी नहीं, मेरी बला से वह चूल्हे में पड़े।

चूहा बिल न समात है, पूंछ बाँधिये छाज—अ० घर छोटा हो और सम्बन्धी लोग वहुत हों। प्र० हरिया की कोठरी में उसका गुज़ारा तो कठि-नाई से होता है और सम्बन्धी इतने जोड़ लिए हैं। यह तो वही कहावत हुई कि चूहा बिल न समात है, पूंछ बाँधिये छाज।

चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा—अ० जिसकी जैसी जात होती है वह वैसे ही कर्म करता है। प्र० कहन को जमना माली का लड़का पाँच ही वर्ष का है पर खेल में भी खेत-क्यारी की बातें करता है। इस पर उसने उत्तर दिया, अरे, भाई चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा।

चूहे का बिल ढूँढ़ना—अ० अपने गुज़ारे के लिए जगह खोजना। प्र० अरे, दिल्ली जैसी महानगरी में वह तुम्हें कहाँ रखेगा? वह तो स्वयं ही चूहे का बिल ढूंढ़ता फिरता है।

चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाते हैं—अ० छोटे व्यक्ति से बड़े काम नहीं हो सकते हैं। प्र० बादलों को देखकर सुदर्शन ने कहा कि गाड़ी पर डालने के लिए कोई कपड़ा ले आओ। उसने एक चद्दर लाकर उस पर डाल दी। इस पर सुदर्शन ने हँसकर कहा, अरे, कहीं चूहे के चाम से नगाड़े मढ़े जाते हैं।

चूहे के हाथ लगी हल्दी की गाँठ सो पंसारी ही बन बैठा—अ० जो व्यक्ति थोड़े से धन से अपने को सेठ समझ बैठे। प्र० कल मैं रामशरण के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोश मांगने के लिए गया था, उसने साफ़ इंकार कर दिया । तब मैं लायब्रेरी से ले आया । उसकी तो वही कहावत है कि चूहे के हाथ लगी हल्दी की गाँठ तो पंसारी ही बन बैठा ।

चेले लावें मांग कर, बैठा खाय महन्त । राम भजन को नाम है, पेट भरन को पंथ—अ० बहाने से दूसरों को धोखा देकर अपना प्रयोजन निकालना । प्र० आजकल सतपालसिंह लोगों को नौकरी दिलाने का झाँसा देकर खूब रुपया ऐंठ रहा है । उसकी वही कहावत है कि चेले लावें माग कर, बैठा खाय महन्त । राम भजन को नाम है, पेट भरन को पंथ ।

चोट लगी पहाड़ की, तोड़े घर के बाट—अ० जब किसी की ताकतवर पर तो पार न बसाये और कमजोर पर गुस्सा उतारे । प्र० साहन की टक्कर तो लगी कार से और बुरा भला कहने लगा पैदल जाने वालों को । यह तो वही कहावत हुई कि चोट लगी पहाड़ की, तोड़े घर के बाट ।

चोटी काटा चेला—अ० किसी के अधीन होना । प्र० बन्धु ! अगर तुमने मेरा यह काम करा दिया तो मैं चोटी काटा चेला हो जाऊँगा ।

चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली—अ० भक्षक ही को भक्षक का रक्षक बनाया जाये । प्र० घनश्याम स्वयं ही पैसे-पैसे को मारा-मारा फिरता था । पुनीत ने सौ रुपये उसके हाथ घर भिजवा दिये जिन्हें लेकर यह चम्पत हो गया । वाह, वाह ! चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली ।

चोटी पकड़ना—अ० सिर पर चढ़ना । प्र० आजकल रामलाल का लड़का इतना सिर चढ़ गया है कि बात-बात में सभी की चोटी पकड़ता है ।

चोर का भाई गाँठ कटा—अ० दो बुरे व्यक्तियों का मेल । प्र० महेश तो जुआरी था ही उसका छोटा भाई चाकूबाज निकला । सच है कि चोर का भाई गाँठ कटा ।

चोर का माल चाण्डाल खाय—अ० बुरी कमाई कुकर्मों में लगती है । प्र० अरे, भय्या मेहनत से पैसा कमाओ तो कुछ पास रहे । रिश्वत के चार पैसे लेते हो सो लाल पानी में बह जाता है । तुम्हारी वही कहावत है कि चोर का माल चाण्डाल खाय ।

चोर का मुंह चाँद-सा—अ० चोर के माथे पर वैसा ही कलंक का टीका होता है जैसा चाँद पर । प्र० पुलिस को चोर की पहचान होती है । तभी तो कल सेठ जी के यहाँ चोरी करने वाला अचानक पकड़ लिया गया । पुलिस वाले कहते हैं कि चोर का मुँह चाँद-सा ।

चोर की दाढ़ी में तिनका—अ० दोषी अपना दोष स्वयं ही खोल देता है । प्र० कल मेरी घड़ी जाती रही थी, जब ढूंढ़ पड़ी तो नलिन स्वयं बोल उठा कि क्या करूँ पैसा पास नहीं है वरना मैं ही घड़ी के दाम दे देता । सच है कि चोर की दाढ़ी में तिनका ।

चोर की नारि कोठी में सिर दे रोवै—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० जब किसी बात को छिपाना होता है तो इंसान मन ही मन घुटता रहता है। प्र० क्यों अपने कर्मों पर मन ही मन में घुटे जा रहे हो ! तुम्हारी तो वही कहावत है कि चोर की नारि कोठी में सिर दे रोवै।

चोर की माँ कब तक खैर माने—अ० पापी का पाप एक दिन अवश्य खुल जाता है। प्र० राघव ने जनता पर इतने अत्याचार किए और छिपाये भी किन्तु एक दिन ऐसा आया, जब उनका फल भोगना ही पड़ा। सच है कि चोर की माँ कब तक ख़ैर मानेगी।

चोर के घर में छिछोरे—अ० बड़े-बड़े लुटेरों का माल छोटे-छोटे लुटेरे खाते हैं। प्र० हरनामसिंह रात दिन झूठ-सच बोलकर लोगों को ठगता है और उसके लफंगे यार दोस्त उसके माल पर मौज मारते हैं। सच है कि चोर के घर में छिछोरे।

चोर के पेट में गाय, आप ही आप रम्भाय—अ० दोषी अपने दोष को स्वयं ही खोल देता है। प्र० भगवाना ने ठाकुर की हवेली में डाके में हिस्सा लिया था। एक दिन सब-इंस्पेक्टर के सामने कहने लगा कि साहब, रात मैंने सपना देखा कि ठाकुर की हवेली में डाका डाला है। बस सबइंस्पेक्टर ने उसी वक्त भगवाना को थाम लिया। सच है कि चोर के पेट में गाय, आप ही आप रम्भाय।

चोर के हाथ में दीपक—अ० स्वयं ही अपने अपराधों क खोलने का मौका ढूँढ़ना। प्र० भावना कहती थी कि मुझे गाना नहीं आता पर एक दिन गाते हुए उसकी सहेलियों ने उससे पकड़ ही लिया। भेद खुल गया। वाह, वाह, चोर के हाथ में दीपक।

चोर को चोर ही सूझे—जो जैसा होता है उसे सारा संसार वैसा ही दीखता है। प्र० कल पंचायत घर में एक चरसी आ गया। उसने दम लगाकर मेरे आगे भी कर दी। सच है चोर को चोर ही सूझे।

चोर गठरिया ले गया बेगारी हरषाय—अ० जब किसी को उस कार्य से मुक्ति मिल जाए जिसे वह करना नहीं चाहता। प्र० आज तो चेहरा खिला हुआ है, क्या बात है ? आज भाईसाहब ने कॉलेज छुड़वा दिया। ठीक है तुम तो पहले ही आगे नहीं पढ़ना चाहते थे। तुम्हारी तो वही कहावत है कि चोर गठरिया ले गया बेगारी हरषाय।

चोर गये की अंधेरी—अ० कोई व्यक्ति किसी से सताये जाने के बाद बदला लेने की इच्छा करता है। प्र० कल मुझे अनिल ने अकेला समझकर मारा। मैंने भी उससे छूटकर भागते हुए कह दिया कि क्या डर है पट्ठे, याद रख चोर गये की अंधेरी।

चोर चोरी से जाये तो क्या हेरा फेरी से भी जाए—अ० किसी का स्वाभाविक गुण नहीं जाता है। प्र० मदन तुम्हारे छोड़े हुए अवगुण अब भी कहीं न कहीं झलक उठते हैं। सच है कि चोर चोरी से जाये तो क्या हेरा फेरी से भी जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोर से कहै लाग और साह से जाग—अ० दुपलड़ी बजाना। प्र० तुमने मुझसे तो किस्तें अदा करने के लिए मना करवा दिया और बैंक मैनेजर से कहकर नालिश करवा दी। तुम्हारी तो वही कहावत है कि चोर से कहै लाग और और साह से कहै जाग।

चोरी और सीना ज़ोरी—अ० अपराध भी करे और झगड़े भी। प्र० पहले तो तुमने मेरा बस्ता फेंककर सीट हथिया ली और अब ऊपर से झगड़ते भी हो। सच है चोरी और सीना जोरी।

चोरी का धन मोरी में जाय—अ० खोटी कमाई खोटे कामों में ही जाती है। प्र० देखा बन्धु, तुम्हारा पापांचार से कमाया हुआ पैसा मुकद्दमेबाज़ी में जा रहा है। तुम्हारी तो वही कहावत है कि चोरी का धन मोरी में जाय।

चोरी बे थाँग नहीं होती—अ० बिना भेद मिले किसी काम को नहीं कर सकते। प्र० बन्धु, नल के लिए दमयन्ती के पास जाना कठिन था पर जब उसे रहस्य बता दिया गया तो आसानी से चला गया। सच है कि चोरी बे थाँग नहीं होती।

चोली दामन का साथ—अ० हर वक्त साथ रहना। प्र० भावना को हर समय तुम्हारे साथ ही देखता हूँ, क्या बात है? तुम्हारा उसका तो चोली-दामन का साथ है।

चौकड़ी चूकना—अ० धोखा खाना। प्र० मैंने परीक्षा में न बैठकर अच्छा नहीं किया। प्रश्न पत्र इतने सरल आये थे कि वेड़ा पार हो जाता। अब पछ-ताने से क्या होता है, अब तो चौकड़ी चूक गया।

चौकड़ी मारना—अ० देह में शक्ति आ जाना। प्र० अब तो तुम स्वस्थ हो गये हो। कुछ ही दिनों में चौकड़ी मारने लगोगे।

चौथ का चाँद—अ० कलंकी। प्र० तुम्हारे भतीजे ने तुम्हारी सब जगह हँसी करवा दी। वह तो चौथ का चाँद निकला।

चौथे चन्द्रमा—अ० बुरे दिन आना। प्र० चारों ओर से मुसीबत ही मुसीबत आ रही है, लगता है कि चौथे चन्द्रमा आ गए।

चौबे गये छब्बे होने दुब्बे ही रह गए—अ० जब कोई कार्य लाभ हेतु किया जाये; किन्तु लाभ के स्थान में हानि पहुँचे। प्र० बन्धु, मेघनाथ अपनी दूकान गंगा के मेले में इसलिए ले गया था कि अच्छा लाभ होगा किन्तु उसको उल्टा घाटा रहा। इस पर घर वालों ने कहा, चौबे गए थे छब्बे जी होने दुब्बे जी ही रह गए।

चौबे मरें तो बन्दर हों, बन्दर मरें तो चौबे हों—अ० मथुरा नगरी में बन्दर और चौबे दोनों यात्रियों को दुखदायी हैं। प्र० यह कहावत चौबों को चिढ़ाने के लिए कही जाती है। इसका कोई विशेष भाव नहीं है जिसका स्पष्टीकरण किया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छ

छछूंदर के सिर पै चमेली का तेल—अ० जब किसी व्यक्ति को कोई ऐसी वस्तु मिल जाये जिसके योग्य वह न हो। प्र० राधेश्याम ने शामलाल को कहा, अरे बन्धु ! कल्लू को प्रभातकुमार ने कैसा अच्छा रेशमी अंगरखा दिया है। इस पर शामलाल ने कहा, हाँ, बन्धु ठीक है, छछूंदर के सिर पै चमेली का तेल।

छछूंदर छोड़ना—प्र० आपस में लड़ाई करा देना। प्र० पता नहीं बन्धु तुमने अर्जनदेव के घर में क्या छछूंदर छोड़ी है कि उसके यहाँ रात दिन क्लेश रहता है।

छटाँक भर चून चौबारे रसोई—अ० झूठा भड़म्बा दर्शाना। प्र० बन्धु, तुम्हारे पास रुपये तो पचास ही हैं और समारोह इतना कर लिया। तुम्हारी तो वही कहावत है कि छटाँक भर चून चौबारे में रसोई।

छटाँक भर सतुआ और मथुरा में भण्डारा—अ० थोड़ी सी पूंजी पर अधिक समारोह करना। प्र० बन्धु, वांटने के लिए कम्बल तो लाये हो पचास और भिखमंगे बुला लिए अनगिनत। सच है तुमने तो वही काम किया कि छटाँक भर सतुआ और मथुरा में भण्डारा।

छटी के पोतड़े भी नहीं धुले—अ० जब कोई छोटी उम्र का बालक किसी कठिन कार्य को करने के लिए हिम्मत करे। प्र० वीर अभिमन्यु जब चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए तैयार हुआ तो भीम ने कहा, वत्स, अभी तो छटी के पोतड़े भी नहीं धुले।

छत्तीस प्रकार के भोजन में बहत्तर रोग—अ० चटोरे व्यक्ति हमेशा रोगी रहते हैं। प्र० राधेश्याम ने श्रीयांस से पूछा, बंधु, बताओ तो सही, मुझे भोजन क्यों नहीं पचता। श्रीयांस ने उत्तर दिया, चटोरेपन से। क्या तुमने सुना नहीं कि छत्तीस प्रकार के भोजन में बहत्तर रोग।

छत्री का भगत और मूसल का धनुष—जातिगुण के विरुद्ध कोई बात नहीं हो सकती। क्षत्री का गुण है युद्ध करना न कि भक्ति, जैसे मूसल को मोड़कर धनुष नहीं बनाया जाता। प्र० हरद्वारी तो आज शांतिरूप से पूजा-पाठ में लगा हुआ है इसकी तो वही कहावत है कि छत्री का भगत और मूसल का धनुष।

छदाम में लड़ाई और पैसे में सुघड़ भलाई—अ० थोड़े से खर्च में काम बिगड़ता और थोड़े से ज़्यादा खर्च में काम सुधरता है। प्र० बन्धु, पिता जी नौकरों को एक-एक रुपया इनाम का देना चाहते थे पर बाबा जी ने पाँच-पाँच रुपये दे दिए। सारे में वाह-वाह हो गई। सच है कि छदाम में लड़ाई और पैसे में सुघड़ भलाई।

छप्पर पर फूंस नहीं द्वार पर नक्कारा—अ० झूठा आडम्बर बाँधना। प्र० कहने को तो रामलाल को पाँच सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये वेतन के मिलते हैं पर घर गाड़ी रखी हुई है। उसकी तो वही कहावत हुई है कि छप्पर पर फूंस नहीं, द्वार पर नक्कारा।

छवि गठड़ी में जवानी थाली में—अ० उत्तम आहार और वस्त्र से मनुष्य की पुष्टता व सुन्दरता बढ़ती है। प्र० उसे यथायोग्य खाने और पहनने को नहीं मिलता सो मैला और कमज़ोर ही रहता है। सच है कि छवि गठड़ी में जवानी थाली में।

छाती पर बाल नहीं, भालू से लड़ाई—अ० जब कोई व्यक्ति ऐसे कार्य के करने का साहस करे जिसके करने की क्षमता उसमें न हो। प्र० बंधु, मलखान ने बारह हज़ार सवारों से पृथ्वीराज पर चढ़ाई की थी। यह तो वही कहावत हुई कि छाती पर बाल नहीं, भालू से लड़ाई।

छाती पै काला बाल है—अ० मर्द है। प्र० कल हमारे घोड़े को छीनने के लिए मलखान डाकू आयेगा, क्या करें? इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया, पागल हो गए हो क्या, किसकी छाती पै काला बाल है जो ऐसा कर सके।

छाती पै मूंग दलना—अ० कोई ऐसा कार्य करना जिससे दूसरे को कष्ट पहुँचे। प्र० मैनेजर साहब ने तो मेरी बदली की रिपोर्ट कर दी थी पर उपनिदेशक महोदय ने नहीं मानी। इस पर सुनने वाले ने कहा कि अभी कुछ दिन और इसकी छाती पै मूंग दलोगे।

छाती पै रख के कोई नहीं ले गया—अ० धन जब अधिक व्यय करना हो तब कहा जाता है। प्र० श्याम को अधिक व्यय करता देख हरद्वारी ने कहा, बंधु, क्यों रुपया उड़ाते हो? तब श्याम ने उत्तर दिया, बंधु इसे छाती पै रख के कोई नहीं ले गया, यहाँ का यहीं रह जाएगा।

छाती पै साँप लोटना—अ० ईर्ष्या करना। प्र० जिस समय दुर्योधन ने यह सुना कि पाण्डव लाक्षागृह से जीवित निकल गए तो उसकी छाती पै साँप लोट गया।

छान का क्या घर, मेंढक का क्या डर—अ० तुच्छ वस्तु से न कुछ लाभ न कुछ हानि। प्र० कल हवा तेज़ थी, कहीं से पतंगा आकर मदन धोबी की छान पर गिर पड़ा, सब भस्म हो गया। सच है कि छान का क्या घर और मेंढक का क्या डर।

छाया बड़ी माया से—अ० आश्रय बहुत बड़ी चीज़ है। प्र० भैया, बाबूजी के आसरे से नौकरी मिल गई। सच है कि छाया बड़ी माया से।

छप्पर फाड़ के देगा—अ० बिना मेहनत ही धन प्राप्त हो जायगा। प्र० तुम कुछ करते धरते नहीं हो, कहां से आयेगा। उत्तर मिला, घबराओ मत जब भगवान देगा तब छप्पर फाड़ के देगा।

छाँह न छूने देना—अ० अपने पास न आने देना। प्र० बंधु, अब तो राकेश को बुला लो, बहुत दुखी है। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया, नहीं बंधु, उसे तो अब अपनी छाँह भी नहीं छूने दूंगा।

छाती खोलना—अ० निष्कपट होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी कार्य का करना। प्र० कल संध्या के विवाह में दोनों समधी छाती खोल कर मिले।

छाती ठण्डी होना—अ० मन को शान्ति होना। प्र० जब धनुर्धारी अर्जुन ने जयद्रथ का वध कर लिया तो उसकी छाती ठण्डी हो गई।

छाती ठोकना—अ० दृढ़ प्रतिज्ञा करना। प्र० वीर अर्जुन ने भरी सभा में छाती ठोक कर कह दिया कि कल सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ को मार दूंगा वरना स्वयं जल कर प्राण त्याग दूंगा।

छाती पै पत्थर रख कै—अ० कड़ी छाती करके। प्र० अब तो छाती पै पत्थर रख कर बेटे का दाह संस्कार करना होगा।

छाती पै पत्थर रखना—अ० कोई ऐसी बात हो जाना कि जो जिन्दगी भर दुःखदायी हो। प्र० बेचारे रामू की लड़की छोटी उम्र में ही विधवा हो गई। यह तो उसकी छाती पर पत्थर रखा गया।

छाती फटना—अ० शोकाकुल होकर विह्वल होना। प्र० बंधु, प्रमोद की मृत्यु पर शोक से शरण जी की छाती फटी जाती थी।

छाती भर आना—अ० करुणा के कारण कंठ अवरुद्ध होना। प्र० पुत्र वधु उत्तरा को देखते ही अर्जुन की छाती भर आई।

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति—अ० मुसीबत अकेले नहीं आती है। प्र० बंधु, क्या कहूँ मैं परीक्षा में तो उत्तीर्ण हुआ ही नहीं, एक दो रोज़ में पिता जी को भी सेवा से अवकाश मिलने वाला है। सच है कि छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति।

छींकत न्हैये छींकत खैये, छींकत रहिये सोया, छींकत पर घर कबहुँ न जैये, जात लराई होय—अ० छींकते ही व्यक्ति को कोई कार्य नहीं करना चाहिए ऐसी जनश्रुति है पर इस कहावत से विदित है कि न्हाने, खाने और सोने में छींक नहीं मानी जाती। हाँ, पराये घर अथवा परदेश में छींकते ही न जाये अन्यथा क्लेश होगा।

छींकते की नाक नहीं काटी जाती—अ० गाली देने वाले की जिह्वा नहीं पकड़ी जाती। प्र० जब मैं भारत दर्शन के लिए जाने लगा तो भावना ने छींक दिया। इस पर सब ने कहा कि कहीं छींकते की नाक कटी है।

छींकते ही नाक कटी—अ० बुरे काम का फल फौरन मिल जाता है। प्र० बंधु, पुरोचन पाण्डव भवन में आग लगाने ही को था कि गदाधारी भीम ने पहले ही उसको स्वाहा कर दिया। सच है कि छींकते ही नाक कटी।

छुपे रुस्तम—अ० जब कोई अवगुणी चिरकाल बाद प्रगट हो। प्र० मैं तुम्हें ऐसा नहीं समझता था पर तुम तो छुपे रुस्तम ही निकले।

छुरी खरबूजे पै गिरी तो और खरबूजा छुरी पै गिरा तो एक ही बात है—अ० जब किसी कार्य को करने या न करने में दोनों ही तरह से हानि हो। प्र० शशक ने विचारा कि अगर वह शेर के पास जाता है तो भी मृत्यु निश्चित है और अगर वह आता है तो भी। उसकी तो वही स्थिति है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुरी खरबूजे पै गिरी तो और खरबूजा छुरी पै गिरा तो एक ही बात है ।

छुरी फेरना—अ० किसी को नुकसान पहुँचाना । प्र० जब जमींदार के आदमी किशना किसान के बैल खोल कर ले जाने लगे तो उसकी घरवाली ने कहा कि बच्चों के गलों पर छुरी मत फेरो ।

छूअत मरै, घाव कर काटै, का जानै पर पीरा । दु:ख देने को दोनों उपजे, कायथ अरु खटकीरा—अ० खटमल और कायस्थ दोनों ही निर्दयी होते हैं । प्र० भावना ने संगीता से कहा, अरी, खटमल को छुओ तो मर जाये और काटै तो घाव करै, कैसा अनोखा जीव है । सच है कि छूअत मरै, घाव कर काटै, का जानै पर पीरा । दु:ख देने को दोनों उपजे, कायथ अरु खटकीरा ।

छूछा कौ कोई संग न साथी, धन आये पै लाखन नाती—अ० ग़रीब से कोई बात भी नहीं करता और अमीर हो जाने पर असंख्य नातेदार बन जाते हैं । प्र० बंधु, जब मेरे पास पैसा न था तब कोई मुँह से बोलने को भी राजी नहीं था । पर जब से चार पैसे पास हुए हैं रिश्तेदारों की कमी नहीं रही । सच है कि छूछा कौ कोई संग न साथी, धन आये पै लाखन नाती ।

छूछा तोहि को पूछा—अ० ग़रीब का कहीं भी सम्मान नहीं होता है । प्र० कल बेचारा रमेश मामा के यहाँ गया था सो किसी ने उसे बैठने को भी नहीं कहा । इस पर सुनने वाले ने कहा कि बंधु जानते नहीं कि छूछा तोहि को पूछा ।

छूंछी हांडी टन टन बाजै—अ० मूर्ख बढ़-बढ़ कर बोलता है । प्र० अरे, तुमने भी सुना कल श्यामा जो निरा निरक्षरी भट्टाचार्य है सभा में कैसा बोल रहा था ? सच है कि छूंछी हांडी टन टन बाजै ।

छूंछे फटके उड़ उड़ जाएँ—अ० बेवकूफ परीक्षा में पास नहीं होते । प्र० प्रेम ने श्रुति से कहा कि कल गुरुजी ने छात्रों की परीक्षा ली पर एक भी पास नहीं हुआ । सच है छूंछे फटके उड़ उड़ जाएँ ।

छूट भलाई सारे गुण—अ० जिस व्यक्ति में अवगुणों के अलावा और कोई गुण हो ही नहीं, उसके लिए ऐसा कहा जाता है । प्र० कलुआ जहाँ जाता है वहीं से बुराई लाता है । इस पर सुनने वाले ने कहा कि क्यों न लाये; उसमें तो छूट भलाई सारे गुण हैं ।

छूटहि मलकि मलहि के घोये, घृत कि पाव कोउ वारि विलोये—अ० मूर्खों के उपदेश से मोह नष्ट नहीं होता और वृथा तीर्थ और व्रत करने से मोक्ष की प्राप्ति नही होती है । प्र० रात-दिन गंगा यमुना में गोते लगाते फिरते हो पर मन के काले हो । तुम्हारा तो वही हाल है कि छूटहि मलकि मलहि के धोये, घृत कि पाव कोउ वारि विलोये ।

छूटा बाज न आवै हाथ—अ० जो वस्तु हाथ से निकल जाती है फिर नहीं आती । प्र० उस दिन साईकिल मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवा सौ रुपये में मिल रही थी, अब बिक जाने पर पछतावा हो रहा है। सच है कि छूटा बाज़ न आवै हाथ।

छूटी घोड़ी भूसौले खड़ी—अ० जो घूम-फिर कर उसी जगह पर आ जाये तो उसके लिए यह कहावत कही जाती है। प्र० कल सोहन रूठ कर घर से चला गया था दूसरे दिन खुद ही लौट आया। सच है कि छूटी घोड़ी भूसौले खड़ी।

छै चावल नौ पखाल—अ० थोड़े से सामान के लिए बहुत-सा सामान जुटाया जाए। प्र० पंडित जी के यहाँ बरात में आये पच्चीस आदमी और खाना तैयार करवा लिया पाँच सौ आदमियों का। उनकी तो वही कहावत हुई कि छै चावल नौ पखाल।

छैल छींट बग़ल में ईंट—अ० जो व्यक्ति स्वयं को बड़ा सिद्ध करने के लिए फिजूल की वस्तुओं को धारण करे। प्र० कल्लू कहार अपने आप को बड़ा आदमी सिद्ध करने के लिए बग़ल में दुशाला दबाये फिरता है। सच है कि छैल छींट बग़ल में ईंट।

छोटा मुंह बड़ी बात—अ० अपनी सामर्थ्य से बढ़ कर बातें करना। प्र० अगर आप कहें तो एक दिन में सारे ब्रह्माण्ड का चक्कर लगा आऊँ। इस पर सुनने वाले ने कहा कि बस-बस चुपकर, छोटा मुँह बड़ी बात।

छोटा सो खोटा—अ० नाटा व्यक्ति नटखट होता है। प्र० कहने को तो मदन छोटा-सा है पर जाल बुनने में पूरा माहिर! सच है छोटा सो खोटा।

छोटा सो पोटा—अ० ठिगने व्यक्ति की देह पुष्ट होती है। प्र० बंधु, मेरी देह लम्बी थी सो कमर जल्दी झुक गई; किन्तु तुम्हारी देह ठिगनी है सो सीधे बने हो। सच है छोटा सो पोटा।

छोटी सी गौरैया, बाघों से मुठ भेड़—अ० जब कोई साधारण व्यक्ति बड़े व्यक्ति से अड़ जाए। प्र० अरे, तुम पिद्दी न पिद्दी का शोरवा और साहू साहब से वैर बाँध बैठे। सच है कि छोटी सी गौरैया, बाघों से मुठ भेड़।

छोटी सी बछिया बड़ी सी हत्या—अ० अपराध छोटा हो कि बड़ा, दोष दोनों का बराबर ही होता है। प्र० बेचारे आत्म देव ने छोटी-सी बछिया मार डाली थी पर प्रायश्चित गाय का करना पड़ा। सच है कि छोटी-सी बछिया बड़ी सी हत्या।

छोटे मियाँ सो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सो सुभान अल्लाह—अ० जब कोई बड़ा व्यक्ति किसी छोटे व्यक्ति से भी ज़्यादा उत्पाती हो। प्र० बंधु, अनिल ने मेरे ऊपर रेत फैंक दी थी; उसका उलाहना मैं उसके पिता जी को देने गया पर उन्होंने मेरी ओर को ईंट उठाई। ठीक ही है कि छोटे मियाँ सो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सो सुभान अल्लाह।

छोड़ गया बनजारा तो रह गया ठाठ पड़ा सारा—अ० मरने पर कुछ साथ नहीं जाता, सब यहीं पड़ा रह जाता है। प्र० सिकन्दर ने इतनी मार काट करके धन-दौलत इकट्ठी की थी पर मरने पर सब यहाँ का यहीं रह गया। सच है कि छोड़ गया बनजारा तो रह गया ठाठ पड़ा सारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ जाट पराई खाट—अ० किसी व्यक्ति को जुल्म छोड़ने के लिए ऐसा कहा जाता है। प्र० अरे बंधु ! अब तो दादा बन गये हो, झूठ बोलना छोड़ो। तुमने सुना नहीं कि छोड़ जाट पराई खाट।

छोड़ झाड़ मुझे डूबन दे—अ० जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को दिल से न करना चाहे तो उससे बचने के लिए झूठे बहाने किया करता है। प्र० श्यामू रूठ कर चला, पर जाना कहीं नहीं चाहता था। जब देखा कि घर वाले मनाने नहीं आए तो कटड़े की पूँछ पकड़ कर घर की ओर यह कहता हुआ आया कि अरे कटड़े मैं घर नहीं जाऊँगा, मुझे छोड़ छोड़। यह तो वही कहावत हुई कि छोड़ झाड़ मुझे डूबन दे।

छोड़े गाँव से नाता क्या—अ० जिससे एक वार सम्बन्ध विच्छेद कर लिया हो, फिर उसका नाम भी नहीं लेना चाहिए। प्र० बंधु, जब मैं एक बार घर से हमेशा के लिए विदा ले चुका हूँ तो फिर वार-वार मेरे सामने वहाँ का नाम क्यों लेते हो ? जानते नही कि छोड़े गाँव से नाता क्या ?

ज

जंगल जाट न छेड़िये, हट्टी बीच किराड़। भूखा तरक न छेड़िये, हो जाय जी का झाड़—अ० जंगल में जाट को छेड़ोगे तो मारेगा, कलाल को दूकान पर छेड़ोगे तो तुम्हारा ऐब खुल जायेगा, भूखे मुसलमान को छेड़ोगे तो खाना खाये बिना नहीं जावेगा। ये शिक्षाएँ हैं। इन्हें केवल स्मरण ही रखिये।

जंगल में मंगल और बस्ती में कड़ाका—अ० फसल के दिनों में ग़रीब भी पेट भर लेता है और गाँव में रहे तो भूखा मरता है। प्र० चेता चमार का सारा समय जंगल में ही कटता है, वहाँ बाल, भुट्टे खाकर पेट भर लेता है और बस्ती में रहे तो फ़ाका करना पड़ता है। इसीलिए वह कहा करता है कि जंगल में मंगल और बस्ती में कड़ाका।

जंगल में मोर नाचा किसने देखा—अ० जब कोई गुणवान् अपने गुण को ऐसे स्थान पर प्रगट करे जहाँ उसका परखने वाला न हो। प्र० बंधु, श्रेय ने मनाली में वहुत बढ़िया भवन बनवाया है, देखा नहीं। इस पर सुनने वाले ने कहा, नहीं, जंगल में मोर नाचा किसने देखा।

जग दर्शन का मेला है—अ० जगत् में सिर्फ़ दिखावट है, थोड़े दिनों में आप ही अलग हो जायेंगे। प्र० अरे बंधु ! जगत् में किसी से मत संघर्ष मोल लो, यह जग तो दर्शन का मेला है।

जग में साँचे दो जने, एक राम एक दाम। इक दाता है मोक्ष का, एक सुधारे काम—अ० इस जगत् मे राम और पैसा दो ही मुख्य हैं। अगर प्रभु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोक्ष देता है तो पैसे से जगत् के काम चलते हैं। प्र० बंधु ! राय बहादुर के सब काम घर बैठे ही हो जाते हैं। सच है कि जग में साँचे दो जने, एक राम एक दाम । इक दाता है मोक्ष का, एक सुधारै काम ।

जगत जनायौ जेहि सकल, सो हरि देख्यौ नाहिं । ज्यौं आँखिन सन देखियाँ, आँख न देखी जाय—अ० दूसरे को सब देखते हैं अपने को कोई नहीं देखता है । प्र० रामलखन दूसरों के दोष तो देखता है पर अपने नहीं । इस पर उत्तर मिला कि ठीक ही तो है, आँख सब को देखती है, आँखों को कोई नही देख सकता, यह अटल नियम है ।

जगत में जीते जी का नाता—अ० जब तक जगत् में जीवित हैं तभी तक का सम्बन्ध है । प्र० अरे बन्धु, इधर फूंक निकली उधर आत्मीयों ने आग दिखाई । सच है कि जगत में जीते जी का नाता ।

जगन्नाथ के भात को जगत पसारै हाथ—अ० जात-पांत का झगड़ा व्यर्थ हैं । प्र० बंधु, इस बात पर रात दिन विचार होता है कि चारों वर्ण एक हो जाएँ जैसे देश में पहले थे। फिर तो वही बात हो जाये कि जगन्नाथ के भात को जगत् पसारै हाथ ।

जड़ काटते जायं, पानी देते जायं—अ० ऊपर से तो शुभचिन्तक बने रहें और हृदय में कपट भरा रहे। प्र० बंधु, वैसे तो तुम मेरे शुभचिन्तक बने फिरते हो पर कल ऐसी चुग़ली खा आये कि मेरी नौकरी ही जाती दीखती है। सच है कि जड़ काटते जायं, पानी देते जायं ।

जड़ को पकडो शाखाओं से क्या—अ० मालिक की सेवा करो, सेवकों की सेवा तो फिज़ूल है । प्र० तुम जन-जन की सेवा तो करते फिरते हो पर प्रभु को कभी भजते नहीं। फिर कल्याण कैसे हो ? इसलिए कहता हूँ कि जड़ को पकड़ो, शाखाओं से क्या ?

जड़ खोदना—अ० बात में से बात निकालना । प्र० तुम्हारे से कौन सिर मारे तुम तो बात की जड़ खोदते हो ।

जड़ जमाना—अ० किसी की नींव डालना । प्र० बाबर ने भारत में मुग़ल राज्य की जड़ जमाई ।

जड़ में तेल देना—अ० किसी को ऐसी नसीहत देना कि वह बिगड़ जाये । प्र० तुम प्रमोद को ऐसी नसीहत देकर उसकी जड़ में तेल दे रहे हो।

जनना और मरना समान है—अ० सन्तान पैदा करके माता का दूसरा जन्म होता है । प्र० कल ममता ने पुत्र को जन्म दिया है, पर मरने से बची है । सच है कि जनना और मरना समान है ।

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी—अ० अपनी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है । प्र० अतुल तुम तो रात दिन देश सेवा में लगे रहते हो । इस पर अतुल ने उत्तर दिया, क्यों न लगूँ, जानते नहीं जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

जन्म के दुखिया नाम सदा सुखलाल—अ० .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणों के विरुद्ध नाम होना। प्र० गदाधारी भीम ने धनुर्धारी अर्जुन से कहा, बन्धु, सुयोधन सबसे पहले युद्ध-स्थल से भागता है पर उसका नाम पड़ गया दुर्योधन। यह तो वही कहावत हुई कि जन्म के दुखिया नाम सदा सुखलाल।

जन्म के मंगता नाम दाताराम—अ० गुणों के विरुद्ध नाम होना। प्र० गजानन के पास रहने को तो झोंपड़ी है, पर लड़के का नाम रखा है पृथ्वीराज। यह तो वही कहावत हुई कि जन्म का मंगता नाम दाताराम।

जन्म न देखा बोरिया सपने आई खाट—अ० जब किसी कंगाल को थोड़ा-सा माल मिल जाये तो वह अभिमानवश कुछ की कुछ गाता है। प्र० आजकल रामजग तो धरती से अधर चलता है, क्योंकि उसे माया का माल मिल गया है। इस पर उसने कहा, भाई सुना नहीं कि जन्म न देखा बोरिया सपने आई खाट।

जन्म पत्र सब देखते हैं कर्मपत्र कोई नहीं देखता—अ० जन्मपत्री को तो सब पढ़ लेते हैं पर कर्मानुसार आगे क्या होगा, इसे कोई नहीं पढ़ पाता। प्र० तुम श्रुति की सगाई देने को तो तैयार हो गए पर लड़के की पत्री भी मिलती है। इस पर डॉ० शान्ति ने उत्तर दिया, जन्म पत्र सब देखते हैं, कर्म-पत्र कोई नहीं देखता।

जन्मपत्री की विधि तो मिला लो—अ० आप में एकमत होना। प्र० आप लोग मिलकर धन्धा करने के लिए तो तैयार हो गए पर आप में पहले जन्म-पत्री की विधि तो मिला लो, ऐसा न हो कि समय पर खींचातानी हो।

जने जने से मत कहो अपने मन की बात—अ० अपना राज सब पर मत खोलो। प्र० तुम अपने घर की बात सबके आगे रख देते हो, जानते नहीं कि जने-जने से मत कहो अपने मन की बात।

जब जैसा तब तैसा—अ० समय देखकर काम करना चाहिए। प्र० बन्धु, अभी ईख बोने का समय नहीं आया है। तुम जानते नहीं, जब जैसा तब तैसा।

जब तक गंगा जमुना बहे—अ० ऐसा काम करना जो अटल रहे। प्र० तुमने सारी उम्र ऐसे ही गँवा दी, अब तो ऐसा धन्धा कर लो जो तब तक रहे जब तक गंगा जमना बहे।

जब तक जीना तब तक सीना—अ० जब तक इंसान जीता है तब तक उसे सांसारिक झंझट करने ही पड़ते हैं। प्र० अब तो दादा बन गए हो, अब तो चुप बैठो। इस पर उसने उत्तर दिया, बन्धु जब तक जीना तब तक सीना।

जब तक दम है, तब तक ग़म है—अ० जब तक इंसान जीता है तब तक उसे कोई न कोई ग़म लगा ही रहता है। प्र० बन्धु, मैं तो बहुत परेशान हो गया, एक मुसीबत से छुटकारा नहीं मिलता कि दूसरी आ घेरती है। उत्तर मिला कि घबराते क्यों हो, जब तक दम है तब तक ग़म है।

जब तक पहिया लुढ़के लुढ़काये जाओ—जब तक काम चलता है, चलाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाओ। प्र० बंधु, मैं रोज़-रोज़ के झगड़ों से तंग आ गया हूँ। अब तो अलग होने में ही मेरा कल्याण है। इस पर सुनने वाले ने कहा, ऐसा हरगिज़ मत करना। जब तक पहिया लुढ़कै लुढ़काये जाओ।

जब तक साँस तब तक आस—अ० मरने तक इंसान को अच्छे होने की ही आशा लगी रहती है। प्र० पाँच महीने से दादा जी खटिया पकड़े हुए हैं, शायद ही बचें। इस पर उसने कहा कि बंधु, जब तक साँस तब तक आस।

जब दांत न थे तब दूध दियो, अब दांत दिये का अन्न न देहै—अ० भगवान जन्म से पूर्व ही आहार पैदा कर देता है तो फिर बाद में आहार क्यों न देगा। प्र० बधु, ईश्वर की भी कैसी लीला है कि बच्चे के जन्म लेते ही माता का दूध पीने को मिल जाता है। सच है कि जब दाँत न थे तब दूध दियो, अब दाँत दिये का अन्न न देहै।

जब देगा छप्पर फाड़के देगा—अ० बिना परिश्रम किए ही दौलत आये। प्र० बंधु, सारी दुनिया कमा रही है पर तुम कुछ नहीं करते। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, जब देगा छप्पर फाड़के देगा।

जब लग फूलै केतकी तब लग विलम करील—अ० जब तक इच्छानुसार काम न मिले तब तक जैसा हो वैसा ही किए जाओ। प्र० बंधु, इस नौकरी में तो गुज़ारा नहीं होता, मैं तो छोड़ दूंगा। इस पर उसने कहा, बंधु, तूमने सुना नहीं, जब लग फूलै केतकी तब लग विलम करील।

ज़बरदस्त के बीसों बिस्से, मारे और रोने ना देय—अ० बली का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। प्र० कल रायसाहब के लड़के ने हरी का पैन छीन लिया और जब वह माँगने गया तो दो थप्पड़ खाकर आया। सच है कि ज़बरदस्त के बीसों बिस्से, मारे और रोने ना देय।

ज़बान के आगे लगाम नहीं—अ० जब कोई व्यक्ति अधिक बोलता है तब ऐसा कहा जाता है। प्र० तुम्हारी ज़बान के आगे तो लगाम नहीं है। तुम न बड़े को देखते हो ओर न छोटे को।

ज़बान जनै एक बार, माता जनै बार-बार—अ० सज्जन पुरुष एक बार कहके फिर नहीं लौटते। प्र० मैंने सुमत को वचन तो दे दिया पर अब उसे निभाना कठिन पड़ रहा है। इस पर उसने उत्तर दिया कि काग़ज़ थोड़ा ही लिख दिया है। ऐसा न कहो बंधु, ज़बान जनै एक बार, माता जनै बार-बार।

ज़बान शीरी मुल्क गीरी—अ० मीठा बोलने वाले को सारा संसार प्यार करता है। प्र० भावना मधुरभाषिनी है जहाँ जाती है, वहीं अपना काम निकाल लाती है। सच है कि ज़बान शीरी मुल्क गीरी।

ज़बान से बेटा बेटी पराये हो जाते हैं—अ० जब कोई वचन देकर लौटता है तब ऐसा कहा जाता है। प्र० कल तक तो तुम भाई के परिवार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदद करने के लिए तैयार थे अब वक्त पड़ने पर इंकार कर रहे हो। यह ठीक नहीं है, ज़बान से बेटा-बेटी पराये हो जाते हैं।

ज़बान ही हाथी पै चढ़ावै, ज़बान ही सिर कटावै—अ० ज़बान से ही व्यक्ति पदवी पाता है। प्र० जब तक हरीश मिष्टभाषी बना रहा तब तक उन्नति करता रहा, पर जब से कटु वचन बोलना शुरू किया तब से कोई उसे पास बिठाने के लिए भी तैयार नहीं, जो इज्ज़त बनी थी वह भी चली गई। सच है कि ज़बान ही हाथी पै चढ़ावै, ज़बान ही सिर कटावै।

ज़बानी जमा खर्च—अ० जो करे कुछ नहीं, बातों में ही टाल मटोल करता रहे। प्र० जब तक उसका ज़बानी जमा-खर्च से काम चलता रहेगा तब तक वह कुछ करेगा ही नहीं।

जम से बुरी जनेत—अ० बरात मौत के समान दुखदायी होती है। प्र० कल मैं दीक्षित की बरात में गया, दिन भर धूल चाटी, फ़र्श पर सोया और आधी रात भोजन मिला। सच है कि जम से बुरी जनेत।

जमा लगे बिखभान की, राधे खेले फाग—अ० जब कोई व्यक्ति दूसरे के माल पर मौज उड़ाये। प्र० मनीष तो नाना के माल पर आनन्द लूट रहा है। उसकी तो वही कहावत है कि जमा लगे बिखभान की, राधे खेलैं फाग।

जमीन आसमान एक करना—अ० सख्त मेहनत से असम्भव को सम्भव कर दिखाना। प्र० रूपेश ने परीक्षा में प्रथम आने के लिए ज़मीन आसमान एक कर दिया।

ज़र को ज़र ही खींचता है—अ० रुपये को रुपया ही कमाता है। प्र० बंधु, राय साहब के यहाँ लाखों रुपये तो व्याज के आते हैं। सच है कि ज़र को ज़र ही खींचता है।

ज़र गया ज़रदी आई, ज़र आया लाली आई—अ० कंगाली में मुंह पीला और धनवान होने पर लाल हो जाता है। प्र० आजकल तुम बहुत उदास रहने लग गए हो, क्या बात है। उत्तर मिला, बंधु, टोटा आ गया है सो ज़र गया ज़रदी आई, ज़र आया लाली आई वाली कहावत मेरे ऊपर हो रही है।

ज़र है तो घर है, नहीं पक्षी बेपर है—अ० बिना पैसे के इस दुनिया में कोई भी कार्य नहीं होता है। प्र० पैसे के बिना माताहीन की कन्या बिन ब्याही रह गई। सच है कि ज़र है तो घर है, नहीं पक्षी बेपर है।

जल में खड़ी प्यासी मरे—अ० वस्तु होते हुए भी दुःख झेलना। प्र० तुम्हारे पास सैकड़ों बीघे ज़मीन है, फिर भी भूखे मरते हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि जल में खड़ी प्यासी मरे।

जले को जलाना और नमक मिर्च लगाना—अ० दुःखी को और भी अधिक दुःखी करना। प्र० बंधु, एक तो मेरा नुकसान हो गया और तुम ऊपर से ताने दे रहे हो। सच है कि जले को जलाना और नमक मिर्च लगाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जले घर को पल्हेंडी—प्र० ऐसे व्यक्ति के लिए कहा जाता है, जिसके घर के सभी लोग राम को प्यारे हो गए हों। प्र० बंधु, सब परिवार के खप जाने पर अब तो मुझे सब जले घर की पल्हेंडी कहते हैं।

जले पराई धी और हँसैं बटाऊ लोग—अ० किसी का नुकसान हो और किसी को मजा आये। प्र० अरे बंधु, मेरी तो घड़ी चोरी हो गई और तुम्हें ठठोली सूझी है। सच है कि जले पराई धी और हँसैं बटाऊ लोग।

जवान जाय पतार, बुढ़िया माँगे भरतार—अ० जब योग्य व्यक्ति का निरादर होता हो और अयोग्य आदर चाहे। प्र० आजकल पढ़े लिखे तो निठल्ले फिर रहे हैं और तुम निरक्षर नौकरी चाह रहे हो। सच है कि जवान जाय पतार, बुढ़िया माँगे भरतार।

जस पस तस बँधना—प्र० यथायोग्य व्यवहार करना। प्र० तुम्हारा व्यवहार दर्शन के प्रति उचित ही रहा है, क्योंकि जस पस तस बँधना।

जहर का घूंट पीना—अ० गुस्से को छिपा लेना। प्र० बंधु, आज श्याम ने मुझे ऐसी ऐसी कही कि बस मैं ज़हर का घूंट पीकर रह गया।

जहाँ कमाना, वहीं ठिकाना—प्र० जहाँ निर्वाह होने के साधन हों, वहीं देश है। प्र० बंधु, मोहन का सारा घर वहीं चला गया जहाँ वह नौकर है। सच है कि जहाँ कमाना, वहीं ठिकाना।

जहाँ की बोले बानी, वहाँ का पीवे पानी—प्र० जिस देश में रहे वहीं की बोली बोले। प्र० अरे बंधु, रहते तो हो भारत में और बोलते हो अंग्रेज़ी। क्या तुमने सुना नहीं कि जहाँ की बोले बानी, वहाँ का पीवे पानी।

जहाँ की मिट्टी वहीं ले जाती है—अ० मनुष्य की जहाँ मृत्यु होनी होती है वहीं चला जाता है। प्र० बंधु, सुभाष चन्द्र बोस विदेश जाकर परलोक सिधारे। सच है कि जहाँ की मिट्टी वहीं ले जाती है।

जहाँ के मुर्दे वहीं गढ़ते हैं—प्र० जो कार्य जहाँ होना हो, उसे वहीं करो। प्र० अरे, बंधु! तुम उस दरिद्री को यहाँ क्यों ले आये। जानते नहीं कि जहाँ के मुर्दे वहीं गढ़ते हैं।

जहाँ गढ़ा होगा वहीं पानी मरेगा—प्र० दोषी उभर कर नहीं बोलता है। प्र० बंधु, मोहन से जब कोई बात जगत की चोरी के विषय में की जाती है तो सिर नीचा कर लेता है। सच है कि जहाँ गढ़ा होगा वहीं पानी मरेगा।

जहां गाय तहँ बछड़ा—प्र० जहाँ माता वहीं बेटा। प्र० जहाँ चमेली काम करने जाती है वहाँ उसका बेटा सत्तू अवश्य होता है। सच है कि जहाँ गाय तहँ बछड़ा।

जहां गुड़ वहाँ मक्खी—अ० जहाँ जिसे कुछ लाभ होता है, वह वहाँ अवश्य जाता है। प्र० बंधु, जहाँ राय बहादुर दिखाई देते हैं, पंकज भी वहाँ अवश्य होता है। सच है कि जहाँ गुड़ वहाँ मक्खी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ गुल है, वहाँ खार है—अ० जहाँ गुण होते हैं, वहाँ दोष भी होते हैं। प्र० बंधु, वैसे तो दादा जी बड़े प्यार से बोलते हैं, पर आँखों में ही प्राण खींच लेते हैं। सच है कि जहाँ गुल है, वहाँ ख़ार है।

जहाँ चार बर्तन होते हैं खटकते ही हैं—अ० बड़े परिवार में आपस में कहन सुनन होती ही रहती हैं। प्र० अरे मोहन, कल घर में क्या झगड़ा था। इस पर उसने उत्तर दिया, कुछ नहीं, जहाँ चार बर्तन होते हैं खटकते ही हैं।

जहाँ जाय भूखा वहीं पड़े सूखा—अ० दुःखी को सभी जगह दुःख मिलता है। प्र० बेचारे रति मोहन का घर गिर जाने से उसने तम्बू ताना था, पर न जाने कल उसमें भी कैसे आग लग गई। सच है कि जहाँ जाय भूखा वहीं पड़े सूखा।

जहाँ जाय मूसर वहीं खेत ऊसर—अ० मूर्ख व्यक्ति बने बनाये कार्य को बिगाड़ देता है। प्र० बंधु, कल सत्य-वीर एक सगाई में गया और वहाँ जाकर कह दिया कि लड़के को पानी मत दिखा देना। लड़की वालों की ओर से आया हुआ नाई समझ गया कि लड़के को मिर्गी आती है। बस, सब काम बिगड़ गया। सच है कि जहाँ जाय मूसर वहीं खेत ऊसर।

जहाँ जिस के सींग समाएँ चला जाये—अ० जहाँ जिसका निर्वाह हो। प्र० यहाँ तो भयंकर अकाल पड़ा हुआ है, जहाँ जिस के सींग समाएँ चला जाये।

जहाँ डर वहीं सूर का घर—अ० जहाँ जाते हुए साधारण जन डरता है, शूरवीर वहीं जाता है। प्र० जिस चक्रव्यूह की बात सुन कर सारा पाण्डव समाज घबरा गया था, उसी को तोड़ने के लिए वीर अभिमन्यु गया। सच है कि जहाँ डर वहीं सूर का घर।

जहाँ ढाका वहाँ डाका—अ० ढाक के जंगल में डाकुओं का बसेरा होता है। प्र० बंधु, मार्ग में सम्भल कर जाना, ढाका पड़ता है। तब तो ठीक है बंधु, जहाँ ढाका वहाँ डाका।

जहाँ तुम्हारा पसीना, वहाँ हमारा खून—अ० जब कोई मित्र या आत्मीय अपने मित्र के दुःख हरण के लिए प्राण न्यौछावर करने के लिए भी तैयार हो जाये। प्र० बंधु, वीर अभिमन्यु ने धर्मराज युधिष्ठिर के थोड़े से शोक पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। उसने सत्य कहा था कि ताऊजी, जहाँ आपका पसीना, वहाँ हमारा खून।

जहाँ देखा तवा परात, वहाँ गाया सारी रात—अ० पैसे वालों की हर जगह सेवा होती है। प्र० बंधु, तुम तो रायबहादुर जगन्नाथ के यहाँ २४ घंटे पड़े रहते हो। सच है कि जहाँ देखा तवा परात, वहाँ गाया सारी रात।

जहाँ देखी रोटी, वहीं मुड़ाई चोटी—अ० जहाँ जिस तरह कार्य बनते देखा, वहाँ उसी तरह निकाल लिया। प्र० औरंगजेब के समय में लोभी हिन्दुओं ने अपना धर्म छोड़ कर इस्लाम धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्वीकार कर लिया। सच है कि जहाँ देखी रोटी, वहीं मुड़ाई चोटी।

जहां न जाये रवि वहां जाये कवि—अ० जहाँ सूरज की किरणें भी नहीं जा सकतीं, कवि की कल्पना वहाँ भी पहुँच जाती है। प्र० महाकवि कालिदास की प्रतिभा कितनी तीव्र थी। हाँ बंधु, जहाँ न जाये रवि वहाँ जाये कवि।

जहां न मां का जाया, सोई देश पराया—अ० जहाँ अपने भाई बंधु न हों वही परदेस है। प्र० बंधु, कोयम्बटूर में मेरा मन नहीं लगा, क्योंकि जहाँ न मां का जाया, सोई देश पराया।

जहां पड़े मूसल, वहीं क्षेम कुशल—अ० अकेला व्यक्ति हर जगह कुशल से रहता है अर्थात् किसी की सोच फिक्र नहीं रहती। प्र० पराग परिवार से दूर कैसी मौज मार रहा है। सच है कि जहाँ पड़े मूसल, वहीं क्षेम कुशल।

जहाँ पुष्प तहँ बास है, जहां बास तहँ भौंर—अ० जहाँ पैसा है वहीं आनन्द है, और जहाँ आनन्द है वहीं गुणी का वास है। प्र० बंधु, महाराज युधिष्ठिर से धन मिलते ही सब विद्वानों ने वहीं डेरा जमा लिया। सच है कि जहाँ पुष्प तहँ बास है, जहाँ वास तहँ भौंर।

जहाँ मुर्गा नहीं होता क्या वहाँ सवेरा नहीं होता—अ० यदि कोई व्यक्ति यह समझे कि उसके बिना कोई काम न होगा तो यह झूठ है। प्र० बंधु, यदि यह गर्व है कि आपके बिना समिति टूट जायेगी तो निरा भ्रम समझो। जानते नहीं कि जहाँ मुर्गा नहीं होता क्या वहाँ सवेरा नहीं होता।

जहाँ लोभ तहँ पाप—अ० लोभी अत्याचारी होती है। प्र० ज़मींदार के आदमी किसानों को सता सता कर पैसा इकट्ठा कर रहे हैं। सच है कि जहाँ लोभ तहँ पाप।

जहाँ वृक्ष नहीं वहाँ अरंड ही वृक्ष है—अ० जहाँ किसी वस्तु का अभाव होता है वहाँ थोड़ी भी बहुत होती है। प्र० बंधु, मारवाड़ में जल का अभाव है इसलिए वहाँ मतीरा ही सागर है। हाँ, बंधु, जहाँ वृक्ष नहीं वहाँ अरंड ही वृक्ष है।

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना, जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना—अ० जहाँ लोग मिलजुल कर रहते हैं वहाँ आनन्द से रहते हैं और जहाँ लड़ाई झगड़े रहते हैं वहाँ लोग दुःखी रहते हैं। प्र० बंधु, श्रेय के घर में प्रेम से सब मिल जुल कर अपना-अपना कार्य करते हैं सो सुख से दिन काट रहे हैं। सच है कि जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना, जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।

जहाँ सेर वहाँ सवा सेर—अ० जब थोड़ा पैसा खर्च करने से काम न चले तो अधिक पैसा खर्च करना पड़ जाता है। प्र० बंधु, किसी तरह भी यह ठेका हाथ से नहीं जाना चाहिए चाहे सेर का सवा सेर देना पड़े।

जाओ पूत दक्खन, वही कर्म के लक्खन—अ० किस्मत सौ कोस आगे रहती है। प्र० बंधु, मैं घर छोड़ परदेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी गया पर कुछ न हुआ। सच है कि जाओ पूत दक्खन, वही कर्म के लक्खन।

जाका कोड़ा वाका घोड़ा—अ० ताकतवर की हमेशा जीत होती है। प्र० धनुर्धारी अर्जुन ने समस्त भारत को जीत लिया, किसी ने उसे पराजित नहीं किया। सच है कि जाका कोड़ा वाका घोड़ा।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी—अ० जिसकी जैसी भावना होती है प्रभु उसके लिए वैसे ही हो जाते हैं। प्र० बन्धु, राम को जिस भाव से सीता स्वयंवर में देखा, उसे वैसा ही रूप दिखाई दिया। सच है कि जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।

जाके घर में नौ सौ गाय, सो क्यों छाछ पराई खाय—अ० जिसे प्रभु ने सर्वस्व दिया हो, वह पराश्रित क्यों रहे? प्र० बंधु, श्रेय कभी किसी के यहाँ कोई वस्तु लेने नहीं जाता है। सच है कि जाके घर मैं नौ सौ गाय, सो क्यों छाछ पराई खाय।

जाके पांय न फटी बिवाई, सो का जानै पीर पराई—अ० जिसे कभी लेश मात्र भी दुःख नहीं हुआ, वह दूसरे के दुःख को क्या जाने। प्र० बंधु, मैं कर्ण पीड़ा से परेशान हूँ और तुम्हें हँसी सूझ रही है। सच है कि जाके पाँय न फटी बिवाई, सो का जानै पीर पराई।

जाके संग दूषन दुरैं, करिये तेहि पहिचान—अ० हमेशा सत्संगति का आश्रय लेना ही ठीक रहता है। प्र० बंधु, कुसंग को छोड़ कर सज्जनों की सेवा करनी चाहिए। क्या तुम जानते नहीं कि जाके संग दूषन दुरैं, करिये तेहि पहिचान।

जाके हाथ लोई, वाकौ सब कोई—अ० जिसके यहाँ खाने-पीने की कमी नहीं रहती, उसके यहाँ सैकड़ों आ जाते हैं। प्र० रवीन्द्रशरण के यहाँ कोई न कोई आया ही रहता है। सच है कि जाके हाथ लोई, वाकौ सब कोई।

जाको जहँ कारज सधत, सोई ताहि सुहात। चोर न प्यारी चाँदनी, जैसे कारी रात—अ० जिसका जिससे काम निकले उसे वही अच्छा है। प्र० आजकल धनराज हमारा साथ छोड़, धन के लोभ में जुआरियों के साथ रहता है। सच है कि जाको जहँ कारज सधत, सोई ताहि सुहात। चोर न प्यारी चाँदनी, जैसे कारी रात।

जाकौ जा पर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू—अ० जब कोई किसी से शुद्ध भावना से मिलना चाहता है तो उसे मिल ही जाता है। प्र० बंधु, द्रौपदी अपने सच्चे प्रेम के कारण धनुर्धारी अर्जुन को ही मिली। सच है कि जाको जा पर सत्य सनेहू, सो तिहि मिलत न कछु सन्देहू।

जाकौ जैसा स्वभाव जाय नहिं जी सों। नीम न मीठौ होय सींच घी गुड़ सों—अ० कोई अपने स्वाभाविक गुण को नहीं छोड़ता। प्र० बंधु! मोहन को बारह वर्ष पंचकुला में रखा पर उसने अपनी मद्य की आदत नहीं त्यागी। सत्य है जाकौ जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभाव जाय नहिं जी सों। नीम न मीठो होय सींच घी गुड़ सों।

जाको डण्डा ताकी गाय। मत करौ कोई हाय हाय—अ० बलवान जो चाहे सो करे, किसी के कहने से कुछ नहीं होता। प्र० द्रोणाचार्य ने द्रुपद से आधा राज्य बलपूर्वक छीन लिया था। सच है कि जाको डण्डा ताकी गाय। मत करौ कोई हाय हाय।

जाको प्रभु दारुन दुख देईं, ताकी मति पहिले हरि लेईं—अ० जिसके बुरे दिन आते हैं उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। प्र० तुम्हें कुसंगति से अनेक बार रोका पर तुम चर्सियों का साथ ही नहीं छोड़ते। सच है कि जाकी प्रभु दारुन दुख देई, ताकी मति पहिले हरि लेईं।

जाको राखै सांइयाँ मारि न सकिहै कोई—अ० जिसका ईश्वर रक्षक है उसका कोई कुछ नहीं कर सकता है। प्र० बंधु, प्रह्लाद आग में भी नहीं जला। सच है कि जाको राखै सांइयाँ मारि न सकिहै कोई।

जाको लोह, ताको सोह—अ० ताकतवर का सब कुछ है। प्र० कौरवों ने पांडवों का सब कुछ छीन लिया। सच है कि जाको लोह, ताको सेह।

जागते की कटिया और सोते का कटड़ा—अ० जो अपना कार्य स्वयं करता है, वही लाभ उठाता है। प्र० बंधु, तुम घर पर शय्या तोड़ते रहे और नौकरों ने व्यापार साफ कर दिया। अब क्यों पछताते हो, जानते नहीं कि जागते कि कटिया और सोते का कटड़ा।

जा घर माँग न संचरै, सो घर भूत मसान—अ० जिस घर पर सन्तों को भोजन न मिले वह घर मरघट के समान होता है। प्र० बन्धु, हरीश के घर पर सन्तों को भोजन भी नहीं मिलता है सो भयानक-सा जान पड़ता है। सच है कि जा घर माँग न संचरै, सो घर भूत मसान।

जा घर लाग्यौ बानियो सो घर गयौ जानियो—अ० जिसके घर मोल की वस्तुएँ आती हों, वह घर कभी धनी नहीं होता है। प्र० बन्धु, तुम्हें इतना अच्छा वेतन मिलता है पर तुम हर वक्त तंग रहते हो। इस पर उसने उत्तर दिया कि मेरे घर में सब चीजें बाजार से आती हैं, महँगाई के कारण पूरा नहीं पड़ता। तो सच है, जा घर लाग्यौ बानियो सो घर गयौ जानियो।

जात पाँत पूछै नहिं कोय, हरि को भजै सो हरि कौ होय—अ० ईश्वर भक्तों में जाति पाँति का ज्ञान नहीं रहता। सब ईश्वर ही के जीव हैं। प्र० श्रीराम ने भीलनी के जूठे बेर खाये थे। सच है कि जात पाँत पूछै नहिं कोय, हरि को भजै सो हरि कौ होय।

जाति में कौन बड़ा कौन छोटा—अ० बिरादरी में रुपये के होने से कोई बड़ा या छोटा नहीं होता है, सब समान हैं। प्र० अहल्याबाई दीन की पुत्री होते हुए भी राजगृह में ब्याही गई। सच है कि जाति में कौन बड़ा कौन छोटा।

जाति स्वभाव न छूटते, टाँग उठाकर मूतते—अ० जाति व स्वभाव अमिट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं; क्योंकि कितना ही सिखाओ तो भी कुत्ता टाँग उठा कर मूतता है। प्र० बन्धु, पवन ने कौवे को खीर खिला-खिला कर पाला, पर गन्दगी खाना उसने नहीं छोड़ा। ठीक तो है कि जाति स्वभाव न छूटते, टाँग उठा कर मूतते।

जान के साथ जेवड़ा—अ० जब तक मनुष्य जीवित है तब तक सांसारिक कार्यों से उसे छुटकारा नहीं मिलता है। प्र० बन्धु, दादीजी नव्वे वर्ष की हो गईं पर अब भी कुछ न कुछ करती ही रहती हैं, सच है कि जान के साथ जेवड़ा।

जान जाय पर माल न जाय—अ० मर जाएँ पर कौड़ी खर्च न करें। प्र० यह तो माह का मास है और तुम अब भी सिसड़ते रहते हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि जान जाय पर माल न जाय।

जान मारना—अ० सख्त मेहनत करना। प्र० बन्धु, तीन घंटे से जान मार रहा हूँ, पर यह प्रश्न हल होने का ही नाम नहीं लेता है।

जान में जान आना—अ० खटका दूर होना। प्र० जब भीम ने अर्जुन को देख लिया तब उसकी जान में जान आई।

जान मारै बानियाँ, पहिचान मारै चोर—अ० व्यापारी जान पहचान के आदमी से अधिक मूल्य लेता है और भेदी चोर सब कुछ निकाल ले जाता है। प्र० बन्धु, यह धोती जोड़ा कितने में लाये? उसने उत्तर दिया कि पिच्यासी रुपये में। बन्धु, दाम अधिक दे आये। नहीं जी, मेरा तो वह मित्र है, अधिक नहीं ले सकता है। तब पूछने वाले ने कहा कि बंधु, जानते नहीं, जान मारै बानियाँ, पहिचान मारै चोर।

जान में जान डालना—अ० किसी के दिल में प्रवेश करना। प्र० तुम दादा जी की इतनी सेवा करते हो, पर वे तुम्हारी बुराई ही करते रहते हैं। इस पर गिरधारी लाल ने उत्तर दिया कि बन्धु, जहाँ तक हो सकता है करता हूँ, जान में जान तो डाली नहीं जा सकती है।

जानवरों में कौवा और मनुष्यों में नौआ—अ० कौवा और नाई बड़े चालाक होते हैं। प्र० बन्धु! बहिन के नाई ने कैसे घर भाग फोड़े हैं और किसी को पता तक न लगने दिया। सच है कि जानवरों में कौवा और मनुष्यों में नौआ बराबर है।

जान से हाथ धोना—अ० जीने की आशा त्यागना। प्र० अर्जुन के प्रण को सुन कर जयद्रथ को जान से हाथ धोने पड़े।

जान हथेली पर रखना—अ० प्राणों का भय त्यागना। प्र० भारतीय वीरों ने जान हथेली पर रख कर ही देश को स्वतंत्र कराया।

जान हाजिर होना—अ० किसी के बदले प्राण देने को तैयार होना। प्र० बंधु, मैंने तो तुम्हारी सदैव मदद की है पर तुम मेरे लिए क्या करोगे? इस पर उसने उत्तर दिया, अधिक तो क्या कहूँ, जान हाजिर है।

जाना है रहना नहीं, मोहि अंदेशा और।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठौर बनायी है नहीं, बैठोगे का ठौर—अ० मृत्यु निश्चित है किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि किस योनि में जाना हो, क्योंकि कर्मों का पता ही नहीं कि कैसे कर्म किये हैं। प्र० बंधु, यहाँ तो रहना नहीं, चलना है ही, फिर क्यों झगड़ों में फँसें। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, मैं भी जानता हूँ कि जाना है रहना नहीं, मोहि अंदेशा और। ठौर बनायी है नहीं, बैठोगे का ठौर।

जानि न जाय निशाचर माया—अ० छली व्यक्तियों का भेद नहीं जाना जाता। प्र० बंधु ! पंकज आजकल तुम्हारी बहुत लल्लो-चप्पो में लगा रहता है, न जाने क्या रहस्य है। इस पर उसने उत्तर दिया, हाँ बंधु ! ठीक है कि जानि न जाय निशाचर माया।

जानें ऊख मिठास कों जब मुख नीम चबाय—अ० सज्जनों से मिलने का सुख दुष्टों से मिलने पर जाना जाता है। प्र० बंधु, मेरे अधीनस्थ लोग जब तक मैं रहा शिकायत ही करते रहे, किन्तु जब मैं दूसरे विभाग में चला गया और मेरी जगह आये हुए अधिकारी का जब व्यवहार देखा तो अब सब रोते हैं। सच है कि जानें ऊख मिठास को जब मुख नीम चबाय।

जाने का आना है—अ० जब तुम किसी के यहाँ जाओगे तो वह तुम्हारे यहाँ आयेगा। प्र० भाई देखा, बिरादरी वाले कैसे निर्मोही हैं कि लड़के के विवाह में किसी ने भी आकर मुँह नहीं दिखाया। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, यह तो जाने का आना है।

जाप के विरते पै पाप—अ० धर्म की आड़ में अधर्म करना। प्र० वैसे तो भगवानदीन रात दिन हाथ में माला लिए बैठा रहता है पर वैसे घर पै जुए का अड्डा चलाता है। उसकी तो वही कहावत है कि जाप के विरते पै पाप।

जामिन मत हो बाप का, भला जो चाहो आपका—अ० जो अपना हित चाहते हो तो अपने पिता की भी जमानत मत दो। प्र० बंधु, मातादीन को मित्र समझ कर मैंने जमानत कर ली थी अब सब रुपया मुझे ही देना पड़ा। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, क्या तुमने सुना नहीं कि जामिन मत हो बाप का, भला जो चाहो आपका।

जामिन होना, धन का खोना—अ० जमानत देना पैसा खोना है। प्र० बंधु, सरोज की जमानत में रुपया मुझे ही देना पड़ा। सच है कि जामिन होना, धन का खोना है।

जाय जान, रहै आन—अ० चाहे प्राण चले जाएं पर कुल की प्रतिष्ठा नहीं घटनी चाहिए। प्र० अभिमन्यु ने निःशस्त्र होने पर भी शत्रुओं से प्राण दान नहीं माँगा। सच है कि जान जाय, रहै आन।

जाय लाख, रहै साख अ० चाहे कितना ही पैसा व्यय हो जाये पर प्रतिष्ठा भंग नहीं होनी चाहिए। प्र० बधु, तुमने इतनी-सी बात के लिए इतना पैसा बर्बाद कर दिया। इस पर उसने उत्तर दिया कि क्या तुमने सुना नहीं, जाय लाख, रहै साख।

जाल बिछाना—अ० षड्यंत्र रचना। प्र० बंधु, चौकन्ने रहने की जरूरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग तुम्हें फँसाने के लिए जाल बिछा रहे हैं।

ज़ालिम की उम्र कोता—अ० ज़ुल्मी थोड़े ही दिन जीवित रहता है। प्र० श्री कृष्ण ने अत्याचारी कंस को शीघ्र ही ठिकाने लगा दिया। सच है कि जालिम की उम्र कोता।

जासु दूत बल बरणिन जाई, ता पुर आये कौन भलाई—अ० प्रबल शत्रु से दूर ही से मेल कर लेना चाहिए। प्र० बंधु, पाकिस्तान को भारत से पहिले ही संधि कर लेनी चाहिए थी। क्या उसने सुना नहीं था कि जासु दूत बल बरणिन जाई, ता पर आये कौन भलाई।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, ते नृप अवसि नरक अधिकारी—अ० जिस राजा की प्रजा दुःख पाती है वह नरक में जाता है। प्र० कुंवर साहब, तुम अपनी प्रजा को बहुत सताने लगे हो। क्या जानते नहीं कि जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, ते नृप अवसि नरक अधिकारी।

जाको जिससे काम, वही वाको राम—अ० जिसका जिससे कार्य सिद्ध हो उसके लिए वही राम है। प्र० बंधु, मेरा सारा प्रयोजन राय साहब से सिद्ध होता है, मेरे लिए तो वही राम है। हाँ बंधु, ठीक है, जाको जिससे काम, वही वाको राम।

जाही तें कुछ पाइये, करिये ताकी आस—अ० जिसके पास कुछ देने को हो उसी से कुछ मिलने की आशा करनी चाहिए। प्र० तुम रात दिन मातादीन के पीछे लगे फिरते हो, उसका स्वयं का गुज़ारा बड़ी मुश्किल से चलता है, फिर तुम्हें कहाँ से दे सकता है? क्या तुमने सुना नहीं कि जाही तें कुछ पाइये, करिये ताकी आस।

जितना ऊपर उतना नीचे—अ० चालाक व्यक्तियों के लिए कहा जाता है। प्र० कहने को तो घनश्याम छोटा-सा दिखाई देता है पर वैसे बड़ा चालाक है। इसमें क्या सन्देह है, वह जितना ऊपर है उतना नीचे है।

जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा होगा—अ० जब कोई वस्तु तो बढ़िया लेना चाहे और दाम थोड़े देना चाहे तब ऐसा कहा जाता है। प्र० तुमने रुपये तो दिए पच्चीस और मंगाना चाहते हो शाल, यह कैसे हो सकता है? जानते नहीं कि जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा।

जितना छानो उतना ही किरकिरा—अ० जितनी किसी वस्तु की जाँच करोगे उतनी ही कमी निकलती जायेगी। प्र० बंधु, ज्यों ज्यों मैं इस सोने के बिस्कुट को तपाता जाता हूँ उतना ही मैल निकलता आता है। सच है कि जितना छानो उतना ही किरकिरा।

जितना छोटा, उतना ही खोटा—अ० मनुष्य जितना छोटा होता है उतना ही बुरा होता है। प्र० बंधु, देखते हो कल तनिक से गौरव ने कैसा कर्म कर डाला कि लोग उसको देख कर आश्चर्य करते हैं। सच है कि जितना छोटा उतना खोटा।

जितना देगा उतना लेगा—अ० दिया हुआ दान व्यर्थ नहीं जाता है। प्र० बंधु,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो परीक्षा मैंने पास की है, वही तुमने भी पास की किन्तु मुझे पाँच सौ रुपये और तुम्हें आठ सौ रुपये मिल रहे हैं। इस पर उसने उत्तर दिया कि जितना देगा उतना लेगा।

जितना रला है उतना चुन लो—अ० जितना पिछले जन्म में दान दिया है उतना ही इस जन्म में मिलेगा। प्र० बंधु, अधिक की इच्छा छोड़ो, जितना तुन्हारा रला है उतना चुन लो।

जितना स्याना, उतना ही दीवाना—अ० जो व्यक्ति जितना चतुर होता है वह उतना ही वहमी होता है। प्र० बंधु, मेरी समझ में आपका कोई कार्य ठीक नहीं हो सकता, क्योंकि आप इतनी बाल की खाल निकालते हो कि कोई बात निश्चय नहीं कर सकते। सच है कि जितना स्याना, उतना ही दीवाना।

जितनी आमद उतना खर्च—अ० जितनी आय है उसी के अनुसार व्यय है। प्र० बंधु, इसका क्या कारण है कि तुम सदैव स्वयं में प्रसन्न रहते हो। इस पर उसने उत्तर दिया कि अपनी आय से अधिक व्यय नहीं करता। क्या तुम नहीं जानते कि जितनी आमद उतना खर्च।

जितनी गंगा न्हाये, उतने ही फल पाये—अ० जब किसी के साथ भलाई की जाये और वह उसे न माने तो भलाई करने वाला ऐसा कहा करता है। प्र० पहले तो तुम मातादीन को हर प्रकार की मदद देते थे पर अब उसकी ओर थूकना भी पसन्द नहीं करते। बंधु, आप जानते तो सब हो, क्षमा करो, जितनी गंगा न्हाये, उतने ही फल पाये।

जितने काले उतने बाप के साले—अ० जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे की वस्तु को रूप, रंग और आकार देखकर अपनी बतावे। प्र० रमेश ने मेज पर रखे पैन को देख कर कहा कि यह तो मेरा पैन है। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया, वाह वाह, क्या कहने, जितने काले उतने बाप के साले।

जितने घने उतने भले—अ० जितना अधिक कुनबा हो उतना ही अच्छा। प्र० बड़े भाई साहब का इतना बड़ा कुनबा है कि किसी काम में भी उसे दूसरों की मदद की जरूरत नहीं होती है। ठीक है कि जितने घने उतने भले।

जितने मुंह उतनी बात—अ० जब किसी सिद्धान्त पर अनेक बातें कही जायें। प्र० बंधु, कोई तो आवागमन को ठीक बतलाता है और कोई ग़लत। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया, बंधु, जो है सो तो है बाकी जितने मुँह उतनी बात।

जिनके लाड़ घनेरे, उनके दुःख बहुतेरे—अ० जिन बच्चों को बचपन में अधिक लाड़ किया जाता है, उन्हें जीवन भर अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं। प्र० आज रमेश को क्यों इतना डाँट फटकार रहे थे? क्या कहूँ बंधु, एक अक्षर पढ़ कर नहीं देता। इस पर पूछने वाले ने कहा कि इसमें रमेश का क्या दोष है। अति लाड़ करके बिगाड़ा तो तुम्हीं ने, क्या जानते न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे कि जिनके लाड़ घनेरे, उनको दुःख बहुतेरे।

जिनको चाव घनेरा, उनको दुःख बहुतेरा—अ० जितनी ही इच्छा प्रबल होती जाती है उतना ही दुःख बढ़ता जाता है। प्र० बंधु, तुम दिन-दिन कमज़ोर होते जाते हो, अब इस इच्छा को रोको। क्या तुम जानते नहीं कि जिनको चाव घनेरा उनको दुःख बहुतेरा।

जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ—अ० जिसने परिश्रम किया उसी ने अपने सिद्धान्त को निबाहा। प्र० बंधु, महाकवि कालिदास पहले कितने मूर्ख थे पर बाद में कैसी विद्या प्राप्त की कि महाकवि की पदवी पाई। इस पर उसने कहा कि बंधु, क्या जानते नहीं कि जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।

जिन जाये, उनही लजाये—अ० जब कुपुत्र कुल को लज्जित करता है तब यह कहा जाता है। प्र० बंधु, भगीरथ ने अपने कुकर्मों द्वारा अपने कुटुम्बियों को कहीं बोलने के योग्य नहीं छोड़ा। सच है कि जिन जाये, उनही लजाये।

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सो बीत बहार—अ० जब कोई व्यक्ति धन, जवानी या रूपहीन हो जाता है तब कहा जाता है। प्र० बंधु! धर्मराज युधिष्ठिर जब राज्य छोड़कर वन में चले गए तो भी ब्राह्मण उनके पास ही वन में गए। तब उनकी अवस्था देख किसी ब्राह्मण ने कहा, बंधु, कहाँ चले आये, जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सो बीत बहार।

जिसे न दे मौला उसे दे आसफुद्दौला—अ० यह कहावत लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला के विषय में प्रसिद्ध है। प्र० जब किसी व्यक्ति को कहीं से कुछ नहीं मिलता था तो वह आसफुद्दौला के यहाँ से खाली नहीं लौटता था। सच है कि जिसे न दे मौला उसे दे आसफुद्दौला।

जिसका काम उसी को साजै और करै सो उल्लू बाजै—अ० जो काम जिसका है उसे वही कर सकता है। प्र० रामदीन अब तक लुहार का काम करता था अब सुनार का काम करने लगा। फल यह हुआ कि सबके आभूषण बिगाड़ दिये। सच है कि जिसका काम उसी को साजै और करै सो उल्लू बाजै।

जिसका खाइये उसका गाइये—अ० अपने अन्नदाता की प्रशंसा हर प्रकार से करनी चाहिए। प्र० चन्द्रबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान की ही सेवा में प्राण दिये और उनकी प्रशंसा में कितना बड़ा ग्रन्थ लिख दिया। सच है कि जिसका खाइये उसका गाइये।

जिसकी खोइ थलिया, सो डारै हाथ मलिया—अ० जब किसी की कोई वस्तु खो जाती है तो वह उसे वहाँ भी खोजता है जहाँ वह किसी तरह छिप ही नहीं सकती। प्र० श्याम का ऊँट खो गया, वह उसे चने के खेत में खोजता फिर रहा है। सच है कि जिसकी खोई थलिया, सो डारै हाथ मलिया।

जिसकी देग उसी की तेग—अ० जिसके सिपाहियों को भरपेट भोजन मिलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है उसी की सेना विजयी होती है। प्र० जब नवाब की सेना को पेट भर भोजन न मिला तो अंत को हार ही गई। सच है कि जिसकी देग़ उसी की तेग़।

जिसकी सरोही उसी के सिर—अ० जब किसी को उसी के सम्बन्धियों अथवा वस्तु के द्वारा क्षति पहुँचाई जाए। प्र० सात्यकि ने भूरिश्रवा का सिर उसकी तलवार से काट दिया। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि जिसकी सिरोही उसी का सिर।

जिस के कारण जोगन भई, वही पीउ परदेश दई—अ० जब जिस वस्तु के लिए सर्वस्व त्याग कर सख्त मेहनत की जाए और वह वस्तु उस स्थान पर न मिले तब यह कहावत कही जाती है। प्र० दमयन्ती राजा नल को खोजती हुई सुबाहु नगर में पहुँची तो उसने नल को वहाँ भी न पाया। तब उसने कहा कि जिसके कारन जोगन भई, वही पीउ परदेश दई।

जिसके चार भैया, मार धौल ले छीन रुपैया—अ० जिसके परिवार के सदस्यों में मेल होता है, वे सब कुछ कर सकते हैं। प्र० महाराणा प्रताप ने अपने भाई क्षत्रियों की सहायता से अकबर को मेवाड से निकाल दिया था। सच है कि जिसके चार भैया मार धौल ले छीन रुपैया।

जिसके पल्ले हिमयानी, वही नारी सियानी—अ० जिसके पास पैसा होता है-वही व्यक्ति चतुर गिना जाता है। प्र० बंधु ! सेठ जी जो बात कहते हैं लोग उसी की बड़ाई करने लगते हैं। सच है कि जिसके पल्ले हिमयानी, वही नारी सियानी।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा—अ० कंगाल को सभी बदमाश कहते हैं। प्र० बंधु, टोटा आ जाने पर सेठ जी में अब लोग लाखों बुराइयाँ निकालते हैं। सच है कि जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा।

जिसके पैसा नहीं पास, उसको मेला लगे उदास—अ० कंगाल व्यक्ति को सुन्दर वस्तु भी अच्छी नहीं लगती है। प्र० कल बम्बई दिन भर घूमता रहा, सब सूना ही दिखाई दिया; क्योंकि रोटी खाने के भी पैसे जेब में नहीं थे। सच है कि जिसके पैसा नहीं पास, उसको मेला लगे उदास।

जिसको पिया चाहे वही सुहागिन—अ० जिस पर स्वामी की कृपा हो वही प्रतिष्ठित है। प्र० बंधु, देखते हो कि श्रेय साहब की आँखों में चढ़ जाने के कारण कैसा दिन-दिन तरक्की करता जा रहा है। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, तुम जानते नहीं कि जिसको पिया चाहे वही सुहागिन।

जिस घर नारी फूड़ी, वह घर जानो कूड़ी—अ० जिस घर मे स्त्री फूहड़ होती है उस घर को ग़रीबी घेरे रहती है। प्र० बंधु, आज मैं रामदीन के घर चला गया पर जितनी देर वहाँ ठहरा बू के मारे सिर भिन्नाने लगा। सच है कि जिस घर नारी फूड़ी, वह घर जानो कूड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस घर नाहीं बड्डा, सो घर डोगम डग्गा—अ० जिस घर कोई कार्य-कर्त्ता नहीं होता है, उस घर का कुछ ठिकाना मत समझो। प्र० बंधु, दादा जी के कूच करने के बाद से हमारे घर में एक बात नहीं रही सो घर का हाल बिगड़ता जाता है। इस पर सुनने वाले ने कहा, हाँ भाई ठीक है, जिस घर नाहीं बड्डा, सो घर डोगम डग्गा।

जिस घर बड़े न बूझियाँ, दीपक जरै न सांझ। सो घर ऊजड़ जानिये, जा घर तिरिया बांझ—अ० ये तीन घर उजाड़ समझने चाहिएँ जिनमें से एक में तो बड़े-बूढ़ों की सम्मति से काम न हो, दूसरा वह घर जिसमें संध्या समय दीपक न जले और तीसरा वह घर जिसकी बहुओं के पुत्र पैदा न हों। प्र० महेन्द्र ने सुभाष से कहा, बंधु ! रामदीन, सतीश और महेश के घर तो गए। इस पर उसने पूछा, कैसे ! उत्तर मिला, रामदीन के घर पर तो बड़े बूढ़ों की राय से काम नहीं होता, सतीश के घर कभी रात को दीपक नहीं जलता और महेश के घर में पुत्र रत्न पैदा नहीं होता। सच है कि जिस घर बड़े न बूझियाँ दीपक जरै न सांझ। सो घर उजड़ जानिये जा घर तिरिया बांझ।

जिस घर होय कुचलिया नारी, साँझ भोर हो उसकी ख्वारी—अ० जिस घर में कुलटा स्त्री होती है उस घर में साँझ सवेरे क्लेश होता है। प्र० रामगोपाल के घर में हर समय झगड़ा होता रहता है। सच है कि जिस घर होय कुचलिया नारी, साँझ भोर हो उसकी ख्वारी।

जिस घर होवे पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीर का दलिया—अ० जिस घर के पुरुष कुकर्मी होते हैं वह कंगाली का घर हो जाता है। प्र० बन्धु, पहले तो तुम छत्तीस तरह के भोजन किया करते थे और अब चने गेहूँ की खाते हो। जानते हो यह दशा तुम्हारी कुसंगति ने की है। क्या तुम जानते नहीं कि जिस घर होवे पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीर का दलिया।

जिसने चीरा, वही नीरा—अ० जिस ईश्वर ने मुँह बनाया वही अन्न भी देता है। प्र० बन्धु, अजगर एक ही स्थान पर पड़ा रहता है। उसे भी भोजन मिल ही जाता है। सच है कि जिसने चीरा, वही नीरा।

जिसने दिया उसने पाया—अ० जिसने पहले जन्म में जितना दिया दूसरे जन्म में उतना ही पाता है। प्र० बन्धु, क्या कारण है कि इस दुनिया में बहुत से लोग कंगाल और बहुत से धनाढ्य हैं। इस पर उसने उत्तर दिया, जिसने दिया उसने पाया।

जिसने दिया कोड़ा, वही देगा घोड़ा—अ० जो लोग पुरुषार्थ छोड़ कर ईश्वर पर भरोसा करते हैं, वे ऐसा कहते हैं। प्र० बन्धु, तुम कुछ करते-धरते नहीं, ऐसे कैसे काम चलेगा। इस पर सुनने वाले ने कहा, बन्धु, जिसने देह दी है, वह पेट को भी देगा। जानते नहीं, जिसने दिया कोड़ा, वही देगा घोड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसने न देखा हो जम, वह देखे जमाई—अ० जम जिस तरह प्राण लेकर टलता है उसी तरह जमाई श्वसुर के घर से लिए बिना नहीं टलता है। प्र० गोपी का जमाई आठ दिन से घर पर डेरा डाले पड़ा रहा कि लेकर ही जाऊँगा, सो बहू को लेकर ही गया। सच है कि जिसने न देखा हो जम, वह देखे जमाई।

जिसने न देखा ठग, वह देखे कसाई—अ० ठग और क़साई दोनों निर्दयी होते हैं। प्र० ठगों ने शाम को बड़ी निर्दयता से मारा है। इस पर सुनने वाले ने कहा, क्या तुमने सुना नहीं कि जिसने न देखा ठग, वह देखे क़साई।

जिसने न देखी कन्या, तो देखे कन्या का भाई—अ० सगाई के पूर्व बहुधा लोग कन्या के भाई को देखकर उसकी रूपता व कुरूपता का विचार कर लेते थे। प्र० शाम ने कहा, बन्धु ! गंगाराम अपनी बिटिया का सम्बन्ध तुम्हारे भतीजे से करना चाहता है, पर लड़की की सुन्दरता का मुख्य सवाल है। इस पर उसने उत्तर दिया, यह तो कोई कठिन समस्या नहीं है क्योंकि जिसने न देखी कन्या तो देखे कन्या भाई।

जिसने लगाई वही बुझावे—अ० जिसने झगड़ा उठाया वही मिटाये। प्र० बन्धु ! तुम्हारे और मातादीन के बीच में जो झगड़ा है, उसे दूर क्यों नहीं कर लेते। इस पर उसने उत्तर दिया, मैं क्या करूँ, जिसने लगाई वही बुझावे।

जिसे कर, उसे डर—अ० जिस किसी को अपनी मुट्ठी में रखना हो उससे डरता रहे। प्र० बन्धु, आजकल सेठजी को तुमने अपने हाथ में ले रखा है पर फिर भी उनके सामने काँपते रहते हो। इस पर उसने उत्तर दिया कि जानते नहीं, जिसे कर, उसे डर।

जिसे खाने को मिले यों, वह कमाने जाये क्यों—अ० जिसे ठाली बैठे खाने को मिले वह काम क्यों करे। प्र० गंगाराम स्वयं तो कुछ करता-धरता नहीं, भाइयों की कमाई खाता है। सच है कि जिसे खाने को मिले यों, वह कमाने जाये क्यों।

जिसे ख़ुदा रखे, उसे कौन चखे—अ० जिसका रक्षक ईश्वर है उसे कौन क्षति पहुँचा सकता है। प्र० कल मैं कुछ रुपया लिए आ रहा था कि मार्ग में बदमाशों ने घेर लिया। इतने में अचानक चार-पांच आदमी आ निकले, जिन्हें देखकर बदमाश भाग गए। सच है कि जिसे ख़ुदा रखे, उसे कौन चखे।

जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं—अ० लज्जाहीन व्यक्ति बेईमान होता है। प्र० बन्धु, रामदीन पर छह मास का किराया चढ़ गया था। अब माँगा तो तीन महीने का ही बतलाता है, झूठ बोलते भी उसे शर्म नहीं आई। इस पर उत्तर मिला, तुम जानते नहीं, जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं।

जी कहना, जी कहलाना—अ० अगर तुम दूसरे से सम्मान से बोलोगे तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी आदर से बोलेगा। प्र० तुम जहाँ जाते हो वहीं चिलकारे खाते हो। क्या जानते नहीं कि जी कहना, जी कहलाना।

जी का बैरी जी—अ० एक जीव को दूसरा जीव खाता है। प्र० छिपकली मच्छर को कितनी जल्दी खा गई। सच है कि जी का बैरी जी।

जी के बदले जी—अ० जब कोई रोगग्रस्त हो जाता है तो बहुत से लोग बलिदान करते हैं। प्र० चेता चमार की लड़की सुखिया जब महामारी की शिकार हो गई तो उसने कहा, हे माता! तू मेरी बेटी का जी छोड़ मैं तुझे बदले में दूसरा जी दूँगा। ठीक है कि जी के बदले जी।

जी खट्टा होना—अ० वैमनस्य होना। प्र० मंगतराम की ओर से मेरा जी खट्टा हो चुका है, भविष्य में उसके लिए मुझसे कुछ नहीं हो सकेगा।

जीजा के माल पर साली मतवाली—अ० जिस माल पर अपना हक न हो, उस पर अभिमान करना। प्र० बन्धु, तुम सुसराल के माल पर क्या अलबेले बने फिरते हो, तुम्हारा साला है, उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। तुम्हारी तो वही कहावत है कि जीजा के माल पर साली मतवाली।

जी जाय घी न जाय—अ० मर जाये पर कौड़ी न जाये। प्र० इतनी सर्दी पड़ रही है, कोट क्यों नहीं सिलवा लेते। तुम्हारी तो वही कहावत है कि जी जाय घी न जाय।

जीता सो हारा, हारा सो मरा—अ० मुकदमे में जो जीतता है उसका इतना खर्च हो जाता है कि वह हारे के बराबर है और जो हार जाता है, उसका तो कुछ ठिकाना नहीं। प्र० बन्धु, इस नालिश में डिग्री तो हो ही गई मगर ख़र्च इतना पड़ गया कि मुश्किल से आधे ही घर में पड़ेंगे। सच है कि जीता सो हारा, हारा सो मरा।

जीती मक्खी नहीं निगली जाती—अ० जानबूझ कर कोई जहर नहीं खाता। प्र० मैं तुम्हारे यहाँ खाना नहीं खाऊँगा, तुमने कचौरियों में भंग बहुत डलवायी है। सच है कि जीती मक्खी नहीं निगली जाती।

जीते आशा मरे निराशा—अ० जब तक कोई व्यक्ति जीवित रहता है उससे अनेक आशाएँ रहती हैं पर मर जाने पर सब नष्ट हो जाती हैं। प्र० बंधु, जब तक पिताजी जीवित थे उनसे अनेक आशाएँ थीं, पर मरने पर कुछ भी नहीं। सच है कि जीते आशा मरे निराशा।

जीते जी का नाता—अ० जब तक इंसान जीवित रहता है तब तक ही संसारी लोगों का सम्बन्ध रहता है। मरने पर वे ही सम्बन्धी लोग या तो उस मृतक देह को जला देते हैं या गाड़ देते हैं। प्र० रामबाबू का इकलौता बेटा एक्सीडेंट में चल बसा तो वे जिसे देखे बिना भोजन नहीं किया करते थे, अपने हाथों चिता पर रख आये। सच है कि जीते जी का नाता।

जीते जी का मेला है—अ० जब तक इंसान जीवित रहता है तभी तक संसारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों से उसका मेल-जोल है, फिर तो अकेला ही आता है और अकेला ही जाता है, कोई साथी नहीं होता। प्र० इस जगत् की कैसी विचित्र रीति है, जब तक इंसान जीता है तब तक उससे सब मिले-जुले रहते हैं; किन्तु मर जाने पर श्मशान घाट तक पहुँचा कर फिर घर को चले आते हैं और फिर नीम का पत्ता चबाकर थूक भी देते हैं। सच है कि जीते जी का मेला है।

जीते जी खाँव-खाँव, मर गये तो हाय-हाय—अ० इंसान की दोनों अवस्थाओं में ख्वारी है। जब तक जीवित है तब तक तो परिवार वाले उसकी कमाई में खाऊँ-खाऊँ करते रहते हैं और जब मर गया तो फिर उसके पीछे हाय-हाय मचाते हैं। प्र० सत्येन्द्र ने गौरव से कहा, बंधु, जब तक कमाता हूँ तब तक सब परिवार के लोग चारों ओर से खाने के लिए तैयार हैं पर जब आँखें मुंद जायेंगी तब मेरे पीछे हाय-हाय मचायेंगे। सच है कि जीते जी खाँव-खाँव, मर गए तो हाय-हाय।

जीते तो हाथ काले और हारे तो मुंह काले अ० जुआरी अपना जीत का रुपया जल्दी ही खर्च कर देते हैं और यह सभी जानते हैं कि रुपये में से स्याही छूट कर हाथों को काला कर देती है और जब हार गये तो सोच से मुँह काला पड़ जाता है। प्र० बंधु, देखते हो, सोहन कैसा उछलता फिरता है। जुए में चार पैसे जीत गया लगता है। इस पर सुनने वाले ने कहा कि इन लोगों की तो वही कहावत है, जीते तो हाथ काले और हारे तो मुँह काले।

जीते बात न पुच्छिया, मुए धड़ाधड़ पिट्टिया—अ० जीते जी तो बुड्ढे-बुढ़ियों का निरादर करते हैं और मरने पर ऐसा प्रेम दर्शाते हैं कि छाती पीट-पीट कर रोते हैं। प्र० तुमने अपने पिताजी की जीते जी तो कभी सेवा नहीं की पर मरने पर रो रहे हो। सच है कि जीते बात न पुच्छिया, मुए धड़ाधड़ पिट्टिया।

जीते हैं न मरते हैं, सिसक-सिसक दम भरते हैं—अ० जब इंसान बहुत बूढ़ा हो जाता है और अपने नित्य-कर्म करने के योग्य नहीं रहता तब कहा जाता है। प्र० बंधु, अब तो कमजोरी ने आ घेरा है, कहो, कैसे दिन कटते हैं। इस पर उसने जवाब दिया कि जीते हैं न मरते हैं, सिसक-सिसक दम भरते हैं।

जीना थोड़ा आशा बहुत—अ० आयु तो थोड़ी है और इच्छाएं अनगिनत हैं। प्र० राम ने श्याम से कहा, बंधु, किस सोच में हो। इस पर श्याम ने कहा, आज प्रमोद की अकस्मात् मृत्यु देख-कर मैं सोच रहा हूँ कि उसकी जो अनेक अभिलाषाएँ इस जीवन में थीं, उनमें से एक भी पूर्ण नहीं हुई, बेचारा सभी साथ ले गया। सच है कि जीना थोड़ा आशा बहुत।

जीभ जली न स्वाद आया—अ० जब किसी व्यक्ति को बहुत थोड़ी वस्तु खाने के लिए दी जाए। प्र० सीताराम ने हलुवे की प्लेट सामने रखकर पूछा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कैसा बना। इस पर उत्तर मिला कि क्या कहूँ, जीभ जली न स्वाद आया, इसी में समझ लो।

जीभ बड़ी जुवाना नाम, तिस पर जीता सारा गाम—अ० जो स्त्री लड़ाई में सारे गाँव की स्त्रियों को परास्त कर देती है, उसके लिए यह कहावत कही जाती है। प्र० इमरती का तो कुछ ठीक-ठिकाना ही नहीं है। उसकी जबान कैंची की तरह चलती है, कोई उसकी बराबरी नहीं कर सकता। उसकी तो वही कहावत है कि जीभ बड़ी जुवाना नाम, तिस पर जीता सारा गाम।

जीव किसी का मत सता, जब लग पार बसाय—अ० जब तक बन पड़े किसी को दुःख मत दो। प्र० बंधु, तुम अपने खेतिहर मज़दूरों को बहुत दुःख देते हो। क्या तुमने सुना नहीं कि जीव किसी का मत सता, जब लग पार बसाय।

जीव भी प्यार, पीव भी प्यार सौगन्ध खाऊँ तो किस की—अ० जब व्यक्ति को ऐसी दो समस्याएँ घेर लें 'कि दोनों में से एक को भी न छोड़ सके तब कहा जाता है। प्र० बंधु, या तो नौकरी छोड़ो या पाँच सौ रुपये दो। इस पर उसने कहा कि बंधु, क्या उत्तर दूँ। मेरी तो वही कहावत हो गई कि जीव भी प्यार, पीव भी प्यार, सौगन्ध खाऊँ तो किस की।

जीव से जीविका प्यारी—अ० इंसान रोजगार के लिए प्राण तक दे देता है। प्र० बंधु, नौकरी ऐसी बुरी चीज है, रामावतार ने तीन सौ रुपये की नौकरी पर अपनी जान दे दी। सच है कि जीव से जीविका प्यारी।

जीवै मेरा भाई, गली गली भौजाई—अ० भय्या जीवित रहे तो विवाह बहुत। प्र० श्यामबहादुर की पत्नी को परलोक सिधारे पन्द्रह दिन भी नहीं हुए कि सगाई वाले आ बैठे। इस पर उसने उत्तर दिया कि ठीक है, क्या तुमने सुना नहीं, जीवै मेरा भाई गली गली भौजाई।

जुआ जुद्ध व्यौपार, फिर फिर करै तो पावै पार—अ० जुआ, लड़ाई और व्यापार बार-बार करने से ही इंसान लाभ में रहता है क्योंकि अगर एक बार हार जाता है तो दूसरी बार जीतता है। प्र० शाहबुद्दीन ग़ोरी पृथ्वीराज चौहान से सात बार हारा पर आठवीं बार जीत ही गया। सच है कि जुआ जुद्ध व्यौपार, फिर फिर करै तो पावै पार।

जुआ जुद्ध गति भूपति जानै, ग्वाल गोप गैयन पहिचानैं—अ० जुआ और युद्ध के विषय में तो राजा जानता है और ग्वालों को गायों की पहिचान होती है। प्र० प्रद्युम्न के विवाह में जब बलराम जी को रुक्मकेश ने अधर्म से पराजित किया तब उसके साथियों ने बलराम को चिढ़ाने के अभिप्राय से कहा, जुआ जुद्ध गति भूपति जानै, ग्वाल गोप गैयन पहिचानैं।

जुआरी आया जित्त, तो मंझे चार जुआरी इक्क—अ० जब जुआरी जीत कर घर आता है तो चार खाटों पर भी नहीं समाता है, इतना हर्षित होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बंधु, देखते हो, आज मातादीन जुए में जीत गया है सो फूला नहीं समाता। इस पर उसने उत्तर दिया, क्या तुम जानते नहीं कि जुआरी आया जित्त, तो मंझे चार जुआरी इक्क।

जुआरी आया हार, मंझा एक जुआरी चार—अ० जब जुआरी हार कर आता है तो इतना उदास हो जाता है कि एक खाट पर चार जुआरी पड़े रहते हैं। प्र० आज बदलू और उसके साथी सभी जुए में हार कर आए हैं सो घर में मुँह लपेटे पड़े हैं। सच है कि जुआरी आवै हार, मंझा एक चुआरी चार।

जुआरी को अपना ही दाव सूझता है—अ० स्वार्थी को अपना ही स्वार्थ सूझता है। प्र० बंधु, एक दिन हरीश दिन भर का भूखा था सो मैंने उससे पूछा, भाई कहो एक और एक। उसका उसने उत्तर दिया कि दो रोटियाँ। सच है कि जुआरी को अपना ही दाव सूझता है।

जुए में हार भी मीठी है—अ० जुआरी लोग हार कर भी फिर जुआ खेलते हैं। प्र० बंधु, तुम जुए में हार कर भी फिर खेलते हो, क्यों? इस पर उसने उत्तर दिया, इसलिए कि जुए में हार भी मीठी है।

जुए से बैल भी हारा है—अ० जुआरियों के लिए उपदेश है कि जुए में जीत कभी नहीं होती हार ही है, क्योंकि बैल के कंधे पर सदैव जुआ रहता है सो अंत को वह भी हार ही जाता है। प्र० बंधु, तुम नित्य जुआ खेलते हो पर जीतने पर भी हारे ही दिखाई पड़ते हो। क्या तुम जानते नहीं कि जुए से बैल भी हारा है।

जुड़ती नाहीं धुर की टूटी, धरी रहें सब दारू बूटी—अ० जब आयु पूरी हो जाती है तो कोई दवा काम नहीं आती है। प्र० वैद्य जी ने दादा जी का बहुतेरा इलाज किया पर अंत को प्राण प्रयाण कर ही गए। सच है कि जुड़ती नाहीं धुर की टूटी, धरी रहे सब दारू बूटी।

जुत जुत मरै बैलवा, ठाड़े खाँय तुरंग—अ० किसान मेहनत करके अन्न पैदा करते हैं और बड़े लोग घर बैठे खाते हैं। प्र० बंधु, किसान दिन-रात पसीना बहाकर अन्न उपजाते हैं और बड़े लोगों का पेट भरते हैं। सच है कि उन लोगों की वही कहावत है कि जुत जुत मरै बैलवा, ठाड़े खाँय तुरंग।

जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं, नाव कागज की कभी चलती नहीं—अ० निर्दयी का कुल इसी तरह खत्म हो जाता है। जिस तरह कागज की नाव पानी में जाते ही गल जाती है। प्र० बंधु, किसी को सताया मत करो, जानते हो निर्दयी लंकेश सपरिवार नष्ट हो गया। क्या तुमने सुना नहीं, जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं, नाव कागज की कभी चलती नहीं।

जुलाहा क्या जानै जौ काट—अ० जिस कार्य को इंसान ने जन्म से कभी नहीं किया, वह उस कार्य को ठीक नहीं कर सकता। प्र० आज चाचा जी ने हरिया लुहार को हल जोतने को दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। सो फाली से बैल को लंगड़ा करके खड़ा कर दिया। वाह-वाह, जुलाहा क्या जाने जौ काट।

जुल्हाहे ही ब्याह पढ़ा लेंगे तो मिश्रों को कौन पूछेगा—अ० जब ज्ञानवान का काम अज्ञान व्यक्ति कर लेंगे तो उन्हें कौन पूछेगा। प्र० बंधु, आज तो खैर हो गई। मैंने आज एक मजदूर को इंजन चलाने को कह दिया। उसने पेच उलटा घुमा दिया। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, जुल्हाहे ही ब्याह पढ़ा लेंगे तो मिश्रों को कौन पूछेगा।

जुल्हाहे का बेगारी पठान—अ० समय का फेर ऐसा ही होता है कि बन्दर हाथी पर चढ़ा दिया जाता है। प्र० बंधु, जगफूल चौधरी रामसिंह का ऋणी होने के कारण उसकी चिलमें भरता है। इस पर उसने उत्तर दिया, हाँ भाई, ठीक है, क्या तुमने सुना नहीं कि जुल्हाहे का बेगारी पठान।

जूं के डर से गुदड़ी नहीं छोड़ी जाती—अ० साधारण शत्रुओं के भय से घर या देश नहीं छोड़ा जाता है। प्र० बंधु, आजकल पड़ोस के धुने जुल्हाहे मेरे खिलाफ़ होते जा रहे हैं, क्या मकान छोड़ कर कोठी में चला जाऊँ। इस पर उसने उत्तर दिया, वाह-वाह, जूँओं के डर से गुदड़ी नहीं छोड़ी जाती है।

जूठा खाय मीठे के लालच—अ० स्वार्थ के लिए नीच कर्म भी किया जाता है। प्र० धर्म पालन करने के लिए राजा हरिश्चन्द्र को नीच का पानी भरना पड़ा। इस पर उसने उत्तर दिया कि जूठा खाय मीठे के लालच।

जूता पहरा नरी का, नहीं भरोसा करी का—अ० नरी की जूती और करी हुई स्त्री का भरोसा नहीं है, न जाने कब धोखा दे जाए। प्र० बंधु, आज घनश्याम का लाख का घर खाक हो गया। उसने जो औरत घर में रख ली थी, वह सब कुछ समेट कर ले गई। सच है कि जूता पहरा नरी का, नहीं भरोसा करी का।

जूता पहिरो साही का, बड़ा भरोसा ब्याही का—अ० उत्तम वस्तु और उत्तम मनुष्य का ही विश्वास करना ठीक है। प्र० श्याम अपनी पत्नी को बहुत कष्ट देता है फिर भी उसका ध्यान उसके चरणों में ही रहता है। किसी ने सच कहा है कि जूता पहिरो साही का, बड़ा भरोसा ब्याही का।

जूतियाँ चटकाते फिरना—अ० निरुद्यमी होकर मारे-मारे फिरना। प्र० सोहन अच्छी खासी नौकरी छोड़कर गलियों में जूतियाँ चटकाता फिर रहा है।

जेकर जोय तेकर पास, देखन हारा ताकै आस—अ० जिसका जो सम्बंधी होता है, वह उसी को सुख देता है, दूसरे लोग वृथा आशा करते हैं। प्र० बंधु, राधेश्याम को बेटों का सुख भोगते हुए देख क्यों झूठी आशा करते हो कि वे तुम्हें भी सुख प्रदान करेंगे। क्या तुमने सुना नहीं कि जेकर जोय तेकर पास, देखन हारा ताकै आस।

जेकर घुड़वाँ बैठिन, तेकर आड़दागिन—अ० जिस की रोटियाँ खाये उसी की जड़ काटे। प्र० महेश ने कैसा अनाचार किया है कि सोहन के ही टुकड़े तोड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसी के घर में सेंध लगवा दी। उसकी तो वही कहावत है कि जेकर घुड़वाँ बैठिन तेकर आड़दागिन।

जे कर मैया पुआ पकावै, तेकर धीया लिलके—**प्र०** जो औरत पूड़े पकाती हो उसी की बिटिया तरसे। **प्र०** सत्येन्द्र की साइकिलों की दूकान है और उसका बेटा महेन्द्र दूसरों की साईकिल माँगता फिरता है। यह तो वही बात हुई कि जे कर मैया पुआ पकावै, तेकर धीया लिलके।

जे ग़रीब पै हित करें, ते रहीम बड़ लोग—**प्र०** बड़े लोग वे ही हैं जो ग़रीब की मदद करते हैं। **प्र०** तुम सेठजी को बेशक बड़ा मानों पर मैं नहीं मान सकता क्योंकि मैंने उन्हें कभी भी ग़रीबों का हित करते नहीं देखा। वास्पव में बड़े कहलाने के योग्य वे ही व्यक्ति हैं जो दीनों पर दया करते हैं। कहा भी तो है, जे ग़रीब पै हित करें, ते रहीम बड़ लोग।

जेठ तपत हो वर्षा गहरी, हँसे बाँगरू रोवै नहरी—**प्र०** जेठ के महीने में कड़ी धूप पड़े तो वर्षा बहुत होती है। इसलिए वहाँ के लोग जहाँ कुओं से सिचाई करते हैं आनन्द से रहते हैं और नहर के किनारे रहने वाले दुःखी हो जाते हैं। **प्र०** बंधु, इस बार तो कोठे में मुँह देकर रोओगे। इस पर उसने कहा, क्यों? इसलिए कि जेठ तप रहा है, वर्षा खूब होगी और आप नहर के किनारे के रहने वाले हैं। जैसा किसी ने कहा, जेठ तपत हो वर्षा गहरी, हँसे बाँगरू रोवै नहरी।

जे डर भिन्न भेली, सेह परलब खरा—**प्र०** जिस भय के मारे अलग हुआ, वही हिस्से में आया। **प्र०** अरे, अब क्यों उदास हो, तुम्हारा हिस्सा तो तुम्हें मिल गया। इस पर उसने जवाब दिया कि घर के डर के मारे मैं अलग हुआ था वही मेरे हिस्से में आ गया। सच है कि जे डर भिन्न भेली, सेह परलब खरा।

जे न मित्र दुख होहि दुखारी, तिन्हहि बिलोकत पातक भारी—**प्र०** जो व्यक्ति अपने मित्र को दुःखी देखकर दुःख नहीं मानता, ऐसे मित्र के देखने से भी महान् पाप होता है। **प्र०** बंधु! आजकल मातादीन का हाथ तंग है, उसकी मदद करना ठीक है; अन्यथा हमारी मैत्री पापियों की मैत्री है। जैसा कि तुलसीदास ने कहा है कि जे न मित्र दुख होहि दुखारी, तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।

जे पाण्डे के पत्रा में, ते पंडायन के अंचरा में—**प्र०** जब आदमी से औरत होशियार होती है, तब ऐसा कहा जाता है। **प्र०** आज मैं पंडित जी के घर पर एकादशी के लिए पूछने गया था सो पंडिताइन ने अपनी ओढ़नी का पल्ला हाथ पर रखकर कहा कि परसों की है। तभी पंडित जी बाहर से आ गए, उनसे पूछा तो उन्होंने भी वही बताया। किसी ने सच कहा है कि जे पाण्डे के पत्रा में, ते पंडायन के अंचरा में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो पूत परदेशी भैले, देव पितर सब से गैले—अ० जो व्यक्ति विदेश चला जाता है, वह वहाँ जाकर देवता और पित्रों का श्राद्ध व तर्पण कुछ नहीं करता है। प्र० सुशील आजकल जापान में है। न जाने अपने पिता का श्राद्ध करता होगा या नहीं। इस पर उसने उत्तर दिया, बस बंधु, जे पूत परदेशी भैले, देव पितर सब से गैले।

जैसा अन्न तैसी बुद्धि—अ० जैसा अन्न खाओगे, वैसी ही बुद्धि हो जाएगी। प्र० अरे, बिल्ला की बुद्धि तो बड़ी ठस्स है। इस पर उसने उत्तर दिया कि वह ठगी की कमाई खाता है। क्या तुमने सुना नहीं कि जैसा अन्न तैसी बुद्धि।

जैसा ऊंट लम्बा वैसा गधा खवास—अ० जब दो व्यक्ति एक से मिल जाएँ। प्र० बंधु ! आशीष तो लड़ाका था ही पर गौरव भी उस से कम नहीं है। हाँ भाई ठीक है, जैसा ऊंट लम्बा वैसा गधा खवास।

जैसा कन भर, वैसा मन भर—अ० पाप कर्म जैसा ही थोड़ा वैसा ही बहुत। प्र० बंधु, मुरली ने सत्येन्द्र की लुटिया ही चुरायी थी, उसी पर उसे तीन-मास की क़ैद हो गई। सच है कि जैसा कन भर, वैसा मन भर।

जैसा करोगे वैसा भरोगे—अ० कर्म के अनुसार ही फल भोगना पड़ता है। प्र० चोरी के अपराध में अरविन्द को एक साल की क़ैद हो गई। किसी ने सच ही कहा है कि जैसा करोगे वैसा भरोगे।

जैसा काछ काछै वैसा नाच नाचै—अ० मनुष्य को चाहिए कि वह जैसा भेस बनाये वैसा ही काम करे। प्र० अभिमन्यु वैसे तो योद्धाओं का भेस बनाये फिरता है पर कल एक गीदड़ को देखकर ही भाग गया। क्या वह जानता नहीं कि जैसा काछ काछै वैसा नाच नाचै।

जैसा कारन, वैसा कारज—अ० जैसा कर्म होगा, उसका वैसा ही फल होगा। प्र० अरे बंधु, पेड़ तो बोया नीम का और आम की आस लगाये बैठे हो। क्या तुम यह नहीं जानते कि जैसा कारन, वैसा कारज।

जैसा किया वैसा पाया—अ० जैसा कर्म किया वैसा ही फल भोगा। प्र० रमेश ने पहले तो जुआ खेल-खेलकर सब पैसा बर्बाद कर दिया, अब पछताता है। सच है कि जैसा किया वैसा पाया।

जैसा जामन वैसा दही—अ० जैसा बीज होता है वैसा ही उसका पेड़ उगता है। प्र० हरीश तो बड़ा ही उत्पाती है। इस पर सुनने वाले ने कहा कि इसमें आश्चर्य ही क्या है। उसका बाप महेश ही कहाँ का भला है। जानते नहीं कि जैसा जामन वैसा दही।

जैसा दूध वैसी बुद्धि—अ० जैसी औरत का दूध बालक को पिलाया जाता है वैसी ही उसकी बुद्धि हो जाती है। प्र० रामसिंह क्षत्रिय कुल में जन्मा है पर गड़रनी का दूध पीने के कारण भेड़ बकरियों ही के खेल उसे पसन्द हैं। सच है कि जैसा दूध वैसी बुद्धि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा बोवेगा वैसा काटेगा—प्र० जैसा करेगा वैसा भरेगा। प्र० रंगा बिल्ला को संजय-गीता के कत्ल के केस में फाँसी का दण्ड मिला। सच है कि जैसी बोवेगा वैसा काटेगा।

जैसा मान, वैसा दान—अ० जैसी जनता में जिसकी प्रतिष्ठा होती है वैसा ही उसको मिलता है। प्र० मालवीय जी के जहाँ दो आँसू टपकते हैं, वहीं लक्ष्मी की वर्षा होने लगती है। इस पर उसने कहा कि बंधु, क्या तुम जानते नहीं कि जैसा मान, वैसा दान।

जैसा मुंह वैसा तमाचा—अ० जैसा व्यक्ति वैसा ही व्यवहार। प्र० जिस समय अटल जी अहमदाबाद में पधारे तो उनके लिए मखमल के पाँड़े डाले गए। इस पर सुनने वाले ने कहा, बंधु, क्या तुम जानते नहीं कि जैसा मुंह, वैसा तमाचा।'

जैसा राजा वैसी प्रजा—अ० जैसा स्वामी होता है उसके सेवक भी वैसे ही होते हैं। प्र० बंधु ! रायबहादुर के मैनेजर ने इस वर्ष में उन्हें लाखों का फायदा करा दिया। सच है कि जैसा राजा वैसी प्रजा।

जैसा लीकड़ा भर, वैसा ठीकरा भर—अ० पाप थोड़ा हो या ज़्यादा, पाप तो पाप ही है। प्र० रमेश को सौ रुपये का ग़बन करने पर तीस मास का कारागार का दण्ड मिला। ठीक ही तो है, जैसा लीकड़ा भर, वैसा ठीकरा भर।

जैसा सांचा, वैसा ढाँचा—अ० साँचे के अनुसार ही वस्तु का आकार बनता है। प्र० तुम्हारी भांजी की शक्ल तुम्हारी बहन से बिल्कुल मिलती है। सच है कि जैसा साँचा, वैसा ढाँचा।

जैसा साजन पाय, वैसी सेज बिछाय—अ० जैसा मेहमान आये उसकी वैसी ही सेवा करनी चाहिए। प्र० बंधु, कल बम्बई से अंकल आए थे सो दादी जी ने उनके लिए ऐसे व्यंजन बनाये कि आज तक उन्होंने कभी नहीं बनाये थे। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु, तुम नहीं जानते, जैसा साजन पाय, वैसी सेज बिछाय।

जैसी ओढ़ी कामरी वैसा ओढ़ा खेस—अ० साधुओं के लिए जैसा दुशाला होता है वैसा ही कम्बल। प्र० बंधु, आज एक साधु द्वार पर आया, वह मोटा टाट ओढ़े हुए था। मेरे मुख से निकल गया कि महाराज यह तो बहुत मोटा है। यह सुनकर साधु ने कहा कि बच्चा, हमारा क्या है, जैसी ओढ़ी कामरी वैसा ओढ़ा खेस।

जैसी जाकी भावना, वैसी वाकी सिद्धि—अ० जिसके जैसे विचार होते हैं उसके कार्य भी वैसे ही सिद्ध होते हैं। प्र० दुर्योधन की कपट भावना थी इस कारण ग्यारह अक्षौहिणी सेना होने पर भी पाण्डवों की सात अक्षौहिणी सेना से हार गया। सच है कि जैसी जाकी भावना, वैसी वाकी सिद्धि।

जैसी तेरी कोंमरी (उबले हुए चावल) तैसे मेरे गीत—अ० जब किसी व्यक्ति के बुरे व्यवहार के बदले वैसा ही व्यवहार किया जाए तो उलाहना दिया जाता है। प्र० तुम्हें दो रुपये मिलेंगे, मेरे घर की अच्छी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़ाई कर दो। उस व्यक्ति ने इधर उधर हाथ मार कर कहा कि सफ़ाई हो गई, दो रुपये दीजिए। मालिक को सफ़ाई पसन्द नहीं आई, उसने उलाहना दिया। नौकर ने तत्काल जवाब दिया, इसमें उलाहना की क्या बात है, जैसी तेरी कोंमरी, तैसे मेरे गीत।

जैसी तेरी तिल चाँवरी, तैसे मेरे गीत—अ० जैसी मज़दूरी वैसा काम। प्र० श्यामसुन्दर ने पिसनहारी से पाँच सेर गेहूँ पीसने के बदले दस पैसे देने को कहा। उसने भी दाना-सा दल कर हवाले किया। जब उसे उलाहना दिया तो उसने कहा कि जैसी तेरी तिल चाँवरी, तैसे मेरे गीत।

जैसी देखे गाँव की रीति, वैसी उठावै अपनी भीति—अ० जहाँ रहा जाए वहाँ के अनुसार ही अपना रंग ढंग बना लिया जाए। प्र० बंधु, अब तुम अहीरों के गाँव में रह रहे हो, तुम्हें उन्हीं के अनुसार अपना रंग ढंग बनाना चाहिए। क्योंकि जैसी देखे गाँव की रीति, वैसी उठावै अपनी भीति।

जैसी देवी शीतला, तैसे वाहन खर—अ० जब दो व्यक्ति एक से मिल जाएं। प्र० पंडित जी के सुपुत्र की आँख में फूली है और उसकी शादी के समय घोड़ी भी कानी मिली। इस पर देखने वालों ने कहा कि जैसी देवी शीतला तैसे वाहन खर।

जैसी नीयत वैसी बरकत—अ० जैसी व्यक्ति की निष्ठा होती है उसका घर वैसा ही हो जाता है। प्र० पहले रायबहादुर के यहाँ दान-पुण्य होता रहता था तो चारों ओर से लक्ष्मी बरसती रहती थी पर जब से उन्होंने इस ओर से हाथ सिकोड़ा है तब से आमद भी कम हो गई है। सच है कि जैसी नीयत वैसी बरकत।

जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजे—अ० जैसा मौका देखो वैसा ही करो। प्र० धनुर्धारी अर्जुन को एक वर्ष हिजड़ा बन कर काटना पड़ा। सच है कि जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजे।

जैसी भक्ति वैसी गति—अ० जैसी कोई प्रभु की भक्ति करता है, उसे वैसी ही गति मिलती है। प्र० महर्षि नारद पूर्व जन्म में दासी पुत्र थे, पर इस जन्म में ब्रह्मा के पुत्र हुए। इस पर सुनने वाले ने कहा कि तुम जानते नहीं, जैसी भक्ति वैसी गति।

जैसी माई, वैसी जाई—अ० जैसी माँ वैसी बेटी। प्र० भावना तो जैसी थी वैसी थी ही पर उसकी पुत्री सुनयना उससे भी दो क़दम आगे निकली। सच है कि जैसी माई, वैसी जाई।

जैसी रूह वैसे फरिश्ते—अ० जैसा व्यक्ति होता है, उसे वैसे ही सहायक भी मिल जाते हैं। प्र० प्रधान जी का लड़का जुआरी तो था ही अब चोर भी उससे आ मिले। बस, अब क्या है दिन-रात दुःख भोगता है। इस पर उसने उत्तर दिया कि जैसी रूह वैसे फरिश्ते।

जैसे उदई तैसे भान, उनके चुटिया न उनके कान—अ० जब दोनों ही निकम्मे व्यक्ति मिल जाएं। प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्योधन जैसा कपटी था वैसा ही अभिमानी कर्ण आ मिला। सच ही तो है कि जैसे उदई तैसे भान, उनके चुटिया न उनके कान।

जैसे कंथा घर रहे, तैसे रहे विदेश—अ० निकम्मा व्यक्ति चाहे घर हो या बाहर उससे कुछ भी लाभ-हानि नहीं होती। प्र० रमेश निकम्मा है, इसलिए घर वालों को उसके आने जाने की चिन्ता नहीं रहती है। ठीक ही तो है कि जैसे कंथा घर रहे, तैसे रहे विदेश।

जैसे काग जहाज के, सूझत और न ठौर—अ० जब किसी का कोई दूसरा ठिकाना न हो, तब ऐसा कहा जाता है। प्र० दिनेश अपने मामा के घर चला आया पर वहाँ वाले भी चाहने लगे कि यह यहाँ से चला जाये। उसकी तो वही कहावत हुई कि जैसे काग जहाज के, सूझत और न ठौर।

जैसे की सेवा करै, तैसी आशा पूर—अ० जितने बड़े की सेवा करोगे उतना ही बड़ा उसका बदला मिलेगा। प्र० अर्जुन ने कृष्ण की सेवा की तो वह जगत विजयी कहलाया। सच है, जैसे की सेवा करै, तैसी आशा पूर।

जैसे को तैसा मिले, सुनिये राजा भील। लोहा चूहा खा गया, लड़का ले गई चील—अ० जो जैसा दूसरों के साथ व्यवहार करता है, दूसरा भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करता है। प्र० बंधु, जब ललित अनिल की ओर अकड़ कर आया तो उसने भी सामने से डंडा उठाया। सच है कि जैसे को तैसा मिले, सुनिये राजा भील। लोहा चूहा खा गया, लड़का ले गई चील।

जैसे को हरि तैसा—अ० जो जैसा कर्म करता है, ईश्वर उसे वैसा ही फल देता है। प्र० बन्धु, रवि ने जैसे कर्म किए वैसे ही फल पाये। सच है कि जैसे को हरि तैसा।

जैसे पीड़ित कीजिये, ऊख तऊ रस देत—अ० सज्जन अपने कष्टदाता को भी सुख पहुँचाते हैं। प्र० रहीम ने जामुन के पेड़ पर कंकड़ फैंकी उस पर से जामुन आ गिरीं। सच है कि जैसे पीड़ित कीजिए, ऊख तऊ रस देत।

जैसे बक सोहत नहीं हंस मंडली माहिं—अ० मूर्ख लोग विद्वानों की सभा में शोभा नहीं पाते हैं। प्र० बंधु, मनीषियों की गोष्ठी में बैठा हुआ सोहन पुस्तक विक्रेता ऐसा जान पड़ता था, जैसे बक सोहत नहीं हंस मंडली माहिं।

जैसे मानें दूध सब, सुरा कलाली हाथ—अ० जैसे के साथी होगे वैसे ही समझे जाओगे। प्र० जिस दिन से ललित सुरेन्द्र जुआरी के साथ उठने बैठने लगा है, उसे भी लोग जुआरी समझने लगे हैं। सच है कि जैसे मानें दूध सब, सुरा कलाली हाथ।

जैसे मार कंडे, तैसे उपले मार—अ० जब जैसे को तैसा मिल जाये। प्र० आज विचित्र तमाशा देखने को मिला कि सहदेव तो हाथ में लाठी उठाये महेन्द्र से लड़ने के लिए जाना ही था पर आज महेन्द्र ने भी उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर से ही देख कर ईंट उठा ली। सच है कि जैसे मार कंडे, तैसे उपले मार।

जो अपने काम न आए, सो चूल्हे में जाय—अ० जिससे अपना काम न निकले वह मरे या जिये हमें क्या। प्र० तुमने कुछ सुना, कल रात राधाकिशन के घर चोरी हो गई। इस पर उत्तर मिला, हो गई होगी, हमें क्या, जो अपने काम न आए, सो चूल्हे में जाय।

जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय—अ० जो दूसरों को कष्ट देता है उसके मन को भी चैन नहीं मिलता है। प्र० कंस ने अपनी बहन देवकी को कष्ट दिये तो उसे भी सुख की नींद न आई। सच है कि जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय।

जो गरजते हैं, सो बरसते नहीं—अ० जो शेखी बघारते हैं, वे कुछ भी नहीं कर सकते हैं। प्र० बंधु, वैसे तो तुम बड़े उछलते फिरते थे पर कल रीछ को देखते ही भाग निकले। सच है कि जो गरजते हैं सो बरसते नहीं।

जोगी जोगी लड़ें, खप्पर फूटें—अ० हाथियों की लड़ाई में झुंडों की हानि। प्र० बंधु, दोनों ठाकुरों की लड़ाई में रैयत की तबाही आई। सच है कि जोगी जोगी लड़ें, खप्पर फूटें।

जोगी जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ—अ० जो व्यक्ति गुणवान नहीं होता तो उसके भेस बदलने से कुछ नहीं होता है। प्र० बंधु, पुजारी जी वैसे तो लम्बा छापा तिलक लगाते हैं पर वैसे निरे भट्टाचार्य हैं। उनकी तो वही कहावत है कि जोगी जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ।

जोगी था सो उठ गया, आसन पड़ी भभूत—अ० जीवात्मा (जोगी) तो चला गया और धूल की पोटली देह (घर) में पड़ी रह गई। प्र० बन्धु, जीव के बिना यह देह निरी मिट्टी है। सच है कि जोगी था सो उठ गया, आसन पड़ी भभूत।

जोगी बढ़ै तो तूंबा बोवै—अ० जिस चीज़ की आवश्यकता जिसे होती है वह उसी को पैदा करता है। प्र० बंधु, तुम्हें ईश्वर ने सब कुछ दिया है पर तुमने प्रयास किया तो किसका; हैड़, बहेड़ा और आँवला बोने का। आखिर वैद्य हो ना। तुम्हारी वही कहावत है कि जोगी बढ़ै तो तूंबा बोवै।

जोगी मारै छार हाथ—अ० दीन को मारने से कुछ नहीं मिलता। प्र० बन्धु, कल श्यामाचरण के घर में चोर आ गया। और तो कुछ हाथ लगा नहीं, एक पीतल की लुटिया उठा ले गया। सच है कि जोगी मारै छार हाथ।

जो चढ़ेगा सो गिरेगा—अ० जो बढ़ेगा सो घटेगा। प्र० बन्धु, चन्द्रमा जैसे-जैसे दिन दिन बढ़ता है, वैसे ही दिन दिन घटता है। सच है कि जो चढ़ेगा सो गिरेगा।

जो ठग ठगिन रूप धरि आवै, ठगि लै जाय भलौ न कहावै—अ० जब कोई व्यक्ति झूठा भेस बनाकर ठग ले जाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो संसार में उसकी प्रशंसा नहीं होती है। प्र० जब कृष्ण, भीम और अर्जुन भेस बदल कर जरासंध वध के लिए गए तो उसने कहा कि आप ब्राह्मण नहीं हैं। जो ठग ठगिन रूप धरि आवैं, ठगि लै जाय भलौ न कहावैं।

जो तैरेगा सो डूबेगा—अ० जो काम करेगा उसे हानि भी उठानी पड़ेगी। प्र० महेश ने इस वर्ष व्यापार में काफी हानि उठायी हैं। सच है कि जो तैरेगा सो डूबेगा।

जो दादा की पोथी में सो दादा की जीभ पै—अ० जब स्वार्थ सिद्धि करनी हो तो चाहे जैसे कहो वही बात मुख से निकलेगी। प्र० मदन पंडित जी के पास एकादशी के उद्यापन के लिए गया। उन्होंने उंगलियों पर मीन मेख करके बता दिया। तब मदन ने कहा कि दादा पत्रा देख के बताओ। इस पर उत्तर मिला कि बेटा जो दादा की पोथी में सो दादा की जीभ पै।

जो धन दीखे जात तो आधा दीजे बाँट—अ० जो कोई वस्तु सब ही हाथ से निकलती हो तो फिर आधी बाँट देनी चाहिए। प्र० बन्धु, मैंने गंगा के ऊपर नालिश की थी पर मुझे हार के चिह्न दिखाई दिये, सो मैंने उससे आधे में फैसला कर लिया। तुमने यह बहुत अच्छा किया, कहावत भी तो है कि जो धन दीखे जात तो आधा दीजे बाँट।

जो धरती पै आया, उसे धरती ने खाया—अ० जो भूभंडल पर पैदा होता है वह मरने पर या तो गाड़ दिया जाता है या फूंक दिया जाता है। दोनों ही तरह से वह धरती में मिल जाता है। प्र० बन्धु, यह देह मरने पर मिट्टी में ही मिल जाती है। ठीक ही तो है, क्या तुम जानते नहीं, जो धरती पै आया, उसे धरती ने खाया।

जो धावै सो पावै, जो सोवै सो खावै—अ० जो मेहनत करता है सो पैसा कमाता है और जो आलस्य करता है वह घर का भी खा जाता है। प्र० किशना रात-दिन खेत में लगा रहता है सो लक्ष्मी का कृपा पात्र बनता जा रहा है और तुम निकम्मों की तरह घर पर पड़े रहते हो सो घर का भी खा गए। किसी ने सच कहा है कि जो धावै सो पावै, जो सोवै सो खावै।

जो नर तरुवर काटही, शीतल छाया देत—अ० यदि तुम अपनी गिनती सज्जनों में चाहते हो तो बुराई करने वाले के साथ भलाई करो। प्र० अक्रूर ने कहा, हे पार्थ, बुराई के बदले में भलाई कर। देख भृगु ने विष्णु के लात मारी, पर उन्होंने भृगुजी के चरण को हाथों से सहलाया। किसी ने सच कहा है कि जो नर तरुवर काटही, शीतल छाया देत।

जो नहिं मानै बड़े की सीख, सो माँगे खपरा लै भीख—अ० जो व्यक्ति बड़ों की शिक्षानुसार कार्य नहीं करता है, वह कंगाल होकर मारा-मारा फिरता है। प्र० अब जब दिनेश ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता जी की आज्ञा का पालन न करके सब धन लुटा दिया तो उसे रोटियों का भी ठिकाना नहीं रहा। सच है कि जो नहिं मानै बड़े की सीख, सो माँगे खपरा लै भीख।

जो नहीं देखा वही अच्छा—अ० दूर के ही ढोल सुहावने होते हैं। प्र० पहले तो जगदीश बड़ा प्रेम प्रगट करता था पर काम पड़ने पर आँखें चुरा गया। सच है कि जो नहीं देखा वहीं अच्छा।

जो परनाला, सोई मोरी—अ० जब दोनों ही एक से हों। प्र० वन्धु, कल सोहन ने मुझे गालियाँ दीं। मैं उसके पिता के पास शिकायत करने गया तो उन्होंने भी मुझे ही बुरा भला कहा। सच है कि जो परनाला, सोई मोरी।

जो पहले मारै सो मीरी—अ० जो अपना कार्य पहले सिद्ध कर लेता है वही अच्छा रहता है। फेर तो फेर ही है। प्र० बंधु, मैं तो पहले ही बाग में से आम तोड़ कर भाग आया, बाकी लड़के इधर-उधर टापते ही रहे। सच है कि पहले मारै सो मीरी।

जो पैसे की हँडिया लेता है, वह ठोक बजा कर लेता है—अ० जो चीज़ खरीदो वह भली भाँति देख भाल कर। प्र० मोहन श्याम की दूकान पर दो पीस पेंट के लेने के लिए गया। जब वह ध्यान से कपड़ा देखने लगा तो श्याम ने कहा कि आपने तो घंटों लगा दिये। इस पर मोहन ने कहा कि जो पैसे की हँडिया लेता है, वह ठोक बजा कर लेता है।

जो फलेगा सो झड़ेगा, जो जलेगा सो बुझेगा—अ० संसार में उन्नति और अवनति एक दूसरी के पीछे होती ही रहती है। प्र० बंधु; देखो, वह आम का वृक्ष जो फलों के भार से पृथ्वी में लग रहा था, आज उस पर पत्ते भी नही हैं। इस पर उसने उत्तर दिया कि क्या तुमने सुना नहीं कि जो फलेगा सो झड़ेगा, जो जलेगा सो बुझेगा।

जोबन गया तो भल भयौ, सिर की गई बलाय। जने जने को रूठनों, हम पर सह्यौ न जाय—अ० जवानी में मनुष्य को चारों ओर की मार काट रहती हैं; किन्तु जब वृद्धावस्था में सब छोड़ कर वानप्रस्थी हो जाता है तो फिर सब झगड़ों से छूट कर सुख का अनुभव करता है। प्र० जब राजा दुष्यन्त भरत को हस्तिनापुर का राज्य देकर वानप्रस्थी होकर सुख का अनुभव करने लगे तब उन्होंने कहा था कि जोबन गया तो भल भयौ, सिर की गई बलाय। जने-जने को रूठनों, हम पर सह्यौ न जाय।

जोबन था तब ज़ोर था, पूछत ओ सब कोय। जोबन रतन चल्यौ गयौ, बात न पूछै कोय—अ० युवावस्था में मानव का सब पर आतंक रहता है तो सैकड़ों चापलूस पड़े रहते हैं, पर जब बुढ़ापा आ जाता है तो कोई यह भी नहीं जानता कि कहाँ पड़ा है। प्र० बंधु, कहो अब तो खाट दुवारी में आ गई, वक्त पर खाना भी मिल जाता है। इस पर उसने उत्तर दिया, बस बंधु, अब तो वही कहावत है जोबन था तब ज़ोर था, पूछत ओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कोय। जोवन रतन चल्यौ गयौ, बात न पूछै कोय।

जो बर मोकों देखि न भावै, सोई मोकों ब्याहन आवै—अ० जिस व्यक्ति से घृणा हो उसी से समस्त जीवन का सम्पर्क हो जावे। प्र० बंधु, आजकल क्यों उदास रहते हो। इस पर उत्तर मिला कि मैं इस अमीन के अधीन मरा भी रहना नहीं चाहता और साहब ने मुझे उसी के पास काम करने के लिए भेजा है। मेरी तो वही कहावत हो गई कि जो बर मोकों देखि न भावै, सोई मोकों ब्याहन आवै।

जो बरसेगी स्वांती, चर्खा चले न तांती—अ० जो स्वांति नक्षत्र में वर्षा हो तो कपास की खेती नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। फिर न रुई पिनाई जायेगी और न चर्खा चलेगा। प्र० इस बार शहर में धुने नहीं आए। उत्तर मिला कि स्वांति बरसने से रुई का पता नहीं। क्या तुम नहीं जानते कि जो बरसेगी स्वांती, चर्खा चले न तांती।

जो बिंध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर—अ० जो हो गया सो हो गया और नहीं हुआ सो कुछ नहीं। प्र० पिताजी ने मेरा विवाह बेमेल कर दिया। इस पर श्रेय ने उत्तर दिया, बंधु, अब क्या होता है, जो बिंध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर।

जो बैरी खैंचे तलवार, करै साधुता की अनुहार—अ० अगर दुश्मन मारने के लिए तलवार निकाले तो सज्जन का धर्म है कि उसकी अधीनता स्वीकार कर ले। प्र० जब दुष्ट कंस ने अपनी बहन देवकी का सिर काटने के लिए तलवार निकाली तो वसुदेव ने कहा कि महाराज, इसे न मारिये। इसकी जो संतान होगी वह आपको मिल जायेगी। सच है कि जो बैरी खैंचे तलवार, करै साधुता की अनुहार।

जो बोले सो कुंडा खोले—अ० जो काम करने का उपाय बतावे, वही उस काम को करे। प्र० बंधु, मैंने श्याम को पानी भरने का उपाय बताया तो बोला कि तुम ही भर लाओ। सच है कि जो बोले सो कुंडा खोले।

जो भुजंग लिपटे रहैं, विष नहीं चंदन अंग—अ० सज्जन पुरुषों के साथ अगर नीच पुरुष भी आ जाएं तो सज्जन उनके गुण धारण नहीं करते हैं। प्र० श्रीराम चौदह वर्ष वन में विचरते रहे पर जैसे गए थे वैसे ही घर आये। सच है कि जो भुजंग लिपटे रहैं, विष नहीं चन्दन अंग।

जो मा से अधिक चाहै सो डायन—अ० जब कोई स्वाभाविक प्रेम से भी ज्यादा प्रेम करे तो समझ लो कि दाल में कुछ काला है। प्र० बंधु, जिस दिन से पुनीत की विमाता आई है, उसी दिन से उसने पुनीत को कंधे से लगाया है, कैसा प्यार करती है। इस पर उत्तर मिला, बंधु, तुम तो बावले हो। वह उसका मुंह देखना नहीं चाहती है। क्या तुम जानते नहीं कि जो मा से अधिक चाहै सो डायन।

जो मेरे सो तेरे, काहे दाँत निपोरे—अ० जो बुराई एक में हो वह दूसरे में भी हो। प्र० कल पैन उठा लेने पर मुझे मार पड़ी और तुम हंसते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे। तुम भी तो ऐसी करतूतों पर पिटते रहे हो फिर मुझ पर क्यों हँसे। क्या जानते नहीं कि जो मेरे सो तेरे, काहे दाँत निपोरे।

जो रक्षक जननी जठर, सो हरि गयौ न सोय—अ० वह प्रभु जो माता के उदर में भी रक्षा करता है सो हर दशा में रक्षक है। प्र० जब-जब रहीम का सम्राट् अकबर ने सर्वस्व हर लिया तो उन्होंने प्रभु पर भरोसा कर कहा था—रन-बन अरु घर बीच में, राखत है नित जोय। पुनि रक्षक जननी जठर सो हरि गयौ न सोय।

जो लगावै, सो बुझावै—अ० जो व्यक्ति झगड़ा शुरू करे, वही इसका अंत करे। प्र० देखो रमेश, आपस में मुकदमेबाजी अच्छी नहीं है। घर ही में बैठकर फैसला कर लो। पर हरीश ने कहा कि नालिश तो भाई साहब ने की है, वे ही फैसला कर सकते हैं। जो लगावै सो बुझावै।

जो सपने सिर काटै कोई, जागे बिन दुख दूर न होई—अ० जब तक व्यक्ति इस स्वप्नवत् जगत् में पड़ा रहता है तब तक उसे दुःख नहीं छोड़ते हैं; किन्तु जब जगत् के भोग-विलास को त्याग कर ईश स्तुति में लग जाता है तो उसका सारा दुःख मिट जाता है। जिस तरह किसी व्यक्ति का सपने में सिर काट दिया जाये और जागने पर उसका दुःख दूर हो जाए। प्र० जानिये तबहि जीव जग जागा। जब सब विषय विलास विरागा।

जो साँवन में बरखा होय, खोज काल कौ जड़ सों खोय—अ० जब सावन के मास में अच्छी वर्षा होती है तो अकाल की जड़ कट जाती है। प्र० बंधु, इस वर्ष कैसा अच्छा सम्वत् है। इस पर उत्तर मिला कि क्या तुमने सुना नहीं कि जो सांवन में बरखा होय, खोज काल कौ जड़ सों खोय।

जो सिर उठा कर चलेगा सो ठोकर खायेगा—अ० जब कोई व्यक्ति घमण्ड में अंधा होकर बिना विचारे काम करता है तो हानि ही उठाता है। प्र० बंधु, नाना का धन पाकर तुम को अभिमान ने मदांध बना दिया है सो कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का कुछ ध्यान ही नहीं है, इस कारण हमेशा झींकते ही रहते हो। क्या तुम जानते नहीं कि जो सिर उठाकर चलेगा सो ठोकर खायेगा।

जो सिर धरि महिमा मही, लहियत राजा राम। प्रगटत जड़ता आपनी, मुकुट डारियत पाय—अ० जिन गुणवानों की प्रतिष्ठा करके मानव विश्व कीर्ति प्राप्त करता है, यदि वह उन्हीं विद्वानों का निरादर करे तो उसकी महज बेवकूफी है। प्र० विद्वानों का सदैव आदर करना चाहिए, क्योंकि कविवर बिहारी का राजा सवाई जयसिंह ने निरादर किया था सो उसके विषय में नीचे लिखे दोहे लिख दिए—

चले जाउ ह्यां को करत, हाथिन कौ व्यौपार।
नहिं जानत इहि पुर बसें, धोबी और कुम्हार॥
कोटि जतन कीजै तऊ, परै न प्रवृतिहि बीच।
नल-बल-जल ऊँचौ चढ़ै, अंत नीच कौ नीच॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सुख नथुआ के उसारे में, सो सुख बलख न बुखारे में—अ० अपने घर बराबर राजभवन में भी सुख नहीं। प्र० तुम्हारे नानाजी तो बहुत धनवान हैं पर तुम तो दो मास में ही आधे होकर आए हो। इस पर उत्तर मिला कि बंधु, क्या तुम जानते नहीं कि जो सुख नथुआ के उसारे में, सो सुख बलख न बुखारे में।

जो सूतन सिमायगा, मूतने को राह रखेगा—अ० जो चोरी करेगा सो बचने का उपाय रखेगा। प्र० रमाकांत सुनार ने भावना के कंगनों में ऐसे ढंग से खोट मिलाया कि गलाने पर भी न मालूम हो सका। इस पर उत्तर मिला कि जो सूतन सिमायगा, मूतने को राह रखेगा।

जो सोया उसने खोया—अ० जो व्यक्ति अपने काम की देखभाल नहीं करता उसे हानि ही पहुँचती है। प्र० तुम समय पर ऑफिस में नहीं जाते, सारा काम नौकरों पर छोड़ रखा है, बाद में झींकते हो। क्या तुम जानते नहीं कि जो सोता है सो खोता है।

जो हँसा सो फँसा—अ० जो व्यक्ति भोग-विलास के वश में हो जाता है, वह इन्द्रियों के वश होकर नष्ट हो जाता है। प्र० बंधु, विद्यार्थी जीवन में तुम आमोद-प्रमोद में लगे रहे और अब मूर्ख होने के कारण कहीं सम्मान नहीं पाते, सो दिन-दिन शोक में डूबे रहने के कारण गिरते जा रहे हो। क्या तुमने सुना नहीं था कि जो हँसा, सो फँसा।

जौकौं गये सतुआनी कौ आये—अ० जो व्यक्ति अपने स्वत्व से ज्यादा माँगता है तब ऐसा कहा जाता है। प्र० बंधु, आज एक भिखारी ने आकर भोजन माँगा। उसे भोजन करा दिया गया। फिर उसने एक कपड़े का सवाल किया। इस पर मैंने कहा कि जौकौं गये सतुआनी कौ आये।

जौ लौं तेल प्रदीप में, तौ लौं ज्योति प्रकाश—अ० जब तक मनुष्य की देह में प्राण रहते हैं तब तक वह चलता-फिरता रहता है। प्र० जब प्राण प्रयाण कर जाते हैं तो देह मिट्टीवत् हो जाती है। सच ही तो है कि जौ लौं तेल प्रदीप में तौ लौं ज्योति प्रकाश।

ज्यों ज्यों भीजे कामरी, त्यों त्यों भारी होय—अ० जब किसी व्यक्ति का ऋण दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाए। प्र० बंधु, असल तो असल आजकल ब्याज भी नहीं पहुँच पा रहा है। ऐसा ही रहा तो जानते हो क्या होगा, ज्यों-ज्यों भीजे कामरी त्यौं-त्यौं भारी होय।

ज्यों ज्यों मुर्गी मोटी होय, त्यों त्यों पेट खोखरा होय—अ० जैसे-जैसे मनुष्य के पास धन बढ़ता जाता है तैसे तैसे इच्छाएँ बढ़ती जाती हैं। प्र० बंधु, तुम्हारे पास सैंकड़ों रुपये आते हैं पर तुम्हें कभी संतोष नहीं होता। सच है कि ज्यों ज्यों मुर्गी मोटी होय, त्यों त्यों पेट खोखरा होय।

ज्यों ज्यों लिया राम का नाम, त्यों त्यों मारा सारा गाँव—अ० जब किसी से जितना दबा जाए और वह उतना ही सिर पर चढ़ता जाये। प्र० व्यास जी ने कृष्ण से कहा: हे माधव! ज्यों ज्यों पाण्डव दबते गए दुर्योधन उतना ही सिर चढ़ता गया। तब तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुन ने कहा, दुर्योधन तूने तो वही कर दिखाया कि ज्यों ज्यों लिया राम का नाम, त्यों त्यों मारा सारा गाँव।

झ

झगड़ा झूठा कब्ज़ा सच्चा—अ० अधिकार ही सच्चा है, झगड़ा करना तो फिजूल है; क्योंकि १२ वर्ष का जब कब्जा मुख़ालिफाना हो जाता है तो जिसका कब्जा है वह मालिक बन जाता है। प्र० बंधु, जिस मकान पर मुक़दमा चल रहा है उसमें श्रीमती सुदेशशरण कितने दिनों से रहती हैं। उत्तर मिला कि बाईस वर्ष से। तब तुम्हारा झगड़ा करना व्यर्थ है। क्या जानते नहीं कि झगड़ा झूठा कब्ज़ा सच्चा।

झगड़े की तीन जड़ ज़र, ज़मीन, जोरू—अ० लक्ष्मी, भूमि और स्त्री। दुनिया में इन तीनों पर ही झगड़े हुआ करते हैं। प्र० आजकल ताऊ जी से किस बात पर झगड़ा हो रहा है। इस पर उत्तर मिला कि थोड़ी-सी धरती पर। यह तो वही कहावत हुई कि झगड़े की तीन जड़ ज़र, ज़मीन, जोरू।

झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी—अ० शीघ्रता के साथ किया गया काम ठीक नहीं होता है। प्र० बंधु, यह घी तो कड़ाही में चटक रहा है। उत्तर मिला कि जल्दी में घी ताने में छाछ रह गई होगी। क्या तुम जानते नहीं कि झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी।

झट मंगनी पट ब्याह—अ० जल्दी ही किसी कार्य का हो जाना। प्र० रमाकांत सर्राफ ने इस बार तुम्हारे आभूषण जल्दी बना दिए। इस पर उसने उत्तर दिया कि बस मेरे यहाँ तो यही है कि झट मंगनी पट ब्याह।

झड़बेरी का काँटा—अ० जो व्यक्ति ऐसा पीछे पड़े कि छुड़ाना मुश्किल हो जाए। प्र० बंधु, मातादीन से कैसे पीछा छुड़ाऊँ। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया कि तुमने उसे छेड़ा ही क्यों था, जानते नहीं कि वह तो झड़बेरी का काँटा है।

झड़बेरी के जंगल में बिल्ली ही सिंह—अ० छोटे स्थान पर छोटा ही बड़ा होता है। प्र० बंधु, देखते हो कि बादली सौ घरों का गाँव है। उसमें अनूपसिंह जाट ही जिसकी सबसे बड़ी हवेली है, मुकद्दम है। सच है कि झड़बेरी के जंगल में बिल्ली ही सिंह।

झाँसा देना—अ० बातों में फँसाना। प्र० तुमने आज झाँसा देकर मेरी गाड़ी छुड़ा दी। यह तुमने अच्छा नहीं किया।

झाँसी गले की फाँसी, दतिया गले का हार। अरु मेरठ कबहु न छोड़िये, जब तक मिलै उधार—अ० झाँसी में जो चला गया फिर तो मानो उसके गले में फाँसी लग गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दतिया तो गले में हार-सा पड़ जाती है तथा मेरठ की जलवायु अच्छी है इसलिए इसे छोड़ना उस समय तक भी ठीक नहीं है, जब तक उधार भी खाने को मिलता रहे। प्र० रमेश ने कहा, बंधु, मेरा तबादला झाँसी को हो गया था, बड़ी मुश्किल से उसे रोक पाया हूँ। सच है कि झाँसी गले की फांसी, दतिया गले का हार। मेरठ कबहु न छोड़िये, जब तक मिलै उधार।

झाड़ बिछाई कामरी, रहे निमाने सोय— अ० सज्जनों का अधिक सुखदायी वस्तुओं से सम्बन्ध नहीं होता है, इसलिए उन्हें एक कम्बल ही काफी होता है, उसी पर सुख से सो रहते हैं। प्र० बंधु, आज एक साधु महाराज अपना कम्बल कंधे पर रखे हुए जा रहे थे। मैंने पूछा कि महाराज रात के विश्राम का क्या सामान है। इस पर उन्होंने जवाब दिया कि बेटा, झाड़ बिछाई कामरी, रहे निमाने सोय।

झाड़ भी बनिये का बैरी—अ० झाड़ जो सब को दुःखदायी है, वह भी बनिये से दुःख मानता है। प्र० बंधु, क्या कारण है कि कालू बनिये से सब का विरोध है। इस पर उत्तर मिला कि बनिया सब को दुःख देता है। क्या तुमने सुना नहीं कि झाड़ भी बनिये का बैरी।

झाड़ूं फूंकूं रक्षा करूँ, दैव लेइ मैं क्या करूँ—अ० होनहार बलवान है, लाखों उपाय करने पर भी नहीं रुकती। प्र० हरदयाल के रोग को दूर करने के लिए अनेक स्याने दीवाने और वैद्यों की चिकित्सा की, पर न बचा। सच है कि झाड़ूँ फूंकूं रक्षा करूँ, दैव लेइ मैं क्या करूँ।

झुकै आपसे उससे झुक जाइए, बचै आपसे उससे बच जाइये—अ० जो अपने साथ जैसा व्यवहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना ठीक है। प्र० तुम घनश्याम का बहुत सम्मान करते हो और हरदयाल को कुछ नहीं गिनते हो, इसका क्या कारण है? इस पर उसने उत्तर दिया कि क्या तुम जानते नहीं कि झुकै आपसे उससे झुक जाइए, बचै आपसे उससे बच जाइये।

झगड़ा मोल लेना—अ० बिना बात किसी के बखेड़े में पड़ना। प्र० बंधु, तुम सोहन और मोहन का बखेड़ा क्यों नहीं दूर कर देते हो? इस पर उसने उत्तर दिया कि झगड़ा कौन मोल ले।

झूठ उतौ ही बोलिये, जेतौ आटे नौन— अ० सच के सहारे थोड़ा-सा झूठ भी पार हो जाता है। प्र० आज रमेश ने जज साहब के सामने निरा झूठ बोला, जो जिरह में खुल गया। सच है कि झूठ उतौ ही बोलिये, जेतौ आटे नौन।

झूठ के पाँव नहीं होते—अ० झूठा व्यक्ति वाद-विवाद में हार जाता है। प्र० बंधु, घनश्याम बहुत-सी झूठी बातें बनाया करता था, कल उसकी एक बात पकड़ी गई। जब उस पर वाद-विवाद हुआ तो उठ कर चल दिया। सच है कि झूठ के पाँव नहीं होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठ बोलना और खे खाना समान है—अ० झूठ के बराबर कोई नीच काम नहीं है। प्र० बंधु, तुम्हारे कहने से मैं बम्बई चला तो जाऊँगा, पर तुम झूठ तो नहीं कह रहे हो। इस पर उसने जवाब दिया, क्या कहते हो, क्या मैं जानता नहीं कि झूठ बोलना और खे खाना समान है।

झूठ बोलना और झूठा खाना समान है –अ० जो व्यक्ति झूठ बोले, उसे ऐसा समझिये कि वह भंगी है। प्र० जो तुम कह रहे हो, उसमें कुछ झूठ तो नहीं है। इस पर उसने जवाब दिया कि झूठ बोलना और झूठा खाना समान है।

झूठ साँच कौ अन्तरा, ज्यों रजनी अरु भोर—अ० झूठ और सच में रात दिन का अन्तर है। प्र० रमेश ने महेश से कहा, तुमने मुझे जितनी बातें कहीं उनमें से केवल चार बातें ही ठीक हैं और सब झूठ हैं। इस पर महेश ने पूछा कि कैसे जाना? रमेश ने उत्तर दिया कि क्यों गाजरों में गुठली मिलाते हो, क्या तुम नहीं जानते कि झूठ साँच कौ अन्तरा, ज्यों रजनी अरु भोर।

झूठा झूंठन सों बुरौ, जौ सोने का होय—अ० झूठे व्यक्ति को जो उच्च कुल का भी हो, तो भी उतनी दूर से भी अधिक दूर रखिये, जितनी दूर तुम झूठन को फेंक आते हो। प्र० बंधु, नरेश को तुम अपने द्वार पर भी नहीं आने देते हो, क्या बात है? इस पर उसने जवाब दिया कि वह झूठा है और झूठा झूठन सों बुरौ, जौ सोने का होय।

झूठी तो होती नहीं, कबहूँ साँची बात। जैसे टहनी ढाक में, लगै न चौथा पात—अ० करोड़ों प्रयास करने के बाद भी झूठी बात सच नहीं हो सकती है। प्र० सोहन ने झूठ को छिपाने के लिए अनेक बातें बनायीं पर अंत में पोल खुल ही गई। सच है कि झूंठी तो होती नहीं कबहूँ साँची बात। जैसे टहनी ढाक की, लगै न चौथा पात।

झूठी बात बना ले, पानी में आग लगा ले अ० झूठी बात ऐसी बुरी है कि शांति में भी अशांति कर देती है। प्र० महेश ने झूठी सच्ची लगाकर रवि का घर बर्बाद कर दिया। सच है कि झूठी बात बना ले, पानी में आग लगा ले।

झूठे का मुंह काला, सच्चे का बोल-बाला—अ० झूठा हमेशा हारता ही है और सच्चा हमेशा जीतता है। प्र० बंधु, कल सुरेश एक झूठी बात पर मुझसे अड़ पड़ा पर अंत को हारा। तब लोगों ने कहा कि झूठे का मुँह काला, सच्चे का बोल-बाला।

झूठे की कुछ पत नहीं, सज्जन झूठ न बोल। लछपती कौ झूठ ते, द्वै कौड़ी हो मोल—अ० झूठा व्यक्ति चाहे ग़रीब हो या धनी उसका कोई विश्वास नहीं करता। प्र० अरे, तुम कैसे व्यक्ति हो। रायबहादुर करोड़ों के आदमी हैं। समाज में उनकी साख है पर तुम उनका विश्वास नहीं करते। इस पर उसने उत्तर दिया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधु, क्या तुम नहीं जानते कि झूठे की कुछ पत नहीं, सज्जन झूठ न बोल। लखपती कौ झूठते, द्वै कौड़ी हो मोल।

झूठ की नाव मंझधार में डूबे—अ० झूठे व्यक्ति का कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है। प्र० बंधु, तुमने कई झूठी नालिशें कीं और तुम सभी में हारे। क्या तुम जानते नहीं कि झूठ की नाव मंझधार में डूबे।

झूठे के आगे सच्चा रो मरे—अ० झूठे के आगे सच्चे को हार माननी पड़ती है। प्र० बंधु, तुमने देखा, परेश ने झूठ बोलते-बोलते गंगा को पागल बना दिया। सच है कि झूठे के आगे सच्चा रो मरे।

झूठे को मंजिल तक पहुँचा दे—अ० झूठे व्यक्ति से उस वक्त तक वायदा करता रहे जब तक वह सत्य पर न आ जाये। प्र० बंधु, तुम तो रमेश के ऐसे पीछे पड़े कि जब तक वह सत्य नहीं बोला तब तक उसका पीछा ही नहीं छोड़ा। इस पर उसने जवाब दिया कि क्या तुमने सुना नहीं कि झूठे को उसकी मंजिल तक पहुँचा दे।

झूठे घर को घर कहैं, सांचे घर को गोट। हम चाले घर आपने, लोग मचावैं शोर—अ० यह जगत् अनित्य है पर तो भी संसारी लोग इसे सत्य मानते हैं। अतः जब मानव इस असत्य जगत् को छोड़ कर वहाँ चला जाता है, जहाँ उसे हमेशा रहना है तो लोग उसे रोते पीटते हैं। प्र० मनुष्य का निधन होने पर लोग क्यों झूठी हाय-हूय मचाते हैं। क्या ये जानते नहीं कि झूठे घर को घर कहैं, सांचे घर को गोट। हम चाले घर आपने, लोग मचावैं शोर।

झूठे जग पतियाय—अ० सांसारिक व्यक्ति झूठे जगत् को सत्य मान कर अनेक कष्ट पाता है। प्र० बंधु! इंसान देह छोड़ते समय दुःख क्यों मानता है? इस पर उसने उत्तर दिया कि क्या तुम नहीं जानते, झूठे जग पतियाय।

झूठे सों का मितरई, लँगड़े कौ का साथ। बहरे सों का बोलिबौ, गूंगे सों का बात—अ० झूठे व्यक्ति की दोस्ती ऐसी है जैसी बालू की दीवार। लँगड़े से चला नहीं जाता वह अच्छे व्यक्ति के साथ कैसे चलेगा, बहरे से बात करने से क्या लोगे, वह सुनता ही नहीं। गूंगा आप ही नहीं बोलता उससे बात करके क्या लोगे। प्र० बंधु, पहले तो सोमेश बड़ा प्यार दर्शाता था पर अब इधर आता भी नहीं। इस पर उसने उत्तर दिया कि बंधु, क्या तुम नहीं जानते कि झूठे सों का मितरई, लँगड़े कौ का साथ। बहरे सों का बोलिबौ, गूंगे सों का बात।

झूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता—अ० कभी किसी को देना तो क्या, आप भी भोजन नहीं करता। प्र० बंधु, मोती के पास तो रुपया बोरियों में भरा रहता है। इस पर उसने उत्तर दिया कि क्या तुम नहीं जानते कि वह झूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता है।

झूठों का बादशाह—अ० महा झूठा। प्र० बंधु, श्यामा की कही बात मानूं या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। इस पर उसने जवाब दिया, कदापि नहीं। वह तो झूठों का बादशाह है।

झोंपड़ी में रहें महलों के सपने देखें—अ० जब कोई व्यक्ति असम्भव बातें किया करता है। प्र० बंधु, महेश के घर में तो दाने नहीं और हाथी लेने की इच्छा करता है। उसकी तो वही बात है कि झोंपड़ी में रहें, महलों के सपने देखें।

ट

टका ब्याज बैरागिहि खोवै, तिरियहि खोवै हाँसी। अरु आलस नींद किसानहि खोवै, चोरहि खोवै खाँसी—अ० लेन-देन करने वाला साधु ख़त्म हो जाता है, हँसी करने वाली महिला खत्म हो जाती है। आलस्य और निद्रा किसान को नष्ट कर देते हैं और खाँसी चोर को पकड़वा देती है। (१) प्र० अरे, कुछ सुना तुमने! बलिभगत साधु ने रुपया ब्याज पर देना शुरू कर दिया है। फल यह हुआ कि अब ईश स्तुति तो भूल गए और निन्यानवे के चक्कर में आ गए। सच है कि टका ब्याज बैरागिहि खोवै। (२) प्र० बंधु, महानंद की साली उससे रात-दिन मज़ाक किया करती थी। उसका फल यह निकला कि अब उसकी कोई सगाई नहीं लेता। इस पर उसने उत्तर दिया कि इसमें आश्चर्य की क्या बात है, जानते नहीं कि तिरियहि खोवै हाँसी। (३) प्र० महताब सिंह रात-दिन खाट पर लोट मारता रहा और खेत खलिहान की कोई फिक्र नहीं की। फल यह हुआ कि भीख माँगने की नौबत आ गई। ठीक है कि आलस नींद किसानहि खोवै। (४) प्र० हवेली में कल रात चोर पकड़ा गया, क्योंकि उसे खाँसी उठ गई थी। सच है कि चोरहि खोवै खाँसी।

टका हर्ता टका कर्ता, टका मोक्ष प्रदायकाः। टका सर्वत्र पूज्यन्ते बिनु टका हा, टकटकायते—अ० रुपये के बिना मनुष्य का कहीं भी सम्मान नहीं होता, वल्कि टक्कर ही खाता फिरता है। प्र० जब रायसाहब का दिवाला पिट गया तो उन्हें किसी ने कौड़ी को भी न पूछा। इस पर उसने जवाब दिया कि बंधु, तुमने वह कहावत सुनी नहीं कि टका हर्ता टका कर्ता, टका मोक्ष प्रदायकाः। टका सर्वत्र पूजयन्ते बिनु टका हा, टकटकायते।

टका है जिसके हाथ में, वही बड़ा है जात में—अ० धनी का सर्वत्र आदर होता है। प्र० जब भिखारी के पास रुपया नहीं था तो सब उसको भीखू भीखू कह कर पुकारते थे किन्तु जिस दिन से नाना का माल मिला है उसी दिन से सब लोग लाला भिखारी दास कह कर पुकारने लगे। सच है कि टका है जिसके हाथ में, वही बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जात में।

टके का खेल है—अ० रुपये बिना मायावी जगत् का कोई काम नहीं चल सकता है। प्र० इस मँहगाई के युग में कोई भी काम पैसे के बिना करने में असमर्थ हूँ। विवश हूँ, अब तो सब टके का खेल रह गया है।

टके की बुढ़िया नौ टका सिर मुड़ाई—अ० जब छोटी-सी वस्तु की मरम्मत के लिए अधिक मज़दूरी माँगी जाए। प्र० बंधु, मेरी कली ढाई रुपये की ख़रीदी हुई है। जब मैं चूती हुई की मरम्मत करवाने गया तो ठठेरे ने रुपया माँग लिया। इस पर मेरे मुख से निकल गया कि वाह-वाह, क्या कहने, टके की बुढ़िया नौ टका सिर मुड़ाई।

टके की मुर्ग़ी आठ टके महसूल—अ० जब वस्तु के मूल्य से अधिक किराया माँगा जाए। प्र० बंधु, मैंने नागपुर से दस रुपये की चार टोकरियाँ संतरों की खरीदीं। दिल्ली लाते लाते बारह रुपये मजदूरी के देने पड़ गए। सच है कि टके की मुर्ग़ी आठ टके महसूल।

टके की लौंग बनैनी खाय, बहिन कहो घर रहै कि जाय—अ० जिस घर में औरत चटोरी होती है, वह घर जल्दी ही ख़त्म हो जाता है। प्र० कविता तुम दिन भर में चार-पाँच रुपये चाट-पकौड़ी में उड़ा देती हो फिर साज-सिगार में भी खर्च करती हो, तो कहो तो सही यह घर क्यों न बिगड़ेगा। क्या तुमने पुरानी कहावत सुनी नहीं कि टके की लौंग बनैनी खाय, बहिन कहो घर रहै कि जाय।

टके के लिए मस्जिद ढाना—अ० थोड़े लाभ के लिए ज़्यादा हानि उठाना। प्र० अरे, तुमने यह क्या काम किया कि एक कलसा निकलवाने के लिए नई दीवार गिरवा दी। तुमने तो वही कहावत कर दी कि टके के लिए मस्जिद ढाना।

टके तीतर मैला पर, पाँच रुपये भैला पर—अ० जो वस्तु ग़रीबों को पैसों में मिला करती है वही वस्तु अमीरों को रुपयों पर मिलती है। प्र० बंधु, जो नुस्ख़ा मेरे लिए वैद्य जी ने दो रुपये का लिखा था वही नुसखा शब्दों की हेर-फेर के बाद रायसाहब के लिए बीस रुपये का कर दिया। सच है कि टके तीतर मैला पर, पाँच रुपये भैला पर।

टके में टका और ढके में ढका—अ० पैसे को पैसा कमाता है और दीन की दीनता बढ़ती है। प्र० रायबहादुर जगन्नाथ जी के यहाँ रुपया दिन-दिन बढ़ता ही जाता है और बेचारे मातादीन पर मुसीबत आती ही रहती है। सच है कि टके में टका और ढके में ढका।

टट्टा खोल निखट्टू आया—अ० जब निकम्मा व्यक्ति घर पर आता है तो उसके लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। प्र० हरिया लोधा आधी रात लड़ता-झगड़ता हुआ घर पर आकर शोर करने लगा कि टट्टा खोल। इस पर खाली राम चमार ने कहा, अरी बहू, टट्टा खोल निखट्टू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया है।

टट्टू को कोड़ा और तुर्की को संकेत—अ० मूर्ख व्यक्ति डंडे से पिट कर काम करता है और चतुर व्यक्ति संकेत पाकर ही काम को कर लेता है। जामवंत ने नल से कहा, देखो, कुम्भकरण जागने पर भी रण के लिए मुश्किल से तैयार हुआ और लक्ष्मण श्रीराम का संकेत पाते ही कवचधारी तथा चिल्ला चढ़ा कर रणक्षेत्र में आ डटा। सच है कि टट्टू को कोड़ा और तुर्की को संकेत।

टपके का डर है—अ० जब किसी व्यक्ति के मन में कोई खास डर घर कर लेता है तब ऐसा कहा जाता है। प्र० बंधु, तुम्हारे कहने से मैं इस कागज़ पर हस्ताक्षर तो कर दूं पर मन डरता है। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि जितना शेर का डर नहीं उतना टपके का डर है।

टहल करौ तौ साधु की देवै बहुत असीस। रैन दिना हरषित रहौ, जग में बिस्वे बीस—अ० साधु की सेवा का फल उसका आशीर्वाद है जो दुनिया में हर प्रकार का सुख देता है। प्र० मारकण्डेय ने मकण्ड से कहा, महाराज, नारद ने संतों की सेवा की थी सो अगले जन्म में दासी पुत्र से ब्रह्मा के पुत्र हुए। किसी ने सच ही कहा है कि टहल करौ तौ साधु की देवै बहुत असीस। रैन दिना हरषित रहौ, जग में बिस्वे बीस।

टहल न टकोरी, लाओ मज़ूरी मोरी—अ० जो व्यक्ति काम तो करें नहीं और खाने पहरने को मांगें। प्र० आज तुम्हारे यहाँ कैसा झगड़ा हो रहा था। इस पर उसने उत्तर दिया कि मैंने प्रदर्शनी देखने के लिए पैसे माँगे थे सो भाभी कह उठीं कि टहल न टकोरी, लाओ मज़ूरी मोरी।

टहलुये को टहल सोहै, बहलिये को बहल सोहै—अ० जिसका काम उसी को साजे। प्र० आज हरिया पर क्यों गरम हो रहे थे। इस पर उसने उत्तर दिया कि मैंने उसे मनुस्मृति पर काग़ज़ चढ़ाने को कह दिया था सो उसने उसका भी नाश कर दिया। उत्तर मिला कि वाह, वाह क्या खूब, तुम जानते नहीं कि वह हल जोतना जानता है। बंधु, टहलुये को टहल सोहै, बहलिये को बहल सोहै।

टाट की अँगिया पै रेशम की बखिया—अ० छोटे से काम के लिए ज़्यादा पैसा ख़र्च करना। प्र० मैंने नेपाल से दो घड़ियों की चेन ली थी। उन पर सुनहरी पानी चढ़ाने पर पचास रुपये लग गए। किसी ने सच ही कहा है कि टाट की अंगिया पै रेशम की बख़िया।

टाट का लँगोटा, नवाब से मितरई—अ० दीन व्यक्ति का बड़े आदमियों से मेल-जोल हो जाना। श्रीदामा से सुबल ने कहा, बंधु, तुमने देखा, नल तेली के हाँके पाट और राजा बुद्ध के गया ब्याहने। उसकी वही कहावत हुई कि टाट का लँगोटा, नवाब से मितरई।

टाँय टाँय फिस—अ० फ़िज़ूल की बकवास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना। प्र० बंधु, कहो तो सुरेन्द्र क्या कह रहा था। इस पर उसने उत्तर दिया कि कुछ नहीं, वैसे ही टाँय टाँय फिस कर रहा था।

टाँकी बज रही है—अ० मकान बन रहा है। प्र० योगीराज कृष्ण ने अर्जुन से कहा, हे पार्थ ! धर्मराज की सुधर्म्मा नामक सभा में टाँकी बज रही है।

टांग उठै ना, चढ़न चहै हाथी—अ० जब कोई व्यक्ति अपनी शक्ति से बढ़कर काम करने को तैयार हो जाए। प्र० द्रोणाचार्य ने अश्वत्थामा से कहा, वत्स, सुयोधन ने रण की गति देखी नहीं और जाय भिड़ा चित्राङ्ग से। उसकी तो वही कहावत है कि टांग उठै ना, चढ़न चहै हाथी।

टाँग के नीचे से निकाल देना अ० जब कोई किसी को अपने अधीन कर लेता है। प्र० जयद्रथ काशीराज से युद्ध में अड़ गया। इस पर सात्यकी ने कहा, बंधु तुम सरीखे न जाने कितने काशीराज ने टाँग के नीचे से निकाल दिये हैं।

टाँग पकड़ कर लाये और पूंछ पकड़ कर निकाले—अ० किसी पशु को ज्यों ही मोल लिया त्यों ही बेच दिया। प्र० अश्वपति ने सिंधुराज से कहा, राजन, तुमने एक ही दिन में सहस्रों हाथी क्रय-विक्रय कर डाले। इस पर उसने उत्तर दिया, राजन यहाँ तो यही काम है कि टाँग पकड़ कर लाये और पूँछ पकड़ कर निकाले।

टाट पर पंच को सब बराबर—अ० बिरादरी में कोई छोटा बड़ा नहीं होता है। प्र० चौधरी मंगलू के यहाँ चौधरी बदलू हुक्का पीने के लिए आ बैठा। चौधरी मंगलू ने हुक्का उठाकर भीतर रख दिया। इस पर लोगों ने कहा कि टाट पर पंच को सब बराबर होते हैं।

टाँटे से नाँटा भला, जो जातहिं देइ जुवाब। सो टाँटा का काम कौ, जो वर्षन करै खराब।—अ० दाता से सूम भला जो जातहि जवाब दे। प्र० बंधु, मैंने बजरंग से एक पुस्तक माँगी थी सो कई दिनों से टाँगें तुड़वा रहा हूँ। इस पर उसने जवाब दिया कि बंधु, टाँटे से नाँटा भला, जो जातहिं देइ जुवाब। सो टाँटा का काम कौ, जो वर्षन करै खराब।

टारे टरै न मारे मरै—अ० जो व्यक्ति किसी तरह से भी चट से मट न हो। प्र० आज सवेरे से एक भिखारी दरवाज़े पर ऐसा आकर जमा कि जो टारे टरै न मारे मरै।

टारे टारे खीचड़ी, अनटारे की दाल—अ० खिचड़ी को चलाने से नीचे नहीं लगती और दाल को न चलाओ तो कुछ हानि नहीं है। प्र० बहिन; आज तो तुम्हारी खिचड़ी बहुत जल गई। क्या तुम नहीं जानतीं कि टारे टारे खीचड़ी, अनटारे की दाल।

टिड्डी का आना अकाल का चिह्न—अ० जिस स्थान पर टिड्डी आ जाती है, वहाँ की फ़सल को जड़ से खा जाती है। प्र० अब की बार यह साल बड़ी मुश्किल से कटेगा, क्योंकि टिड्डी ने सब खेती नष्ट कर दी है। सच है कि टिड्डी का आना अकाल का चिह्न।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टुक जिये तो क्या—अ० जो व्यक्ति निर्लज्जता से पराये टुकड़ों पर दिन काटे, उसे कहा जाता है। प्र० भीम ने शकुनी से कहा कि तुम्हारी सारी ज़िन्दगी सुयोधन के टुकड़ों पर रही है। जानते नहीं कि टुक जिये तो क्या।

टूक टूक करिके मन भर खाय, ता पर बेगम नाम धराय—अ० जब किसी व्यक्ति का नाम तो सुकुमारों का सा कोमल हो, पर उसके कर्म महान् भयंकर पुरुषों के से हों। प्र० बंधु, चौबे जी के बेटे का नाम है, लघु-भोजी, पर जब खाता है तो पाँच सेर उतार लेता है। उसकी तो वही कहावत है कि टूक-टूक करिके मन भर खाय, ता पर बेगम नाम धराय।

टुकड़े खाये दिन बलाये, कपड़े फाटे घर को आये—अ० जब कोई व्यक्ति किसी के यहाँ कुछ दिन रोटी खाता रहे, पर जब पहरने को कपड़ा न मिले तो घर को भागता है, तो ऐसे व्यक्ति के लिए कहा जाता है। प्र० बंधु, मामा के यहाँ कितने दिन लगा आये। इस पर उसने जवाब दिया कि दो मास बिताये, पर अंत में घर ही आना पड़ा। मेरी तो वही कहावत हुई कि टुकड़े खाये दिन बलाये, कपड़े फाटे घर को आये।

टूटी की बूटी नहीं—अ० जब व्यक्ति की उम्र पूरी हो जाती है तो कोई दवा काम नहीं आती है। प्र० बंधु, जब नाना जी का अंतकाल आया तो वैद्यराज ने तोलों चन्द्रोदय खिला दिया पर अंत को चल ही बसे। सच है कि टूटी की बूटी नहीं है।

टूटी को जोड़े तो गाँठ पड़े—अ० जिस व्यक्ति से एक बार बिगाड़ हो गया हो तो फिर उसके साथ मैत्री मत करो, क्योंकि दोनों के मन में पिछला वैर खटकता ही रहेगा। प्र० दुर्योधन आधे राज्य पर संधि होने पर भी पिछले वैर को न भुला सका। सच है कि टूटी को जोड़े तो गाँठ पड़े।

टूटी खाट दरिद्र छाया—अ० जिस घर में टूटी खाट हो तो जान लो कि इस घर को कंगाली ने घेर लिया है। प्र० बंधु, कैसी हालत चल रही है, खाट तो सारी टूटी दिखाई दे रही है। इस पर उसने जवाब दिया, क्या कहूँ, दरिद्री का साम्राज्य छा गया है। हमारी तो वही कहावत है कि टूटी खाट दरिद्र छाया।

टूटी फिर नहीं जुड़ती—अ० व्यक्ति की अवस्था पूरी हो जाती है फिर उसे कोई जीवित नहीं कर सकता है। प्र० जार्ज पंचम को अनेक उपाय करने पर भी चिकित्सक जीवित न रख सके। सच है कि टूटी फिर नहीं जुड़ती।

टूटे तो हैं ही झोझरे क्यों करो हो—अ० जिस घर में फूट पड़ जाये और उस घर के व्यक्ति उस फूट को अंत तक पहुँचाकर नष्ट होने के ढंग डाल दें तब समझाने वाला व्यक्ति कहा करता है। प्र० भीष्म पितामह ने सुयोधन से कहा, सुयोधन, पाण्डवों से तुम्हारा विरोध तो है ही पर युद्ध करके क्यों वंश को नष्ट करते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वत्स, टूटे तो हैं ही झोझरे क्यों करो हो।

टूटे दंत, काया अंत—अ० जब दाँत टूट जायें तो जान लो कि अब देह पूरी होने के दिन आ गए। प्र० जब से दाँत टूटे हैं तब से शरीर लटकता ही जाता है। सच है कि टूटे दंत, काया अंत।

टूटे दंत भये संत—अ० दाँत टूटने पर बुढ़ापा आ जाता है। इसलिए मानव इन्द्रिय भोग से आप ही मुक्त होकर संत हो जाता है। प्र० कर्कट ने बंदर से कहा, बंधु ! दाँत टूटने पर अब मृग-राज के समस्त अंग शिथिल हो गए तो कैसे साधुता के उपदेश करते हैं। सच है कि टूटे दंत, भये संत।

टूटे दाँत सूखो आँत—अ० जब किसी व्यक्ति के दाँत टूट जाते हैं तो भोजन ठीक तरह न चबाये जाने के कारण ठीक तरह नहीं पचता है। इस कारण अंतड़ियों में पहिरक्षता आने के कारण सूखने लगती है। प्र० बंधु, अब तो तुम्हारा पेट कमर से लग गया। हाँ भाई, मेरे मुँह को देखो, क्या तुमने सुना नहीं कि टूटे दाँत सूखी आँत।

टूंक-टूंक को मार्‌यौ-मार्‌यौ डोलैगौ—अ० जब कोई व्यक्ति अपने बड़ों का कहना नहीं मानता तब बड़े-बूढ़े गुस्से होकर कहते हैं। प्र० वत्स, मेरा कहना तो तुम मानते नहीं हो, पर ध्यान रखना कि टूंक-टूंक को मार्‌यौ-मार्‌यौ डोलैगौ।

टूटे दाँत गलरियां पटकीं—अ० जब व्यक्ति के दाँत टूट जाते हैं तो दोनों गालों में गड्ढे पड़ जाते हैं। प्र० बंधु, दाँत उखड़ते ही मेरे गालों में गड्ढे पड़ गए। किसी ने ठीक ही कहा है कि टूटे दाँत गलरियाँ पटकी।

टूम कापड़े जेहि घर पावें, एक छोड़ नारी दस आवैं—अ० जिस घर में स्त्रियों का वस्त्राभूषण से भली-भाँति पोषण किया जाता है, वहाँ दिन भर में दसियों सगाइयाँ आती हैं। प्र० महेश ने सोमेश से कहा, बंधु, सुरेश की सगाई के लिए नित्य एक न एक उसकी भाभियों को आभूषण पहिने-ओढ़े देखकर आता ही रहता है। इस पर उसने उत्तर दिया कि तुम्हें पुरानी कहावत याद नहीं कि टूम कापड़े जेहि घर पावैं, एक छोड़ नारी दस आवैं।

टेंटी बेर काल के मीत, खाँय दीन अरु गावैं गीत—अ० टेंट जो करील पर लगते हैं और झरबेरी के बेरों से अकाल के दिनों में पोस कर दीन व्यक्ति सुखपूर्वक अपना जीवन-यापन करते हैं। प्र० बादली गाँव का रहने वाला बदरुसिंह एक गाँव को चला। राह में एक परिचित ने पूछा, कहो बंधु, आजकल तुम्हारे कैसे दिन कट रहे हैं। उसने उत्तर दिया कि बड़े अच्छे। कैसे, क्या तुम नहीं जानते कि टेंटी बेर काल के मीत, खाँय दीन अरु गावैं गीत।

टेढ़ जानि संका सब काहू, बक्र चन्द्रमहि ग्रसै न राहू—अ० लड़ाके से सब डरते हैं। प्र० श्रीराम ने परशुराम से कहा, महाराज ! लक्ष्मण का तो दोष, गुस्सा मेरे ऊपर। सच है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेढ़ जानि संका सब काहू, बक्र चन्द्र-महिं ग्रसै न राहू ।

टोटे का मुंह काला—अ० जिसका दिवाला निकल जाता है ऐसा व्यापारी दुनिया में मुंह दिखाने के योग्य नहीं रहता है । प्र० जिस दिन से रघुबर दयाल का दिवाला पिटा है, उस दिन से घर से बाहर नहीं निकलता है । किसी ने ठीक ही कहा है कि टोटे का मुंह काला ।

टोटा टारे ना टलै, जब लग टलै न लेख । संत कहें सुन बालके, लाख जतन कर देख—अ० जब तक साहूकार का बहीखाते का हिसाब पूरा न कर दिया जाए तब तक टोटे का आना नहीं रुकता, चाहे कोई लाखों जतन करके हार जाय । प्र० बंधु, क्या तुमने सेठजी के खाते का पेट भर दिया, यदि उसका पेट नहीं भरा है तो टोटा अवश्य आवेगा । तुम तो जानते ही हो कि टोटा टारे ना टलै, जब लग टलै न लेख । संत रहें सुन बालके, लाख जतन कर देख ।

टोटे मारा बानियाँ, धर जोगी का भेष । डोलै भिक्षा माँगता, घर-घर देश-विदेश ।—अ० जिन का दिवाला निकल जाता है वे देश परदेश भीख माँगते फिरते हैं । प्र० बंधु, गंगा दिवाला निकाल कर अब घर-घर टुकड़े खाता फिरता है । सच है कि टोटे मारा बानियाँ, धर जोगी का भेष । डोलै भिक्षा माँगता, घर-घर देश-विदेश ।

ठ

ठग का गुरु कलवार—अ० कलाल ठगों से भी बड़ा ठग होता है । प्र० बेटा, कलाल के पड़ोस में कभी घर न लेना क्योंकि ठग का गुरु कलवार होता है ।

ठगाये से ठाकुर होता है—अ० अधिक पैसा खर्च करने से इंसान की इज्जत बढ़ती है । प्र० पिताजी, आप जान-बूझ कर भी रुपया व्यय कर देते हैं । इस पर उत्तर मिला कि वत्स, ठगाये से ठाकुर होता है ।

ठंठनपाल, मदन गोपाल—अ० जब किसी व्यक्ति की बाजार से साख़ उठ जाये । प्र० महेश ने किसी का लेकर नहीं दिया, इसलिए उसकी साख़ जाती रही । अब ठंठनपाल, मदन गोपाल बना फिरता है ।

ठठेरे-ठठेरे बदलाई नहीं होती—अ० एक ही काम करने वाले लोग आपस में लाभ नहीं लेते हैं । प्र० श्रीराम जब गंगा पार उतर कर केवट को उतराई देने लगे तो केवट ने कहा, हे नाथ, ठठेरे-ठठेर बदलाई नहीं होती । यथा नदी नाव के हम हैं खिवैया, वैतरनी के तुम रघुराई । नाथ कुटुम परिवार सहित, प्रभु वहाँ न लगै हम पर उतराई ।

ठमक होना—अ० गर्व में होकर गुस्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आना। प्र० मालवंत ने लंकेश से कहा, महाराज, जब इन्द्रजीत लड़ने को तैयार हुआ तो राम को फल भई ठमक रिसानो।

ठसक के मारे मरना—अ० अभिमान के मारे आपे से बाहर होना। प्र० बंधु, जिस दिन से तुम्हें नौकरी मिली है, उस दिन से तुम ठसक के मारे मर रहे हो।

ठहर-ठहर के चालिये, जब हो दूरि पड़ाव। डूब जात आँधी चले, झपट चलै जो नाव—अ० यदि तुम्हें कोई बड़ा काम करना हो तो उसको सहज-सहज करो। यदि शीघ्रता करोगे तो हार कर बैठ रहोगे। प्र० सिकन्दर महान् ने महानंद को एक ही आक्रमण में हराने का प्रयास किया सो स्वयं ही हार कर भाग गया। सच है कि ठहर-ठहर के चालिए, जब हो दूरि पड़ाव। डूब जात आँधी चले, झपट चलै जो नाव।

ठाकुर पथरा माला लकड़ी, गंगा जमुना पानी। जब लग मन में सत्य न जामें, चारों वेद कहानी—अ० बिना सच्चाई के दिखावे की भक्ति ठगी है। प्र० गोपियों ने ऊधो से कहा, ऊधो! तुम्हारी बातों से तो ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हारी वही कहावत है कि ठाकुर पथरा माला लकड़ी, गंगा जमुना पांनी। जब लग मन में सत्य न जामें, चारों वेद कहानी।

ठाली बनियाँ बाट बट्टी हाड़ै—अ० जब कोई व्यक्ति फ़िज़ूल कर्म करता है तब कहा जाता है। प्र० अरे, गोपाल क्या कर रहे हो! कुछ नहीं, यहाँ से खाटें उठा कर वहाँ रख रहा हूँ। इस पर उसने उत्तर दिया, बंधु! तुम्हारी तो वही कहावत है कि ठाली बनियाँ बाट बट्टी हाड़ै।

ठाली से बेगार भली—अ० व्यक्ति को कोई काम करना ही ठीक है, चाहे कुछ मिले या न मिले। प्र० बंधु, तुम दिन भर ठाली रहकर कैसे समय बिताते हो, कुछ न कुछ करना चाहिए। क्या तुम जानते नहीं कि ठाली से बेगार भली।

ठांव गुन काजर, ठाँव गुन कारख—अ० एक ही वस्तु के स्थानानुसार पृथक्-पृथक् रूप होते हैं। जैसे वही धुआँ एक स्थान पर काजल और दूसरे स्थान पर स्याही। प्र० बंधु, दीपक का धुआँ जब आँख में लग जाता है तो काजल बन जाता है और वस्त्र पर लगने से स्याही कहलाता है। सच है कि ठाँव गुन काजल, ठाँव गुन कारख।

ठीकरे में भीख भी न पड़ेगी—अ० संतान के निकम्मी होने होने पर ऐसा कहा जाया करता है। प्र० बेटा, मुझे क्या सताता है। तुझे ठीकरे में भीख भी डालने वाला नहीं मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड

डंका बजाना—अ० शत्रु पर आक्रमण करना। प्र० महाराणा ने तन्ना जी से कहा, बंधु, सरजा ने बीजापुर पर डंका बजा दिया।

डकारना—अ० हज़म करना। प्र० रमेश ने महेश से पूछा, बंधु, ललित पर जो रुपये चाहिए थे वे पटे या नहीं। महेश ने जवाब दिया कि अरे कहाँ, वह तो सब डकार गया।

डबडबाना-अ० आँखों में पानी भर आना। प्र० सुभद्रा के करुण-क्रन्दन को सुनकर जनार्दन के नेत्र डबडबा आये।

डम्हारना—अ० जब कोई व्यक्ति किसी पीने की वस्तु को बूंद-बूंद करके जल्दी से पी जाए। प्र० पदमसिंह ने करण-सिंह से कहा कि अरे, दात सबरौई मठा डम्हार गयौ।

डरा सो मरा—अ० जो व्यक्ति उत्साह-हीन हो जाता है वह किसी काम को नहीं कर सकता है। प्र० वीर अभिमन्यु से डर कर सुयोधन द्रोणाचार्य से पुकार करने लगा, तो उन्होंने कहा, हे सुयोधन, उत्साह का त्याग मत कर। क्या तुम नहीं जानते कि डरा सो मरा।

डरें सियार से नाम शेरखाँ—अ० गुणों के अनुसार नाम न होना। प्र० जब वीर अर्जुन के सामने से दुर्योधन भाग गया तो अर्जुन ने कहा कि पहले ही तुम्हारा नाम दुर्योधन रख दिया सो तुमने उसे भी निरर्थक कर दिया। सच है कि डरें सियार से नाम शेरखाँ।

डाग होना—अ० ईख पेल कर समाप्त करना। प्र० बंधु, हरी तो आज डाग हो जाएगा।

डाट में आना—अ० धमकी में आना। प्र० कर्ण ने विकरण से कहा, हे राधेय! देखो शकुनी वृकोदर की डाँट में आकर शस्त्र डाल के भाग गया।

डाढ़ी की लाज रखना—अ० जब किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा भंग होती है तब कहा जाता है। प्र० बस मुझे इतना ही कहना है बेटा कि अपने दादा की डाढ़ी की लाज रखना।

डाढ़ी के बाल चुगना—अ० डाढ़ी का एक-एक बाल उखाड़ना। प्र० भगवान सिंह को उल्टी-सीधी कहते देख मामनसिंह ने कहा कि जा, भाग जा, नहीं तो तेरी डाढ़ी का एक-एक बाल चुग लूंगा।

डाढ़ी पर हाथ पड़ना—अ० उत्साह प्रगट करना। प्र० मलखान ने लाखन से कहा, बंधु, ऊदल की वार्ता को सुनकर क्षत्रियों की डाढ़ियों पर हाथ पड़े।

डाढ़ी में हाथ डालना—अ० चापलूसी करना। प्र० बंधु, मैंने शामलाल की डाढी में बहुतेरा हाथ डाला, पर वह नहीं माना।

डाबर जोग कि हंस कुमारी—अ० जब कोई व्यक्ति अनुचित वस्तुओं का मेल करता है। प्र० श्रीराम सीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को वन ले जाना चाहते थे तब महारानी कौशल्या ने श्रीराम से कहा, वत्स, सीता वन में रहने योग्य नहीं है। कहो तो डाबर जोग कि हँस कुमारी।

डायन के मीत भूत—अ० जैसे के तैसे साथी। प्र० श्रीकृष्ण ने कहा, सात्यकी देखो, कुरुराज को साथी भी शकुनी कर्णादि मिले हैं। इस पर सात्यकी ने कहा—हे माधव ! डायन के मीत भूत ही होते हैं।

डायन को बच्चा सौंपना—अ० किसी जुल्मी को दया का काम सौंपना। प्र० युधामन्यु ने विक्रान्त से कहा, देखो बंधु, सौभद्र ने सुयोधन का विश्वास कर आत्म-समर्पण कर दिया। सच है यह तो डायन को बच्चा सौंपना हो गया।

डायन को भी जमाई प्यारा है—अ० मां को बेटी बहुत प्यारी होती है और उसके सम्बन्ध में आकर पराया जन भी आत्मज पुत्र से अधिक प्रिय हो जाता है। प्र० बंधु, कला जो अपने पुत्रों के लिए भी पैसा नहीं उठाती थी, आज वह अपने दामाद के फँस जाने पर पानी की तरह पैसा बहा रही है। सच है कि डायन को भी जमाई प्यारा है।

डायन खाय तो मुंह लाल और न खाय तो मुंह लाल—अ० बुरा व्यक्ति बुराई करे तो बुरा और न करे तो भी बुरा। प्र० श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि बंधु, भरत को मझली मां ने ही सिखाकर हमें मारने के लिए भेजा होगा। सच है कि डायन खाय तो मुँह लाल और न खाये तो मुँह लाल।

डायन भी दस घर छोड़ कर खाती है—अ० जब कोई व्यक्ति अपने ही सम्बन्धियों को नुकसान पहुँचाता है। प्र० नारद ने अक्रूर से कहा, वंधु, कंस ने अपनी बहन देवकी की संतान का वध किया। क्या वह यह न जानता था कि डायन भी दस घर छोड़ कर खाती है।

डार डार पात पात होना—अ० जब कोई किसी को बातों में समझाए। प्र० योगीराज श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को बहुतेरा उपदेश किया; किन्तु वह डार डार तो पात पात।

डाल का टूटा पत्ता और हाथ से छूटा कत्ता फिर नहीं आता—अ० जब कोई बात हाथ से निकल जाती है तो फिर नहीं बना करती है। प्र० जब अर्जुन बाण छोड़कर पछताने लगा तो योगीराज कृष्ण ने कहा; हे धनंजय ! डाल का टूटा पत्ता और हाथ से छुटा कत्ता फिर नहीं आता है।

डूबते को तिनके का सहारा बहुत होता है—अ० मुसीबत में थोड़ी मदद भी मिल जाए तो वह भी बहुत होती है। प्र० श्रीराम को सीता के पाने में बानरों की मदद भी इन्द्र की मदद के समान थी। सच है कि डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत होता है।

डूबा वंश कबीर का जो उपजे पूत कमाल—अ० जब कोई व्यक्ति अपने कुलधर्म के विरुद्ध चलता है तब कहा जाता है। प्र० धृतराष्ट्र से गांधारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कहा, महाराज, सुयोधन से कुरु-कुल डूब गया, क्योंकि उसने कुलधर्म छोड़ दिया है। वंधु, अब वही पुरानी कहावत याद आती है कि डूबा वंश कबीर का जो उपजे पूत कमाल।

डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना—अ० सबसे अलग रहना। प्र० शीरीं की तलख़ बात ना हरगिज़ उठायेंगे, हम तो दूर डेढ़ ईंट की मसजिद बनायेंगे।

डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना—अ० एक दूसरे से मिलकर न रहना। प्र० जिस समय भगवान कृष्ण का जन्म हुआ उस समय भारतवर्ष के सब राजा अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी पका रहे थे।

डोर छोड़ना अ० किसी काम की देख-भाल न करना। प्र० चामुंडराय ने कन्ह से कहा, चाचा जी, आल्हा के भरोसे पर परमाल ने शासन की डोर छोड़ दी है।

डोर ढीली छोड़ना—अ० किसी काम को सुधार कर न करना। प्र० जब महमूद गज़नवी ने देखा कि भारत के राजाओं ने अपने-अपने राज्य की डोर ढीली छोड़ दी है तो उसने सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण कर दिया।

डोर मारना—अ० चक्कर देना। प्र० रमेश को शकुन बहका कर अपने साथ ले गया और फिर चला आया। इस पर महेश ने शकुन से पूछा कि बंधु, रमेश ने तुम्हारा काम कर दिया। इस पर उसने उत्तर दिया कि कहाँ, मैं तो उसे डोर मारने ले गया था।

डोर में डालना—अ० अपनी ओर करना। प्र० भीम ने नकुल से कहा कि वत्स, छली गाँधारराज ने सेवा शुश्रूषा द्वारा शल्य को अपनी डोर में कर लिया है।

डोर में होना—अ० बस में होना। प्र० बंधु मुझे सत्यप्रकाश का बड़ा खटका है। इस पर उसने जवाब दिया कि उसकी कुछ चिन्ता मत कीजिए। वह तो मेरी डोर में है।

डोर हाथ में होना—अ० किसी कार्य को अपने हाथ में लेना। प्र० बीरबल ने राजा मानसिंह से कहा कि बादशाह अकबर ने आगरे पहुँच कर राज्य की डोर अपने हाथ में ले ली।

डोरे डालना—अ० किसी कार्य के करने के उपाय करना। प्र० पाण्डवों को जनुगृह में बसा कर पुरोचन ने कहा कि इन्हें फँसाने के लिए तो मैं बहुत दिनों से डोरे डाल रहा था।

डोम का लौंडा बाबा जी नाम—अ० जब किसी नीच व्यक्ति को ऊँची पदवी मिल जाए। प्र० धनुवा वैरागी को हाथी पर चढ़ा देख चौधरी पलटा सिंह ने कहा, अबे गधे, क्यों आपे से बाहर हो रहा है। तेरी तो वही कहावत है कि डोम का लौंडा बाबा जी नाम।

डोम डोली पाठक पाय—अ० जब नीच का आदर और ऊँच का निरादर किया जाता है। प्र० बंधु, कैसा उल्टा समय आ गया है कि सिंह तो पिंजरे में पड़ा है और कुत्ता हाथी की सवारी कर रहा है। सच है कि डोम डोली पाठक पाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डोमनी का जाया, चपनी बजाया—अ० जो व्यक्ति जिस जाति का होता है, वह अपने जातीय गुणों को अपने आप खोल देता है। प्र० बंधु, आज बाज़ार अच्छी-से-अच्छी चीजों का लगा था पर सरजू ने काठ की हाँडी ही खरीदी। सच हैं कि डोमनी का जाया, चपनी बजाया।

डोमों की लड़ाई में जीभों की लपालपी—अ० जब दो कमज़ोर व्यक्तियों का माँगना खाना ही उद्यम हो, वे आपस में लड़ें तो गाल बजा कर ही बैठे रहते है। प्र० हरिया कहार और सतपाल धोबी को लड़ते हुए देखकर हरीश ने बुद्धू से कहा, बंधु, मैं तो जानता था कि दोनों के सिर रंगे जायेंगे पर वे तो बकबका कर बैठ रहे। इस पर बुद्धू ने हँस कर कहा, और होता ही क्या, डोमों की लड़ाई में जीभों की लपालपी।

डोमों के घर बड़ाइयों ने खा लिए—अ० जब कोई छोटा व्यक्ति अपनी झूठी शेखी बघारता है। प्र० चेता चमार को डींगें मारते देख सरला ने कहा कि जा, अपनी जूती बना खा, डोमों के घर बड़ाइयों ने ही खा लिए हैं।

डोमों ने कहीं गाँव मारे हैं—अ० डोमों ने कभी लड़ाई नहीं जीती है। प्र० सरना और मंगना दोनों ही लहना। सिंह से लड़ने के लिए गए। परन्तु उसे लाठी सँभालते देख भाग खड़े हुए। यह देख लोगों ने कहा कि ठीक है कहीं डोमों ने भी गाँव मारे हैं।

डोली न कहार, बीबी भई तैयार—अ० जब कोई चीज़ मौजूद न हो और उसके भरोसे पर कोई कार्य करना। प्र० बंधु, अभी तो आटा भी नहीं मला, तुम पहले ही आसन पर खाने के लिए आ बैठे। सच है कि डोली न कहार, बीबी भई तैयार।

ढ

ढंढा वाला जाड़ा टाला—अ० उपाय करने से कार्य सिद्ध होता ही है। प्र० युधामन्यु ने विक्रांत से कहा कि धनंजय ने जनार्दन की मदद से पाशुपत अस्त्र पाकर जयद्रथ का वध कर दिया। सच है कि ढंढा वाला जाड़ा टाला।

ढके को ढके ही रहने देना—अ० पिछली बातों को नहीं उखाड़ना। प्र० कला और चमेली दोनों आपस में विवाद करने लगीं तब कला ने कहा कि चुप बैठी रह, ढके को ढके ही रहने दे।

ढपोल शंख होना—अ० कोई ऐसा व्यक्ति जो कहे बहुत और करे कुछ नहीं। प्र० महेश ने सोहन से दस रुपये माँगे तो उसने कहा कि दस का क्या करोगे पचास लो। जब देने का वक्त आया तो दिया कुछ नहीं। इस पर महेश ने कहा कि तुम तो कोरे ढपोल शंख निकले।

ढल गया पानी, तो क्या बाँदी क्या रानी—अ० जब कोई व्यक्ति बेशर्म हो जाता है तो वह सब को एक लाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हाँकता है। प्र० व्यास जी से द्रोणाचार्य ने कहा कि हे द्वीपाय दुर्योधन ने जनार्दन का भी निरादर किया। सुन कर व्यास जी ने उत्तर दिया कि आचार्य, जब ढल गया पानी, तो क्या बाँदी क्या रानी।

ढलती फिरती छाँह—अ० सदैव एक-सी स्थिति किसी की नहीं रहती है। प्र० नारद ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा कि धर्मराज, जिस राजा नल का राज्य इतना बड़ा था, उसे आज तीन दिन निराहार रहने के बाद जल पीने को मिला है। सो राजन, यह तो ढलती फिरती छाँह है।

ढाई दिन क़ब्र में भी भारी हैं—अ० सब कोई आज़ाद रहना चाहता है। प्र० बंधु, तुम तो छात्रावास में छह मास भी नहीं ठहरे। इस पर उसने उत्तर दिया कि बंधु, मैं तो जीवित हूँ। ढाई दिन तो क़ब्र में भी भारी हैं।

ढाक के तीन पात—अ० ऐसा व्यक्ति जो कुछ प्रगति न कर सके। प्र० धनंजय ने योगीराज कृष्ण से कहा, हे मधुसूदन, बताओ कि कुरुराज पर आपके उपदेश का क्या प्रभाव हुआ। यह सुनकर योगीराज कृष्ण ने कहा, कुछ नहीं धनंजय, वही ढाक के तीन पात।

ढाके के बंगाल और कूजे के कंगाल - अ० जहाँ जो वस्तु अधिकता से होती हो और वहीं के वासियों को न मिले। प्र० बंधु, अरब देश में अरबी बोली जाती है पर अरब के लोग भारत में अरबी पढ़ने के लिए आते हैं। इस पर उत्तर मिला कि क्या तुमने सुना नहीं कि ढाके के बंगाल और कूजे के कंगाल।

ढाके में डाके—अ० जहाँ उलझन होती है वहाँ हरेक व्यक्ति जो चाहे मार खाता है। प्र० बंधु, कवि नरोत्तमदास को छंद ज्ञान कुछ न होते हुए भी मरहठी बोल में आनन्द आ रहा है। इस पर उसने उत्तर दिया, क्या तुमने सुना नहीं कि ढाके में डाके।

ढाल में शेर—अ० जब कोई वस्तु गुम हो जाती है तो उसकी खोज के लिए चाहे जहाँ हाथ डाल देते हैं। प्र० आज मेहताब सिंह का ऊँट खो गया था। उसके खोजने के लिए उसने कुल्हिया में हाथ डाल दिया था। सच है कि ढाल में शेर।

ढोर ढोर चमरिया पूछे ढांडा मरै कि जीवै—अ० जब कोई व्यक्ति एच-पेच के द्वारा अपना स्वार्थ किसी व्यक्ति से पूरा करना चाहता है। प्र० बंधु! वेदी ने घण्टों चक्कर देकर मुकद्दमे की बातें पूछनी चाहीं पर मैं चुप ही रहा। इस पर सुनने वाले ने कहा कि उसकी तो वही कहावत है कि ढोर ढोर चमरिया पूछे ढांडा मरै कि जीवै।

ढोर मरै न कौआ खाय—अ० झूठी आशा रखना। प्र० बंधु, शास्त्री जी को पेंशन मिले तो मुझे सिलेक्शन ग्रेड मिले। इस पर सुनने वाले ने कहा कि तुम्हारी तो वही कहावत है कि ढोर मरै न कौआ खाय।

ढोल के डंके कहना—अ० किसी बात को सब के सामने ललकार कर कहना। प्र० धनंजय ने योगीराज कृष्ण की ओर देखते हुए, गांडीव हाथ में लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, कृष्णी मैं सब के सामने ढ़ोल के डंके कहता हूँ कि कल सूर्य से पूर्व अगर जयद्रथ का वध न करूँगा तो तुषानल में जल मरूँगा।

ढोल गँवार पशु अरु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी—अ० इन सब को जितना खींचा जाये उतना ही अच्छा है। प्र० शामलाल ने अपनी घर वाली को बिल्कुल ढील दे रखी है। वह नहीं जनता कि ढोल गँवार पशु अरु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी होते हैं।

ढोल में पोल—अ० जो व्यक्ति ऊपर का ढकोसला बनाये रहते हैं, उनके पास कुछ नहीं होता है। प्र० इन्दल ने ब्रह्मा से कहा, राजकुमार ! धाधू शस्त्र-अस्त्र का तो इतना ढम्मूच बाँधे रहता है पर खेत से भागता ही दिखाई देता है। इस पर ब्रह्मा ने कहा कि वीर ढोल में पोल होती है।

त

तज-गज मुक्ता भीलिनी, पहिरत गुंजा हार—अ० जो जिस के गुण को जानता है, वह उसी को ग्रहण करता है। प्र० बंधु, भावना ने उस मूर्ख को काजू की बरफी खाने को दी पर वह उसे छोड़ पास में रखे बताशों को खाने लगा। सच है कि तज-गज मुक्ता भीलिनी, पहिरत गुंजा हार।

तकदीर के लिखे को तदवीर क्या करै—अ० भाग्य प्रबल होता है। प्र० द्रोणाचार्य ने कृप से कहा, हे कृप, अनेक उपाय करने पर भी गांधार की हार ही हुई। सच है कि तकदीर के लिखे को तदवीर क्या करै।

तकदीर लड़ती है-अ० भाग्य बलवान है। प्र० बंधु, इस बार पर्चे कैसे हुए। इस पर उसने उत्तर दिया कि किये तो अच्छे हैं पर वहां तो तकदीर लड़ती है।

तकी पराई आस, अरु घर का किया नाश—अ० जो पराये भरोसे पर काम करता है, उसका घर नष्ट हो जाता है। प्र० दुर्योधन ने द्रोणाचार्य आदि के भरोसे पर पाण्डवों से ठानकर अपना सर्वस्व खो दिया। सच है कि तकी पराई आस, अरु घर का किया नाश।

तख्त पर बैठे या तख्त पर लेटे—अ० सम्मान से रहे या मर जाए। प्र० भूरिश्रवा ने सोमदत्त से कहा कि देखो धर्मराज युधिष्ठिर ने या वनवास किया था या राज्य। सच है कि तख्त पर बैठे या तख्त पर लेटे।

तख्ता लौट गया—अ० नष्ट होना। प्र० गौरव गुमान शिवा ने मुगल साम्राज्य का तख्ता लौट दिया।

तन उजला मन साँवला, बगुले का सा भेष। ऐसे ते कागा भलौ बाहिर भीतर एक—अ० कपटी व्यक्ति के लिए ऐसा कहा जाता है। प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान जी ने कालनेमि से कहा, अरे, कपटी तू बगलाभगत है। तुझसे तो कौआ अच्छा जो तन-मन से एकसा है। तेरी तो वही कहावत है कि तन उजला मन सांमला, बगुले का सा भेष। ऐसे ते कागा भलौ बाहिर भीतर एक।

तन की कर ले तुनतुनी, मन के कर ले तार। जश गा पुनि भगवान कौ अवसि मिलै कर्त्तार--अ० इन्द्रियों को मन से अपने अधनी करके ईश स्तुति कर। फिर अवश्यमेव ध्यानावस्थित हो जाएगा। प्र० नारद जी ने विश्वामित्र से कहा, कौशिक मन क्षत्रित्व का त्याग कर तप करो, ब्रह्मऋषि आप ही हो जाओगे। क्या तुमने सुना नहीं कि तनकी कर ले तुनतुनी, मन के कर ले तार। जश गा पुनि भगवान अविस मिलै कर्त्तार।

तन की तनक सराय में, नैक न पाओ चैन। कूच नगारा सांस का, बाजत है दिन रैन—अ० मौत का कोई ठिकाना नहीं। प्र० बंधु, घनश्याम जगन्नाथ-पुरी की यात्रा पर गया था पर बेचारा गाजियाबाद पहुंचते ही परलोक सिधार गया। सच है कि तन की तनक सराय में, नैक न पाओ चैन। कूच नगारा साँस का बाजत है दिन रैन।

तन की लगी बुझावै राम—अ० मुसीबत में भगवान ही सहायक है। प्र० शिवजी ने नारद से कहा, मुनीन्द्र, तुन्हें विष्णु ही उपदेश दे सकते हैं। सच है कि तन की लगी बुझावै राम।

तन की सुध नहीं काशी में वास—अ० मूर्ख जब विद्वान् मण्डली में रहने लग जाए। प्र० देखो ऊधो को गोकुल की गली में अपनी देह की तो सुध न रही पर गोपियों को उपदेश करने लगा। सच है कि तन की सुध नहीं, काशी में वास।

तकुए के से बल निकालना—अ० टेढ़े व्यक्ति को सीधा कर देना। प्र० वीर अर्जुन ने सुयोधन से कहा, क्या ऐंठे फिरते हो, किसी दिन तकुए के से बल निकालूंगा।

तन गुदड़ी मन धागा, मन मौला सौं लागा—अ० तन का आधार मन है। प्र० नारद जी से वशिष्ठ ने कहा कि हे देर्वाप! मन वश में होते ही इन्द्रियाँ आप ही वश में हो जाती हैं। क्या तुमने सुना नहीं कि तन गुदड़ी मन धागा, मन मौला सौं लागा।

तन तकिया अर मन निष्काम, अब कबीर पाया विश्राम—अ० जब इन्द्रियाँ अपनी सहायक हो गईं तो मन की सम्पूर्ण इच्छाएँ शान्त हो गईं और मन स्थिर हो गया। प्र० योगीराज कृष्ण ने अर्जुन से कहा, पार्थ इन्द्रियों को रोक, मन शान्त आप ही हो जायेगा। क्या तुम जानते नहीं कि तन तकिया अर मन निष्काम, अब कबीर पाया विश्राम।

तनतना दिखाना—अ० अपना प्रताप प्रगट करना। प्र० गदाधारी भीम ने शकुनी से कहा कि यहाँ क्या गाल बजाता है, रणक्षेत्र में तेरा तनतना देखूंगा।

तन तपाय, मन हुलसाय—अ० तपस्वी ज्यों ज्यों देह को ताप ताप कर वश में करते हैं त्यों त्यों मन खुश होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। प्र० उद्यालक ने विश्वामित्र से कहा, हे कौशिक, ज्यों ज्यों नारद ने देह को कसा, त्यों त्यों मन हंसा। सच है कि तन तपाय, मन हुलसाय।

तन तागा तोरा, मन मोरा—अ० जब दैहिक सम्बन्ध न रहा तो मन इस जगत् से फिर जाता है। प्र० शिव जी ने उमा से कहा, हे गिरिराज-किशोरी, कृष्ण जितेन्द्रिय होकर सदैव आनंदित रहते। हैं वे कहते हैं कि तन तागा तोरा, मन मोरा।

तन तागा न उदर अन्न—अ० देह पर कपड़ा नहीं और पेट पर अन्न नहीं। प्र० सुदामा की पत्नी ने कहा कि हे नाथ, तन तागा न उदर अन्न, अब तो आप द्वारका जाइये।

तन ताजा, कलंदर राजा—अ० जब उदर का समाधान हो जाता है तो भिखारी धनवान की सी बातें मारता है। प्र० बंधु, अब तो बड़ी बातें बनाते हो पर जब तक पेट में नहीं पड़ी थी तब तक चुप थे। सच है कि तन ताजा, कलंदर राजा।

तन ताया, हरि पाया—अ० जब इंद्रियाँ वश में हो जाती हैं तो मन भगवान में लीन हो जाता है। प्र० तुम इन्द्रियों को वश में करके सती शिरोमणि हो गई हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि तन ताया, हरि पाया।

तन दिया है पर मन नहीं दिया है—अ० दैहिक कर्म से सहायक होना। प्र० दुर्योधन ने भीष्मपितामह से कहा, हे पितामह, आप पार्थ को अपना सर्वप्रिय पौत्र समझ कर उसकी शुभ चाहते हैं सो उसे नहीं मारते हैं। इस पर भीष्म पितामह ने उत्तर दिया, हे सुयोधन, तुम्हें मैंने तन दिया है पर मन नहीं दिया है।

तन दे तो मन ले—अ० अगर दूसरे को वश में करना हो तो मेहनत कर। प्र० धनुर्धारी अर्जुन ने रात दिन मेहनत करके द्रोणाचार्य को अपना लिया था। सच है कि तन दे तो मन ले।

तन पर नहीं धागा, नाम चंद्रभागा - अ० गुणों के अनुसार नाम न होना। प्र० अरे बंधु, पास तो एक कोड़ी नहीं और नाम धरवा लिया हज़ारी लाल। सच है कि तन पर नहीं धागा, नाम चन्द्रभागा।

तन पर नाहीं लत्ता, पान खाय अलबत्ता—अ० झूठी मूर्खता दर्शाना। प्र० तुम्हारे पास खाने की तो तंगी रहती है पर तेल बालों में अवश्य रहता है। तुम्हारी तो वही कहावत है कि तन पर नहीं लत्ता, पान खाय अलबत्ता।

तन बन चिन्ता अनल है, निशि दिन ढाझै ताहि—अ० देह को चिन्ता इसी तरह जलाती है जिस तरह वन को दावानल। प्र० जयद्रथ ने सुयोधन से कहा, हे कुरूराज! आप को क्षय की चिन्ता रात दिन जलाती है सो अब निर्बल होते जाते हैं। क्या आप नहीं जानते हैं कि तन बन चिन्ता अनल है, निशि दिन ढाझै ताहि।

तन लागी धुपड़ी, बलाय छावै झुपड़ी—अ० थोड़े से प्रयास से कोई दुःख दूर हो जाये तो मेहनत क्यों करे? प्र० श्याम ने अपने पड़ोसी गडरिये से कहा, इतना जाड़ा पड़ रहा है, हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्त सी-सी करते रहने से कोई छप्पर क्यों नहीं डाल लेते हो। इस पर पड़ोसी गडरिये रत्नसिंह ने उत्तर दिया, भय्या, धूप लगते ही जाड़ा दूर हो जाता है, जानते नहीं कि तन लगी धुपड़ी, बलाय छावै झुपड़ी।

तना सिर से बाँधना—अ० पिटने को तैयार होना। प्र० अब कभी इधर आया तो सिर से तना बाँध कर आना।

तरकश का तीर, घाव करे गम्भीर—अ० तीर जब लग जाता है तो फिर मनुष्य नहीं बचता है। प्र० महाराज रणसिंह ने एक ही तीर में हिरन को मार दिया। सच है कि तरकश का तीर, घाव करे गम्भीर।

तलवार का खेत हरा नहीं होता—अ० जिस नगर में तलवार द्वारा सर्व-साधारण को काट दिया जाता है वह नगर फिर नहीं बसता। प्र० नादिर-शाह की काटी हुई पुरानी दिल्ली नहीं बसी। सच है कि तलवार का खेत हरा नहीं होता है।

तलवार का घाव भरता है, पर बात का नहीं भरता—अ० चुभती हुई बात को व्यक्ति जन्म भर नहीं भूलता है। प्र० द्रौपदी ने जो सुयोधन के बोली मारी उसे वह जन्म भर न भूला। सच है कि तलवार का घाव भरता है, पर बात का नहीं भरता।

तलवार की झपट बुरी होती है—अ० लड़ाई में तलवार को माथे पर शूरवीर ही खाता है। प्र० तन्ना जी ने महाराणा प्रताप से कहा, राजा समरसिंह अस्सी घाव खा कर गिरे। सच है कि तलवार की झपट बुरी है।

तलवार तो दे दी, पर म्यान मर मार के देंगे—अ० जब कोई व्यक्ति असली वस्तु तो दे दे पर साधारण वस्तु पर हठ कर जाए। प्र० बहादुरशाह ज़फर ने अपना सारा खज़ाना तो दे दिया किन्तु कोहेनूर हीरे के बदले में मरना अच्छा समझा। यह तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि कि तलवार तो दे दी, पर म्यान मर मार के देंगे।

तलवार मारे एक बार, अहसान मारे बार-बार—अ० जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के साथ भलाई करता है तो वह भलाई उसे हर पल दबाये रहती है। प्र० मुग़ल सम्राट् अकबर ने जो रघुपति सिंह को क्षमा किया, इस उपकार का ध्यान उसे सदा ही रहा। सच है कि तलवार मारे एक बार, अहसान मारे बार-बार।

तलुओं की सी कहूँ या जीभ की सी—अ० खुशामद की कहूं या ठीक ठीक। प्र० श्री राम ने दुर्मुख से पूछा, दुर्मुख, नगर की कैसी स्थिति है। इस पर दुर्मुख ने कहा, प्रभु, तलुओं की सी कहूँ या जीभ की सी।

तले का दम तले और ऊपर का ऊपर रह गया—अ० जब कोई बुरी ख़बर सुन कर सुन्न पड़ जाए। प्र० वीर अभिमन्यु के निधन का समाचार सुनकर पाण्डवों का तले का दम तले और ऊपर का ऊपर रह गया।

तले पड़ी का सोच क्या—अ० बीती बात पर पछताना नहीं चाहिए। प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंका के युद्ध का उल्लेख करते हुए श्रीराम ने कहा कि तले पड़ी का सोच क्या ?

तवा चढ़ा और जी बढ़ा—अ० भूखा रोटी होते देख कर प्रसन्न होता है। प्र० अर्जन देव सारे दिन का भूखा था। जब उसकी पत्नी ने बाज़ार से लौट कर रोटी चढ़ाई तो उसकी आँखें चमक उठीं। सच है कि तवा चढ़ा और जी बढ़ा।

तवा चढ़ा मिसरानी, घर में अन्न न पानी—अ० किसी अनुपस्थित वस्तु के भरोसे कोई कार्य शुरू करना। प्र० बंधु, जगतसिंह के घर वाले दाने-दाने को मुहताज हैं और वह मुहल्ले भर को चूलनौत दे आया। यह तो वही कहावत हुई कि तवा चढ़ा मिसरानी, घर में अन्न न पानी।

तवा न कुंडा ना चुलहारी, कहै नारि मैं हूँ भटियारी—अ० झूठा ढकोसला बनाना। बंधु, रहने को तो उसके पास घर नहीं, नाम है धरेवश्र। सच है कि तवा न कुंडा ना चुलहारी, कहै नारि मैं हूँ भटियारी।

तवे की तेरी घई की मेरी—अ० स्वार्थी जो अपना ही हित चाहे। प्र० बंधु, ये ढेरी के होले तो मुझे दे दो और तुम इन बूंटों को अपने लिए कर लेना। सच है कि तवे की तेरी, घई की मेरी।

तांत बाजी राग पाया—अ० व्यक्ति की थोड़ी-सी बात से उसका भेद खुल जाता है। प्र० कालनेमि की कपट-भरी बातों से हनुमान जी ने सब भेद जान लिया। सच है कि तांत बाजी राग पाया।

तांत न रूअ कड़ेरे घर लड़ाई—अ० विना बात का क्लेश करना। प्र० विश्वास ने परेश से कहा कि जब मैं मोटर साईकिल लूंगा तो पहले मैं उसकी सवारी करूँगा। सुन कर परेश ने उत्तर दिया कि नहीं, पहले मैं सवारी करूँगा। इस पर दोनों भाइयों में झगड़ा छिड़ गया। यह तो वही कहावत हुई कि तांत न रूअ, कड़ेरे घर लड़ाई।

ताते दूध बिलैया नाचे—अ० जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु के लेने की आशा करे, जिसे वह न ले सके, न छोड़ सके। प्र० महाराजा दशरथ ऐसी दुविधा में थे कि वे न तो राम को वनवास भेज सकते थे और न घर ही रख सकते थे। सच है कि ताते दूध बिलैया नाचे।

तान तमूरा लेकर चला जा—अ० जब कोई व्यक्ति किसी को किसी जगह से उठाता है। प्र० मानवेन्द्र ने साधु महाराज का ढोंग देखकर कहा कि ख़ैर इसी में है कि अपना तान तमूरा लेकर चले जाओ।

तान तोड़ना—अ० किसी का गुस्सा किसी पर उतारना। प्र० द्रोणाचार्य की पार्थ से तो पार वसाई नहीं, धर्मराज युधिष्ठिर पर तान आ तोड़ी।

ताना घाटि न बाना घाटि—अ० जब दोनों एक से मिल जाएँ। प्र० भूरिश्रवा और सात्यकी में युद्ध आरम्भ हुआ पर दोनों में से कोई भी नहीं हारा। इस पर पार्थ ने कहा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताना घाटि न वाना घाटि ।

तानो वानो एक सौ, कोरी महा गँवार—अ० जब किसी कार्य के करने की वस्तु तो ठी हो पर उस कार्य को करने वाला मूर्ख हो । प्र० व्यासदेव ने नारद मुनि से कहा, देवर्षि, श्रोता और ग्रन्थ तो उपस्थित हैं पर वक्ता का भाषण ठीक नहीं है । सच है कि तानो वानो एक सौ, कोरी महा गंवार ।

तार तोड़ना—अ० गवैयों में परस्पर हास्य में ऐसा कहा जाता है । सरस्वती देवी ने नारद मुनि से कहा कि देवर्षि, आज तो आप कुछ अलाप लो । आपने तो वीणा के बहुत तार तोड़े हैं ।

तार देना—अ० पार लगा देना । प्र० प्रभु राम की चरण-रज ने अहल्या को संसार से तार दिया ।

तारी बिनु का तारौ, नारी बिनु का सारौ—अ० बिना किसी वस्तु की उपस्थिति के कोई कार्य नहीं होता है । प्र० कनक खेत कुड़ी पेट, आजमाई मडे खा । यह तो वही बात हुई कि तारी बिनु का तारौ, नारी बिनु का सारौ ।

ताल की सफरी, सांवन में अफरी—अ० जब किसी नीच व्यक्ति को अधिक पैसा मिलने पर गर्व हो जाता है । प्र० श्रीकृष्ण ने गांधार से कहा कि सुयोधन ग्यारह अक्षौहिणी सेना मिलने से तुम्हारी वही कहावत है कि ताल की सफरी, सांवन में अफरी ।

ताल न तलैया बग्रौ सिधारे भैया—अ० अनुपस्थित वस्तु के आधार पर किसी कार्य को शुरू करना । प्र० अस्त्र-शस्त्र तो हाथ में था ही नहीं, श्रेय सिंह मारने चल दिया । यह तो वही बात हुई कि ताल न तलैया बग्रौ सिधारे भैया ।

ताल में ताल गाना—अ० किसी की बात में बात मिलाना । प्र० उद्धव जी तुम तो गोपियों को उपदेश देने के लिए गए थे, वहाँ जाकर तुम भी उनकी ताल में ताल मिलाने लग गए ।

ताल में न होना—अ० जब कोई राग अलापने वाला व्यक्ति ठेके के साथ नहीं चलता है । प्र० तानसेन ने बैजू बावरे से कहा कि वत्स, भैरवी के सुर तो ठीक हैं पर ताल में नहीं हैं ।

तिन तोड़ना—अ० माताएँ पुत्रों को कुदृष्टि से बचाने के लिए टोटका करती हैं । प्र० यशोदा माता कृष्ण को देख देख कर नित्य तिन तोड़ती थीं ।

तिरवैनी तन में—अ० गंगा, यमुना और सरस्वती इसी देह में हैं । प्र० इंगला नाड़ी जो नासिका के दाहिने सुर में है, सो तो गंगा और पिंगला नाड़ी जो बायें सुर में है, सो यमुना और सुषुम्ना इन दोनों के मध्य में सरस्वती है, इसलिए तिरवैनी तन में ।

तिरिया तुझ में तीन गुन, औगुन भरे अपार । मंगल गावै सत चढ़ै, को खन उपजै लाल—अ० स्त्रियों में पुत्र उत्पत्ति और मंगल गान तथा पतिव्रत धर्म के अलावा अनेक अवगुण हैं । प्र० शिवजी ने उमा से कहा कि शैलसुता, देखो कैकेई ने कैसा कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। सच है कि तिरिया तुझ में तीन गुन, औगुन भरे अपार। मंगल गावैं सत चढ़ै, को खन उपजै लाल।

तिरिया तेरह पुरुष अठारह—अ० कन्या तेरह वर्ष की और वर अठारह वर्ष का हो तो ऐसी जोड़ी सुख से रहती है। प्र० वंधु, परबतिया ने अपनी सोलह वर्ष की बेटी की शादी तेरह वर्ष के लड़के के साथ कर दी। क्या उसे मालूम न था कि तिरिया तेरह पुरुष अठारह।

तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार—अ० सती एक बार वरती है और सज्जन एक बार कहते हैं। प्र० अयोध्यापति महाराजा दशरथ ने रानी कैकेई को वर देने के समय कहा, माँग लो, क्या तुम जानती नहीं कि रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाये पर वचन न जाई। सच है कि तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।

तिरिया बिन नर, घूरे कौ खर—अ० विना स्त्री का पुरुष ऐसा है जैसा कूड़ी का गधा। प्र० मोहन ने सोहन से कहा, वंधु, विना पत्नी के कोई फ्लैट किराये पर नहीं देता है। सच है कि तिरिया विन नर, घूरे कौ खर।

तिरिया मत पर जो चलै, सो घर बारह-घाट—अ० जिस घर में नारी प्रधान होती है, वह घर नष्ट हो जाता है। प्र० श्रीकृष्ण की पत्नी ने उनसे कहा, प्रभु, प्रवल द्रोपदी ने कौरव और पाण्डवों का नाश करा दिया। सच है कि तिरिया मत पर जो चलै, सो घर बारह घाट, कौरव पाण्डव वंश को कियो द्रौपदी नाश।

तिल होय तो तेल निकले—अ० गुन बिना नाम से कोई लाभ नहीं। प्र० वंधु, कनक नाम पर मोहित होकर धतूरा कड़े बनने के लिए दे दिया। पर वह सोना तो न था, सत्य है कि तिल होय तो तेल निकले।

तीतर के मुंह लक्ष्मी—अ० मुकद्दमे में लोग ऐसा कहा करते हैं। प्र० बंधु, मुकद्दमे में न जाने क्या होगा ? उत्तर मिला, वंधु, तीतर के मुँह लक्ष्मी है, न जाने क्या हो।

तीतर पंखी बादरी उठी हमारे देश। चल हंसी निज देश को अब तौ रहैं न शेष--अ० तीतर पंखी वदली अवश्यमेव बरसती है। प्र० राजा नल ने दमयन्ती से कहा, रानी अपने घर को चलो। हे पति क्यों, क्या तुम देखती नहीं हो कि तीतर पंखी बादरी उठी हमारे देश। चल हंसी निज देश को, अव तौ रहैं न शेष।

तीतर बाँये बोले भाई, गमन समय अति ही सुखदाई—अ० तीतर की बायीं ओर से आवाज़ आने पर यात्रा शुभ मानी जाती है। प्र० रमेश और महेश जैसे ही नगर से निकले कि वायीं ओर से तीतर वोल उठा। इस पर रमेश ने कहा कि तीतर बाँये बोले भाई, गमन समय अति हो सुख-दाई।

तीन बुलाये तेरह आये,
देखो यहाँ की बानी।
ऊधो माधो यों कहैं,
तो देउ दाल में पानी।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन बुलाये तेरह आये,
देखो यहाँ की रीति।
बाहर वाले खा गये,
पर घर के गावें गीत ॥

अ० जब थोड़े व्यक्ति बुलाये जायें और बहुत से चले आवें और खाना निपट जाए तो ऐसा कहा जाता है। प्र० महेन्द्र ने यतीन्द्र से कहा, बंधु, हमने चार ब्राह्मण नौते थे पर आ गये चौदह इसलिए बाद में दाल रोटी बनवानी पड़ी। सच है कि तीन बुलाये तेरह आये, देखो यहाँ की बानी। ऊधो माधो यों कहैं, तो देउ दाल में पानी··।

तीन में न तेरह में, सत्तर में न बहत्तर में। मियाँ तुम किन गली के कुत्तों में—अ० जब कहीं किसी की गिनती न हो। प्र० बंधु, सभा में जाओगे। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि मैं तो तीन में न तेरह में, सत्तर में न बहत्तर में। मियाँ तुन किन गली के कुत्तों में।

तीन लोक से मथुरा न्यारी—अ० जो सबसे अलग-अलग रहता हो। प्र० बंधु, मैं किसी झगड़े में नहीं पड़ता हूँ। मेरी तो तीन लोक से मथुरा न्यारी है।

तीरथ गये मुंडाये सिद्ध—अ० बाहर जाकर कुछ-न-कुछ मोल लाना ही पड़ता है। प्र० बंधु, सत्येन्द्र ने इतना रुपया क्यों खोया। अरे बंधु, तीरथ गए मुंडाए सिद्ध।

तीर नहीं तो तुक्का ही सही—अ० दाल नहीं तो दलिया ही सही। प्र० रमेश ने सतीश से कहा, बंधु, कोई धन्धा करो। यदि धन न जुड़ा हो तो भोजन तो मिलेगा ही। क्या तुम जानते नहीं कि तीर नहीं तो तुक्का ही सही।

तीसमारखाँ बने फिरते हो—अ० झूठा गर्व दिखाना। प्र० दस्युओं को भगाने के लिए गनपति को बुलाया गया तो वह घर में घुस गया। तब लोगों ने कहा कि बस, वैसे ही तीसमारखाँ बने फिरते हो।

तुनतुनी बजाते बेटा खाते शक्कर घी—अ० जब कोई मुफ्त की रोटियाँ खाने वाला व्यक्ति किसी को मेहनत करते देखता है तो कहता है। प्र० एक वैरागी ने तुरपसिंह को लड़ाई पर जाते देख कर कहा कि तुनतुनी बजाते बेटा खाते शक्कर घी।

तुमने कच्ची चबाई, हमने भून भून खाई—अ० तुमने मूल खो दिया और हमने व्याज में दिन काटे। प्र० बंधु, तुम तो सुखी हो पर मैं दुःखी हूँ। इस पर उसने कहा कि तुमने कच्ची चबाई, हमने भून-भून खाई।

तुम क्यों किसी के फटे में पैर देते हो—अ० क्यों किसी के झगड़े में पड़ते हो। प्र० बंधु, तुम क्यों किसी के फटे में पैर देते हो, जानते नहीं कि ऐसे कामों में सदा बुराई ही मिलती है।

तुम जानो तुम्हारा काम जाने—अ० जब किसी के झगड़े में न पड़ना हो। प्र० महेन्द्र ने आलोक से कहा, बंधु मेरी जमानत दे दोगे। इस पर आलोक ने उत्तर दिया, नहीं बंधु, तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरत दान महा कल्याण—अ० भिखारी को आते ही भीख दे देनी चाहिए। प्र० पार्थ ने नकुल से कहा, बंधु, यह भिक्षुक काफी देर से खड़ा है, इसे कुछ दे दो, तुरत दान महा कल्याण।

तुम कहाँ के धन्ना सेठ हो—अ० जब कोई किसी को बड़ा न माने। प्र० जब सुभाष बार-बार डींगे मारने लगा तो महेन्द्र ने कहा, बस रहने दो, तुम कहाँ के धन्ना सेठ हो।

तुम डार-डार मैं पात पात—अ० जब एक व्यक्ति से दूसरा अधिक चंचल हो। प्र० बंधु, क्यों मुझे बातों में रमाने का प्रयास करते हो, तुम डार डार मैं पात पात।

तुम भी कहोगे कि चर्खा ले दो—अ० जब कोई व्यक्ति मूर्खता की बात कहे। प्र० महेन्द्र वैसे ही अड-बड तानने लगा तो सत्येन्द्र ने कहा कि तुम भी कहोगे कि मुझे चर्खा ले दो।

तुम भी चालीस सेरे ऊत हो—अ० महा-मूर्ख। प्र० श्यामलाल बिना सिर पैर की हांकने लगा। तब राधेश्याम ने कहा कि तुम भी चालीस सेरे ऊत हो।

तुम में ही क्या सुर्खाब का पर है—अ० तुम्हारे में ही कौन-सी विशेषता है। प्र० शिशुपाल ने भरी सभा में कहा, नटवर, तुममें ही क्या सुर्खाब का पर है, जो तुम्हारी पूजा हो।

तुम्हारी बराबरी वह करे जो टाँग उठा कर मूते—अ० जब किसी को नीच समझा जाए। प्र० जब धन्ना बहुत बोलने लगा तो हरदेव ने कहा, बंधु, तुम्हारी बराबरी वह करे जो टाँग उठा कर मूते।

तुम्हारी बात का कुछ थल बेड़ा नहीं—अ० बेतुकी बात होना। प्र० जब गंगा इधर-उधर की मिलाने लगा तो सतीश ने कहा कि बंधु, तुम्हारी बात का कुछ थल बेड़ा नहीं है।

तुम्हारी बात न उठाई जाए न धरी जाए—अ० जब कोई बे सिर पैर की बात करे। प्र० जब शकुनि आकाश पाताल की हाँकने लगा तो गदाधारी भीम ने कहा कि जाओ, तुम्हारी बात उठाई जाए न धरी जाए।

तुम्हारे तो फरिश्तों को भी पता नहीं—अ० जब कोई व्यक्ति किसी बात के विषय में कुछ न जाने। प्र० जब सुरेश ने बेदी से कहा कि जिस तरह तुम मुकद्दमा जीते हो, मैं सब जानता हूं। इस पर बेदी ने उत्तर दिया कि बस, रहने दो, तुम्हारे तो फरिश्तों को भी पता नहीं है।

तुम्हारे मुंह खीर खाँड—अ० जब कोई व्यक्ति किसी के सामने भविष्य में भले की बात सुनाये तो ऐसा कहा जाता है। प्र० द्रौपदी ने सुभद्रा से कहा, तुम्हारा पति अखण्ड विजयी हो। इस पर सुभद्रा ने कहा कि तुम्हारे मुँह खीर खाँड।

तुरक, तेली, ताड़, ये हैं देश बिहार—अ० मुसलमान, तेली और ताड़ बिहार देश में अधिकता से हैं। प्र० बंधु, बिहार में ताड़ के वन ही वन हैं। इस पर उसे उत्तर मिला, बंधु, तुमने सुना नहीं कि तुरक, तेली, ताड़, ये हैं देश बिहार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरत के पाथे नहीं जलते—अ० बुरे अथवा भले काम का फल फौरन ही नहीं मिलता है। प्र० वंधु, कंस पाप करने पर भी फल-फूल रहा है। इस पर श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया, ऊधो, तुरत के पाथे नहीं जलते हैं।

तुरत देना तुरत लेना—अ० उधार न देना। प्र० महेश जब श्याम के पास उधार कपड़ा लेने गया तो उसने कहा, नहीं बंधु, तुरत देना तुरत लेना।

तुरत मजूरी जो परखावै, वाकौ काम भयौ ही पावै—अ० जो व्यक्ति काम लेकर उसी समय कमेरे के दाम दे देता है तो उसका काम तत्काल हो जाता है। प्र० धनिया ने भीखू से कहा, वंधु, मैं तो चौधरी का कार्य सबसे पहले करूँगा। हाँ भाई, तुरत मजूरी जो परखावै, वाकौ काम भयौ ही पावै।

तुरत विजय हो उसकी भाई, जिसके हों रघुनाथ सहाई—अ० जिसका प्रभु सहाय हो, उसके सब काम तत्काल पूरे हो जाते हैं। प्र० व्यासदेव ने कहा, हे गांगेय, कृष्ण कृपा से अर्जुन तुरन्त विजयी होता है। सच है, तुरत विजय हो उसकी भाई, जिसके हों रघुनाथ सहाई।

तुलसी के पत्तों में छोटा बड़ा कौन—अ० सज्जन देह में छोटा हो कि बड़ा सभी परोपकारी होते हैं। प्र० नारद मुनि ने विश्वामित्र से कहा, कौशिक, रघुकुल के बाल और बड़े सभी साधु हैं। सच है कि तुलसी के पत्तों में कौन बड़ा कौन छोटा।

तुलसी जपै तो राम जप—अ० यदि लगन लगाता है तो ईश्वर में लगा, संसारी माया मोह को छोड़। प्र० रामदेव को भोगविलास में फँसा देखकर मोहन ने कहा, वंधु, क्या तुम भूल गए कि तुलसी जपै तो राम जप।

तुलसी तहाँ न जाइये, जहाँ न वरण विवेक—अ० जहाँ संत और असन्त का ज्ञान न हो, वहाँ जाना ठीक नहीं है। प्र० योगीराज कृष्ण ने कौरव सभा में अपना निरादर देख कर कहा, ठीक है, तुलसी तहाँ न जाइये जहाँ न वरण विवेक।

तुलसी दया न छाँड़िये, जब लग घट में प्राण—अ० अन्त समय तक व्यक्ति को दयाभाव छोड़ना ठीक नहीं है। प्र० द्वीपायन ने कहा, गांगेय, देखो दयालु रतिदेव ने अपना आहार भूखे को देकर प्राण त्याग दिए। सच है, तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण।

तुलसी निज मन की विथा, मन ही राखौ गोय। सुनि इंठिलइये लोग सब, बाँटि न ले है कोय—अ० अपने मन के दुःख को किसी के आगे मत कहिए, नहीं तो हँसी ही होगी। प्र० भोपता ने अपना दुखड़ा जयचन्द की सभा में रोया तो उसने हँसकर टाल दिया। सच है कि तुलसी निज मन की विथा, मन ही राखौ जोय। सुनि इंठिलइये लोग सब, बाँटि न लेहै कोय।

तुलसी बिरवा श्राम के, सींचत हू कुम्हिलाइँ। राम भरोसे जो रहै, परवत पै लहराइँ—अ० जिन्हें प्रभु का सहारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, उन्हें हर स्थान पर खुशी है। प्र० बन्धु, लक्ष्मण को श्रीराम के भरोसे पर वन में भी आनन्द रहा। तुलसी ने ठीक ही कहा है कि तुलसी बिरवा आम के, सीचत हू कुम्हिलाईं। राम भरोसे जो रहैं, परवत पैं लहराईं।

तुलसी मीठे वचन सों सुख उपजत चहुँ ओर—अ० मीठा बोलने वाले को हर स्थान पर हर्ष ही मिलता है। प्र० अनुसुया ने कहा, हे प्रियंवदे, तेरे मिष्ट भाषण से तुझे सब जगह सुख मिलता है। सच है कि तुलसी मीठे वचन सों, सुख उपजत चहुँ ओर।

तुलसी या संसार में, छाँड़ि देउ तुम ऐंठ। लेना हो सो लेइ लै, उठी जात है पैंठ—अ० इस मायावी जगत् में गर्व त्याग कर परोपकार करो क्योंकि यह क्षण भंगुर हैं। प्र० व्यास जी ने गर्व त्याग कर सम्पूर्ण जीवन परोपकार में बिताया। सच है कि तुलसी या संसार में, छाँड़ि देउ तुम ऐंठ। लेना हो सो लेइ लै, उठी जात है पैंठ।

तुलसी या संसार में, सब सों मिलिए धाय। ना जानों का भेष में, नारायण मिल जायँ—अ० इस मायावी जगत् के सब प्राणियों से मिलो जुलो, न जाने किस रूप में भगवान के दर्शन हो जाएँ। प्र० सुमित्रा ने सुनयना से कहा, अरी सखि! कृष्ण ने मुझे मनिआरी बन कर दर्शन दिए। सच तो है, तुलसी या संसार में, सब सों मिलिए धाय। ना जानों का भेष में नारायण मिल जायँ।

तू कहोगे तू कहलाओगे—अ० अगर तुम दूसरे का निरादर करोगे तो वह भी तुम्हारा निरादर करेगा। प्र० ऊधो ने माधव से कहा, जात बे? तब माधव ने कहा, तू क्यों पूछता है बे? ऊधो ने कहा, कैसे बोलता है? तब माधव ने कहा, तू कहोगे तू कहलाओगे।

तू गधो कुम्हार को तुझे राम सों कौथ—अ० जब कोई छोटा व्यक्ति बड़े व्यक्तियों से बोलने लग जाए। प्र० जब पाण्डव सभा में शकुनि बोलने लगा तो योगीराज श्रीकृष्ण ने कहा कि तू गधो कुम्हार को तुझे राम सों कौथ।

तू तू कहते तू भयौ, मो में रही न हूँ। बलिहारी तब नाम पैं, जित देखूँ तित तूँ—अ० जो हर पल प्रभु में लीन रहता है वह उसका ही रूप हो जाता है। प्र० महर्षि वाल्मीकि राम राम रटने से राम ही का रूप हो गए। सच है कि तू तू कहते तू भयौ, मो में रही न हूँ। बलिहारी तब नाम पैं, जित देखूँ तित तूँ।

तू न कहि मेरी, हूँ (मैं) न कहूँ तेरी—अ० जब एक की बुराई दूसरे को और दूसरे को पहले पर विदित हो। प्र० दुर्योधन को कर्ण ने युद्ध से भागते और उसने उसे हाथ जोड़ते देखा तो दोनों ने कहा कि तू न कहि मेरी, हूँ (मैं) न कहूँ तेरी।

तू भी रानी, मैं भी रानी, कौन भरे कुएँ से पानी—अ० जब सभी अपने आपको बड़ा समझते हों। प्र० दुर्जन ने मगन से कहा, बन्धु, चिलम भर लाओ। मगन ने सुनकर उत्तर दिया, तू ही क्यों नहीं भर लाता, मैं क्या तेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाई हूँ। सच है, तू भी रानी मैं भी रानी, कौन भरे कुँए से पानी।

तू मोहि तौ हूँ तोहि—अ० इस मायावी जगत् में अदला बदला। प्र० दुर्गा ने चण्डी से कहा, तुम मेरा कोई कार्य नहीं करती हो। इस पर चण्डी ने उत्तर दिया, तुम भी तो नहीं करते हो। सच है कि तू मोहि तौ हूँ तोहि।

तू है तो मैं हूँ—अ० जब अहँ भाव है तो त्वम् भी है। प्र० मुकेश ने सुकेश से कहा कि बन्धु, यदि तुम्हें रुपये पसे का घमण्ड है तो हम भी आपकी रैयत नहीं हैं। क्या तुम जानते नहीं कि तू है तो मैं हूँ।

तू सांप पकड़ मैं मन्त्र पढ़ूँ—अ० आपे को बचाकर दूसरे को मुसीबत में डालना। प्र० गदाधारी भीम ने अभिमन्यु से कहा कि तू चक्रव्यूह में जा, हम तेरी रक्षा करेंगे। यह तो वही कहावत हुई कि तू साँप पकड़ मैं मन्त्र पढ़ूँ।

ते ते पांय पसारिये, जेती लांबी सौर—अ० जितनी आय हो उतना ही व्यय करो। प्र० बधु, तुम अपनी आय से ज़्यादा व्यय करते हो। स्मरण रखो कि ते ते पांय पसारिये, जेती लांबी सौर।

तेरी करनी तेरी आगे, मेरी करनी मेरे आगे—अ० जैसा तूने किया वैसा तू भरेगा, जैसा मैंने किया वैसा मैं भरूँगा। प्र० कल्याण सिंह अपकार कर चुका तो योगेश्वर ने कहा कि बन्धु, तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे।

तेरी कानि कै तेरे मियां की—अ० शर्म करना। प्र० धन्ना जब भाना से तू-तड़ाक करने लगा तो उसने कहा कि जा, चला जा, तेरी कानि कै तेरे मियां की।

तेरे जौ तेरी दरांती चाहे जैसे काट—अ० जब किसी का किसी काम के करने का पूर्ण अधिकार हो। प्र० शिवाजी ने तन्नाजी से कहा, जो चाहे करो पर नाले का दुर्ग जीत लो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि तेरे जौ तेरी दरांती चाहे जैसे काट।

तेरे बैंगन मेरी छाछ—अ० जब दो व्यक्ति मिलकर किसी कार्य को सम्पन्न करें। प्र० नगर में आग लगने पर अंधे ने लंगड़े को कंधे पर चढ़ाकर दौड़ लगा कर प्राण बचा लिए। यह तो वही कहावत हुई कि तेरे बैंगन मेरी छाछ।

तेल जल गया बत्ती रह गई—अ० ऐसा वृद्ध पुरुष के लिए कहा जाता है। प्र० अब तो बंधु चला फिरा भी नहीं जाता। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया कि बंधु, तेल जल गया है, बत्ती रह गई है।

तेल जला घी और घी जला तेल—अ० कोई वस्तु तो तपाने से शुद्ध होती है और कोई बिगड़ती है। प्र० लोहे को जितना तपाओ उतना अच्छा और रांग को तपाओ तो राख। इन दोनों की वही कहावत है कि तेल जला घी और घी जला तेल।

तेल तो तिलों ही में से निकलेगा—अ० जब किसी का स्वामी किसी को क्षति पहुँचाता है तो सेवक ऐसा कहता है। प्र० तुम जैसा कर रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सो ठीक है, पर तेल तो तिलों ही में से निकलेगा।

तेल देख तेल की धार देख—अ० धैर्य से काम लो। प्र० जब मैं पढ़ने से घबराने लगा तो बड़े भाई ने कहा कि घबराता क्यों है, तेल देख तेल की धार देख।

तेल न मिठाई चूल्हे पै कढ़ाई—जब कोई वस्तु तो हो नहीं, पर उसके आधार पर कोई कार्य शुरू करना। प्र० श्यामा ने शकुन्तला से कहा, अरी सखी, काग़ज़ कलम तो है नहीं चिट्ठी लिखने की कह रही हो। यह तो वही कहावत हुई कि तेल न मिठाई चूल्हे पै कढ़ाई।

तेल निकालना—अ० सख्त मेहनत करना। प्र० बंधु, तुम मज़दूरी तो अच्छी देते हो पर वैसे तेल निकाल लेते हो।

तेलिन ते का धोबिन घाटि, तेरे मौंगरा मेरे लाटि—अ० जब दोनों व्यक्ति बराबर के हों। प्र० अर्जुनदेव की सत्यवीर सिंह से लड़ाई हो पड़ी तो एक ने बाँस और दूसरे ने लट्ठ उठा लिया। इस पर देखने वाला कह उठा कि तेलिन ते का धोबिन घाटि, तेरे मौंगरा मेरे लाटि वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हो।

तेली का काम तमोली करै, छिनक छिनमें आफति भरै—अ० जिसका जो काम नहीं होता वह उसको ठीक नहीं कर सकता। प्र० बनज करेंगे बानियाँ और करेंगे ऐस। बनज किया था जाट ने रह गए सौ के तीस।

तेली के बैल को घर ही पचास कोस—अ० बहुतेरे व्यक्तियों को घर में ही दिन भर छुट्टी नहीं होती है। प्र० शम्भु जी आजकल दिन भर बैठे रघुवंश की नकल ही करते रहते हैं। ठीक है तेली के बैल को घर ही पचास कोस।

तेली की पतिनी भई, तौऊ रूखौ खाय—अ० जब किसी रईस का बेटा भी बुरे हाल में रहे। प्र० महेश को देखकर बनवारी लाल ने कहा, रईस के बेटे और यह दशा। तुम्हारी तो वही कहावत है कि तेली की पतिनी भई, तौऊ रूखौ खाय।

तेली जोड़े बूंद-बूंद, रहमान लुटावे कुप्पे—अ० पिता तो कौड़ी कौड़ी जोड़े और बेटा एकदम सब को उड़ा दे। प्र० जगन्नाथ को अंधाधुंध व्यय करते देख मुरलीमनोहर ने कहा, बंधु, तुम्हारी वही कहावत है कि तेली जोड़े बूंद-बूंद, रहमान लुटावे कुप्पे।

तैरेगा सो डूबेगा—अ० जो कोई व्यक्ति कार्य करता है तो उसे क्षति भी उठानी पड़ती है। प्र० बंधु, इस बार मुझे काफी क्षति उठानी पड़ी। इस पर सुनने वाले ने जवाब दिया कि तैरेगा सो डूबेगा।

तोरि डार तागा, क्यों जग के मुँह लागा—अ० लौकिक संबंधों को छोड़ कर इसमें क्यों फँसा है? प्र० बंधु, मैं तो इस माया से दुःखी हो गया। इस पर उसने जवाब दिया कि तोरि डारि तागा, क्यों जग के मुँह लागा।

तोरी बनत बनत बन जाई, जो हरि सों डोरि लगाई—अ० प्रभु का सहारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख, सब काम ठीक हो जाएँगे। प्र० घनश्याम से जगफूलसिंह ने कहा, घबराते क्यों हो, प्रभु पर भरोसा रखो। क्या तुमने सुना नहीं कि तोरी बनत बनत बन जाई, जो हरि सों डोरि लगाई।

तोले के पेट में घूंवची—अ० हाथी के पैर में सब का पैर आ जाता है। प्र० अक्रूर ने कहा, हे जनार्दन, जैसा तुम करते हो वैसा ही जगत् करने लग जाता है। सच है कि तोले के पेट में घूंवची।

तोहि न भुनाऊँ, तोर भैया और मिलाऊँ—अ० कंजूस व्यक्ति जो रुपये को न तुड़ाना चाहे। प्र० बंधु, तुम तो मेले में जाकर भी सब कुछ बचा लाये। तुम्हारी तो वही कहावत है कि तोहि न भुनाऊँ, तोर भैया और मिलाऊँ।

थ

थोथा चना बाजै घना—अ० झूठा गर्व दर्शाना। प्र० अनिरुद्ध ने बाणासुर से कहा, तुम तो बड़े अभिमान से कहते थे, अब क्यों पीठ दिखा रहे हो। किसी ने सच ही कहा है कि थोथा चना बाजै घना।

थोथे फटकें उड़ उड़ जाएँ—अ० झूठे परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होते हैं। प्र० जब सात बार पांचाल राज ने सुयोधन को पराजित किया तो द्रोणाचार्य ने कहा कि सच है थोथे फटकें उड़ उड़ जाएँ।

थोड़ी पूंजी खसम को खाय—अ० थोड़ी पूंजी से व्यापार नहीं होता है। प्र० दुर्जनसिंह के पास थोड़ी पूंजी होने केकारण सब में मेल नहीं है, इसलिए दूकान में घाटा है। क्यों न हो, सभी कहते हैं कि थोड़ी पूंजी खसम को खाय।

थोड़े धन, खल बौराय—अ० नीच व्यक्ति थोड़े से पैसे के आ जाने से ही आपे से बाहर हो जाता है। प्र० श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा, हे सौमित्र! देखो, क्षुद्र नदी थोड़ी वर्षा से ही उमड़ उमड़ कर बह रही है। ठीक है कि थोड़े धन, खल बौराय।

थोड़े से बहुत होता है—अ० आरम्भ में सभी वस्तुएँ छोटी होती हैं। प्र० भरत ने कहा, देखो चरत, वह वट वृक्ष छोटे से अंकुर से कितना फल-फूल गया। सच तो है कि थोड़े से बहुत होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द

दंडा शाह से पूछ बुढ़ाने का रास्ता—अ० किसी कार्य के करने की विधि किसी जानने वाले से पूछनी ठीक है। प्र० विश्वामित्र से ऋषियों ने कहा, जनक से ब्रह्मज्ञान का मार्ग पूछिए। क्या जानते नहीं कि दंडा शाह से पूछ बुढ़ाने का रास्ता।

दक्खन गये न बाहुरे रहे चन्देरी छाय—अ० दक्खन में धन बहुत है इसलिए जो जाता है, वहीं का हो जाता है। प्र० अमर दक्खन में जाकर किसी रायबहादुर के यहाँ नौकर हो गया सो अब आता ही नहीं। कहा भी है कि दक्खन गये न बाहुरे रहे चन्देरी छाय।

दग़ा न किसी का सगा—अ० जो किसी को धोखा देगा, वह धोखा खायेगा। प्र० घनश्याम ने ललित की बदली की कोशिश की थी पर आप ही बदल गया। कहावत भी तो है दग़ा न किसी का सगा।

दद्दा नहीं पढ़े, लल्ला ही पढ़े—अ० लेना ही जानते हो देना नहीं। प्र० बंधु, तुमने तो लेकर देना सीखा ही नहीं। क्या यह कहावत ही चरिचार्थ करनी है कि दद्दा नहीं पढ़े, लल्ला ही पढ़े।

दबक शीरे के मटके में—अ० जब किसी व्यक्ति को तुच्छ प्रगट किया जाए। प्र० जब अर्जुन का कुछ ठिकाना न रहा तो रायबहादुर के तलवे चाटने लगा। तब लोगों ने कहा कि दबक शीरे के मटके में।

दबते ही को सब दबाते हैं—अ० कमज़ोर पर सब अपना ज़ोर दिखाते हैं। प्र० मदन को जो आता है, वही धमका लेता है। सच है कि दबे को सब दबाते हैं।

दबा बनिया पूरा तोले—अ० बनिया डरने पर ही पूरा तोलता है अन्यथा झोंक दिए बिना नहीं मानता। प्र० धनिया हमारी ज़मींदारी में रहता है, इसलिए झोंक नहीं मारता। सच है कि दबा बनिया पूरा तोले।

दबी बिल्ली चूहों से कान कटाती है—अ० जब कोई व्यक्ति किसी का कलौंडा हो। प्र० सरदार नरेन्द्रसिंह का मुंशी सबसे ग़लत तरीकों से रुपया मारता है, इसलिए हर कोई उसे दबा लेता है। हाँ, कहा भी है कि दबी बिल्ली चूहों से कान कटाती है।

दबे पर चींटी भी चोट करती है- अ० मरता क्या नहीं करता। प्र० सत्यवीर सिंह ने अर्जुनदेव को बहुत मारा तो उसने भी उसे उठाकर दे मारा। कहावत भी है कि दबे पर चींटी भी चोट करती है।

दम का क्या भरोसा, आया आया, न आया—अ० मृत्यु का कोई भरोसा नहीं है। प्र० बंधु, नानाजी बैठे-बैठे मर गए। हाँ जी, दम का क्या भरोसा, आया आया, न आया।

दम भर में कुछ का कुछ होता है—अ० प्रकृति पल-पल में बदलती है। प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वंधु, अब तो गिरते जा रहे हो। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि वंधु, दम भर में कुछ का कुछ होता है।

दम में दम है तो क्या डर है—अ० जीवित रहा तो अवश्य बदला लिया जाएगा। प्र० वंधु, क्या डर है, जानते नहीं, दम में दम है तो क्या डर है।

दमड़ी की हँडिया गई सो गई पर कुत्ते की जाति पहचानी गई—अ० जब कोई व्यक्ति थोड़े से पैसे पर धर्म खो दे। प्र० वंधु, आज न्यादरमल शाल उठा कर ले गया। अच्छा दमड़ी की हँडिया गई सो गई पर कुत्ते की जाति पहचानी गई।

दमड़ी पास न, लखपति नाम—अ० दशानुसार नाम न हो। प्र० बंधु, गाँव में तो कच्चा पक्का घर तक नहीं पर बेटे का नाम है धरेश्वर। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि दमड़ी पास न, लखपति नाम।

दम दमे में दम नहीं है, खैर मानो जान की। हो चुकी है, ऐ जफर शमशेर हिन्दुस्तान की—अ० जब कोई व्यक्ति हार जाता है। प्र० वीर अभिमन्यु के निधन पर दुर्योधन अभिमान भरे शब्द कहने लगा तो द्रोणाचार्य ने कहा कि बस, बस रहने दे, दम दमे में दम नहीं है, खैर मानो जान की। हो चुकी है, ऐ ज़फर शमशेर हिन्दुस्तान की।

दया धर्म नहिं मन में, मुखड़ा क्या देखे दर्पन में—अ० निर्दयी और अधर्मी व्यक्ति ऊपर की टीपटाप करे तो कोई लाभ नहीं है। प्र० आपके स्वामी जी वैसे तो बड़े तिलक लगाते हैं पर प्यासे को पानी तक नहीं पिलाते हैं। उन्होंने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी है कि दया धर्म नहिं मन में, मुखड़ा क्या देखे दर्पन में।

दया बिन संत कसाई—अ० जहाँ दया भाव नहीं, वहीं पाप है। प्र० बंधु, शिवालय के पुजारी पं० रामदीन वैसे तो बड़ी पूजा पाठ करते हैं पर दया का नाम तक नहीं है, तो फिर क्या है कि दया बिन संत कसाई।

दरिया में घुसे और सूखा—अ० जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करे तो वह बुराई या भलाई से नहीं बच सकता है। प्र० बंधु, तुम रामेश्वर के मामले में पड़े और बुराई पल्ले बँध गई। इस पर सुनने वाले ने कहा कि वाह-वाह, दरिया में घुसे और सूखा।

दरिया में रहे मगर सों बैर—अ० जिसके अधीन हो उसी से शत्रुता। प्र० बदलिया नित्य प्रति सरपंच से अकड़ता रहता था, आज गाँव से निकाल दिया। कहा भी है कि दरिया में रहे मगर सों बैर।

दर्जी की सुई कभी टाट में कभी रेशम में—अ० कार्यार्थी दु:ख-सुख का नहीं गिनते। प्र० श्रीराम जैसे वन में आनन्दित थे वैसे ही घर पर भी थे। ठीक है कि दर्जी की सुई कभी टाट में कभी रेशम में।

दलाल का दिवाला क्या—अ० मल्लाह का लंगोटा ही भीगता है। प्र० बंधु, आज रामकरण साईस ने बग्घी तेज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके पहिया तोड़ दिया। सच है कि दलाल का दिवाला क्या।

दवा और दुआ - अ० जब उपचार और ईश प्रार्थना दोनों ही हों। प्र० सत्येन्द्र को हकीम जी दवा भी दे रहे हैं और घर में चण्डी पाठ भी चल रहा है। ठीक है, दवा और दुआ दोनों हैं।

दवा की दवा और पथ्य का पथ्य—अ० एक ही वस्तु जो दोनों कार्य करे। प्र० बंधु, मैं तो गऊ के दूध का सेवन कर रहा हूँ। यह दवा की दवा और पथ्य का पथ्य है।

दही का गवाही चूड़ा—अ० दही और चौले का मेल है। प्र० गंगा सिंघाड़े गुड़ से खा रहा है। सच है कि दही का गवाही चूड़ा।

दाई से पेट नहीं छिपता—अ० जानने वाला दूर से ही बात को पहचान लेता है। प्र० थानेदार ने गिरहकट को देखते ही पकड़ लिया। सच है कि दाई से पेट नहीं छिपता है।

दाँत आते भी दुःख दें और जाते भी—अ० दाँत जब निकलते हैं तब भी दुःख देते हैं और जब टूटते हैं तब भी दुःख देते हैं। प्र० बंधु, क्यों मुँह पकड़े फिर रहे हो, क्या दाढ़ में दर्द है? हाँ है तो, अरे भाई, दाँत आते भी दुःख दें और जाते भी।

दाता का बेड़ा पार—अ० दानी का हर काम सिद्ध हो जाता है। प्र० दानवीर राजा हरिश्चन्द्र ने अपने पुण्यों के कारण ही बैकुण्ठ धाम पाया। सच है कि दाता का बेड़ा पार।

दाता की दूर बलाय—अ० दाता किसी बात की फिक्र नहीं करता है। प्र० बंधु, मोरध्वज ने अपने पुत्र की देह भी दान दे दी। सच है कि दाता की दूर बलाय।

दाता से सूम भला, जो जाते ही देई जवाब—अ० झूठे दानवीर से वह कंजूस अच्छा जो जाते ही इंकार कर दे। प्र० जगफूलसिंह हरफूलसिंह से बैल माँगने गया। उसने फौरन इंकार कर दिया। सच है कि दाता से सूम भला, जो जाते ही देई जवाब।

दादा कहे बनिया गुड़ देय—अ० चापलूस सबसे ले मरता है। प्र० चापलूसी से दुर्योधन ने भीष्म पितामह को अपनी ओर मिला लिया था। हाँ जी, दादा कहे बनिया गुड़ देय।

दादा गया पोता आया—अ० जगत् में एक मरता है और दूसरा पैदा होता है। प्र० बंधु, उस दिन तो दादा की रोटी थी आज ज्यौनार कैसी! उसने उत्तर दिया कि बंधु, भतीजे का नामकरण संस्कार है। चलो अच्छा हुआ, दादा गया पोता आया।

दादा मरे तो भोज करे—अ० जब कोई व्यक्ति बहुत दिनों में कोई कार्य करने का वचन दे। प्र० राहुल ने पंडित जी से कहा कि गाय ब्याएगी तो खीर मिल जायेगी। पंडित जी ने उत्तर दिया, खूब कही, दादा मरे तो भोज करे।

दादा ले पोता बरते—अ० बहुत मजबूत चीज़ मोल लेना। प्र० लोटा तोलकर ठठेरे ने कहा कि ले जाओ, यह ऐसा है कि दादा ले पोता बरते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान पीछे कल्याण—अ० दान दोगे तो फल अवश्य मिलेगा। प्र० बनवारी ने अपनी बीमारी में ज्यों गो दान किया त्यों ही ठीक हो गया। हाँ जी, दान पीछे कल्याण।

दाना दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर—अ० मूर्ख की मैत्री भी बुरी है। प्र० धनिया ने मुखिया के मुख पर बैठी हुई मक्खी को मारने के लिए कंकड़ दे मारा। सच है कि दाना दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर।

दाना न घास घोड़े तेरी आस—अ० जब किसी को खाना-पीना न देकर सख्त काम लेने की आशा की जाए। प्र० लक्ष्मण को काफी दिनों से तो अच्छी खुराक नहीं मिली और लड़ा दिया दारासिंह से। ठीक है कि दाना न घास घोड़े तेरी आस।

दाना न घास हिन हिन करे—अ० खान-पान को मिले नहीं पर झूठी डींग मारे। प्र० दुर्योधन धनुर्विद्या में वैसे तो कोरा है पर वीरों जैसा घमण्ड दिखाता है। सच है कि दाना न घास हिन हिन करे।

दाने को टापै, सवारी को पदै—अ० जो व्यक्ति सबसे पहले खाने को तो तैयार रहे और काम करने से दूर भागे। प्र० बंधु, खाने के लिए तो तुम सब से आगे रहते हो और काम पड़ने पर बीमारी का बहाना ले बैठते हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि दाने को टापै, सवारी को पदै।

दामों ढेरी या हाड़ों ढेरी—अ० मालामाल हुए या देह ही गई। प्र० बंधु, लाभ के पीछे क्यों भागते हो? इस पर उसने जवाब दिया कि बंधु, या तो दामों ढेरी या हाड़ों ढेरी।

दामों रूसा बातों से नहीं मानता—अ० रिश्वतखोर को बिना लिए चैन नहीं पड़ता है। प्र० सतपालसिंह ने कहा कि मैंने थानेदार साहब के पैरों को भी हाथ लगाया पर वे नहीं माने। ठीक तो है कि दामों रूसा बातों से नहीं मानता है।

दाल अलौनी पर कुर्ता साबूनी—अ० खाना मिला या न मिला या अच्छा हो या न हो पर तड़क-भड़क अवश्य हो। प्र० वैसे चाहे तुम भूखे हो पर केशों में तेल अवश्य डालते हो। सच है कि दाल अलौनी पर कुर्ता साबूनी।

दाल भात रोटी और बात खोटी—अ० साधारण भोजन अच्छा रहता है। प्र० बंधु, आजकल तुम बहुत चटोरे हो गए हो। क्या तुम जानते नहीं कि दाल भात रोटी और बात खोटी।

दासी कर्म कहार से नीचा—अ० जिस कार्य को कहार न करे दासी को वह भी करना पड़ता है। प्र० रानी दमयन्ती को सुबाहु नगर में वे कार्य भी करने पड़ गए जिन्हें कहारिन भी नहीं करती। सच है कि दासी कर्म कहार से नीचा।

दिन का भूला संध्या आवे तो भूला नहीं तनिक कहलावे—अ० शुरू में बिगड़ कर सुधर जाए तो उसे बिगड़ा मत मानिए। प्र० आजकल बनवारी संतों की सेवा में ज्यादा लगा रहता है। अच्छा तो है कि दिन का भूला संध्या आवे तो भूला नहीं तनिक कहलावे।

दिन नीके कंकर मोती—अ० जब अच्छे दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते हैं तो मिट्टी में हाथ डालने पर भी सोना मिलता है। प्र० जब पाण्डवों के सुदिन आये तो योगीराज कृष्ण पार्थ के सारथी बने। ठीक है कि दिन नीके कंकर मोती।

दिन भर ऊनी ऊनी, रात को पूनो—अ० कार्य के लिए इधर उधर फिरना और असमय कार्य में लगना। प्र० चेता चमार ने कहा कि दुपहरिया में ईख खोदने में तेल निकल जाता है। धन्ना धोबी ने उत्तर दिया कि ठंड के समय सोता भी तो तू ही है। तेरी तो वही कहावत है कि दिन भर ऊनी, रात को पूनी।

दिन में शर्म, रात को गर्म—अ० दिनभर सभ्यता दर्शाना और रात को माल मारना। प्र० दिखावे को तो पुजारी जी त्यागी बने फिरते हैं पर आँख बचा-कर चोरों से हिस्सा लेते हैं। सच है कि दिन में शर्म, रात को गर्म।

दिन सोवै, रोज़ी खोवै—अ० दिन में सोने वाले व्यक्ति को सदा क्षति पहुँचती है। प्र० बंधु, आजकल दूकान पर कुछ भी आय नहीं है। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि हो कहाँ से, दिन भर सोते जो हो। क्या तुम जानते नहीं कि दिन सोवै रोज़ी खोवै।

दिये की रोशनी महशर तक—अ० दानी स्वर्ग को जाता है। प्र० सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र ने अपने दान-पुण्य के बल पर वैकुण्ठ धाम पाया। सच है कि दिये की रोशनी महशर तक।

दिया जगत् का सार है—अ० संसार झूठा है। प्र० मंथरा दासी ने रानी कैकेई से कहा कि बचा सो लुनिये लहिये जो दीना।

दिल आई राखे कपटी—अ० मन की मन में रखने वाला कपटी होता है। प्र० पुरोचन ने अपना रहस्य पाण्डवों को नहीं सुनाया और मन ही में रखा। सच है कि दिल आई राखे कपटी।

दिल का दिल दर्पण—अ० जितना तुम किसी दूसरे का भला करोगे उतना ही वह तुम्हारा करेगा। प्र० ताना जी गौरवगुमान शिवा के प्राण थे, पर उन्होंने भी अपने प्राण देकर शिवाजी के प्राणों की रक्षा की। सच है कि दिल का दिल दर्पण है।

दिल में नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सिर—अ० जब कोई व्यक्ति निडर हो जाता है तो वह सबको जीत लेता है। प्र० अर्जुन ने निडर युद्ध करके विराट् राष्ट्र में सारे कौरवों के मुकुट उतार कर अपना यश बढ़ाया। ठीक तो है कि दिल में नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सिर।

दिल से दिल को राहत है—अ० जब मित्र याद करते ही मिल जाए। प्र० स्मरण करते ही योगीराज श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचायी। सच है कि दिल से दिल को राहत है।

दिया हाथ, खाने लगा साथ—अ० उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना। प्र० बंधु, मामा जी ने तुम्हारा सम्मान किया और तुम उनकी बराबरी करने लगे। यह तो वही कहावत हुई कि दिया हाथ, खाने लगा साथ।

दिवालिये की साख आकाश—अ० दिवा-लिये की प्रतिष्ठा धूल की तरह आकाश में उड़ी फिरती है। प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदास जी का दिवाला निकलते ही प्रतिष्ठा भंग हो गई। ठीक है कि दिवालिये की साख आकाश।

दीदारबाज़ी, खुदा राज़ी—अ० व्यभिचारी लोग ऐसा कहते हैं। प्र० बंधु, आओ जी० बी० रोड हो आएँ। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि नहीं बंधु, वहाँ नर्तकियों का राज्य है। तब उसने कहा कि फिर क्या डर है दीदार-बाज़ी, खुदा राजी।

दीन से दुनिया रखनी मुश्किल है—अ० एक प्रभु को खुश रखना आसान है किन्तु समस्त जगत् को खुश रखना मुश्किल है। प्र० बंधु, आज बरात में भोजन के समय लोगों ने अनेक कमियाँ निकालीं। सच है कि दीन से दुनियाँ रखनी मुश्किल है।

दीपक की रवि के उदय बात न पूछै कोय—अ० बड़ों के सामने छोटों की कोई बात नहीं पूछता। प्र० धर्मराज युधिष्ठिर के यज्ञ में सबको छोड़ कर योगीराज श्रीकृष्ण का ही पूजन हुआ। यह तो वही कहावत हुई कि दीपक की रवि के उदय बात न पूछै कोय।

दीपक के भाँवें नहीं जरि जरि मरें पतंग—अ० जब दूसरे लोग तो किसी के लिए प्राण निछावर कर दें पर वह उनकी कुछ भी चिन्ता न करे। प्र० कन्नौज में राजकुमारी संयोगिता के स्वयंवर के समय पृथ्वीराज चौहान के सौ सामन्तों ने अपने प्राण दे दिए, पर उन्होंने उनकी किंचितमात्र भी चिन्ता नहीं की। सच है कि दीपक के भाँवे नहीं जरि जरि मरें पतंग।

दीपमाल निज लखत नहिं, दीपक देखत आन—अ० ईर्ष्यालु लोगों को अपनी लाखों की आय पर विचार नहीं होता पर दूसरों की अल्प आय भी बहुत दिखाई देती है। प्र० सुयोधन को पाण्डवों की सात अक्षौहिणी सेना भी अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सेना से ज्यादा दिखाई दी। सच है कि दीपमाल निज लखत नहिं, दीपक-देखत आन।

दीवार के भी कान हैं—अ० गोपनीय बात किसी से भी नहीं कहनी चाहिए। प्र० जापान युद्ध की गोपनीय बातें किसी ने सोवियत संघ में पहुँचा दीं। हाँ बन्धु, दीवार के भी कान होते हैं।

दीवाल रहेगी तो लेव बहुतेरा—अ० देह है तो माँस बहुतेरा हो जाएगा। प्र० सत्येन्द्र ने महेश से कहा, इस बार रोग ले बैठा। इस पर महेश ने उत्तर दिया, घबराओ मत, दीवाल है तो लेव बहुतेरा।

दीवाली के दीवे चाट के आये और होली की जूती खाकर जायेंगे—अ० जब कोई निकम्मा व्यक्ति किसी सम्बन्धी के यहाँ आ पड़े। प्र० महेन्द्र कुमार का दामाद दो मास से यहीं पड़ा हुआ है, घर लौटने का नाम ही नहीं लेता है। तब लोगों ने कहा कि महेन्द्र यह तो दीवाली के दीवे चाट के आये हैं और होली की जूती खाकर जायेंगे।

दीवाली जीत, वर्ष भर जीत—अ० यही कहावत जुए की जड़ है, व्यवसायी वर्ग ऐसा समझता है कि यदि दीवाली के दिन जुए या चौपड़ में जीते तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष भर सब सौदों में उनकी जीत बनी रहेगी । प्र० मुकेश ने मातादीन से कहा कि आओ बंधु, वर्ष भर की जीत हार का पता जुए से लगा लें । जानते नहीं कि दीवाली जीत, वर्ष भर जीत ।

दीवाली नहीं दिवाला है—अ० जुआरियों का घर बार तक बिक जाता है । प्र० इस बार दीवाली में धुनिया धोबी का घर बार भी बिक गया । ठीक तो है बंधु, दीवाली नहीं दीवाला है ।

दीवाली वर्ष भर में एक दिन—अ० खुशी के दिन रोज़ रोज़ नहीं आते हैं । प्र० श्रीमती इंदिरा गांधी की विजय की खुशी में खूब पैसा लुटाया गया । सच है कि दीवाली वर्ष भर में एक दिन होती है ।

दुनिया दुरंगी मकारे सराय, कहीं खैर खबी कहीं हाय हाय—अ० संसारी लोगों में स्थिरता नहीं है, किसी के घर रोना-पीटना पड़ रहा है तो किसी के यहाँ गाना-बजाना । प्र० दानवीर कर्ण के निधन पर कौरवों में शोक और पाण्डवों के यहाँ जश्न मनाया गया । सच है कि दुनिया दुरंगी मकारे सराय, कहीं ख़ैर खबी कहीं हाय हाय ।

दुनिया मारी मक्कर से, रोटी खाई शक्कर से—अ० आज के युग में पाखण्डियों का सम्मान होता है । प्र० कालनेमि ने साधु भेष बनाकर खूब आनन्द लूटा । सच है कि दुनिया मारी मक्कर से, रोटी खाई शक्कर से ।

दुष्ट देव की भ्रष्ट पूजा—अ० नीच व्यक्ति पिट कर ही कार्य किया करता है । प्र० श्रीराम ने जब धनुष खींचा तो सागर ने हाथ जोड़ कर पुल बाँधने की विधि बता दी । सच है कि दुष्ट देव की भ्रष्ट पूजा ।

दुष्ट न छोड़े दुष्टता, कैसी हू सिख देय—अ० नीच व्यक्ति अपनी नीचता नहीं छोड़ता, चाहे किसी तरह भी समझाया जाए । प्र० सुयोधन को योगीराज श्रीकृष्ण ने अनेक प्रकार से समझाया पर उसने एक न मानी । सच है कि दुष्ट न छोड़े दुष्टता, कैसी हू सिख देय ।

दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम—अ० जो व्यक्ति एकाग्र मन नहीं होता है, उसका कोई भी कार्य ठीक नहीं होता है । प्र० राधेश्याम ने कभी एम० ए० की तैयारी की और कभी बिजनेस मैनेजमेंट ले बैठा, दोनों ही हाथ से गए । सच ही है कि दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम ।

दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है—अ० जो व्यक्ति हानि उठा लेता है, वह बहुत सम्भल कर काम किया करता है । प्र० सात बार पराजित होकर भी मुहम्मद गौरी बड़ी चतुराई से लड़ता रहा था । सच है कि दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है ।

दूध का दूध पानी का पानी—अ० उचित न्याय करना । प्र० जज महोदय ने गीता-संजय काण्ड में दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया ।

दूध की मक्खी होना—अ० किसी को अपमान से उसके सत्व से पृथक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना। प्र० मंथरा दासी ने रानी कैकेई से कहा कि भामिनि भइउ, दूध की माखी।

दूध फटै काजी परै, सो फिर दूध बनै न—अ० चुभती बातों से जब मन फट जाते हैं तो फिर नहीं मिला करते हैं। प्र० पांचाल की चुभती बात से द्रोणाचार्य का मन ऐसा फटा कि आजीवन वैर भाव बना रहा। सच है कि दूध फटै काजी परै, सो फिर दूध बनै न।

दूध भी प्यारा पूत भी प्यारा, सो खाऊँ तो किसको—अ० जब कोई व्यक्ति दो प्रियों के मध्य में फंस जाए। प्र० जब श्रीराम महारानी कौशल्या से वन गमन की आज्ञा लेने आये तो पुत्र स्नेह और पतिव्रत धर्म ने घेर लिया। उनकी तो वही स्थिति हुई कि दूध भी प्यारा पूत भी प्यारा, सो खाऊँ तो किसको।

दूर के ढोल सुहावने—अ० जिसे नहीं देखा वही अच्छा। प्र० घटोत्कच ने कहा कि कर्ण पहले तो तुम्हारी बड़ी बड़ाई थी पर युद्ध में तो तुमने दाँत दिखा दिए। सच है कि दूर के ढोल सुहावने।

दूसरे का सिन्दूर देख कर अपना माथा फोड़े—अ० दूसरों की उन्नति पर ईर्ष्या करना। प्र० महाराणा प्रताप की विजय पर मुग़ल सम्राट् रात दिन जला करता था। सच है कि दूसरे का सिंदूर देखकर अपना माथा फोड़े।

दूसरे की आशा सदा निराशा—अ० दूसरों के भरोसे पर किया हुआ कार्य कभी पूर्ण नहीं होता है। प्र० दुर्योधन को दूसरों के भरोसे युद्ध छेड़ कर पराजित होना पड़ा। सच है कि दूसरों की आशा सदा निराशा।

देखति सो भाषत नहीं, भाषति देखति नाहिं—अ० जो देखे सो बोले न और जो बोले सो देखे न। प्र० बंधु, अंधा गा रहा है और बहरा ढपली बजा रहा है। वाह-वाह, यह तो वही कहावत हुई कि देखति सो भाषत नहीं, भाषति देखति नाहिं।

देखि पराई चूपड़ी गिर पड़ बेईमान—अ० असंतोषी थोड़े से लोभ के लिए अपना धर्म छोड़ देता है। प्र० राजा भगवानदास ने मुग़ल सम्राट् अकबर का विशाल साम्राज्य देखकर अपनी बेटी उसे ब्याह दी। सच है कि देखि पराई चूपड़ी गिर पड़ बेईमान।

दे बारूद में आग किसकी रही किसकी रह जाएगी—अ० आतिशबाजी में सब धन जला डाला। लक्ष्मी किसी के नहीं रही। प्र० सावन ने मनोज के पुत्र के विवाह में उससे कहा कि बंधु, रुपया किसी के नहीं रहता, ऐसा विवाह करो कि दूसरा किसी के न हुआ हो। सच है कि दे बारूद में आग किसकी रही किस की रह जाएगी।

देइ दिलावै दे, दे करै, सो मानस भवसागर तरै—अ० जो व्यक्ति स्वयं दे औरों से दिलावे और दान कर उपदेश करे तो वह आवागमन से मुक्ति पा जाता है। प्र० सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र दान देकर और दूसरों को दान का उपदेश करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ति पा गए। सच है कि देइ दिलावैं दे, दे करैं, सो मानस भव-सागर तरैं।

देख्यो ठोक बजाय कै, सब जग धन कौ मीत—अ० इस मायावी जगत् में प्रत्येक प्राणी रुपये पैसे का लोभी है। प्र० रायबहादुर के पास जब तक धन दौलत बनी रही तब तक सब उनके थे पर अब कोई नहीं है। सच है कि देख्यो ठोक बजाय कै, सब जग धन कौ मीत।

देखत में बावरे पर गुन सगरे भरे—अ० देखने में तो पागल से, पर गुणों के सागर। प्र० योगीराज श्रीकृष्ण के सखा ऊधो देखने में तो साधारण थे पर वेदान्त के पंडित थे। ठीक तो है कि देखत में बावरे पर गुन सगरे भरे।

देखा देखी कीना जोग, छीजी काया बाढ़ै रोग—अ० जो व्यक्ति किसी दूसरे की नक़ल करता है सो दुःख पाता है। प्र० परेश को देखकर सोमेश ने भी अपना घोड़ा दौड़ा दिया और गिर कर भुजा तोड़ ली। सच है कि देखा देखी कीना जोग, छीजी काया बाढ़ै रोग।

देखी पीर तेरी करामात—अ० झूठी बनावट का सार कुछ नहीं। प्र० अफ़जलखा वैसे तो बड़े योद्धा बनते थे पर शिवाजी के आगे धरा पर सोते ही देखे। सच है कि देखी पीर तेरी करामात।

देखे जग के छंद बंद, फाटा जामा तीन बंद—अ० ऊपर का दिखावा वास्तव में नाशवान है। प्र० शाइस्ता खां शिवाजी को मारने के लिए चला था पर अपनी उँगली देकर चला आया। यह तो वही कहावत हुई कि देखे जग के छंद बंद, फाटा जामा तीन बंद।

देखै राही, लड़ै सिपाही—अ० कार्य करने वाले ही कार्य करते हैं। प्र० जयद्रथ-वध में धनुर्धारी अर्जुन तो युद्ध कर रहा था और बाकी लोग तमाशा ही देख रहे थे। सच तो है कि देखैं राही, लड़ै सिपाही।

देता भला न लेता—अ० देता व्यक्ति सब को अच्छा लगता है पर जब वापस माँग करता है तो बुरा लगता है। प्र० मातादीन पहले तो सूट का कपड़ा उधार ले गया पर जब पैसे माँगे तो लड़ने को आया। सच तो है कि देता भला न लेता।

देता भूले न लेता—अ० हिसाब में सफ़ाई हो। प्र० बंधु ! दो सौ के हिसाब से सप्ताह के पचास रुपये हुए। सीधी बात, देता भूले न लेता।

देनहार कोई और है, भेजत है दिन रैन—अ० प्रभु रात दिन देता है अतः दान से हाथ मत मोड़ो। प्र० रहीम जी रात दिन दान देते हैं पर उनका धन कम नहीं होता है। सच है कि देन हार कोई और है, भेजत है दिन रैन।

देनहार सों दियावन हारहि अधिक पुन्न—अ० देने वाले से दिलाने वाला बड़ा होता है। प्र० मोहन ने सोहन से कहा, बंधु, तुम अपने ज़मानती श्याम-लाल को बहुत अधिक मान देते हो। क्यों न दूँ, क्या तुम जानते नहीं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देनहार सों दियावन हारहि अधिक पुन्न है।

देना और मरना समान है—अ० कर्जदार मृतवत् होता है। प्र० जगदीशचन्द्र ने जब देवदत्त पर नालिश की तो उसने निर्णय से पूर्व ही आत्महत्या कर ली। सच है कि देना और मरना समान है।

देना थोर दिलासा पूर—अ० दे थोड़ा और भरोसा दे पूरा। प्र० सोमदत्त ने दुर्योधन को युद्ध में प्राणदान का यकीन दिया पर गदाधारी भीम के आगे से भाग गया। सच है कि देना थोर दिलासा पूर।

देना भला न बाप का, बेटी भली न एक—अ० कर्जदार होना और बेटी का जन्म, दोनों ही बुरे है। प्र० मातादीन को अपने बड़े भाई का रुपया देना था। उसने नालिश करके उसे बंदीगृह में भिजवा दिया। सच है कि देना भला न बाप का, बेटी भली न न एक।

देना लेना काम डोम भाटों का, मुहब्बत बड़ी चीज है—अ० जब कोई लेकर न देना चाहे तो प्रेम-भाव दर्शाता है। प्र० मनोहर लाल ने जब रामेश्वर से अपना रुपया माँगा तो उसने कहा कि बंधु, देना लेना काम डोम भाटों का, मुहब्बत बड़ी चीज है।

देना सो लेना—अ० जैसा पिछले जन्म में दिया है वैसा पाओगे। प्र० जब अश्वत्थामा की मणि निकाली गई तो उसने कहा कि ठीक है, देना सो लेना।

देने के लिए तो किवाड़ भी नहीं देते—अ० जो व्यक्ति लेकर न देता हो। प्र० मदन लाल ने सोहन से पूछा, क्या किसी से माल लेने गये। हाँ बंधु, गजधर से लेने गया था। गजधर से! वह तो देने के लिए तो किवाड़ भी नहीं देते।

देने को कंजूस, नाम धर्मदास—अ० नामानुसार गुण न होना। प्र० गदाधारी भीम ने सुयोधन से कहा, युद्ध से भागते हो, नाम रख लिया सुयोधन! तुम्हारी तो वही कहावत है कि देने में कंजूस, नाम धर्मदास।

देर आयद, दुरुस्तायद—अ० जो कार्य देर में होता है सो ठीक होता है। प्र० महेन्द्र कुमार ने आलोक से कहा, बहुत देर हो गई, परिणाम नहीं आया। आलोक ने उत्तर दिया, तो क्या है, देर आयद, दुरुस्तायद।

देव वासना के भूखे—अ० देव मानव के विश्वास पर ही खुश हो जाते हैं। प्र० धर्मवीर ने कहा, बंधु, आज यह हवन क्यों किया गया, क्या किसी को प्रसन्न करने के लिए? जी हाँ। उत्तर मिला। धर्मवीर ने फिर पूछा, कैसे? उत्तर मिला कि सो ऐसे कि देव वासना के भूखे।

देवान पूजान, नीचान कूटान—अ० सज्जन मधुर वचनों से और दुर्जन पिट कर खुश होते हैं। प्र० परशुराम तो श्रीराम के मधुर वचनों से शांत हो गए थे पर दुर्योधन टांग तुड़ा कर ही माना था। सच है कि देवान पूजान, नीचान कूटान।

देवाय न, पित्राय—अ० फ़िज़ूल व्यय करने पर। प्र० कमल तुमने पचास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये पतंगबाजी में व्यय करके यह कहावत चरितार्थ कर दी कि देवाय न, पित्राय।

देवी दिन काटे लोग माँगे पर्चे—अ० जो अपने ही दिन मुश्किल से काट रहा हो उससे मदद की इच्छा करना। प्र० राजा हरिश्चन्द्र स्वयं तो भूखे बैठे थे पर भिखारी अब भी आशा करते थे। हाँ जी, देवी दिन काटे लोग माँगे पर्चे।

देवी पित्तर हमारे मित्तर—अ० पेट भरा होने पर ही प्रभु-भक्ति सूझती है। प्र० विश्वामित्र ने अपने शिष्यों से कहा, बेटा संध्या हो गई। इस पर शिष्यों ने उत्तर दिया, महाराज, देवी पित्तर हमारे मित्तर हैं।

देश चोरी, परदेश भीख—अ० बंधुओं में प्रतिष्ठा भंग होने पर परदेश चला जाए। प्र० धर्मराज युधिष्ठिर ने राज्य चले जाने पर परदेश में भीख द्वारा उदर पूर्ति की। सच है कि देश चोरी, परदेश भीख।

देशा देशा चाल, कुला कुला आचार—अ० हरेक के रीति-रिवाज़ भिन्न-भिन्न होते हैं और हरेक के कुल के आचार, व्यवहार भिन्न-भिन्न होते हैं। प्र० बंधु, जनकपुर में श्रीराम और सीता-जी की मूर्तियाँ एक ही मन्दिर में नहीं होती हैं। हाँ, ठीक है, देशा देशा चाल, कुला कुला आचार।

देशी कुतिया विलायती बोली—अ० जब कोई व्यक्ति अपने कुलाचरण अथवा देश व्यवहार के विरुद्ध आचरण करता है। प्र० सत्येन्द्र ने सुभाष से कहा, कुछ दिन अंग्रेज़ी क्या पढ़ी, छुरी काँटे से खाने लगे। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि देशी कुतिया विलायती बोली।

दैव दैव आलसी पुकारा—अ० आलसी सदैव भाग्य के भरोसे ही रहते हैं। प्र० श्रीराम भाग्य के भरोसे तीन दिन तक सागर तट पर पड़े रहे। जब तीर संधाना तो राह मिली। सच है कि दैव दैव आलसी पुकारा।

दैव न मारैं हाथ सों, बुद्धि भ्रष्ट कर देत—अ० जब दिन बुरे आते हैं तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। प्र० जब श्रीराम के बुरे दिन आये तो स्वर्ण मृग का आखेट करने के लिए चल दिये। सच है कि दैव न मारैं हाथ सों, बुद्धि भ्रष्ट कर देत।

दैवो दुर्बल घातक—अ० भगवान भी कमज़ोर को ही सताता है। प्र० व्यासदेव ने कहा, हे पार्थ, राजा नल पर विपत्ति पर विपत्ति पड़ीं, फिर भी विचलित नहीं हुए। सच है कि दैवो दुर्बल घातक।

दो घर का पाहुना भूखा—अ० दो घरों के मेहमान को आहार नहीं मिलता है, क्योंकि वह एक दूसरे के भरोसे रहता है। प्र० रामभरोसे ने कहा कि मैं अपने दोनों चाचाओं से मिलने गया सो रातों भूखों पैर पीटे। सच है कि दो घर का पाहुना भूखा ही रहता है।

दो चून के भी बुरे—अ० दो शत्रु मिल कर बली शत्रु को भी मार लेते हैं। प्र० पितामह भीष्म को अर्जुन और शिखण्डी ने मिल कर मार ही लिया। सच है कि दो चून के भी बुरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो नारी का पति और चौपड़ का पासा—अ० दोनों इधर से उधर फिके-फिके फिरते हैं। प्र० सुरेश दो स्वामियों का सेवक है सो मारा-मारा फिरता है। सच है कि दो नारी का पति और चौपड़ का पासा।

दोनों ओर से मौत है—अ० जब दो काम ऐसे आ पड़ें कि उनमें से किसी के करने पर भी हानि होती हो और करे बिना भी बीते नहीं। प्र० योगीराज श्रीकृष्ण ने कहा, पार्थ और गांगेय दोनों ही भक्त हैं, किस की ओर लूँ। सच है कि मेरी तो दोनों ओर से मौत है।

दो सिर इकट्ठे करने का पुण्य है—अ० दो व्यक्तियों में मेल कराना शुभ कर्म है। प्र० श्रीराम ने वालिपुत्र अंगद से कहा, हे वालिसुत, हमारी और लंकेश की संधि करा दो, क्योंकि दो सिर इकट्ठे करने का पुण्य होता है।

दोस्ती में लेन देन बैर की जड़—अ० मित्रों का उधार वैर पैदा करता है। प्र० श्याम ने सत्येन्द्र से कहा, बंधु, पचास रुपये दे दो, कल दे दूंगा। इस पर उसने उत्तर दिया कि क्या तुम जानते नहीं कि दोस्ती में लेन देन वैर की जड़ होती है।

दोस्तों का हिसाब दिलों में—अ० मित्रों का लेन-देन गुप्त रहता है। प्र० आज रामेन्द्र और सुभाष ने मिल कर किसी चीज़ का सौदा किया। इस पर सुनने वाले ने कहा कि ठीक तो है, दोस्तों का हिसाब दिलों में होता है।

दोनों हाथों लाज बचानी भारी है—अ० इस मायावी जगत् में भले व्यक्ति की सब ओर से कठिनाई होती है। प्र० श्रीराम के वनवास होने पर भरत ने कहा, अब संसारी लोग चारों ओर से बुरा-भला कहेंगे। सच है कि दोनों हाथों लाज बचानी भारी है।

दोनों हाथों से ताली बजती है—अ० जब दोनों में से एक भी लड़ना न चाहे तो लड़ाई नहीं होती है। प्र० सत्यवीर सिंह और अर्जुन देव को लड़ते देख राधेश्याम ने कहा, अरे, भई क्यों लड़ते हो? तत्काल सत्यवीरसिंह ने कहा कि मैं तो नहीं लड़ा। अर्जुनदेव बोल उठा, झूठ, दोनों हाथों से ताली बजती है।

दो ही बात हैं लाभ या हानि—अ० संतोषी हर स्थिति में शान्त रहता है। प्र० गदाधारी भीम ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा, दद्दा, आप वन में भी वैसे ही खुश हैं जैसे हस्तिनापुर में। आप समझते हैं कि दो ही बात हैं लाभ या हानि, सुख या दुःख।

दौलत को सब सीस नवाते हैं—अ० पैसे की सबको आवश्यकता होती है। प्र० विदुर ने कहा, हे योगीराज, यज्ञ भी बिना धन के नहीं होता है। अतः दौलत को सब सीस नवाते हैं।

द्वार धनी के पड़ रहै धका धनी के खाय—अ० भगवान पर भरोसा करो। भक्त प्रह्लाद ने अनेक प्रकार के दुःख सहे पर प्रभुभक्ति नहीं छोड़ी, अन्त में विजय हुई। सच है कि द्वार धनी के पड़ रहै धका धनी के खाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध

धन का धन गया और मीत का मीत—अ० मित्र ने मित्र से कर्ज लिया, दोनों में वैमनस्य हो गया। प्र० श्याम ने गोकुल से कहा कि रामदीन ने मुकेश से पाँच सौ रुपये लिए, अन्त में दोनों में वैमनस्य हो गया। सच है कि धन का धन गया और मीत का मीत।

धन चाहे तो धर्म कर—अ० धर्मात्मा को भगवान रात-दिन धन देता है। प्र० श्रीराम ने यज्ञ में इतना धन व्यय किया पर कोष उतने का उतना ही रहा। ठीक ही है कि धन चाहे तो धर्म कर।

धन दे के तन राखिये—अ० धन देकर व्यक्ति को अपने प्राणों की रक्षा करनी चाहिए। प्र० अंतिम मुग़ल सम्राट् बहादुरशाह ने लुटेरे नादिर-शाह को सब ख़जाना दे दिया तब प्राण बचे। सच है कि धन दे के उसने तन राखा।

धन बाढ़े मन बढ़त है—अ० जैसे-जैसे दौलत बढ़ती जाती है वैसे-वैसे मन भी बढ़ता जाता है। प्र० बंधु, राय-बहादुर सहस्त्रों रुपयों का दान-पुण्य कर देते हैं। सच है कि धन बाढ़े मन बढ़त है।

धर्म का धर्म, कर्म का कर्म—अ० स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही। प्र० विश्वामित्र ने कहा कि यज्ञ में स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही हैं। सच है कि धर्म का धर्म, कर्म का कर्म।

धर्म की जड़ हरी है—अ० धर्मात्मा के सब कार्य पूरे होते हैं। प्र० बंधु, इस बस ऐक्सीडेंट से बहुत बचे। कोई दिया-लिया आगे आ गया। हाँ बंधु, धर्म की जड़ हरी होती है।

धर्म के दूने—अ० बिना धोखाधड़ी के अधिक लाभ होना। प्र० रामभरोसे ने मन भर के गेहूँ भर कर बीस सेर के बेचे। उसके तो धर्म के दूने हो गए।

धर्म पाप का धोबी—अ० जैसे धोबी कपड़े का मैल दूर कर देता है, ऐसे ही धर्म पाप को दूर कर देता है। प्र० महर्षि वाल्मीकि तपस्या करके ब्रह्म के समान हो गए। सच है कि धर्म पाप का धोबी होता है।

धर्महार धन कोई खाय—अ० जब कोई व्यक्ति अधर्म से दूसरे का स्वत्व आप ले ले। प्र० दुर्योधन ने पाण्डवों का राज्य अधर्म से ले लिया। तब विदुर ने कहा कि धर्महार धन कोई खाय।

धर जा मर जा—अ० जो धरोहर वापस करना न चाहे। प्र० महेश रमेश के पास पाँच सहस्र रुपये रख गया। तब उसने कहा कि अच्छा हो जो लौटकर न आवे। सच है कि धर जा मर जा।

धरती बोझ ओटे—अ० दीर्घायु हो। प्र० कृष्ण जन्म पर नन्द से गर्ग ने कहा, अच्छा है कि धरती बोझ ओटे।

धान कौ गाँव पुआल सों जानौ—अ० ऊपरी ठाठ-बाट से व्यक्ति की स्थिति प्रगट हो जाती है। कुन्ती ने नकुल से पूछा, हे माद्रेय! तुमने कैसे जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वहाँ जल है। नकुल ने उत्तर दिया, ऐसे कि वहाँ से सारसों का शब्द आ रहा है। ठीक है कि धान की गाँव पुआल सों जानौ।

धान, पान, पानी, इनके स्वाद कातिक में जानी—अ० धान, पान और पानी कातिक मास में स्वादिष्ट हो जाते हैं। प्र० बंधु, आजकल पान बहुत अच्छे आ रहे हैं। सुनने वाले ने उत्तर दिया, हाँ, क्या तुमने सुना नहीं कि धान, पान, पानी, इनके स्वाद कातिक में जानी।

धान विचारे भल्ले, खोटे खाये चल्ले—अ० व्यंग्य से किसी को धोखा देने के लिए कहा जाता है। प्र० रामेन्द्र ने मोतीराम से कहा, एक दिन घुड़-दौड़ में चलो तो सही, सौ के दो सौ पलक मारते होते हैं। सच है कि धान विचारे भल्ले, खोटे खाये चल्ले।

धाये धन न माँगे पूत—अ० दौड़धूप से रुपया नहीं आता है और न माँगे से पूत ही मिलता है। भाग्य में हों तो दोनों मिल जाते हैं। प्र० धनदेव ने बहुतेरे सियाने दीवाने बुलाये पर सन्तान ही नहीं पैदा हुई। सच है कि धाये धन न माँगे पूत।

धी का वास घर का नाश—अ० जब बेटी बाप के घर रहती है तो क्लेश रहता है। प्र० बंधु, रधिया के घर जब से मुनिया आई है दिन-रात का क्लेश रहने लग गया है। सुनने वाले ने कहा कि जानते नहीं, धी का वास घर का नाश।

धी मरी जमैया चोर—अ० बेटी के मरने पर दामाद का सम्मान नहीं होता है। प्र० पत्नी की मृत्यु के दो वर्ष बाद सत्येन्द्र ससुराल आया। किसी ने उससे सीधे मुँह बात भी नहीं की। ठीक तो है कि धी मरी जमैया चोर।

धीरज धरिए तो पाये पारू—अ० धैर्य-वान् व्यक्ति के सब कार्य पूरे हो जाते हैं। प्र० धैर्यवान् पाण्डवों ने महा-भारत के युद्ध में विजय प्राप्त की। सच है कि धीरज धरियें तो पाये पारू।

धीर सो गम्भीर—अ० धैर्यवान् घबराता नहीं है। प्र० धैर्यवान् युधिष्ठिर वन में भी खुश रहे। ठीक है कि धीर सो गम्भीर।

धूप में बाल सफेद नहीं करे—अ० इतनी उम्र वैसे ही नहीं गँवाई है। प्र० बंधु, आप जो कह देते हो, वह सही निकलता है। सुनने वाले ने उत्तर दिया, क्यों नहीं, क्या मैंने धूप में बाल सफेद किये हैं।

धूम कुसंगति कारिख हो—अ० संगति का फल अवश्य होता है। प्र० कुसंगति के कारण महर्षि बाल्मीकि व्याध का काम करने लगा था। सच है कि धूम कुसंगति कारिख हो।

धूमहु तजहि सहज करु आई—अ० संगति का फल अवश्य होता है। प्र० ऋषि संगत से बाल्मीकि ब्रह्म समान हुए। सच है कि धूमहु तजहि सहज करु आई।

धूल उड़ाने से सूर्य मैला नहीं होता—अ० झूठी बात उड़ाने से किसी की प्रतिष्ठा नहीं बिगड़ती। प्र० सीता को लंकेश के घर रहने का दोष लगाने से उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीत्व नहीं बिगड़ा। सच है कि धूल उड़ाने से सूर्य मैला नहीं होता है।

धोखे की टट्टी—अ० ऊपरी दिखावा। प्र० सोमेश ने कहा कि बंधु, वह व्यवहार तो धोखे की टट्टी था।

धोती के भीतर सब नंगे—अ० सभी दोषी होते हैं। प्र० बंधु, श्रीराम में कोई दोष न था। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि बालि को कपट से मारा। सच है कि धोती के भीतर सब नगे।

धोबी का कुत्ता घर का न घाट का—अ० किसी दीन कान होना। प्र० रमेश ने अपना भविष्य बनाने के लिए बाबूगिरी छोड़ कर छोटी-सी दूकान डाल ली। पर पैसे की कमी उसे ले बैठी। न नौकरी ही रही और न दूकान ही चली। बेचारे रमेश की वही स्थिति हो गई कि धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

धोबी का गीत धोबी जाने—अ० जिसका काम उसी को साजे। प्र० घनश्याम दास ने नौकरी छोड़कर छोटी-सी फैक्टरी लगाई, वह कुछ ही दिनों में सब कुछ ले बैठी। सच है कि धोबी का गीत धोबी जाने।

धोबी का घर ईद पर देखो—अ० ईद के दिन सब की धुलाई चली जाती है और धोबी मैला ही रह जाता है। प्र० बंधु, आजकल तो तुम्हारे सारे कमरे में ताले लगे हुए हैं। कुछ ही दिनों में कालेज बन्द होने वाले हैं तब तो शायद इनमें भी ताले लगे होंगे। हाँ बंधु, तब वही कहावत मुझ पर भी चरितार्थ होगी कि धोबी का घर ईद पर देखो।

धोबी का सहायक पत्थर—अ० धोबी पत्थर के पाट पर मैल उतारता है। प्र० धन्नू लकड़हारा अपनी कुल्हाड़ी को प्राणों से प्यारा रखता है। क्यों न रखे उसकी रोजी उसी से है जैसे धोबी का सहायक पत्थर।

धोबी बसके का करै दिगम्बर के गाम—अ० जहाँ जिसे रोजगार न मिले वह वहाँ रह कर क्या करे। प्र० बंधु, सुलेमान गंधी हमारे गाँव में जा बसा, अन्त को भूखा मरके चला आया। सच है कि धोबी बसके का करै दिगम्बर के गाम।

धोये हू सौ बार के काजर होत न सेत—अ० मूर्ख अपनी मूर्खता को लाखों उपदेश करने पर भी नहीं छोड़ता। प्र० योगीराज श्रीकृष्ण ने कुरूराज को अनेक उपदेश दिये पर उसने कान नहीं किये। सच है कि धोयेहू सौ बार के काजर होत न सेत।

धौला बाल मौत की पुकार—अ० सफेद बाल हो जाने पर मौत पास आ जाती है। प्र० बंधु, तुम्हारे बाल क्या सफेद हुए, देह भी जवाब देने लग गई। सुनने वाले ने हँस कर उत्तर दिया कि जानते नहीं, धौला बाल मौत की पुकार होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न

नंग से खुदा भी हारा—अ० नंग से सब को डर लगता है। प्र० तुम उस नंग के मुँह क्यों लगा करते हो ? जानते नहीं कि नंग से खुदा भी हारा है।

नंगों ने भूखों को लूट लिया—अ० अनहोनी पर ऐसा कहा जाता है। प्र० रमेश पैसे की तंगी से जिन्दगी गुजार रहा था कि ऊपर से चोरी हो गई। ठीक है कि नंगों ने भूखों को लूट लिया।

नई मुसलमानी अल्लाह अल्लाह पुकारे—अ० जो किसी विषय में कुछ न जाने। प्र० धनिया धोबी कूँची हाथ में लेकर ज्वार काटने चला गया। ठीक कहा है कि नई मुसलमानी अल्लाह अल्लाह पुकारे।

नकटा जीया बुरे-हवाल—अ० निर्लज्ज व्यक्ति की कहीं इज्जत नहीं होती है। प्र० मंगत चुग़लख़ोर जहाँ जाता था वहीं ललकारा जाता था। सच है कि नकटा जीया बुरे हवाल।

नकटे की नाक कटी सवा हाथ और बढ़ी—अ० नीच व्यक्ति वेइज्जत होने पर भी अपनी इज्जत बढ़ी समझता है। प्र० कुरूराज पांचालराज से सात बार पराजित होने पर भी आक्रमण करता रहा। सच है कि नकटे की नाक कटी सवा हाथ और बढ़ी।

नक्कारखाने में तूती की कौन सुने—अ० बड़ों के सामने छोटों की कोई इज्जत नहीं करता है। प्र० महारानी मंदोदरी ने लंकेश्वर को युद्ध से बहुत रोका पर नक्कारखाने में तूती की कौन सुनता है।

नज़र बचा कर निकल गया—अ० विना दिखाई दिये ही चले जाना। प्र० गदाधारी भीम को देखते ही पुरोचन नजर बचा कर निकल गया।

नज़र भर देखना—अ० किसी को धमकाना। प्र० आओ बंधु, मेरे साथ चले चलो, तुम्हें कौन नजर भरके देख सकता है।

नदियाँ उतरों नाव में का लै करों जहाज—अ० जब किसी का काम छोटी चीज से चल जाये तो वह बड़ी क्यों ले। प्र० बंधु, तुम खद्दर के कोट में जाड़ा काटते हो, रुई का क्यों नहीं बनवा लेते। अरे पगले, नदियाँ उतरों नाव में का लै करों जहाज।

नदी नाव सयोग होना—अ० जैसे किसी नौका पर मनुष्य पार उतर कर अपनी-अपनी राह चले जाते हैं, इसी तरह इस मायावी जगत् में इन्सान अपने-अपने कर्मानुसार जन्म पाते हैं। प्र० वीर अभिमन्यु के निधन पर जब अर्जुन विलाप करने लगे तो योगीराज कृष्ण ने कहा कि हे अर्जुन, इस जगत् में नदी नाव संयोग है।

नदी में घुसे और फिर सूखा—अ० जो व्यक्ति किसी कार्य को करता है उसे बुराई-भलाई मिले बिना नहीं रहती है। प्र० बंधु, तुमने इस विवाद में पड़ कर फ़िज़ूल ही अपने मस्तक पर कलंक लिया। इस पर सुनने वाले ने उत्तर दिया कि ऐसा नहीं है, नदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में घुसै और फिर सूखा कैसे रह सकता है।

न नाम लेवा न पानी देवा—अ० समूल सम्बन्धियों का नष्ट होना। प्र० लंकेश का इतना बड़ा परिवार होने पर भी कोई न नाम लेवा न पानी देवा रहा।

न नौ मन तेल होय न राधा नाचै—अ० किसी कार्य को करने के लिए कोई असम्भव शर्त लगाना। प्र० द्रौपदी ने कहा कि अगर कर्ण सूर्य पुत्र न हो तो मैं वर लूं अन्यथा फिर कैसे? सच है न नौ मन तेल होय न राधा नाचै।

नट विद्या जानी जाय पर जट विद्या न जानी जाय—अ० जाट बड़े चतुर होते हैं। प्र० धन्ना जाट के पास एक व्यक्ति गया और बोला, अपनी वोट दे दो और सौ रुपये का नोट ले लो। सुनकर धन्ना जाट ने तत्काल अपनी घी की वोट खाली करके दे दी। सच है कि नट विद्या जानी जाय पर जट विद्या न जानी जाए।

नमक छिड़कना—अ० दुःख को वढ़ाना। प्र० युधामन्यु युद्ध से पलायन करने पर कर्ण के कटु वचन सुनकर बोला, कर्ण, क्यों घाव पर नमक छिड़क रहे हो।

नमक मिर्च लगाना—अ० किसी बात को ऐसी युक्ति से और बढ़ा कर कहना कि दूसरे को ज्यादा गुस्सा या स्नेह बढ़े। प्र० हुसनवेग ने मुगल सम्राट् अकबर से ऐसी नमक मिर्च लगा कर बातें कीं कि उसने चित्तौड़ पर चढ़ाई करने का आदेश दे ही दिया।

नमक फूट-फूट कर निकलना—अ० कृतघ्नता का वदला उतरना। प्र० श्यामा ने रायसाहब की रोटियाँ खाकर भी उनके साथ दग़ा किया सो अब उनका नमक फूट-फूट कर निकल रहा है।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन—अ० तड़क भड़क थोड़े ही दिन रहती है। प्र० बंधु, दो ही दिनों में तुम्हारी टोपी की चमक-दमक जाती रही। ठीक है, नया नौ दिन, पुराना सौ दिन।

नये नये चाव मोहि कछु न सुहाय—अ० नई उमंग में व्यक्ति को कुछ भी अच्छा नहीं लगा करता है। प्र० रायबहादुर मदन मोहन ने अपने पौत्र को गाड़ी ले दी है सो रात दिन उसी को लिए फिरता है। ठीक तो है कि नये नये चाव मोहि कछु न सुहाय।

नाई नाई बाल कितने बड़े, जिजमान आगे आये—अ० जब कोई बात पूछे जो जल्दी होने वाली हो। प्र० बालि पुत्र अंगद से लंकेश ने पूछा, बालि कैसे मरा? अंगद ने उत्तर दिया, थोड़े दिन में देख लेना। ठीक है कि नाई नाई बाल कितने बड़े, जिजमान आगे आये।

नाक का बाल होना—अ० अति निकट होना। प्र० राजा मानसिंह बहिन का विवाह करके मुग़ल सम्राट् अकबर की नाक का बाल हो गए।

नाक पकड़े दम निकलना—अ० अति कमज़ोर होना। प्र० फ़ैज़ी से ख़ानख़ाना ने कहा कि तुम क्या लड़ाई जीतोगे तुम्हारा तो नाक पकड़े दम निकलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ।

नाक पै दीऔ धरि के आयी हो—अ० देर करके आना । प्र० कहारिन को संध्या समय आते देख वेद प्रकाश ने कहा, अब नाक पै दीऔ धरिके आयी हो ।

नाक पै मक्खी न बैठने देना—अ० किसी के अधीन न होना । प्र० बंधु, किसी बात की उत्सव में कमी पड़े तो यहाँ से ले जाना, पर तुम तो अपनी नाक पै मक्खी न बैठने देना ।

नाग मंत्र न जानही देइ बमी में हाथ—अ० जिस की विधि न जाने उसे नहीं करना चाहिए । प्र० वीर अभिमन्यु चक्रव्यूह से निकलना नहीं जानता था तो भी उसे तोड़ने के लिए चला गया । सच है कि नाग मंत्र न जानही देइ बमी में हाथ ।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा—अ० अपनी मूर्खता का दोष दूसरों को लगाना । प्र० रवीन्द्र को लिखते देख संगीता ने कहा कि तुम्हारा लेख अच्छा नहीं है । इस पर रवीन्द्र ने उत्तर दिया कि पैन अच्छा नहीं है । हाँ ठीक है कि नाच न जाने आँगन टेढ़ा ।

नाचने निकली घूंघट निकाले—अ० निर्लज्जता के काम में शर्म कैसी ? प्र० द्रौपदी ने दासीत्व को स्वीकार किया पर सभा में जाना न चाहा । वाह, वाह, नाचने निकली घूंघट निकाले ।

नाचने वाले का पैर और गाने वाले का गला नहीं थमता—अ० जो जिस कार्य को जानता है सो खुल ही जाता है । प्र० द्रौपदी स्वयंवर में वीर अर्जुन ने लक्ष भेदन कर ही दिया । ठीक ही तो है कि नाचने वाले का पैर और गाने वाले का गला नहीं थमता है ।

नाचै कूदै तोड़ै तान ताको सब जग राखै मान—अ० पाखण्डियों का सब जगह सम्मान होता है । प्र० दिनेश ने रवीन्द्र से कहा कि बंधु, पंडितों का निरादर और नक्कालों का आदर होता है । सच है कि नाचै कूदै तोड़ै तान ताको सब जग राखै मान ।

नादान की दोस्ती जी का जंजाल—अ० मूर्ख दोस्त हानिकारक होता है । प्र० मूर्ख शकुनि की मैत्री से दुर्योधन के प्राण गए । ठीक है कि नादान की दोस्ती जी का जंजाल ।

नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा—अ० मूर्ख दोस्त से विद्वान् शत्रु अच्छा है । प्र० नैपोलियन बोनापार्ट ने इटली के जनरल की असावधानी देख कर कहा था कि नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा होता है ।

नानक दुखिया सब संसार, वह सुखिया जो राम आधार—अ० प्रभु के भक्त ही संसार में सुखी हैं । प्र० सुखी मीन जहँ नीर अगाधा, जिमि हरि शरण न एको बाधा । ठीक है कि नानक दुखिया सब संसार, वह सुखिया जो राम आधार ।

नानक नन्हें हो चलो जैसी नन्ही दूब, सर्भा घास जल जायेंगे हरी दूब की दूब—अ० विनम्र व्यक्ति को कभी दुःख नहीं सताता है । प्र० विशाल वट वृक्ष आँधी में गिर गया पर गुलाब का पौधा वैसा ही रहा । गुरु जी ने सच ही कहा है कि नानक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्हें हो चलो जैसी नन्हीं दूब, सभी घास जल जायेंगे हरी दूब की दूब।

नाना के आगे ननिहाल की बातें—अ० अधिक जानने वाले के सामने कम जानने वाला बोले। प्र० भीष्म पितामह के सामने कर्ण डींग मारने लगा। तब द्रोणाचार्य ने कहा कि नाना के आगे ननिहाल की बातें ठीक नहीं हैं।

नानी का घर होना—अ० सुखी होना। प्र० गदाधारी भीम ने कीचक से कहा कि श्यामा को छेड़ना नानी का घर नहीं है।

नाम उछालना—अ० कुल को दाग़ लगाना। प्र० शंख को ब्रह्मास्त्र से मार कर उसने अपने वंश का नाम उछाल लिया।

नाम करना—अ० कुल प्रतिष्ठा बढ़ाना। प्र० लंकेश के पुत्र मेघनाद को मार कर लक्ष्मण ने रघुकुल का नाम कर दिया।

नाम धराना—अ० कुल को कलंकित करना। प्र० तुलसी ने गंगा को छेड़-कर बहुतेरे नाम धराये।

नाम पै धब्बा लगाना—अ० अप्रतिष्ठित होना। प्र० विभीषण ने लंका का भेद देकर नाम पै धब्बा लगा लिया।

नाम पै मरना—अ० कुल प्रतिष्ठा के लिए प्राण दे देना। प्र० महाराणा प्रताप मेवाड़ के नाम पै मर मिटे।

नाम बड़ा और कर्तब थोड़ा—अ० जब कोई किसी इच्छा से किसी के यहाँ जाए और वह पूरी न हो। प्र० कंस की सभा में अनेक याचक अयाचक होने गये, पर वृथा। तब उन्होंने कहा कि नाम बड़ा और कर्तब थोड़ा।

नाम के भूप, छान फारैं धूप अथवा नाम गिरधारी, उठै न सुपारी—अ० गुण के विरुद्ध नाम होना अथवा नामानुसार गुण न होना। प्र० तुम दुयोजन कैसे ? तुम्हारी तो वही कहावत है कि नाम के भूप, छान फारैं धूप अथवा नाम गिरधारी, उठै ना सुपारी।

नामी दूकानदार कमा खाय और नामी चोर मारा जाय—अ० एक ही वस्तु किसी को विष और किसी को अमृत। प्र० बंधु देखो, किसी को बड़ाई दुखदाई और किसी को सुखदाई, जैसे नामी दूकानदार कमा खाय और नामी चोर मारा जाय।

नाव डुबोना—अ० नष्ट होना। प्र० जयद्रथ जब डर कर भागने लगा तो कर्ण ने कहा, बंधु, तुमने तो बिल्कुल नाव डुबो दी।

निखट्टू आवै लड़ता कमाऊ आवै डरता—अ० निठल्ला व्यक्ति क्लेशकारी होता है। प्र० बंधु, दिन भर तो तुम ठाली रहते हो पर घर में आते ही लड़ना शुरू कर देते हो। हाँ जी, निखट्टू आवै लड़ता कमाऊ आवै डरता।

निज सुगन्ध गति मृग नहिं जानै—अ० व्यक्ति के गुण व्यक्ति स्वयं नहीं जानता है। प्र० हनुमान जी से रिच्छेश ने कहा कि पवनसुत तुम अपनी शक्ति से परिचित नहीं, सिंधु लांघो। सच है कि निज सुगन्ध गति मृग नहिं जानै।

निज हित अनहित पशु पहिचाना—अ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी क्षति और लाभ को पशु भी जानते हैं। प्र० भरत सेना से भयभीत होकर मृगरामाश्रम में गए तो ऋषियों ने कहा, ठीक है कि निज हित अनहित पशु पहिचाना।

निन्यानवे के फेर में पड़ना—अ० जब व्यक्ति हाथ सकोड़ कर जोड़ने लगता है। प्र० बंधु, आजकल कौड़ी भी नहीं खर्च करते हो, क्या निन्यानवे के फेर में पड़ गए हो।

निर्धन के धन गिरधारी—अ० दोनों के सहायक प्रभु हैं। प्र० रामदीन ने कन्या के विवाह की तिथि तो निकलया ली पर खर्च की सामर्थ्य नहीं। सुननेवालों ने उत्तर दिया कि निर्धन के धन गिरधारी होते हैं।

नीकी पै फीकी लगै बिन औसर की बात
अ० असमय की बात भली भी बुरी लगती है। प्र० जिस समय किसी की बरात जा रही थी तो किसी मनचले के मुंह से निकल गया कि राम राम सत्य है। बरातियों ने पकड़ कर उसकी मरम्मत कर दी। सच है कि नीकी पै फीकी लगै बिन औसर की बात।

नीके को सब नीके ही लागत—अ० जो जैसा होता है उसे जगत् वैसा ही दिखाई देता है। प्र० लक्ष्मण ने श्रीराम से कहा, बंधु, सुहृदय होने से आप सब का विश्वास कर लेते हैं। ठीक है कि नीके को सब नीके ही लागत।

नीचे का सांस नीचे और ऊपर का ऊपर—अ० जब कोई व्यक्ति महान् दुःख की बात सुन कर धक्क से रह जाता है। प्र० शंख की मृत्यु की सुनकर कमलनयन का नीचे का सांस नीचे और ऊपर का ऊपर रह गया।

नीम हकीम ख़तरे जान, नीम मुल्ला ख़तरे ईमान—अ० अधकचरी विद्या दुखदायी होती है। प्र० बंधु, वैद्य जी ने नारायण को ज्वर में विष वटी देकर चलता किया। सच है कि नीम हकीम ख़तरे जान, नीम मुल्ला ख़तरे ईमान।

नीयत साबित मंज़िल आसान—अ० धर्मात्मा के सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। प्र० धर्मराज युधिष्ठिर के सब कार्य पूर्ण हुए। सच है कि नीयत साबित मंजिल आसान।

नेकी और पूछ पूछ—अ० कल्याण करने में किसी से क्या पूछना। प्र० बंधु, शर्बत पीओगे, वाह, वाह नेकी और पूछ पूछ।

नेकी कर दरिया में डाल—अ० भलाई करके बदले की इच्छा मत कीजिए। प्र० सकाम कर्म जन्म मरण के दाता हैं। इसलिए नेकी कर दरिया में डाल।

नेकी का फल नेक—अ० भलाई का भला ही फल होता है। प्र० पूर्व जन्म में शुभ कर्म करने से नारद जी ब्रह्मा के पुत्र हुए। ठीक है कि नेकी का फल नेक।

नेकी करो खुदा से पाओ—अ० भलाई का बदला मनुष्य से मत माँगो, ईश्वर देगा। प्र० बंधु, आजकल नेकी करने पर भी कोई अहसान नहीं मानता है। पर यह तो ठीक नहीं क्योंकि नेकी करो खुदा से पाओ।

नेकी का फल बदी—अ० आजकल के व्यक्तियों में बहुत से अपने उपकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अपकार करते हैं । प्र० बंधु, मैंने ही कन्हैयालाल को नौकरी दिलायी और मुझे ही बुरा कहता है। सच है कि नेकी का फल बदी ।

नेस्ती में बरखुरदारी—अ० गरीबी में शुभ कर्म भी अच्छा नहीं । प्र० बंधु, कल रमा की सगाई है और पैसा नहीं । सच है कि नेस्ती में बरखुरदारी ।

नौकर आगे चाकर और चाकर आगे कूकर—अ० जब किसी कार्य को करने के लिए एक व्यक्ति दूसरे से कहता जाए । प्र० श्यामा ने अपनी सेविका से कहा, दूध लाई हो। सेविका ने कहा कि रामू से लाने के लिए कह दिया है। रामू से पूछने पर पता चला कि उसने धनिया को लाने को कहा है। इस पर श्यामा ने कहा, बहुत खूब, नौकर के आगे चाकर और चाकर के आगे कूकर।

नौकर की धरा से सवा हाथ ऊँची जड़ है—अ० सेवक को जब चाहा अलग कर दिया। प्र० वसन्त ने मंगत से पूछा, क्या बात है, आज चेहरा क्यों उतरा हुआ है ? मंगत ने उदास मुख से कहा, बंधु, नौकरी छूट गई । ठीक है कि नौकर की धरा से सवा हाथ ऊँची जड़ है ।

नौकरी है कि भाई-बंदी—अ० जब सेवक को धमकाया जाता है। प्र० तुम काम नहीं करते, नौकरी है कि भाई बंदी ।

नौ नकद न तेरह उधार—अ० नौ नक़द तेरह उधार से अच्छे होते हैं । प्र० धनिया ने अपना बछड़ा बेचा तो ग्राहक ने कहा, नक़द लो तो पचास थामो और सत्तर लो तो चैत में ले लेना । ठीक है, पचास ही दो, मैं तो नौ नक़द न तेरह उधार को मानने वाली हूँ ।

नौ सौ चूहे खाय बिलइया हज को चली अ० पाप करके शुभ कार्य करना। प्र० चेता चार खून करके जगन्नाथ जी की यात्रा पर जा रहा है। सच है कि नौ सौ चूहे खाय बिलइया हज को चली ।

न्यारा पूत पड़ोसी बराबर—अ० जो पुत्र न्यारा हो जाता है वह वैसा ही है जैसा पड़ोसी । प्र० आज श्यामा के भोज है पर उसके लाला नहीं हैं । हाँ जी, न्यारा पूत पड़ोसी बराबर ।

न्यौते गाँव पास नहीं पैसा—अ० दिखावा करना। प्र० बंधु, तुम्हारे घर में तो आटा दाल तक नहीं, कर बैठे ब्रह्म-भोज । तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि न्यौते गाँव पास नहीं पैसा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प

पंच जहाँ परमेश्वर—अ० पंचायत में न्याय होता है। प्र० बंधु, अब क्या करोगे ? सुनने वाले ने उत्तर दिया कि कुछ नहीं, पंचों ने जो किया सो ठीक है। देखो, पंच जहाँ परमेश्वर।

पंचों का वचन सिर माथे, पर परनाला तो यहीं पड़ेगा—अ० जब कोई चार व्यक्तियों का कहना न माने। प्र० लोगों ने गंगाराम से कहा, आप अपना द्वार उधर की ओर करवा लें तो अच्छा है। गंगाराम ने उत्तर दिया, ठीक है, पर मेरा द्वार इधर ही रहेगा। इस पर लोगों ने कहा कि वाह वाह, यह तो वही बात हुई कि पंचों का वचन सिर माथे, पर परनाला तो यहीं पड़ेगा।

पंचों मिल कर मर गए मानो गए बरात—अ० चार आदमियों की सम्मति से कोई काम करने से खुशी होती है। प्र० बंधु, हर्ष हरेक कार्य चार भाइयों की सलाह से करता है और सफलता पाता है। ठीक तो है, जानते नही कि पंचों मिल कर मर गए मानो गए बरात।

पंचों मिल कै कीजै काज, हारे जीते नाहीं लाज—अ० जब कोई कार्य दस भाइयों की सम्मति से किया जाए तो फिर अगर उसमें हानि या लाभ हो तो कुछ शर्म की बात नहीं है। प्र० पाण्डवों ने अपने वृद्धों की सम्मति से युद्ध शुरू किया, तो वे निर्दोष रहे। सच है कि पंचों मिल कै कीजै काज, हारे जीते नाहीं लाज।

पंडित सोइ जो गाल बजावै—ज़्यादा बोलने वाले को पंडित कहते हैं। प्र० अर्जुन देव की बातों में बड़ी बड़ाई होती है। ठीक है कि पंडित सोइ जो गाल बजावै।

पकाय सो खाय दौड़े सो पाय—अ० जो मेहनत करेगा उसे लाभ होगा। प्र० पार्थ ने परिश्रम करके अपना बाण शब्द भेदी कर लिया। सच है कि पकाय सो खाय दौड़े सो पाय।

पक्के पान होना—अ० मृत्यु के नजदीक होना। प्र० बंधु, आज नाना जी चल दिये तो क्या डर है। उनके तो पक्के पान थे।

पग बिन कटै न पंथ—अ० बिना किए कोई कार्य नहीं होता है। प्र० रमेश, मैंने तुम्हें कभी पढ़ते नहीं देखा तो फिर पास कैसे होगे। क्या तुम जानते नहीं कि पग बिन कटै न पंथ।

पगड़ी रख धोखा—अ० इस मायावी जगत् में सम्मान से जिन्दगी बिता। प्र० बंधु, ऐसी शान शौकत से रहने से क्या लाभ जब तकाज़े पीछे-पीछे फिरते हों। क्या तुम जानते नहीं कि पगड़ी रख धोखा।

पछवा चलै खेती फलै अ० पछवा हवा में खेती खूब फलती फूलती है। प्र० पछवा हवा चलने से फलियाँ बड़ी होने लगी हैं। सच है कि पछवा चलै खेती फलै।

पड़वा गमन न कीजिए जो सोने की होय—अ० पड़वा को चाहे कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही लाभ होता हो पर घर से नहीं जाना चाहिए। प्र० बधु, आज मेरा बम्बई जाना रुक गया क्योंकि पड़वा गमन न कीजिए जो सोने की होय।

पड़ौसी के मेह बरसे तो हमारेहु कीच—श्र० अगर पड़ौसी धनवान है तो हमें भी लाभ होगा। प्र० बंधु, तुम धनवान हो, तुम्हारे कारण मेरे भी दिन कट रहे हैं। सच तो है कि पड़ौसी के मेह बरसे तो हमारेहु कीच।

पढ़ि पढ़ि के पत्थर भये लिख लिख कै भई ईंट। गुनि गुनि के गारी भये रही भींत की भींत—श्र० जब पढ़ लिखकर भी किसी को लाभ न पहुँचे। प्र० बंधु, तुम तो पढ़ लिख कर भी वैसे के वैसे ही रहे। सच है कि पढ़ि पढ़ि के पत्थर भये लिख लिख कै भई ईंट। गुनि गुनि के गारी भये रही भींत की भींत।

पढ़िये पूत सोई जासों हंडिया खुदबुद होई—श्र० इंसान को ऐसी विद्या पढ़नी चाहिए जिससे आय हो। प्र० बंधु, रामा का लड़का अंग्रेज़ी पढ़ कर जल्दी नौकर हो गया। ठीक तो है कि पढ़िये पूत सोई जासों हंडिया खुदबुद होई।

पढ़े तो हैं पर गुने नहीं—श्र० जो व्यक्ति अपनी विद्या का प्रयोग कर सके। प्र० बंधु, तुम पढ़े तो अवश्य हो पर गुने नहीं।

पढ़े न लिखे नाम विद्याधर—श्र० नाम के अनुसार गुण न होना। प्र० घर में तो चूहे दौड़ें और बाप ने नाम धर दिया धनेश। सच है कि पढ़े न लिखे नाम विद्याधर।

पढ़े फारसी बेचे तेल ये देखो कुदरत के खेल—श्र० जब किसी व्यक्ति को विद्यानुसार पद की प्राप्ति न हो। प्र० हरदेव अर्थशास्त्र में एम० ए० है फिर भी कहीं नौकरी नहीं मिली। हार कर खेती बाड़ी में लग गया बेचारा। सच है कि पढ़े फारसी बेचे तेल ये देखो कुदरत के खेल।

पढ़ों में अनपढ़. हंसों में कौआ—अ० विद्वानों में मूर्ख ऐसा ही होता है जैसा कि अनपढ़ों में कौआ। प्र० बुद्ध सैन पंडितों की सभा में ऐसा लगता है जैसा हंसों में कौआ। ठीक तो है कि पढ़ों में अनपढ़; हंसों में कौआ।

पति परमेश्वर की ठौर—श्र० स्त्रियों के लिए पति परमेश्वर समान है। प्र० रोहिणी ने पति को परमेश्वर माना है। ठीक है कि पति परमेश्वर की ठौर।

पत्थर को जोंक नहीं लगती—श्र० मूर्खों पर उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता। प्र० दुर्योधन पर श्रीकृष्ण के उपदेश का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। सच है कि पत्थर को कहीं जोंक लगी है।

पत्थर डारै कीच में उछरि बिगारै अंग—श्र० नीच व्यक्ति को छेड़ना ठीक नहीं है। प्र० बंधु, नीच चेता से क्यों बोले? क्या तुम जानते नहीं कि पत्थर डारै कीच में उछरि बिगारै अंग।

पत्थर पूजै हरि मिलै तो कबिरा पूज पहाड़—श्र० मूर्तिपूजा के विरुद्ध। प्र० बंधु, क्या शालिग्राम की पूजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रभु मिलते हैं। यदि ऐसा है तो कबीर साहब कहते हैं कि पत्थर पूजै हरि मिलै तो कबिरा पूजै पहाड़।

पर उपकारी सब अघहारी—अ० परोपकारी के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। प्र० सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र ने सब पापों को नष्ट कर दिया। सच है कि पर उपकारी सब अघहारी।

पर उपदेश चतुर बहुतेरे, जे अनुसरहि ते नर न घनेरे—अ० दूसरों को तो सब शिक्षा देते हैं; किन्तु स्वयं नहीं चलते हैं। प्र० दानवीर कर्ण ने मरते समय पार्थ को तो धर्मोपदेश किया पर छः कौरव साथियों के साथ मिलकर अभिमन्यु का वध क्यों किया। सच है कि पर उपदेश चतुर बहुतेरे, जे अनुसरहि ते नर न घनेरे।

पर काजी वैंकुण्ठ बसें—अ० दूसरों का भला करने वाले वैंकुण्ठ को जाते हैं। प्र० सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को वैंकुंठधाम मिला। ठीक तो है फिर पर काजी वैंकुंठ बसें।

पर के औगुन सब लखें अपनौ लखै न कोई—अ० दूसरों की बुराई को सब निहारते हैं अपनी को कोई नहीं देखता। प्र० पार्थ ने कर्ण से कहा कि राधेय, तुम औरों के दोष तो निहारते हो पर अपने पापों पर विचार नहीं करते हो। सच है कि पर के औगुन सब लखें अपनौ लखै न कोई।

परदेशी की प्रीति अगिन पै तापनौ। यदपि लगाओ अंग होइ नहि आपनौ—अ० परदेशी और अग्नि से कितना ही प्रेम करो अपने नहीं होते हैं। प्र० सुरेश पाँच मास रह कर अपने घर को चला गया पर अब सबको याद आता है। सच है कि परदेशी की प्रीति पै तापनौ। यदपि लगाओ अंग होइ नहि आपनौ।

पर निन्दा सम नहि अघमाई—अ० दूसरों के अपवाद के समान कोई नीचता नहीं है। प्र० द्रोणाचार्य से दुर्योधन से कहा, वत्स, तुम सदैव वृकोदर की बुराई किया करते हो। क्या तुम नहीं जानते कि पर निन्दा सम नहि अघमाई।

पर हित बस जिनके मन माहीं, तिनको जग दुर्लभ कछु नहीं—अ० जो दूसरों का कल्याण चाहते हैं, उन्हें सब कुछ मिल जाता है। प्र० बंधु, परोपकारी जटायु को श्रीराम ने बैकुंठधाम दिया। सच है कि परहित बस जिनके मन माहीं, तिनको जग दुर्लभ कछु नाहीं।

परहित सरिस धर्म नहि भाई—अ० परमार्थ सबसे वड़ा धर्म है। प्र० जटायु ने प्रभु राम के हित अपने प्राण देकर स्वर्ग प्राप्त किया। सच है कि परहित सरिस धर्म नहि भाई।

पराई जनी वैसे ही नहीं आती—अ० बेटे बड़ी कठिनाई से ब्याहे जाते हैं। प्र० ऊदल के विवाह में रात दिन तलवार चली। ठीक तो है कि पराई जनी वैसे ही नहीं आती है।

पराई पूंजी पै धन्ना सेठ—अ० दूसरों के धन पर गर्व करना। प्र० धनीराम तुम नाना के धन पर गर्व करते हो सो तुम्हारी वही कहावत है कि पराई पूंजी पै धन्ना सेठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराया घर थूक का भी डर—अ० पराये घर में कभी मत रहो। प्र० बन्धु, एक मास के लिए तुम्हें क्या ठहराया, तुमने तो मेरा घर ही सड़ा डाला। सच है कि पराया घर थूक का भी डर।

पराया मन परदेश समान—अ० पराये मन की थाह नहीं मिलती। प्र० बन्धु, जो कुछ संध्या ने कहा, क्या ठीक है ? कैसे कहूँ बन्धु, पराया मन परदेश समान।

पराये पीरों को मलीदा और घरकों को धतूरा—अ० दूसरों का सम्मान अपनों का असम्मान। प्र० वत्स ! अतिथि तो खा गये पर मैं बैठा ही रहा। तुम्हारी तो वही कहावत है कि पराये पीरों को मलीदा और घरकों को धतूरा।

पराये पूत से पैसा लेना कठिन है—अ० सख्त मेहनत करने के बाद दूसरे से पैसा मिलता है। प्र० बन्धु, चार घंटे मेहनत करने के बाद पाँच रुपये मिले हैं। सच है कि पराये पूत से पैसा लेना कठिन है।

पहले अपनी ही दाढ़ी में मसोसा दिया जाता है—अ० सबको आपा प्यारा है। प्र० बीरबल से मुग़ल सम्राट् अकबर ने पूछा कि जो हमारी दोनों की दाढ़ियों में आग लगे तो पहले किसकी बुझाओगे। बीरबल ने उत्तर दिया कि पहले अपनी ही दाढ़ी में मसोसा दिया जाता है।

पहले मारै सो मीरी—जो व्यक्ति अपना काम पहले निकाल लेता है वही अच्छा रहता है। प्र० फ़कीरचंद ने पहले ही दस रुपये गज़ ज़मीन खरीद ली। अब वही ज़मीन पचास रुपये गज़ मिलती है। सच है कि पहले मारै सो मीरी।

पहले लिख अरु पीछे दे, घट जावै काग़ज़ से ले—अ० पहले लिख लो फिर किसी को पैसा दो, जो घट जाये तो फिर काग़ज़ देख लो, मिल जाएगा। प्र० मुनीम जी ने धनिया खेतिहर को बीस रुपये न दिये पर लिख दिये बही में। रोकड़ बढ़ी तो बही देखी, सो मिल गए। सच है कि पहले लिख अरु पीछे दे, घटै जावै काग़ज़ से ले।

पहले ही गस्से में बाल—अ० किसी कार्य के शुरू करने में ही विघ्न पड़ना। प्र० बन्धु, जैसे ही मैंने पुस्तकें उठायीं वैसे ही छींक हुई। सच है कि पहले ही गस्से में बाल।

पाँचै मीत पचासै ठाकुर—अ० पाँच रुपयों के लिए दोस्त से और पचास रुपयों के लिए ज़मींदार से कभी भी नहीं बिगाड़नी चाहिए। प्र० रवीन्द्र-शरण के मित्र सोमेश ने उससे पाँच रुपये माँगे तो उसने कहा कि ले जाओ, क्योंकि पाँचै मीत पचासै ठाकुर।

पाँचों उँगलियाँ एक सी नहीं—अ० मायावी जगत् में सभी व्यक्ति एक से नहीं होते हैं। प्र० श्रीराम और लक्ष्मण भाई-भाई थे पर श्रीराम शांत प्रकृति के और लक्ष्मण तेजस्वी थे। सच है कि पाँचों उँगलियाँ एक-सी नहीं होती हैं।

पाँचों उँगलियाँ पहुँचा भारी—अ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्धुओं के मेल से प्रतिष्ठा होती है। प्र० चारों भाइयों के मेल से धर्मराज युधिष्ठिर ने भारत में श्रीविजय प्राप्त की। सच तो है कि पाँचों उँगलियाँ पहुँचा भारी।

पाँचों घी में छटा मुँह कढ़ाई में—अ० जब बहुत उल्लास में दिन गुजरते हों। प्र० अब तो बन्धु नाना का माल मिल जाने से पाँचों घी में छटा मुंह कढ़ाई में है।

पाण्डे जी पछताओगे और वे ही चने की खाओगे—अ० जब कोई व्यक्ति हार कर फिर वही काम करे जिसे उसने नफ़रत के कारण छोड़ दिया हो। प्र० बन्धु, तुमने तो आटे-दाल की दूकान मना करने पर भी छोड़ दी थी। अब फिर वही कर बैठे। तुम्हारी तो वही कहावत हुई कि पाण्डे जी पछताओगे और वे ही चने की खाओगे।

पान और ईमान बदलता ही भला—अ० ऐसा चंचल लोग कहा करते हैं। प्र० बन्धु, तुमने तो कहा था कि मैं ईमान से कहता हूँ पर अब बात बदल रहे हो। तब उसने जवाब दिया कि बन्धु तुम जानते नहीं. पान और ईमान बदलता ही भला।

पान पुराना, घी नया, अरु सतवन्ती नार। चौथी पीठ तुरंग की, स्वर्ग निशानी चार—अ० पुराना पान, नया घी, पतिव्रता स्त्री और घोड़े की सवारी जिस व्यक्ति को मिले तो उसे स्वर्ग का सुख मिल गया। प्र० बन्धु, धनदेव को पतिव्रता स्त्री होने से स्वर्ग का सुख है। सच है कि पान पुराना, घी नया, अरु सतवन्ती नार। चौथी पीठ तुरंग की, स्वर्ग निशानी चार।

पानी का सा बुलबुला—अ० देह क्षण भंगुर है। व्यक्ति फिज़ूल में ही घमण्ड करता है। यह तो पानी का-सा बुलबुला है।

पानी पहले पुल बांधना—अ० काम शुरू करने से पूर्व प्रबंध करना। प्र० श्याम ने विवाह तो उठा लिया पर प्रबन्ध कुछ भी नहीं किया। क्या वह जानता नहीं कि पानी पहले पुल बाँधा जाता है।

पानी पानी होना—अ० बहुत शर्मिन्दा होना। प्र० बड़े भय्या की बातें सुनकर वह पानी-पानी हो गया।

पानी पी घर पूछना—अ० काम करके फिर उसके विषय में विचार करना। प्र० धन्नू ने पहले तो चेता चमार की गुड़गुड़ी में दम लगा लिया, अब पूछता है कि गुड़गुड़ी किसकी थी। सच है कि पानी पी कर घर पूछना।

पानी पीवै छान कै, हत्या करै जान कै—अ० जो व्यक्ति दिखावे का भक्त हो। प्र० रायसासव वैसे तो खूब चन्दन पोतते हैं पर गले दिन-भर काटते हैं। उनकी तो वही कहावत है कि पानी पीवै छान कै, हत्या करै जान कै।

पानी में बताशा घुल गया—अ० देह मलीन हो गई। प्र० अब क्या है, चिन्ता से तो देह पानी में बताशा-सी घुल गई।

पाप उभरै और फिर उभरै—अ० पाप अवश्य प्रगट होता है। प्र० दुर्योधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने पापों को बहुतेरा छिपाने का प्रयास किया, अन्त को खुल ही गए। सच है कि पाप उभरै और फिर उभरै।

पापी की नाव भर के डूबती है—अ० पापी के पाप जब पूरे हो जाते हैं तब नष्ट हो जाता है। प्र० कंस ने अनेक पाप किए और अन्त में नष्ट हो गया। सच है कि पापी की नाव भर के डूबती है।

पाँय कुल्हाड़ी देत है मूरख अपने हाथ—अ० मूर्ख स्वयं ही हानि उठाता है। प्र० बंधु, तुमने पुरानी गाड़ी खरीद कर स्वयं ही हानि उठाई है। सच है कि पांय कुल्हाड़ी देत है मूरख अपने हाथ।

पाँय तरे रोड़ा, नीचे सवार ऊपर घोड़ा—अ० कभी-कभी किसी छोटे से कारण से बड़े-बड़े काम बिगड़ जाया करते हैं। प्र० तामीना के छोटे से झूठ ने रुस्तम के हाथ से सोहराब को मरवा दिया। सच है कि पाँय तरे रोड़ा, नीचे सवार ऊपर घोड़ा।

पाय जूं बिनती, सौ जूं गिनती—अ० पैर पकड़ने से अधिक अधीनता नहीं और सौ से अधिक गिनती नहीं। प्र० बंधु, मैंने मालिक के पैर तक पकड़े पर वे न माने। सब जानते हैं कि पाय जूं बिनती, सौ जूं गिनती।

पाये सोने की छुरी पेट न मारै कोय—अ० अच्छी वस्तु का कोई असद प्रयोग नहीं करता है। प्र० बंधु, तुमने हीरे की कनी निगल ली। क्या तुम जानते नहीं कि पाये सोने की छुरी पेट न मारै कोय।

पास का कुत्ता दूर का भाई—अ० दूर के भाई से पास का कुत्ता भी अच्छा है। प्र० अरी श्यामा, तू जलज को कभी याद नहीं करती। इस पर श्यामा ने कहा कि याद भी कैसे करूँ, जानती नहीं कि पास का कुत्ता दूर का भाई।

पास कौड़ी नहीं नाम करोड़ीमल—अ० नामानुसार गुण न होना। प्र० बंधु, घर में तो औरत तक नहीं और नाम है भूपसिंह। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि पास कौड़ी नहीं नाम करोड़ीमल।

पासा पड़े अनाड़ी जीते—अ० दाव आने पर अनाड़ी भी जीत जाता है। प्र० बंधु, तुम्हारे सब काम बनते जाते हैं। इसलिए तुम्हारी तो वही कहावत है कि पासा पड़े अनाड़ी जीते।

पासा पड़ै तो दाव और राजा करै सो न्याव—अ० जैसी पड़े वैसी भोगो। प्र० बंधु, महाराज ने मेरा घर उसकी ओर कर मेरे हिस्से में लगा दिया। सच है कि पासा पड़ै तो दाव और राजा करै सो न्याव।

पीठ पर होना—अ० सहायक होना। प्र० पाण्डवों की पीठ पर यदुनाथ थे।

पिये रुधिर पै ना पिये, लगी पयोधर जोख अ० नीच व्यक्ति उत्तम पदार्थ को छोड़ कर नीच पदार्थ को ग्रहण करता है। प्र० ऊँट बगीचे में जाकर कीकर के वृक्ष को ही खाता है। सच है कि पिये रुधिर पै ना पिये, लगी पयोधर जोख।

पीठ पीछे कुछ हो—अ० मरने पर जो चाहो सो हो। प्र० बुद्धू ने अपने बेटों से कहा कि मेरे जीते जी तो अलग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत होओ, फिर पीठ पीछे कुछ हो।

पीपल की जड़ काटना—अ० बात में से बात निकालना। प्र० बंधु, तुम अपने काम से काम रखो, पीपल की जड़ क्यों काटते हो ?

पीर बावरची भिश्ती खर—अ० ऐसा व्यक्ति जो पूज्य, रसोइया, कहार और गधा हो। प्र० बंधु, मुझे ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो पूज्य हो, रसोइया हो, कहार और मूर्ख भी हो, ला दो। उसने ब्राह्मण को लाकर खड़ा कर दिया। सच है कि पीर बावरची भिश्ती खर।

पीरों की सगाई मीरों के—अ० उत्तम पुरुषों के सम्बन्ध उत्तम पुरुषों से होते हैं। प्र० महासिंह रघुवंशी क्षत्रिय हैं। उन्होने अपनी पौत्री की सगाई धनवान यादव से न करके चन्द्रवंशी यशवंतराय के साथ कर दी। सच है कि पीरों की सगाई मीरों के।

पीस मरी पो मरी आए संडे खा गए—अ० जब किसी स्त्री के घरकों को रोटी न मिले और बाहर वाले आकर खा जायें। प्र० सरला ने कविता से कहा कि बहिन पीस पोकर धरी थीं, छः मेहमान आकर खा गए। अब क्या करूँ, मेरी तो वही कहावत हुई कि पीस मरी पो मरी आये संडे खा गए।

पीसनहारी का बेटा, केसर का टीका—अ० ग़रीब अमीर की बराबरी करे। प्र० बंधु, घर में तो दाने नहीं और पोशाक बड़ी भड़कीली पहन ली। सच है कि पीसनहारी का बेटा, केसर का टीका।

पुन्न करते हू जो हानि, तऊ न छोड़ि पुन्न की बानि—अ० अगर पुन्न करने वाले लोगों को हानि भी पहुँचे तो भी पुन्न करना मत छोड़ो। प्र० धर्मराज युधिष्ठिर को अनेक कष्ट झेलने पड़े पर उन्होंने पुण्य कर्म नहीं छोड़े। सच है पुन्न करते हू जो हानि, तऊ न छोड़ि पुन्न की बानि।

पुन्नन मिलै सुलक्खा नारि—अ० सुलक्षणा स्त्री पूर्व जन्म के शुभ कर्मों से मिलती है। प्र० बंधु, तुम्हें कविता जैसी सुशीला पत्नी मिली है। यह तुम्हारे पिछले पुण्यों का फल है। सच है पुन्नन मिलै सुलक्खा नारि।

पुरानी घोड़ी सोने की कलंगी—अ० बूढ़ी औरत जब चटक-मटक के कपड़े व गहने धारण करे। प्र० अरी, कब्र में पैर और चिकन की साड़ी। क्या कहना है तुम्हारा ! तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कह दी कि पुरानी घोड़ी सोने की कलंगी।

पुराने चावल फार होते हैं—अ० पुराने लोग मेहनती होते हैं। प्र० भीष्म पितामह के सामने कोई भी ज्यादा देर नहीं खड़ा रहा। सच है कि पुराने चावल फार होते हैं।

पुरुष की माया और वृक्ष की छाया उसके साथ जाती है—अ० भाग्यशील व्यक्तियों के निधन पर उनकी श्री इस तरह उड़ जाती है, जिस तरह वृक्ष के कटने पर उसकी छाया उसके साथ चली जाती है। प्र० बंधु, प्रमोद के परलोक सिधारते ही उसके घर में भंक व्याहने लगे। सच है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष की माया और वृक्ष की छाया उसके साथ जाती है।

पूछते पूछते कलकत्ते चले जाओ—अ० पूछने से सबका पता लग जाता है। प्र० बंधु, तुम मेरे घर कैसे आ गए? उसने कहा कि पूछते-पूछते कलकत्ते चले जाओ।

पूजै तो देव, नहीं भीत कौ लेव—अ० पूजने से देव अन्यथा भीत का लेवड़ा। प्र० संन्यासी किसी की पूजा नहीं करते, उन्हें कोई नहीं सताता। सच है कि पूजै तो देव, नहीं भीत कौ लेव।

पूत आपनो, सबको प्यारौ—अ० अपनी सन्तान सबको प्यारी होती है। प्र० अरे, देखो बंदरिया अपने बच्चे को कैसे छाती से चिपटाये फिर रही है। ठीक तो है कि पूत आपनो, सबको प्यारो।

पूत कपूत हो जाता है पर माता कुमाता नहीं होती—अ० पुत्र चाहे अपनी माता की सेवा न करे पर माता का प्यार नहीं घटता है। प्र० सोमेश अपनी माता की सेवा नहीं करता पर वह उसे हर पल याद करती है। सच है कि पूत कपूत हो जाता है पर माता कुमाता नहीं होती।

पूत के पांय पालने में दीखें—अ० बच्चे के लक्षणों से जान लिया जाता है कि वह कैसा होगा। प्र० भरत के जन्म पर ही उसके लक्षण देख कर कह दिया था कि वह चक्रवर्ती होगा। सच है कि पूत के पांय पालने में दीखें।

पूत भये सयाने, दरिद्र गये बिराने—अ० जब बेटे कमाने लगते हैं। प्र० बंधु, अब तो आराम से कट रही होगी। क्यों नहीं, पूत भये सयाने, दरिद्र गये बिराने।

पूत सपूत तो क्यों धन संचै, पूत कपूत तो क्यों धन सचै—अ० दोनों ही तरह के पुत्रों के लिए धन जोड़ना फ़िजूल है। प्र० बंधु, तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए फ़िजूल ही धन जोड़ा, तुमने सब व्यसनों में उड़ा दिया और महेश के पिता ने भी ऐसा ही किया, क्योंकि उसे स्वयं ही हज़ार रुपये मासिक मिलते हैं। ठीक है कि पूत सपूत तो क्यों धन संचै, पूत कपूत तो क्यों धन संचै।

पूतन की रात दुर्लभ—अ० पुत्र बड़े भाग्य से होता है। प्र० उर्मिला ने कहा कि बहिन दिया है तो प्रभु चिरंजीवी रखे, क्योंकि पूतन की रात दुर्लभ।

पूरी हलुआ घर के खांय, झूठी देवी आस लगाय—अ० दिखावे की भावना। प्र० देवी से फल इसलिए नहीं मिलता क्योंकि हलुआ पूरी तो घर के खा जाते हैं और झूठी देवी आस लगाते हैं।

पूस जाड़ौ न माह जाड़ौ, जाड़ौ ब्यारि कौ—अ० जब हवा चलती है तभी जाड़ा हो जाता है। प्र० बंधु, माह का महीना आ गया पर जाड़ा नहीं पड़ा। सच है कि पूस जाड़ौ न माह जाड़ौ, जाड़ौ ब्यारि कौ।

पेट के आगे 'नाह' है—अ० पेट भरने के बाद फिर नहीं खाया जाता है। प्र० रमेश ने ब्राह्मण देवता से कहा कि महाराज, और लीजिए। ब्राह्मण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता ने कहा कि नहीं भइया, पेट के आगे 'नाह' है।

पेट खाय आँख लजाय—अ० जिसके साथ उपकार किया जाता है, वह शर्मिन्दा होता है। प्र० दुर्योधन ने सेवा और भरण-पोषण से सब लोगों को अपनी ओर कर लिया। सच है कि पेट खाय और आँख लजाय।

पेट जो चाहे सो कराये—अ० पेट के लिए सब कुछ करना पड़ता है। प्र० बंधु, नौकरी न मिलने पर बेचारे गंगा के लड़के को ठेला चलाना पड़ रहा है। सच है कि पेट जो चाहै सो कराये।

पेट पिटारी मुँह सुपियारी अ० जो व्यक्ति बहुत खाता है। प्र० बन्धु, चौबेजी की बहुत कही, वे तो घंटों में खाकर उठते हैं। सच है कि पेट पिटारी मुँह सुपियारी।

पेट में आँत न मुँह में दाँत—अ० ऐसा बहुत बूढ़े के लिए कहा जाता है। प्र० मेरा अब क्या कहना है मेरे तो पेट में आँत न मुँह में दाँत।

पेट में घुसे तो बात मिले—अ० चाटुकारिता से मनुष्य का भेद खुल जाता है। प्र० बन्धु, इस बात का भेद कैसे निकालूँ। इस पर सुनने वाले ने कहा कि पेट में घुसे तो बात मिले।

पेट में चूहे कलाबाजियाँ खा रहे हैं—अ० बहुत भूख लगी है। प्र० अरी माँ, रोटी जल्दी कर, पेट में चूहे कलाबाजियाँ खा रहे हैं।

पेट ही से सीख के कोई नहीं आता—अ० कार्य करने से ही आता है। प्र० बन्धु, अब तो तुम अच्छा लिखने लगे हो। सच है कि पेट ही से सीख के कोई नहीं आता।

पेड़ काट कै पालव सीचै, मीन जियन हित वारि उलीचै—अ० उल्टा काम करना। प्र० हकीम जी अजीर्ण में चूर्ण न दे कर अरवी की सब्जी खाने के लिए कह रहे हैं। उन्होंने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि पेड़ काट कै पालव सीचै, मीन जियन हित वारि उलीचै।

पैदल और सवार का क्या साथ—अ० अनमेल बात होना प्र० श्याम गाड़ी में और पंकज पैदल दौड़ा पर वह कोसों पीछे रह गया। सच है कि पैदल और सवार का क्या साथ।

पैदा सोई न पैद, जगत् में बोवै सोई हरा है—अ० पैदा हुआ है सो मरेगा और जैसा करा है वैसा भरेगा। प्र० बन्धु, तुम चिन्ता किसी बात की मत करो। तुम जानते तो हो कि पैदा सोई न पैद, जगत् में बोवै सोई हरा है।

पैसा गंठ विद्या कंठ—अ० पैसा पास अच्छा और विद्या कंठ अच्छी। प्र० घर पर बटुआ भूल आया, अब प्रदर्शनी में कई चीजें पसन्द आ रही हैं, क्या करूँ? सच है कि पैसा गंठ विद्या कंठ ही ठीक रहती है।

पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है—अ० ग़रीब की कोई बात नहीं पूछता। प्र० मातादीन का आजकल हाथ तंग है, इसलिए सभी उससे किनारा करते हैं। सच है कि पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है।

प्यासा कुए पर जाता है कुंआ प्यासे के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास नहीं आता है—अ० जिसे किसी चीज की ज़रूरत होती है, वही किसी के पास जाता है। प्र० बन्धु, तुम्हें आवश्यकता हो तो तुम जाओ। जानते नहीं कि प्यासा कुएं पर जाता है कुआँ प्यासे के पास नहीं आता है।

प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिल ते न मिलाय—अ० जब स्वभाव मिल जाते हैं तो मन भी मिल जाते हैं। प्र० बन्धु, दूध दही से जम जाता है और खटाई से फट जाता है। सच है कि प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिल ते न मिलाय।

प्रातकाल कीजै असनाना, रोग दोष सब तोरे नसाना—अ० सवेरे स्नान करने वाले व्यक्ति सदैव नीरोग रहते हैं। प्र० बन्धु, ऋषि मुनि सूर्योदय पर स्नान करने से नीरोग रहते थे। सच है कि प्रातकाल कीजै असनाना, रोग दोष सब तोरे नसाना।

प्राण जाईं पर वचन न जाई—अ० सज्जन अपने वचनों को नहीं टालते, चाहे मर जाएँ। प्र० अयोध्यापति दशरथ ने अपने प्राण तो त्यागे पर श्रीराम को वन में भेजा। सच है कि प्राण जाईं पर वचन न जाई।

प्रीति की रीति निराली है—अ० प्रेम की राह अनोखी है। प्र० बन्धु, ग्वाल कृष्ण-प्रेम में वन-वन फिरते थे। सच है कि प्रीति की रीति निराली है।

प्रीति निबाह चढ़ असि धारा—अ० प्रेम को पूरा करना और तलवार की धार पर चलना समान है। प्र० बन्धु, लाखन ऊदल का सखा होने के कारण सदैव उसके साथ लड़ाई में रहा। ठीक है कि प्रीति निबाह चढ़ असि धारा।

प्रेम निबाहन कठिन है, समझ कीजियो कोय—अ० प्रीति का निर्वाह अति कठिन है, इसलिए जो प्रेम करे सम्भल कर करना। प्र० बन्धु, तुमने श्याम के साथ इतना प्रेम क्यों बढ़ा लिया है। तुमने सुना नहीं कि प्रेम निबाहन कठिन है, समझ कीजियो कोय।

फ

फ़क़ीर अपनी गुदड़ी में मस्त—अ० संन्यासियों या फ़क़ीरों को बढ़िया कपड़ों की ज़रूरत नहीं होती है। प्र० बन्धु, फ़क़ीर फटे पुराने से ही दिन काट देते हैं। सच है कि फ़क़ीर अपनी गुदड़ी में ही मस्त रहते हैं।

फ़क़ीर की ज़बान में सब कुछ—अ० फ़क़ीर शाप दे या वरदान। प्र० बन्धु, साधुओं से विनय ही भली। क्या तुम जानते नहीं कि फ़क़ीर की ज़बान में सब कुछ होता है।

फ़क़ीर की सूरत ही सवाल है—अ० फ़क़ीर की सूरत देखकर ही पता चल जाता है कि कुछ माँगेगा। प्र० वह साधु आ रहा है, जेब में दस पैसे हैं क्या? क्यों, वह माँगेगा क्या? तुम जानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कि फ़क़ीर की सूरत ही सवाल है।

फटकचन्द गिरिधारी, जिनके लोटा ना है थाली—अ० बिल्कुल फक्कड़। बंधु, मि० शर्मा हमारे किस काम आ सकते हैं, वे तो फटकचंद गिरिधारी, जिनके लोटा ना है थाली।

फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलते—अ० साफ है। प्र० बंधु, तुम योगेश्वर के यहाँ क्यों नहीं जाते हो। उसने उत्तर दिया कि फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलते हैं।

फटे कपड़े मत देखो बम्बई रहते हैं—अ० ऊपरी भेष पर मत जाओ, बड़े धनवान् हैं। प्र० चूहेमल को देखकर लोगों ने कहा कि यह कौन कंगला आ गया? तभी कोई बोल उठा, भाई लोगों, इनके फटे कपड़े मत देखो बम्बई रहते हैं।

फटे को सिये न और रूठे को मनावे ना तो काम कैसे चले—अ० फटे कपड़े को सीना चाहिए और रूठे को मनाना चाहिए, नहीं तो हानि उठानी पड़ेगी। प्र० ओहो, जयन्त तुमने तो कोट की जेब में टाँके भरवा लिए। हाँ बंधु, फटे को सिये न और रूठे को मनावे न तो काम कैसे चले।

फटे में पाँव देना—अ० किसी के झगड़े में पड़ना। प्र० तुम क्यों किसी के फटे में पाँव देते हो।

फ़र्ज़ से अदा हो गए—अ० अपने धर्म का निर्वाह कर दिया। प्र० पार्वती अपनी बिटिया के हाथ पीले करके फर्ज़ से अदा हो गई।

फल खाना आसान नहीं—अ० बिना मेहनत के कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। प्र० राधेश्याम ने रात दिन पढ़ कर हिस्ट्री में एम० ए० कर ही लिया। हाँ बंधु! फल खाना आसान नहीं है।

फ़ारख़ती लिखा ली—अ० पत्र पर यह लिखा लिया कि अब हमारा सम्बन्ध नहीं रहा है। प्र० बंधु, मैंने रामदीन के विषय में फ़ारख़ती लिख दी।

फ़िकर बुरा फ़ाक़ा भला फ़िकर फ़क़ीरां खाय—अ० फिक्र बुरी फाक़ा अच्छा। प्र० बंधु, तुम चिन्ता करनी छोड़ दो। जानते तो हो कि फ़िकर बुरा फ़ाक़ा भला फ़िकर फ़क़ीरां खाय।

फिर बंदा वैसे का वैसा अ० हानि को पूरी कर देना। प्र० यद्यपि घर का सारा सामान चोरी हो गया पर फिर भी बंदा वैसे का वैसा।

फिसल पड़े की हर गंगा—अ० जानकर काम न बिगाड़ा जाये और कहे कि जान कर बिगाड़ा है। प्र० मातादीन की आँख बचाकर उठाईगीरा शाल उठाकर ले गया पर जब मालूम हुआ तो बोला कि मैंने जानकर उसे नहीं पकड़ा। ठीक है कि फिसल पड़े की हर गंगा।

फीकी पैनी की लगै, कहिये समय विचार—अ० ठीक समय पर कही हुई बुरी बात भी अच्छी लगती है। प्र० बंधु, विवाहोत्सव पर गालियाँ कैसी अच्छी लगती हैं। सच है कि फीकी पैनी की लगै, कहिये समय विचार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुइया फुइया ताल भरता है—अ० थोड़े-थोड़े से बहुत होता है। प्र० जगदीशचन्द्र ने पैसा पैसा जोड़कर सहस्रों रुपये इकट्ठे कर लिए। सच है कि फुइया फुइया तल भरता है।

फूंक फूक कर पैर रखना—अ० सम्भलकर काम करना। प्र० इस जगत् में बड़ा फूंक फूंक कर पैर रखना पड़ता है।

फूंका औषधि मुड़ा जोगी कौन जाने—अ० फूंकी दवा और मुंड़े जोगी का पता नहीं लगता है। प्र० एक पुड़िया देकर हकीम जी से पूछा कि यह क्या है? उन्होंने उत्तर दिया कि फूंकी औषधि मुंड़े जोगी को कौन जाने।

फूल की डाली झुकती है—अ० विद्वान् विनम्र होते हैं। प्र० पं० गिरधारी लाल न्यायशास्त्र के सागर थे, किन्तु बोलते नहीं थे। सच है कि फूल की डाली झुकती है।

फूल नहीं तो पंखुड़ी ही सही—अ० जो मिले सो ही सही। प्र० बंधु, दादा जी की ओर से जो कुछ मिलता है सो ले लो। सुना नहीं कि फूल नहीं तो पंखुड़ी ही सही।

फूल हैं तो फल भी होंगे—अ० कारण है तो कार्य अवश्य होगा। प्र० बंधु, पीली फट गई तो सूरज जरूर निकलेगा। सच है कि फूल हैं तो फल भी होंगे।

फेरों की गुनहगार—अ० विवाह के बाद ही विधवा हो जाना। प्र० कृष्णा का पुनर्विवाह हो जाए तो अच्छा है, वह बेचारी तो फेरों की गुनहगार है।

फौज की अगाड़ी और बरात की पिछाड़ी—अ० फौज में आगे आदमी अधिक होते हैं और बरात में पीछे। प्र० बंधु, यह बरात कब ख़त्म होगी? अभी से, क्या तुम जानते नहीं कि फौज की अगाड़ी और बरात की पिछाड़ी।

ब

बंदर का घाव—अ० जब कोई बात ठिकाने न बैठे। प्र० ओमप्रकाश का झगड़ा क्या है, बन्दर का घाव है।

बंदर की दोस्ती और जी का जियान—अ० मूर्ख दोस्त अच्छा नहीं होता है। प्र० महेश ने नकुल के सिर पर बैठे ततैये को मारने के लिए पत्थर दे मारा। ठीक है कि बंदर की दोस्ती और जी का जियान।

बंदर के गले में मोतियों की माला—अ० किसी को ऐसी अनोखी वस्तु मिलना जिसकी वह परवाह न करे। प्र० नलिनी ने सविता को मोतियों का हार दिया, उस मूर्खा ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। सच है कि बंदर के गले में मोतियों की माला।

बंधी मुठ्ठी लाख बराबर—अ० घर का रहस्य न खुलना। प्र० बंधु, बंधी मुट्ठी होने के कारण सुशील के घर का भेद ही नहीं पाया। सच है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधी मुट्ठी लाख बराबर।

बकरी का सा मुँह चलते रहना—अ० हर समय खाते रहना। प्र० तुम्हारा तो बकरी का सा मुँह चलता रहता है।

बगल में ईमान दबाकर बात करना—अ० अधर्म की बातें करना। प्र० बंधु, मार्केट में तो बगल में ईमान दबाकर बात करनी पड़ती है, तब कहीं दो पैसे कमा पाता हूँ।

बगल में छोरा, नगर में ढिंढोरा—अ० चीज अपने पास हो और दूसरों से पूछता फिरे। प्र० रतन सिंह का पैन कापी में लगा हुआ है और वह कमरे में खोजता फ़िर रहा है। उसकी तो वही कहावत है कि बगल में छोरा, नगर में ढिंढोरा।

बगल में तोशा मंजिल का भरोसा—अ० धन पास होने से कार्य की पूर्ति की आशा रहती है। प्र० वंधु, माल सम्भाल कर ले जाना। तुम तो जानते ही हो कि बग़ल में तोशा मंजिल का भरोसा।

बचन प म हित सुनत कठोरे, कहत सुनत ते नर न घनेरे—अ० हित की बात बुरी लगती है सो ऐसी बात के कहने और सुनने वाले लोग थोड़े ही हैं। प्र० योगीराज श्रीकृष्ण ने दुर्योधन से कहा, बंधु, बुरा मत मानो, तुम नहीं जानते कि बचन परम हित सुनत कठोरे, कहत सुनत ते नर न घनेरे।

बचन बज्र जेहि सदा पियारा, सहस नयन पर दोष निहारा—अ० जो लोग कठोर बचन बोलते हैं और दूसरे के अवगुणों को बड़े ध्यान से देखते हैं। प्र० शकुनि से विदुर ने कहा, हे शकुनि, तुम उन्हीं लोगों में से हो जिन्हें बचन बज्र जेहि सदा पियारा, सहस नयन पर दोष निहारा।

बचनों का बांधा—कही बात को पूरी करना—अ० शामलाल तुम कोई बात पूरी नहीं करते। देखो वचनों के बाँधे तो धरती और आकाश खड़े हैं।

बछिया का मुंह बनाना—अ० थप्पड़ मार कर मुख सुजा देना। प्र० अबे, यहाँ से उठ कर चला जा नहीं तो बछिया का मुंह बना दूंगा।

बछिया के बाबा होना—अ० महामूर्ख। प्र० अरे, तुम्हारे से कौन बात करे, तुम तो बिल्कुल बछिया के बाबा हो।

बजाज की गठरी पै झींगुर सेठ—अ० पराये धन पर गर्व करना। प्र० सतपाल नाना के माल पर फूल रहा है। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि बजाज की गठरी पै झींगुर सेठ।

बद भला बदनाम बुरा—अ० कुत्सित भावना पर जिसको झूठा आरोप लगा दिया गया हो। प्र० रमा सुनार रात दिन चोरी का माल खरीदता है उसका कुछ नहीं बिगड़ता पर बेचारे रमेश का नाम एक बार पुलिस की फाइल में क्या आया कि वह घर पर ही खड़ी रहती है। सच है कि बद भला बदनाम बुरा।

बड़ घर कबहु न जाइये, गये घटत है ज्योति—अ० बड़ों के घर पर छोटों का असम्मान ही होता है। प्र० कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्नो जमीदार के यहाँ गया सो नीचे बैठना पड़ा। सच है कि बड़ घर कवहु न जाइये, गये घटत है ज्योति।

बड़ तले का भूत—अ० जो जल्दी पीछा न छोड़े। प्र० घनश्याम तो तुम्हारे पीछे बड़ तले का भूत होकर पड़ा है।

बड़ा ग्रास खाय पर अभिमानी न कहाय—अ० जितना चाहे उतना कमाये पर घमण्ड न करे। प्र० बंधु, महेन्द्र को बड़ी कमाई करके भी गर्व नहीं है। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि क्या तुम जानते नहीं कि बड़ा ग्रास खाय पर अभिमानी न कहाय।

बड़ी नाक वाले होना—अ० प्रतिष्ठित होना। प्र० अरे, तुम ही इतना रुपया क्यों उड़ाते हो? क्या तुम ही बड़ी नाक वाले हो।

बड़ी बहू को बुलाओ खीर में नमक डालेगी—अ० बड़े होकर भी मूर्ख होना। प्र० महेन्द्र को चतुर समझ कर यह झगड़ा निवटाने को दिया था पर उसने और नई-नई समस्याएँ खड़ी कर दीं। यह तो वही बात हुई कि बड़ी बहू को बुलाओ खीर में नमक डालेगी।

बड़ी भाभी मां के थान—अ० बड़ी भाभी माँ के बराबर होती है। प्र० अरे, तुम भाभी जी के चरण छुओ। जानते नहीं कि बड़ी भाभी माँ के थान।

बड़ी मछली छोटी को खाती है—अ० बड़े व्यक्ति छोटों की कमाई पर निर्भर हैं। प्र० बंधु, मेरी सारी आय तो जमींदार साहब के यहाँ चली जाती है। हाँ भई, ठीक है कि बड़ी मछली छोटी को खाती है।

बड़े का शौक छोटे का ऐब—अ० एक ही बात बड़ों को भली और छोटों के लिए खोटी। प्र० महेन्द्र बाबू तो शौकिया जुआ खेलते हैं पर उनके भान्जे धीरेन्द्र को यह ऐब कैसे लगा? ठीक है कि बड़े का शौक छोटे का ऐब।

बड़े की पीठ काली और छोटे का मुंह काला—अ० बड़ों की बुराई पीठ पीछे और छोटों की मुँह पर। प्र० बंधु, सवेरे अंकल के सामने तो चुप रहे पर अब खूब बडबड़ा रहे हो। सच है कि बड़े की पीठ काली और छोटे का मुँह काला।

बड़े की बात बड़े पहिचानें—अ० बड़े व्यक्ति की बात बड़ा ही समझता है। प्र० बंधु, पितामह की एक भी बात मेरी समझ में नहीं आई। ठीक है कि बड़े की बात बड़े पहिचानैं।

बड़े घोड़े की बड़ी चाल—अ० बड़ों के काम भी बड़े ही होते हैं। प्र० नाना जी बूढ़े हो गए पर अब भी देशोपवाद में लगे ही रहते हैं।

बड़े काम छोटे करैं तउ न बड़ाई होय—अ० छोटे आदमी बड़े काम भी करें तो भी उनकी बड़ाई नहीं होती है। प्र० पवन सुत हनुमान पर्वत उठा कर लाए थे पर उन्हें गिरिधर कोई नहीं कहता। सच है कि बड़े काम छोटे करैं तउ न बड़ाई होय।

बड़े न हूजे गुन बिना विरद बड़ाई पाय—अ० गुण नहीं है तो बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम पाकर गर्व मत कीजिए । प्र० जब भरत राम डींग मारने लगा तो मैंने कहा मरती तो नहीं मक्खी नाम से ही गर्व मत करो, क्या तुमने सुना नहीं कि बड़े न हूजैं गुन बिना विरद बड़ाई पाय ।

बड़े पेट के भरन को पड़ै मूंड बड़ भार—अ० बड़े पेट को भरने के लिए बहुत दुःख उठाना पड़ता है । प्र० बंधु, हाथी को बड़ा पेट भरना पड़ता है सो घवरा कर आगे को दाँत निकाल दिये । सच है कि बड़े पेट के भरन को पड़ै मूँड बड़ भार ।

बड़े बड़ाई कभी नहीं करते छोटे मुख से कहैं बचन—अ० विद्वान् कभी डींग नहीं मारते । प्र० शकुनि सदैव दूनगी लिया करता है पर गदाधारी भीम दस सहस्र हाथियों का बल होने पर भी चुप ही रहता है । ठीक ही तो है कि बड़े बड़ाई कभी नहीं करते छोटे मुख से कहैं वचन ।

बड़े बर्तन की खुर्चन ही बहुत है—अ० बड़े आदमी के बिगड़ जाने पर भी सब कुछ होता है । प्र० बंधु, सेठ रामदीन जी का दिवाला तो निकला पर कंगन की जोड़ी दो लाख में बिकी । सच है कि बड़े बर्तन की खुर्चन ही बहुत है ।

बड़े भये तो का भये जैसे बड़ी खजूर—अ० जिस बड़े व्यक्ति से छोटों को लाभ न पहुँचे तो उसका बड़ा होना फ़िजूल है । प्र० बंधु, अतुल जी संसद सदस्य क्या बन गए, घमण्ड में चूर रहने लगे हैं, किसी को फायदा तो क्या पहुँचायेंगे । सुनने वाले ने कहा कि तुम ठीक कहते हो, उन्होंने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि बड़े भये तो का भये जैसे बड़ी खजूर ।

बड़े मियाँ सो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभानअल्लाह—अ० बाप से बेटे का बढ़ जाना । प्र० वीर सिंह तो लड़ाका था सो था ही पर बेटा उससे भी चार गज आगे है । सच है कि बड़े मियाँ सो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभानअल्लाह ।

बड़ों के पैर में सब का पैर आ जाता है—अ० जैसे बड़ों का आचरण होता है वैसा ही दूसरों का भी । प्र० श्रीकृष्ण को कर्म करते देख सब लोग वैसे ही कर्म करने लग गये । ठीक तो है कि बड़ों के पैर में सब का पैर आ जाता है ।

बनी बनी के सब कोई साथी—अ० जब तक व्यक्ति के पास धन रहता है तब तक उसके असंख्य मित्र रहते हैं । प्र० बंधु, जब तक मेरे पास माल रहा तब तक सभी मेरे साथ लगे रहे, अब कोई बात भी नहीं पूछता । सच है कि बनी बनी के सब कोई साथी ।

बढ़े तो अमीर, घटे तो फ़कीर और मरे तो पीर—अ० यह मुसलमानों के विषय में कहा जाता है । प्र० बंधु, थोड़े दिन पहले अहमद मियां बग्घी में चलते थे और आज तसबी हाथ में है । सच है कि बढ़े तो अमीर, घटे तो फ़कीर और मरे तो पीर ।

बत्तीस दाँत की भाषा खाली नहीं जाती—अ० दुनिया का कहना व्यर्थ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता । प्र० चहुँ ओर से ऐसी हाय पड़ी कि रायबहादुर की भुजा टूट गई । सच है कि बत्तीस दाँत की भाषा खाली नहीं जाती ।

बत्तीसन में जीभ—अ० चारों ओर से शत्रुओं से घिरे रहना । प्र० बंधु, मैं इन लोगों नें ऐसे रहता हूँ जैसे बत्तीसन में जीभ ।

बधे पाप अपकीरति हारे—अ० जहाँ दोनों ओर से मुसीबत हो । प्र० तुम्हें कुछ देता हूँ तो कोई लाभ नहीं और नहीं देता हूँ तो बुराई मिलती है । सच है कि बधे पाप अपकीरति हारे ।

बनज करेंगे बानियाँ और करेंगे रीस। बनज किया था जाट ने रह गए सौ के बीस—अ० जिसका काम वही कर सकता है । प्र० सोने के कंगन बनने के लिए लुहार को दे दिए । सोना गल कर सब राख में गया । दण्ड भरना पड़ा । सच है कि बनज करेंगे बानियां और करेंगे रीस । बनज किया था जाट ने रह गये सौ के बीस ।

बनिआई कुत्ते की तो डोली बैठा जाए—अ० जब किसी खोटे का आदर सत्कार होने लग जाए । प्र० आज तो चरसी तेजराम राय साहब के साथ कार में बैठा जा रहा था । ठीक ही तो है कि बनि आई कुत्त की तो डोली बैठा जाए ।

बनिआये की बात रे ऊधो बनिआये की बात—अ० जब अचानक ही लाभ हो जाए । प्र० अरे भाई, क्यों बातें बनाते हो, यह वही बात है कि बनिआये की बात रे ऊधो बनिआये की बात ।

बनिया जिसका यार उसको दुश्मन नहिं दरकार—अ० स्पष्ट है । प्र० बन्धु ! आटे-दाल ही में ला० रामलाल एक मकान ले मरा । सुनने वाले ने कहा कि क्या तुम जानते नहीं थे कि बनिया जिसका यार उसको दुश्मन नहिं दरकार ।

बनिया मीत न वेश्या सती—अ० बनिया और वीरांगना दोनों ही अपने स्वार्थ के । प्र० बंधु, गोपीचंद को मित्र समझ कर एक हज़ार रुपये उस पर छोड़ रखे थे पर अब आँख दिखाता है । सच है कि बनिया मीत न वेश्या सती ।

बनिये का जी धनिये बराबर—अ० बनिये को साहस नहीं होता । प्र० बंधु, रामदयाल रात को घर से नहीं निकलता । सुनने वाले ने उत्तर दिया, ठीक तो है कि बनिये का जी धनिये के बराबर ।

बनिये का जाया बिच्छू—अ० बनिये के बच्चे भी चालाक होते हैं । प्र० सत्येन्द्र के पुत्र से एक किलो घी लाया, तोला तो पचास ग्राम कम निकला । सच है कि बनिये का जाया बिच्छू ।

बनिये का बहकाया और जोगी का फटकारा टक्कर ही खाता है—अ० समय बर्बाद करता है । प्र० धनीराम को हरिया बनिये ने बहका दिया कि पैंठ में तेरी लकड़ी बिकवा दूंगा, सो सारे दिन जंगल में पेड़ काटता फिरता है । ठीक तो है कि बनिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बहकाया और जोगी का फटकारा टक्कर ही खाता है।

बनिये का मुँह गाह, पेट मोम अ० बनिया अपना पेट काट कर रुपया जमा किया करता है। प्र० बंधु, मैंने चने खा खा कर चार पैसों का मुँह देखा है। सच है कि बनिये का मुँह गाह, पेट मोम।

बनिये का साह भड़भूजा—अ० बनिये को देने वाला भड़भूजा। प्र० बनिया भड़भूजे से सवेरे चने उधार लाता है और उन्हें बेच कर शाम को पैसे दे आता है। सच है कि बनिये का साह भड़भूजा।

बनिये की राम-राम पिछत्तर की हानि—अ० बनिये के अभिवादन में भी नुकसान है। प्र० लाला रामदयाल के आवागमन से ही घर में लेन-देन चालू हो गया। सच है कि बनिये की राम-राम पिछत्तर की हानि।

बनिये से सियाना, सो दीवाना—अ० अति बुरा। प्र० बंधु, तुम लाला जी को नीचा दिखाना चाहते थे पर तुमने यह नहीं जाना कि बनिये से सियाना सो दीवाना।

बनी के साले, बिगड़ी का बहनोई न—अ० जब तक पैसा पास है तब तक सैंकड़ों पड़े रहते हैं, फिर कोई बात नहीं करता। प्र० बंधु, जब तक मेरी स्टेट बनी रही सब आते थे और अब कोई राम-राम भी नहीं करता। ठीक है कि बनी के साले, बिगड़ी का बहनोई न।

बरसाती दरजी होना—अ० निठल्ला रहना। प्र० बंधु, आजकल क्या कर रहे हो? सुनने वाले ने उत्तर दिया कि कुछ नहीं, बरसाती दरजी बने हुए हैं।

बरसे आषाढ़ तो हो जाऊँ ढाड़—अ० आषाढ़ में पानी पड़े तो काम से लगें। प्र० मेह बरसते ही किसान खेतों को चल दिए। सच है कि बरसे आषाढ़ तो हो जाऊँ ढाड़।

बरसेगा बरसावेगा, कोठी धान भरावेगा—अ० मेह बरसने से अन्न बहुत पैदा होता है। प्र० बंधु, अबकी बार फ़सल कैसी रही? सुनने वाले ने उत्तर दिया कि बहुत बढ़िया, जानते नहीं कि बरसेगा बरसावेगा, कोठी धान भरावेगा।

बरसो राम धड़ाके से बुढ़िया मर गई फाके से—अ० बिना पानी बरसे अनाज महँगा हो गया। प्र० पानी न बरसने से कितने ही भूखे मर जाते हैं। तभी तो लोग कहा करते हैं कि बरसो राम धड़ाके से बुढ़िया मर गई फाके से।

बराती खाने के काम बन्ना बन्नी का—अ० लगाने वाले लगाकर अलग हो जाया करते हैं। प्र० सोमदेव चुग़ली खा गया और फल मिला बेचारे कैलाश को। किसी ने ठीक ही कहा कि बराती खाने के काम बन्ना बन्नी का।

बरेली जाने के काम मत करो—अ० पागलपन के काम मत करो। प्र० बंधु, मैं आखिरी बार कहने आया हूँ कि इस प्रकार अंड बंड बक कर बरेली जाने के काम मत करो, वरना पछताओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलती आग में कूदना—अ० जानबूझकर मुसीबत मोल लेना। प्र० बंधु, देखती आँखों तो बलती आग में नहीं कूदा जाता है।

बलती आग में घी डालना—अ० गुस्से को बढ़ाना। प्र० लक्ष्मण के वचनों ने बलती आग में घी डाल दिया।

बस हो चुकी नमाज मुसल्ला उठाइये—अ० यहाँ से भाग जाओ, तुम्हारा कोई काम नहीं है। प्र० बहादुरशाह जफ़र को पकड़ कर अंग्रेज जनरल ने कहा था कि बस हो चुकी नमाज़ मुसल्ला उठाइये।

बसै बुराई जासु तन ताही को सनमान—अ० खोटों का ही सम्मान होता है। प्र० बंधु, आज पंडित जी किस चीज का दान करा गए हैं। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि चौथे चन्द्रमा का। सच है कि बसै बुराई जासु तन ताही को सनमान।

बहती गंगा है जो हाथ धोने हैं सो धो लो—अ० जब किसी की बात बनी हुई हो। प्र० राजा भोज से महामात्य ने कहा, महाराज, आजकल ईश्वर दयावान् हैं, जो भलाई हो सके कर लीजिए। सच है कि बहती गंगा है, जो हाथ धोने हैं धो लो।

बहकि बड़ाई आपनी कतरा चित मत भूल—अ० भूलकर भी घमण्ड मत करो। प्र० बंधु, फिर तुम डींगें मारने लगे। मैंने कई बार समझाया है कि बहकि बड़ाई आपनी कतरा चित मत भूल।

बहन कहै मोहि भैया प्यारा, काल कहै यह मेरा चारा—अ० एक ही वस्तु एक की ज़िन्दगी और दूसरे का आहार। प्र० बंधु, रामधन के छोकरे को भेड़िया उठाकर ले गया। सच है कि बहन कहै मोहि भैया प्यारा, काल कहै यह मेरा चारा।

बहन के घर भाई कुत्ता, सास के घर जमाई कुत्ता—अ० बहन के घर रहने से और ससुराल में रहने से कुत्ते के समान टुकड़ा मिलता है। प्र० महेन्द्र तीन मास ससुराल में रह कर कहने लगा कि ठीक ही है, बहन के घर भाई कुत्ता, सास के घर जमाई कुत्ता।

बहुगुनी बहु दुःखी—अ० स्याना कौआ गंदगी खाए। प्र० बंधु, तुम जितनी स्यानपत करते हो उतना ही धोखा खाते हो। क्या तुम जानते नहीं कि बहुगुनी बहु दुःखी।

बहुत गई थोड़ी रही पल-पल बीती जाए—अ० आमदनी पल-पल में होती है। प्र० बंधु, अब तो कुसंगति छोड़ो। तुम जानते हो कि बहुत गई थोड़ी रही पल-पल बीती जाय।

बाकी का मारा गाँव और चिलमों का मारा चूल्हा—अ० ये दोनों ही खाली हो जाते हैं। प्र० अरे भाई, क्या कहूँ, लोग दूध गर्म ही नहीं होने देते, एक न एक चिलम लिए खड़ा रहता है। सच है कि बाकी का मारा गाँव और चिलमों का मारा चूल्हा।

बाघ बकरी एक घाट पानी पीवै—अ० प्रतापी राजा के राज्य में सब प्रजा समान होती है। प्र० रामराज्य में बाघ बकरी एक घाट पानी पीते थे।

बाजार किसका जो लेके दे उसका—अ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो व्यक्ति लेकर दाम दे देता है उसका बाज़ार में सम्मान होता है। प्र० बंधु, आजकल हाथ बंद है। इस पर सुनने वाले ने कहा कि जो देना होगा सो दिया न होगा। क्या तुम जानते नहीं कि बाजार किसका जो लेके दे उसका।

बाज़ार की गाली किसकी जो फिर के सुने उसकी—अ० बाज़ार में अगर कोई किसी और को अपशब्द कह दे तो जो फिर करके सुनेगा, लोग जानेंगे इसी को दे रहा है। प्र० बंधु, बाज़ार में गाली फिर कर मत सुनो, क्या तुम जानते नहीं कि बाज़ार की गाली किसकी जो फिर के सुने उसकी।

बाँझ प्रसूत की पीर का जाने—अ० जो कार्य करता है, वही दुःख को जानता है। प्र० बंधु, तुम क्या जानो कि मैंने पढ़ाई कितने कष्ट झेल कर की है, जैसे बाँझ प्रसूत की पीर का जाने।

बाड़ लगाई खेत हित, वही खेत को खाय। राजा हो चोरी करै, न्याय कौन पे जाय॥—अ० जब रक्षक ही भक्षक हो। प्र० बेचारा धन्नू अपनी जमा पूँजी लेकर मामा के घर यह सोच कर आ बसा था कि शेष दिन हँसी-खुशी से कट जायेंगे। पर वहाँ तो कुछ ही दिनों में लेने के देने पड़ गए। घर से ही बेचारे की जमा-पूँजी ग़ायब कर दी गई। पूछा तो दो सुननी पड़ीं। सच है कि बाड़ लगाई खेत हित, वही खेत को खाय। राजा हो चोरी करै, न्याय कौन पे जाय।

बात की करामात—अ० बातों ही में बड़े-बड़े काम हो जाते हैं। प्र० आज महेशबाबू ने बातों ही बातों में पाँच सौ देकर के पाँच सौ कमा लिए। सच है कि बात की करामात।

बात पर बात याद आती है—अ० जब बात चलती है तो बात याद आ जाती है। प्र० बंधु, मैं तो चुप था, पर बात पर बात मुझे भी याद आ गई।

बात ही का मोल होना—अ० जब तक सम्मान बना रहे, तभी तक इंसान का सम्मान होता है। प्र० अब तो सेठ घनश्यामदास की बात बिगड़ गई। अब कोई उनकी ओर थूकता भी नहीं है। ठीक है कि बात ही का मोल होता है।

बातें चबा चबा कर करना—अ० आधी कहना और आधी खा जाना। प्र० बंधु, तुम्हारे पास कौन बैठे। तुम्हें तो बातें चबा चबा कर करने की आदत है।

बातों हाथी पाइया बातों हाथी पाव—अ० बातों से ही इन्सान हाथी पर चढ़ जाता है और बातों ही से हाथी के पैरों के नीचे कुचला जाता है। प्र० तनिक-सी बात पर बिगड़ कर महाराज ने कोतवाल को फाँसी का दण्ड सुना दिया। सच है कि बातों हाथी पाइया बातों हाथी पाव।

बाप का बेटा है—अ० जैसा बाप है वैसा ही बेटा है। प्र० वीर अभिमन्यु को महारथियों से जूझते देख द्रोणाचार्य ने प्रसन्न होकर कहा कि शाबाश बेटे, अन्त को वीर बाप का बेटा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाप को चून न मिले, नहीं तो ईंधन को भेजेगा—अ० आलसी होना। प्र० बंधु, आज कुआँ न जुड़े तो अच्छा, वरना कीली हाँकनी पड़ेगी। यह तो वही कहावत हुई कि बाप को चून न मिले, नहीं तो ईंधन को भेजेगा।

बाप को पाद न आवै, पूत शख बजावै—अ० जब बाप के गुण एक से न हों। प्र० बंधु, तुम तो धर्म पर चलते हो पर तुम्हारा बेटा तो बिल्कुल विरुद्ध है। किसी ने सच ही कहा है कि बाप को पाद न आवै, पूत शंख बजावै।

बाप घर बेटी गूदड़ लपेटी—अ० बाप के घर बेटी को बनाव श्रृंगार उचित नहीं है। प्र० अरी, तू तो पीहर में भी बड़ी चटक-मटक से रहती है, क्या जानती नहीं कि बाप घर बेटी गूदड़ लपेटी।

बाप ने मारी मेंढ़की बेटा तीरंदाज—अ० फ़िज़ूल में ही घमण्ड की बातें करना। प्र० बंधु, झूठी डींगें मत मारो। तुम तो वही बात कर रहे हो कि बाप ने मारी मेंढ़की बेटा तीरन्दाज।

बाप पै पूत सवार पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा—अ० बाप का बेटे पर और सवार का घोड़े पर असर पड़ता ही है। प्र० बंधु, जैसा वीर अर्जुन था वैसा ही अभिमन्यु निकला था। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी थी कि बात पै पूत सवार पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।

बाप भलौ न भैया, सब सों भलौ रुपैया—अ० संसार में पैसा ही प्रमुख है। प्र० पैसे के लालच से ही औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को क़ैद कर लिया था। सच है कि बाप भलौ न भैया, सब सों भलौ रुपैया।

बाप राज घर खाये न पान, दाँत निकारे निकरे प्रान—अ० थोड़े से माल पर घमण्ड करना। प्र० इतना इतराकर मत चलो। इससे ऐसा सिद्ध कर देते हो कि बाप राज घर खाये न पान, दाँत निकारे निकरे प्रान।

बाबा कमावै पोता उड़ावै—अ० बाबा की कमाई पोता खा जाए। प्र० बंधु, तुम करते कुछ हो नहीं, खर्च माँगने आ गए। तुम्हारी तो वही कहावत है कि बाबा कमावै पोता उड़ावै।

बाबा मर घर पोता आया, टोटा था सो पूरा पाया—अ० जितना नुकसान हुआ हो उतना ही लाभ हो जाना। प्र० बंधु, इस हुंडी में पचास घटे पर दूसरी में उतने ही बढ़ गये। सच है कि बाबा मर घर पोता आया। टोटा था सो पूरा पाया।

बाबा ले पोता बरते—अ० कोई टिकाऊ वस्तु लेना। प्र० आज जब कसेरे से भगोना लिया तो उसने कहा कि बाबू जी, बहुत बढ़िया है, बाबा ले पोता बरते।

बाबा सोवै या घर में पाय पसारै वा घर में—अ० एक घर के लिए किया हुआ कार्य दूसरे घर को भी प्रभावित करे। प्र० गोमती ने इस घर की सफ़ाई की तो सारी धूल पास वाले घर में भी गई। सच है कि बाबा सोवै या घर में पाय पसारै वा घर में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बामन, कुत्ता, बानियाँ, जाति देखि गुर्राएँ—अ० ये तीनों अपनी जाति वालों को देखकर गुर्राते हैं। प्र० बंधु, देखा शास्त्री जी दूसरे शास्त्री जी की बारम्बार अशुद्धियाँ निकालते थे। सच है कि बामन कुत्ता बानियाँ, जाति देखि गुर्राएँ।

बामन जी में ही पतियाय—अ० किसी ऐसे व्यक्ति पर कहा जाता है, जो विश्वास के योग्य न हो। प्र० बंधु, क्या तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं है। क्या कहूँ कि बामन जी में ही पतियाय।

बामन मंत्री, जाट ख़वास, उस राजा का होवै नास—अ० बामन को मंत्री पद न दे और जाट को अर्दली का काम न दे तथा जो ऐसा करेगा उस राज्य का नाश शीघ्र ही हो जाएगा। प्र० बंधु, रामचरणसिंह जमींदार साहब के जाट अर्दली ने एक असामी के एक लाठी मारी। बिचारे की खोपड़ी खिल गई। बलवा होते-होते बड़ी मुश्किल से बचा। सच है कि बामन मंत्री जाट ख़वास, उस राजा का होवै नास।

बामन हो चोरी करै, विधवा पान चबाय। क्षत्री हो रन सों हटै, जन्म अकारथ जाय। अ०—ये तीनों कार्य धर्म के के विरुद्ध हैं। प्र० दमयन्ती ने रुक्मणी से कहा कि बहन विधवा को पान खाना मना है। जैसी कि कहावत है कि बामन हो चोरी करै, विधवा पान चबाय। क्षत्री हो रन सों हटै, जन्म अकारथ जाय।

बार बार चोर की तो एक बेर साह की—अ० छल कभी न कभी पकड़ा ही जाता है। प्र० बंधु, तुम मालिक को इतने दिनों से धोखा दे रहे थे, पर आज भेद खुल ही गया। सच है कि बार-बार चोर की तो एक बेर साह की।

बारह बरस का कोढ़ी एक ही सेव में शुद्ध—अ० तप का असर धीरे-धीरे होता है। प्र० बंधु, श्याम एक सप्ताह से वैद्य जी की पुड़िया ले रहे हैं, पर कुछ भी आराम नहीं। ओहो, बारह बरस का कोढ़ी एक ही सेव में शुद्ध।

बारह बरस काठ में रहे चलती बार टांग तुड़ाई—अ० बहुत दिनों तक किसी की अधीनता में रहे अन्त में बिगाड़ कर लिया। प्र० बंधु इतने दिन तक तो तुमने रायबहादुर की सेवा की अन्त में बिगाड़ कर लिया। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि बारह बरस काठ में रहे चलती बार टांग तुड़ाई।

बारह बरस के को क्या वैद्य—अ० बचपन में सब पच जाता है। प्र० श्रेय को कोयले खाते देख श्यामा ने कहा कि पेट में दर्द हो जाएगा। सुनने वाली ने जवाब दिया कि अरी बहन, बारह बरस के को क्या वैद्य।

बारह बरस दिल्ली में रहे पर भाड़ ही झोंका—अ० चिरकाल तक विद्वान् मंडली में रहकर भी मूर्ख रहना। प्र० बंधु, तुमने बीस वर्ष काशी में बिताये फिर भी कोरे ही आये। तुमने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि बारह बरस दिल्ली में रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भाड़ ही झोंका ।

बारह बरस में घूरे के भाग भी जाग जाते हैं—अ० हमेशा किसी की एक सी हालत नहीं रहती । प्र० बंधु, अब तो तुम्हारे अच्छे दिन आ गए हैं । सुनने वाले ने उत्तर दिया कि हाँ बंधु, बारह बरस में तो घूरे के भाग भी जाग जाते हैं ।

बारह बरस लगि सेई, काशी आप में मगह की घाटी—अ० तपा रे तपा अंत मता सो मता । प्र० बाबा जी चिरकाल से गंगा स्नान कर रहे थे, पर मरण दिवस घर ही थे । सच है कि बारह बरस लगि सेई, काशी आप में मगह की घाटी ।

बारह बाट होना—अ० तितर-बितर हो जाना । प्र० बंधु, सोच कर चलो, अन्यथा बारह बाट हो जाओगे ।

बाहर वाले खा गये अरु घर के गावें गीत—अ० जब घर वालों को छोड़ कर अन्य लोगों का सम्मान किया जाए । प्र० बंधु, मैं तो बैठा ही रहा और मेहमान खा-पी चुके । ठीक है कि बाहर वाले खा गये अरु घर के गावें गीत ।

बाहरि टेढ़ौ चलत है बामी सूधो नाग—अ० बंधु वर्ग में साधुता (सज्जनता) का ही परिचय देना चाहिए । प्र० बंधु, छलने के लिए तो पूरा संसार पड़ा है, घरवालों को छोड़ो । क्या तुमने सुना नहीं कि बाहरि टेढ़ौ चलत है बामी सूधो नाग ।

बालक जानै हीया, बड़ा जानै कीया—अ० बालक स्नेह और बड़ा सख्त मेहनत से खुश होता है । प्र० दमयन्ती का पौत्र रात्रि को भी उसी के पास सोता है । सच है कि बालक जानै हीया, बड़ा जानै कीया ।

बाल की खाल निकालना—अ० किसी बात की जड़ तक पहुँचने का प्रयास करना । प्र० हर बात में बाल की खाल निकालना ठीक नहीं है ।

बाल के हाथ में खरहा कौ सींग—अ० असम्भव बात पर कहा जाता है । प्र० अरे, मैंने मच्छर के हाड़ गज़ भर के देखे । सच है कि बाल के हाथ में खरहा कौ सींग ।

बाल बाल पुण्यात्मा—अ० हर प्रकार से सज्जन । प्र० गांगेय ने कहा, हे द्रोण ! तुम तो धर्म के विरुद्ध कुछ करते नहीं, आपको तो बाल-बाल पुण्यात्मा कहना ठीक है ।

बाल बाँधी सैंठी मारना—अ० अचूक लक्ष्य-भेदी होना । प्र० पार्थ को शब्द-भेदी होने के कारण बाल बाँधी सैंठी मारने वाला कह सकते हैं ।

बाल मराल कि मंदर लेही—अ० सामर्थ्य से अधिक कार्य कोई नहीं कर सकता है । प्र० श्रीराम जब धनुष उठाने के लिए चले तो सुनयना ने कहा कि बाल मराल कि मंदर लेही ।

बाल मूंड़ें मुर्दे हलके नहीं होते—अ० बड़े काम से कुछ कम किया जाये । प्र० रमेश की गाड़ी जो दलदल में फँस गई थी उसमें से किसी ने एक बोरी उतारने को कहा । तब लोगों ने हँस कर उत्तर दिया कि बाल मूड़ें मुर्दे हलके नहीं होते हैं ।

बाल हठ, त्रिया हठ और राज हठ—अ० स्पष्ट है । प्र० बंधु, रानी कैकेई ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम को वनवास और वैधव्य का कलंक लेकर ही पीछा छोड़ा। सच है कि बाल हठ, त्रिया हठ और राज हठ।

बाल हैं जंजाल पलैं तो पाल, नहीं मूछों को भी टाल—अ० बाल मांजे धोये से ही अच्छे लगते हैं। प्र० बंधु, सुरेश ने बाल तो रख लिए पर धोने के नाम सिफ़र, सो बुरे लगते हैं। ठीक है कि बाल हैं जंजाल पलैं तो पाल, नहीं मूछों को भी टाल।

बावले गाँव में ऊँट आया—अ० मूर्खों के लिए साधारण वस्तु भी अचम्भित है। प्र० गाँव में कल का कोल्हू क्या आ गया, मानो बावले गाँव में ऊँट आ गया।

बासी भात में खुदा का क्या निहोरा—अ० जो वस्तु घर में है उसमें प्रभु का क्या अहसान। प्र० महेश ने कहा, अरे मियाँ, खुदा का शुक्र अदा किये बिना सवेरे ही सवेरे खाते हो। हामिद ने उत्तर दिया कि बासी भात में खुदा का क्या निहोरा।

बिगड़ी बात बनै नहीं किये कोटि उपचार—अ० प्रतिष्ठा जब भंग हो जाती है तो फिर नहीं बंधती। प्र० विष्णु ने बामन अंगुल तन कर विराट रूप भी किया पर नाम बामन ही रहा। ठीक है कि बिगड़ी बात बनै नहीं किये कोटि उपचार।

बिच्छू का काटा रोवे, साँप का काटा सोवे—अ० मीठी मार में चैन मिलती है। प्र० बंधु, श्रीधर ने लक्ष्मी को ऐसी मीठी मार दी कि उसे पता ही नहीं चला। सच है कि बिच्छू का काटा रोवे, सांप का काटा सोवे।

बिच्छू का मन्त्र न जानै अरु सांप बामी में हाथ—अ० सामर्थ्य से बाहर कार्य करना। प्र० ललित के लिए काला अक्षर भैंस बराबर और जा बैठा बी० ए० में। ठीक है कि बिच्छू का मन्त्र न जानै अरु सांप बामी में हाथ।

बिजली कासे ही पै परै—अ० दुःख बड़ों ही को होता है। प्र० श्रीराम और राजा नल को वन में रहना पड़ा। ठीक है कि बिजली कासे ही पै परै।

बिद्या धन, उद्यम बिना नाहीं—अ० बिना मेहनत के विद्या प्राप्त नहीं होती है। प्र० देखो गांगेय, धनंजय रात्रि में भी लक्ष्य भेदन करता था। सच है कि विद्या धन उद्यम बिना नाहीं।

बिंध गया सो मोती नहीं तो पत्थर—अ० जो हो गया सो ठीक, शेष फिजूल है। प्र० बंधु, अब कुछ नहीं हो सकता है। क्या तुम जानते नहीं कि बिंध गया सो मोती नहीं तो पत्थर।

बिधि कर लिखा को मेटन हारा—अ० भाग्य का लिखा अवश्य होता है। प्र० श्रीराम अयोध्यापति दशरथ के पुत्र होकर भी वन-वन मारे-मारे फिरे। सच है कि बिधि कर लिखा को मेटन हारा।

बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा, सिरस सुमन किमि बेधिये हीरा—अ० सरल प्रकृति वाले व्यक्ति से सख्त काम नहीं हो सकता है। प्र० सीता ने अपनी प्रिय सखी से कहा कि भला कोमलांगी धनुष को कैसे तोड़ेंगे। सखी ने तत्काल उत्तर दिया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिधि केहि भाँति धरी उर धीरा,
सिरस सुमन किमि बेधिये हीरा।

बिधि प्रपंच कछु जाय न जाना—अ० विधाता का और माया का कुछ पार नहीं पाया जाता है। प्र० रामायण की घटनाओं को देखकर कौशल्या ने कहा कि बिधि प्रपंच कछु जाय न जाना।

बिन औषधि रोग नहीं जात—अ० उपाय से ही दुःख दूर होते हैं। प्र० संजीवन बूटी से ही वीर लक्ष्मण की मूर्छा जागी। सच है कि बिन औषधि रोग नहीं जात।

बिन बोले गुण न जाना जाय—अ० जब व्यक्ति बोलता है तो उसका भेद खुल जाता है। प्र० कालिदास के बोलते ही विद्योत्तमा ने जान लिया कि यह मूर्ख है। सच है कि बिन बोले गुण न जाना जाय।

बिन भय होय न प्रीति—अ० बिना भय प्रेम नहीं होता है। प्र० श्रीराम ने बाण ताना तो सिंधु हाथ जोड़ कर आ खड़ा हुआ। सच है कि बिन भय होय न प्रीति।

बिन सतसंग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई—अ० साधु संगति से ज्ञान होता है। प्र० बाल्मीकि को संत ने उपदेश किया। तभी वे इस महाकृति को लिखने योग्य हुए। सच है कि बिन सतसंग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

बिना आई क्यों मरते हो—अ० समय से पूर्व मर जाना। प्र० अंगद ने कहा, हे लंकाधिपति! संधि कर लो, बिना आई क्यों मरते हो।

बिना आई कोई नहीं मरता- अ० स्वयं जब कोई मौत से बाल-बाल बच जाये। प्र० आज श्याम छज्जे से गिरने से बाल-बाल बच गया। ठीक है कि बिना आई कोई नहीं मरता।

बिना इष्ट ये भ्रष्ट हैं, कवि, पंडित अरु वैद्य—अ० बिना इष्ट देव के कविता, पंडिताई और वैद्यक फिजूल हैं। प्र० लोकनायक तुलसी ने हनुमान जी को अपना इष्टदेव बनाया। सच है कि बिना इष्ट ये भ्रष्ट हैं, कवि, पंडित अरु वैद्य।

बिना जाने कौन माने—अ० बिना परिचय सम्मान नहीं होता है। प्र० रमेश सोहन को नहीं जानता था सो उसने घर जाने पर बात भी नहीं पूछी। सच है कि बिना जाने कौन माने।

बिना डूबे तैरना नहीं आता—अ० दुःख पाकर ही व्यक्ति कुछ सीखता है। प्र० जब कालिदास घर से निकाल दिये गए तो महाकवि हो गए। सच है कि बिना डूबे तैरना नहीं आता।

बिना दाब तेल नहीं निकलता—अ० बिना मेहनत के कुछ प्राप्त नहीं होता है। प्रा० श्रीराम ने सागर से विनय की पर न माना। बाण खींचते ही अधीन हो गया। सच है कि बिना दाब तेल नहीं निकलता है।

बिना पानी लहरें उठाना—अ० झूठी बातें बनाना। प्रा० अबे, घर जा। यहाँ बैठा बिना पानी लहरें उठा रहा है।

बिना बिचारे जो करै सो पीछें पछिताय—अ० जो बिना सोचे समझे काम करता है, उसे पीछे पछताना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है। प्र० रमन ने पचास बोरी काली मिर्च का सस्ते में सौदा कर लिया। सौदा देखाभाला तक नहीं। कुछ दिनों बाद जब बाजार में वेचने गया तो कोई खरीदार नहीं मिला। कारण, काली मिर्चों के स्थान पर वे पपीते के बीज निकले। फिर तो वेचारा सिर पटक कर बैठ गया। सच है कि बिना विचारे जो करै सो पीछे पछिताय।

बिना रोये मां भी दूध नहीं पिलाती—अ० मांगे ही से कुछ मिलता है। प्र० ईशाराधना करने से ही ध्रुव को अटल पद प्राप्त हुआ। ठीक है कि बिना रोये मां भी दूध नहीं पिलाती है।

बिनु कर कर्म करै बिधि नाना—अ० ईश्वर हाथ न होने पर भी सब कर्म करता है। प्र० कात्यायन ने कहा कि प्रभु निराकार होकर भी विश्व के सारे कर्म करता है। इसीलिए तो लोकनायक तुलसी ने कहा है कि बिनु कर कर्म करै विधि नाना।

बिनु ताये खोटौ खरौ गहनौ गनै न कोय—अ० बिना जाँच भला बुरा नहीं मालूम हो सकता। प्र० जब महेश की परीक्षा हुई तो पता चला कि कितने पानी में है। सच है कि बिनु ताये खोटौ खरौ गहनौ गनै न कोय।

बिपति परी तो भेट मनाई नाट गयौ जब देनी आई—अ० काम निकल जाने पर आँखें दिखाना। प्र० वंधु, बीमारी में शामलाल ने वैद्य जी को जो देना करा था, अब नहीं देता। हाँ जी, विपति परी तो भेट मनाई नाट गयो जब देनी आई।

बिपति परे ही जानिये जो नर जैसो होय—अ० भले बुरे की पहचान आपद्काल में ही होती है। प्र० बंधु, तुमने तो मुसीबत में राधेश्याम की हर तरह से मदद की, पर अब जब तुम पर पड़ी तो वह पास तक नहीं आया। सच है कि बिपति परे ही जानिये जो नर जैसो होय।

बिपति बराबर सुख नहीं जो थोड़े दिन होय—अ० जो थोड़े दिन रहे तो विपत्ति में बड़ा सुख है। प्र० बंधु, ज्वर के दिनों में कोई पास नहीं फटका। सच है कि विपति बराबर सुख नहीं जो थोड़े दिन होय।

बिल्ली के भागों छींका टूट पड़ा—अ० जब अनायास ही लाभ हो जाये। प्र० महाराज पौरस का हाथी भड़कने से सिकन्दर की विजय हुई। हाँ जी, बिल्ली के भागों छींका टूट पड़ा।

बिल्ली को स्वप्न में भी चूहे दिखाई देते हैं—अ० बुरे को बुराई ही दिखाई देती है। प्र० वंधु, मैं भिण्डी लिए आ रहा था कि अहमद ने पूछा कि क्या माल लाये हो। सच है कि बिल्ली को स्वप्न में भी चूहे दिखाई देते हैं।

बिष तरुवरहु लगाय के, निज कर काटे न कोय—अ० जिसका पालन-पोषण अपने हाथ किया हो, उसे कोई नहीं सताता। प्र० विष्णु ने जिस लड़के को नौकर कराया था, आज उसी की नौकरी छुड़ा दी। यह अच्छा नहीं किया। क्या वह जानता नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि बिष तरुवरहु लगाय के, निज कर काटे न कोय ।

बिष रस भरा कनक घट जैसे—अ० दिखावे के संत। प्र० परशुराम ने लक्ष्मण के तीखे वचन सुन कर कहा, तू ऐसा है कि विष रस भरा कनक घट जैसे।'

बिसमिल्ला ही ग़लत—अ० शुरू में ही ग़लती होना। प्र० बंधु, यह तुम क्या करा लाये, तुमने तो बिसमिल्ला ही ग़लत कर दिया।

बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेइ। जो बनि आवै सहज में ताहि में चित देइ ।।—अ० बीती बात को याद करना ठीक नहीं और सरल काम को करना ठीक है। प्र० बंधु, अब पिछली बातों पर ख़ाक डालो और सहज में अपना काम निकाल लो। क्या तुम जानते नहीं कि बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेइ। जो बनि आवै सहज में ताहि में चित देइ।

बीमार की रात पहाड़—अ० रोगी को रात काटनी मुश्किल हो जाती है। प्र० बंधु, दिन तो किसी तरह कट जाता है, पर रात काटी नहीं कटती। हाँ जी, बीमार की रात पहाड़ होती है।

बुड्ढे की सीख करै काम को ठीक—अ० बड़ों की शिक्षा से सब काम सिद्ध होते हैं। प्र० श्रेय ने अपने बाबा की शिक्षानुसार चल कर सब काम सिद्ध कर लिये। ठीक है कि बुड्ढे की सीख करै काम को ठीक।

बुड्ढे तोते कुरान नहीं पढ़ते—अ० बुड्ढे व्यक्तियों को कुछ नहीं आ सकता है। प्र० सुरेश को पचास वर्ष की अवस्था में पढ़ते देख लोगों ने कहा कि कहीं बुड्ढे तोते भी कुरान पढ़ते हैं।

बुढ़ापे में अक्ल मारी जाती है—अ० बूढ़े आदमी की बातें युवा वर्ग को अच्छी नहीं लगती हैं। प्र० बंधु, दादा जी दिन भर किसी को चैन नहीं लेने देते। सच है कि बुढ़ापे में अक्ल मारी जाती है।

बुढ़ापे में मिट्टी ख़राब—अ० बुढ़ापे में आदमी की कोई बात नहीं पूछता है। प्र० वृद्ध माता-पिता की घनश्याम तो चिन्ता ही नहीं करता। सच है कि बुढ़ापे में मिट्टी ख़राब।

बुढ़िया को पैंठ बिन कब सरै—अ० बुढ़िया भी चटक-मटक करती है। प्र० कहो बंधु, दादी तो प्रदर्शनी देखने नहीं गई होगी। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि वाह, बुढ़िया को पैंठ बिन कब सरै।

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न दीखा कोय। जो मन खोजा आपनो तो मोसो बुरा न कोय ।।—अ० व्यक्ति स्वयं बुरा होता है, फिजूल में दूसरों को बुरा कहता है। प्र० बंधु, दूसरों को बुरा कहने से पहले स्वयं को समझो। क्या तुमने कबीरदास का यह दोहा नहीं पढ़ा, बुरा जो देखन मैं चला बुरा न दीखा कोय। जो मन खोजा आपनो तो मोसो बुरा न कोय।

बुरा बेटा खोटा पैसा वक्त पर काम आता है—अ० कपूत और खोटे पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भी जरूरत के समय मूल्य होता है। प्र० बंधु, जिस बेटे को तुम निकम्मा व नीच कहा करते थे अब वही तुम्हारी सेवा कर रहा है। सच है कि बुरा बेटा खोटा पैसा वक्त पर काम आता है।

बुरे को बुरे ही दिखाई देते हैं—अ० जो जैसा होता है, उसको ससार वैसा ही दिखाई देता है। प्र० बंधु, तुम जो दूसरों को बुरा कहते हो, क्या तुम जानते नहीं कि बुरे को बुरे ही दिखाई देते हैं।

बूचा सबसे ऊँचा—अ० ऐबदार पहिले दीखता है। प्र० रमाकांत काना है, सो सब पहले इसी को देखते हैं। ठीक है कि बूचा सबसे ऊँचा होता है।

बूढ़ा खाये घर से जाये अ० बूढ़े व्यक्ति पर व्यय फिजूल समझा जाता है। प्र० बंधु, बाबा जी स्वर्ग सिधारें तो अच्छा है। क्यों, बूढ़ा खाये घर से जाये।

बूढ़े की जीभ में जोर—अ० बूढा बहुत बोलता है। प्र० बंधु ! दादा जी दिन-भर कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं। ठीक है कि बूढ़े की जीभ में जोर होता है।

बृन्दाबन से एक बन्दरिया भाग गई तो क्या बृन्दाबन सूना हो गया—अ० झुण्ड में से एक भाग जाए तो कुछ हानि नहीं है। प्र० एक सैनिक के पलायन करने पर छत्रसाल महाराज ने कहा था कि बृन्दाबन से एक बन्दरिया भाग गई तो क्या वृन्दाबन सूना हो गया।

बृक्ष बराबर बेलि बाढ़ै अ० बड़ों के साथ से छोटे बड़े हो जाते हैं। प्र० रघुनन्दन को राय बहादुर के साथ रहने से सब अभिवादन करने लग गए हैं। सच है कि वृक्ष बराबर बेलि बाढ़ै।

बे अदब बे नसीब बा अदब बा नसीब—अ० कुचरित्र अभागा और सुचरित्र भाग्यवान माना जाता है। प्र० श्रेय विनम्र है इसलिए सब उसे प्यार करते हैं। सच है कि बे अदब बे नसीब बा अदब बा नसीब।

बेईमान का मुंह काला—अ० बेईमान व्यक्ति किसी के सामने नहीं बोल सकता है। प्र० नाम तुम्हारा सत्य-प्रकाश है पर कर्म उसके विपरीत। इसीलिए तो किसी के आगे नहीं बैठते हो। सच है कि बेईमान का मुंह काला।

बेटा खाय बाप लखाय—अ० बेटा मौज मारे बाप भूखा रहे। प्र० मोहन तो अपनी मज़े से बिताता है पर बाप बैठा बैठा देखता है। सच है कि बेटा खाय बाप लखाय।

बेटा जनि कै नव चल, गहना पहन के ढक चल—अ० दूध और बेटे का गर्व मत कर। प्र० लक्ष्मी ने जब से पूत जना है तब से ही आपे से बाहर है। क्या वह जानती नहीं कि बेटा जनि कै नव चल, गहना पहन के ढक चल।

बेटी और ककड़ी की बेल बराबर है—अ० बेटी जल्दी बढ़ती है। प्र० बंधु, संगीता के हाथ पीले करने की फिक्र करो। तुम तो जानते ही हो कि बेटी और ककड़ी की बेल बराबर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी का धन निमाना, जाते भी रुलाये और आते भी रुलाये—अ० बेटी जब जाती है तब आँखों में अश्रु आते हैं और आती है तब भी। प्र० बंधु, आज नेत्र क्यों डबडबा रहे हैं। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि रमा बिटिया को बिदा किया है। हाँ, बधु, बेटी का धन निमाना, जाते भी रुलाये और आते भी रुलाये।

बे वसीले नौकरी नहीं—अ० बिना सिफ़ारिश के रोज़गार नहीं मिलता है। प्र० बंधु, सोहन ने दसवीं भी पास कर ली पर कोई पैसे को नहीं पूछता। हाँ बंधु, बे बसीले नौकरी नहीं।

बेशर्म को दुःख नहीं और कंजूस को सुख नहीं—अ० बेशर्म कभी दुःखी नहीं रहता है और कंजूस अपनी आदत के कारण कभी सुख नहीं पाता है। प्र० रतन ने शर्म उतार कर काख में दे ली, जहाँ जाता है वहीं खा लेता है। ठीक है कि बेशर्म को दुःख नहीं और कंजूस को सुख नहीं।

बैंगनों को क्या जानूं मैं तो आपको जानूं—अ० आपको खुश रखना है। प्र० बंधु, मालिक ने बैंगनों को बुरा कहा तो मैं भी बुरा कहूँगा और भला कहा तो भला। सच है कि बैंगनों को क्या जानूं मैं तो आप को जानूं।

बैठे बैठे कारूँ का खज़ाना भी खाली हो जायेगा—अ० हरेक को कुछ न कुछ करके खाना चाहिए। प्र० अरे बंधु, कुछ करना भी सीखो। इस तरह बैठे बैठ कारूँ का खज़ाना भी खाली हो जाएगा।

बैरी का बोल और बसोले का छोला तुरत जले—अ० स्पष्ट है। प्र० स्नेह की बात से बैरी शत्रुघ्न का कलेजा छिद गया। ठीक है कि बैरी का बोल और बसोले का छोला तुरत जले।

बैरी तजै न हा हा खाये—अ० शत्रु हाथ जोड़ने पर भी नहीं छोड़ता। प्र० मौहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज को हाथ जोड़ने पर भी नहीं छोड़ा। सच है कि बैरी तजै न हा हा खाये।

बैरी पड़े हवाल तो छोड़ न लेकर माल—अ० शत्रु को किसी तरह भी नहीं छोड़ना चाहिए। प्र० पृथ्वीराज ने अपने बैरी गौरी से भेंट लेकर छोड़ा सो उसी के हाथों मारा गया। सच है कि बैरी पड़े हवाल तो छोड़ न लेकर माल।

बैरी से बच और प्यारे से रच—अ० दुश्मन से दूर रह और प्रेमी से प्रेम कर। प्र० भय्या, मोहन से बिगाड़ हो चुका है, उसके पास मत जाना। क्या तुम जानते नहीं कि बैरी से बच और प्यारे से रच।

बोटी देकर बकरा लेना—अ० खूब लाभ उठाना। प्र० बंधु, तुम्हारे से कोई क्या सौदा करे, तुम तो बोटी देकर बकरा लेते हो।

बोटी नहीं तो शोरबा ही सही—अ० भागते भूत की लंगोटी ही सही। प्र० बंधु, मैंने चाचा जी से पाँच सौ रुपये माँगे, उन्होंने पचास देकर ही टाल दिया। मैंने भी सोचा कि बोटी नहीं तो शोरबा ही सही।

बोये आम उपजे बबूल—अ० भलाई की जगह बुराई। प्र० बंधु, मैंने तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी मदद की और मेरी ही बुराई करते फिरते हो। सच है कि बोये आम उपजे बबूल।

ब्याज भाड़ा दच्छना, पीछै पड़ै कुच्छ ना—अ० स्पष्ट है। प्र० मातादीन को रुपया लेने के समय ब्याज न मिला तो उसने कहा कि ब्याज भाड़ा दच्छना, पीछै पड़ै कुच्छ ना।

ब्याज मोटा रुपये में टोटा—अ० जब ब्याज बहुत बढ़ जाता है तो मूल भी मारा जाता है। प्र० मातादीन गुप्त पर मूल और ब्याज मिलकर इतना हो गया कि उसका मिलना मुश्किल है। सच है कि ब्याज मोटा रुपये में टोटा।

ब्याही धीय परौसन जान—अ० बेटी ब्याह पीछे दूसरे घर की हो जाती है। प्र० अरी बीबी, अब तो कभी इधर आती भी नहीं हो। सच है कि ब्याही धीय परौसन जान।

ब्याहे नहीं तो बरात तो चढ़े हैं—अ० अगर हमने यह काम नहीं किया तो होते हुए तो देखा है। प्र० बंधु, सम्भल कर खेलो, देखो जो हम ब्याहे नहीं तो बरात तो चढ़े हैं।

ब्याह के छोड़ दे माँग न छोड़े—अ० काम को पूरा करके तो छोड़ दे पर शुरू करके न छोड़े। प्र० बंधु, ऊदल ने ब्याह के छोड़ना तो माना पर बेला की माँग न छोड़ी।

भ

भई गति सर्प छछूंदर केरी—अ० जब किसी काम को न तो कर ही सके और न छोड़ ही सके। प्र० श्रीराम के बनवास के समय माता कौशल्या ने कहा था कि मेरी तो भई गति सर्प छछूंदर केरी वाली बात हो गई।

भजन और भोजन एकान्त में—अ० इन दोनों कामों के वक्त एकाग्रचित्त होना चाहिए। प्र० बंधु, खाते समय और कोई दूसरा काम नहीं करना चाहिए। तुम तो जानते हो कि भजन और भोजन एकान्त में ही ठीक रहता है।

भजन कह्यौ ताते भज्यौ, भज्यौ न एको बार। दूर भजन जाते कह्यौ, सो तें भज्यौ गंवार—अ० जो ईशस्तुति छोड़ कर संसार के भोग भोगे। प्र० पृथ्वीराज चौहान भगवद्भजन छोड़ कर भोग विलास में ही फँसा रहा। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि भजन कह्यौ ताते भज्यौ, भज्यौ न एको बार। दूर भजन जाते कह्यौ, सो तें भज्यौ गंवार।

भटा एक को पित करै, करै एक को बाय—अ० एक ही वस्तु के प्रकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न गुण होते हैं। प्र० बधु, मुझे तो धोखे की कमाई दु.ख देती है। तुमने ठीक ही कहा है कि भटा एक को पित करै, करै एक को वाय।

भयदायक खल की प्रिय बानी—अ० दुष्टों का मीठा भाषण दुःखदायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। प्र० बंधु, मयूर मीठी बानी बोल कर सर्प को खा जाता है। सच है कि भयनायक खल की प्रिय बानी।

भरा कहार और खाली कुम्हार हाथ नहीं आते—अ० ये दोनों ही बहुत तेज़ जाते हैं। प्र० मोहन जब एक बैंहगी वाले कहार के साथ चलते चलते थक गया तो बोला, सच है कि भरा कहार और खाली कुम्हार हाथ नहीं आते।

भरी खीर की थाली में लात मारना—अ० लगे काम को छोड़ना। प्र० प्रमोद ने जब नौकरी छोड़ी तो प्रभात ने कहा कि क्यों भरी खीर की थाली में लात मार रहे हो।

भरे को भरता है—अ० पैसे वाले को ही ईश्वर और ज़्यादा देता है। प्र० बंधु, रायबहादुर के यहाँ तो चारों ओर से रुपया बरस रहा है। सच है कि ईश्वर भरे को ही भरता है।

भरे पेट पर शक्कर खारी—अ० भोजन के बाद बढ़िया चीज़ भी अच्छी नहीं लगती है। प्र० मुझे भोजन के बाद लड्डू खाने को दिया पर स्वाद न आया। सच है कि भरे पेट पर शक्कर खारी।

भल अनभल जानत सब कोई, जो जेहि भाव नीक तेहि सोई—अ० जिसका जिससे प्रेम है उसको वही अच्छा लगता है। प्र० बंधु, जूली ने सब तरह के पदार्थों को छोड़कर हड्डी को ही उठा लिया। सच है कि भल अनभल जानत सब कोई, जो जेहि भाव नीक तेहि सोई।

भली करत लागत विलम—अ० भलाई करने में देर लगती है और बुराई करने में देर नहीं लगती है। प्र० महेश को नौकरी दिलाने में तो कई मास लग गए थे पर बरख़ास्त कराने में एक मिनट भी न लगी। सच है कि भली करत लागत विलम।

भली भई मेरी मटकी टूटी, मैं तो दधि बेचन तें छूटी—अ० कामचोर व्यक्ति को जब किसी कारण से कार्य से छुटकारा मिल जाए। प्र० बंधु, अच्छा हुआ जो किताब खो गई, नहीं तो पढ़ना पड़ता। ठीक है कि भली भई मेरी मटकी टूटी, मैं तो दधि बेचन तें छूटी।

भले का ज़माना नहीं—अ० भले व्यक्ति को कोई चैन नहीं लेने देता है। प्र० मैंने तो चाहा कि राज को पढ़ा दूँ। उसने कहा कि मुझे क़ैद कर दिया। सच है कि भले का ज़माना नहीं है।

भले दिन आयेंगे तो घर पूछते चले आयेंगे—अ० अच्छे दिन आने पर पैसा स्वयं ही चला आता है। प्र० भय्या, जब दिन फिरे तो राजा नल को फिर से राजगद्दी मिल गई थी। हाँ जी, भले दिन आयेंगे तो घर पूछते चले आयेंगे।

भले बुरे सब एक से ज्यों लों बोलत नाहिं—अ० चुप रहने पर मूर्ख और विद्वान् दोनों एक से हैं। प्र० कालिदास के बोलते ही उसकी मूर्खता का पता चल गया। ठीक ही तो है कि भले बुरे सब एक से ज्यों लों बोलत नाहिं।

भले भलाई ही लहहिं—अ० भले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तियों को भलाई ही मिलती है। प्र० कौरवों ने पांडवों की बहुतेरी धूल उड़ाई पर सब व्यर्थ। ठीक है कि भले भलाई ही लहहिं।

भाड़ पुकारे पीर बश मिस समझै सब कोय—अ० झूठे का कोई विश्वास नहीं करता है। प्र० वन्धु, कल तुमने जंगल में भेड़िया भेड़िया पुकारा, पर कोई दौड़ कर नहीं आया। सच है कि भाड़ पुकारे पीर बश मिस समझै सब कोय।

भात है तो भांजे बहुत—अ० पैसा है तो अनेक सम्बन्धी। प्र० बंधु, आये दिन अतिथि बने रहते हैं, पहले कोई नहीं आता था। ठीक तो है भात हैं तो भाँजे बहुत।

भादों मठा भूतन अरु कातिक मठा पूतन—अ० भादों में मठा हानिकारक है और कातिक में लाभदायक। प्र० चाची जी, अब आप भादों में हमें मठा पीने को क्यों नहीं देती हैं? चाची जी ने उत्तर दिया कि बेटा इसलिए कि भादों का मठा भूतन अरु कातिक मठा पूतन।

भादों ही सम्बत का राजा - अ० स्पष्ट है। प्र० हरिया ने कहा कि अब के भादों नहीं बरसा, सम्बत बिगड़ गया क्योंकि भादों ही सम्वत का राजा।

भानु उदय दीपक केहि काजा—अ० सूर्य निकलने पर दीपक व्यर्थ है। प्र० अरे, दिन में दीपक। पागल भानु उदय दीपक केहि काजा।

भावी बड़ी प्रबल है—अ० होनी बलवान है। प्र० श्रीराम को भी वन में रहना पड़ा। हाँ जी, भावी बड़ी प्रबल है।

भीख के टुकड़े बाज़ार में डकार—अ० झूठा अभिमान। प्र० बंधु, माँगी गाड़ी पर चढ़ कर इतरा रहे हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि भीख के टुकड़े बाज़ार में डकार।

भीख माँगे और आँख दिखावै—अ० पूत बन कर सबने खाया है। प्र० बंधु, तुम माँगते भी हो और आँखें भी दिखाते हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि भीख माँगे और आँख दिखावै।

भीगी बिल्ली होना—अ० बनावटी विनम्रता। प्र० श्रीराम को देखते ही कुम्भकरण भीगी बिल्ली हो गया।

भीत है तो लेव बहुत—अ० रोगी के अच्छा होने पर ऐसा कहा जाता है। प्र० बंधु, श्रेय अच्छा हो गया। बहुत अच्छा हुआ कि भीत है तो लेव बहुत।

भीत है तो भीतने बहुत—अ० बहू है तो बेटे अनेक। प्र० बंधु, रमेन्द्र का नवजात शिशु जाता रहा। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि कोई बात नहीं कि भीत है तो भीतने बहुत।

भुस के मोल मलीदा—अ० अच्छी वस्तु का कम मूल्य। प्र० बंधु, तुम तो भुस के मोल मलीदा माँग रहे हो।

भुस में दे गई आग जमालो दूर खड़ी—अ० झगड़ा छेड़ कर अलग हो जाना। प्र० शामलाल आग लगा कर कैसा सीधा बना खड़ा है। इसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि भुस में दे गई आग जमालो दूर खड़ी।

भूख में किवाड़ पापड़—अ० जरूरत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय बुरी वस्तु भी अच्छी गिनी जाती है। प्र० बंधु, इस बार जाड़ों में दोबड़े ने भी वड़ा काम दिया। हाँ बंधु, भूख में किवाड़ भी पापड़ लगते हैं।

भूखा बंगाली भात ही भात पुकारे—अ० स्वार्थी व्यक्ति को स्वार्थ ही दिखाई देता है। प्र० किसी ने भूखे से पूछा कि दो और दो कितने होते हैं। भूखे ने उत्तर दिया कि चार रोटी। यह तो वही बात हुई कि भूखा बंगाली भात ही भात पुकारे।

भूखे का पेट बातों से नहीं भरता—अ० जरूरत की चीज़ मिलने पर ही मन को शांति होती है। प्र० बंधु, ऐसे काम नहीं चलेगा। भला कहीं, भूखे का पेट बातों से भरा है।

भूखे बेर अघाने गांड़ी, ता ऊपर मूरा को डांडी—अ० भूख में बेर से पेट भरा जाता है, भरे पेट पर गन्ना चूसने से खाना पच जाता है और जो मूली की गाँल भी खाई जाये तो और भी अच्छा है। प्र० बंधु, सामने बेर वाला बैठा है। चार आने के ले आओ, बहुत भूख लगी है। सच है कि भूखे बेर अघाने गांडी, ता ऊपर मूरा को डांडी।

भूखे भजन न होय गोपाला—अ० कंगाल व्यक्ति से कोई भी कार्य नहीं हो सकता है। प्र० बंधु, उठ कर काम क्यों नहीं करते। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि तुम नहीं जानते कि पहले पेट में पड़े तो काम हो। क्या तुम जानते नहीं कि भूखे भजन न होय गोपाला।

भूतों के पूत और शेखों के समध्याने—अ० भूतों के संतान नहीं होती और मुसलमानों के घर के घर सम्वन्ध हो जाते हैं। प्र० अहमद मियाँ, लड़का कहाँ ब्याहा गया? दूसरे ने अहमद मियाँ से पहले ही जवाब दे दिया कि वाह वाह, भूतों के पूत और शेखों के समध्याने।

भूल गये राग रंग, भूल गये जकड़ी, तीन चीज याद रहीं नोंन तेल लकड़ी—अ० गृहस्थी को घर के धंधों से ही समय नहीं मिलता है। प्र० बंधु, प्रदर्शनी देखने नहीं चल रहे हो। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि तुम जाओ, हम तो भूल गए राग रंग, भूल गये जकड़ी, तीन चीज़ याद रहीं नौन तेल लकड़ी।

भेड़ की लात घुटने से नीचे नीचे—अ० कमज़ोर ताकतवर का कुछ भी नहीं कर सकता है। प्र० बंधु, तुम राम-बहादुर का क्या बिगाड़ सकते हो। तुम तो जानते हो कि भेड़ की लात घुटने से नीचे नीचे।

भेड़ तो जहाँ जायेगी वहीं मुड़ेगी—अ० पैसे वाला तो सब जगह देता ही है। प्र० सेठ घनश्यामदास वहाँ तो दान देकर आये ही थे कि यहाँ भी पचास हज़ार रुपये दे दिए। अरे भाई, भेड़ तो जहाँ जायेगी वहीं मुंड़ेगी।

भेड़ पर ऊन किसने छोड़ी है--अ० सीधे आदमी को सब लूटते हैं। प्र० बंधु, तुम्हारे से हर कोई कुछ न कुछ ले ही जाता है। हाँ भाई, भेड़ पर ऊन किसने छोड़ी है।

भेष से भीख मिलती है—अ० अच्छे भेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ही व्यक्ति का सम्मान होता है। प्र० मदनलाल अच्छी वेश भूषा में इन्टरव्यू देने गया, फौरन ही काम बन गया। सच है कि भेष से भीख मिलती है।

भैंस के आगे बीणा बाजै, भैंस बैठ पगुराय—अ० मूर्ख के आगे गुणों का वखान करना। प्र० बंधु, पंडित जी की कथा में तुम्हारी तो वही स्थिति थी कि भैंस के आगे बीणा बाजै, भैंस बैठ पगुराय।

भोरहि मुर्गा बोल अरु पंछी मुंह खोल—अ० सवेरा होते ही सब को भूख लगती है। प्र० यह क्या बंधु, सवेरे ही सवेरे भोजन? हाँ बंधु, क्या तुम जानते नहीं कि भोरहि मुर्गा बोल अरु पंछी मुँह खोल।

भोरे भाय राम सहाय--अ० सन्तों की प्रभु रक्षा करते हैं। प्र० बंधु, महाभारत के समय पार्थ का रथ योगीराज कृष्ण ने हाँका था। ठीक है कि भोरे भाय राम सहाय।

भोले का दाता राम—अ० सीधे व्यक्ति का पालने वाला ईश्वर ही है। प्र० हरभजन सीधा व्यक्ति हैं, प्रभु उसे घर बैठे भेजता है। हाँ जी, भोले का दाताराम।

भौंकते कुत्ते को रोटी की टूक—अ० भाँजी मारने वाला कुछ मिलते ही चुप हो जाता है। प्र० मंगतराम जब से बातें लगा रहा था पर पाँच का नोट मिलते ही चुप हो गया। ठीक है कि भौंकते कुत्ते को रोटी की टूक।

भौंर न छोड़े केतकी तीखे कंटक जान—अ० गुणी व्यक्ति कष्ट की फिक्र नहीं करते हैं। प्र० बंधु, तुम जेठ की दुपहरिया में भी पढ़ने के लिए जाते हो। ठीक है कि भौंर न छोड़े केतकी तीखे कंटक जान।

म

मछली के जाये किन तैराये—अ० जो जिसका स्वभाव होता है, वह उसी के अनुसार काम करता है। प्र० अरे देखा, श्रेय मास्टर जी का पौत्र आप ही पाठशाला जाने लग गया। हाँ जी, मछली के जाये किन तैराये।

मही का घड़ा लेते हैं तो ठोक बजा कर लेते हैं—अ० जब कोई वस्तु खरीदी जाती है तो उसकी अच्छी तरह छानबीन की जाती है। प्र० बंधु, सूट का कपड़ा देखभाल कर लाये हो या वैसे ही लिए चले आये हो। क्योंकि मही का घड़ा लेते हैं तो ठोक वजा कर लेते हैं।

मत कर सास बुराई तेरे भी आगे आई—अ० गृहस्थ के चारों पल्ले कीच में होते हैं। प्र० बंधु, किसी की भी बुराई करना ठीक नहीं है। तुम तो जानते हो कि मत कर सास बुराई तेरे भी आगे आई।

मथुरा की बेटी, गोकुल की गाय, भाग फूटै तो बाहर जाय—अ० घर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर रहना । प्र० श्याम ने अपनी बेटी की सगाई गोकुल में ही कर दी । हाँ बंधु, ठीक है कि मथुरा की बेटी, गोकुल की गाय, भाग फूटै तो बाहर जाए ।

मन उमराव कर्म के हीने—अ० उदारता को पूरी करने के लिए पर्याप्त धन होना चाहिए । प्र० बंधु, तुम्हारे पास धन हो तो सब लुटा दो । तुम्हारी तो वही कहावत है कि मन उमराव कर्म के हीने ।

मन के राजा—अ० मनमानी करने वाला । प्र० बंधु, तुम किसी की नहीं मानते, तुम तो मन के राजा हो ।

मन चंगा तो कठौती में गंगा—अ० श्रद्धा ही मुख्य है । प्र० भय्या, मैं बाहर जाकर ही क्या करूँगा । मन चंगा तो कठौती में गंगा है ।

मन मन भावै मूंड हिलावै—अ० झूठी नहीं । प्र० बंधु, प्रदर्शनी चलो पर उसने सिर हिला दिया । इस पर अन्य साथियों ने कहा कि चल जाने दे, मन मन भावै मूंड हिलावै ।

मन में राम पेट में काम—अ० कपट भाव । प्र० बंधु, वह साधू राम राम तो कहता है पर कपट की छुरी है । इसके तो मन में राम पेट में काम है ।

मन मोदक नहिं भूख बुझाई—अ० केवल बातों से ही काम नहीं चलता है । प्र० राजा जनक ने कहा, धनुष टूटने पर ही सीता को ब्याहोगे । गाल बजा कर नहीं । क्या तुम जानते नहीं कि मन मोदक नहिं भूख बुझाई ।

मन हारे ते हार है मन जीते ते जीत—अ० उत्साही की जीत होती है । प्र० उत्साही होने से धनंजय ने भारत को जीत लिया था । सच है कि मन हारे ते हार है मन जीते ते जीत ।

मरज बढ़ता गया ज्ूं ज्ूं दवा की—अ० जितना ही समझाया उतना ही और बिगड़ा । प्र० उमेश ने अपने पुत्र को जितना ही शास्त्र पढ़ाया, उतना ही वह कुकर्मी होता गया । सच है कि मरज़ बढ़ता गया ज्ूं ज्ूं दवा की ।

मरन चली सूख सामने—अ० जब मरना ही है तो सगुन विचारना व्यर्थ है । प्र० बंधु, अध्यापक ने मारने के लिए बेंत निकाली पर लड़के के छींकते ही हाथ रोक लिया । यह तो वही कहावत हुई कि मरन चली सूख सामने ।

मरना जीना सब के साथ लगा है—अ० पैदा सो ना पैद । प्र० कल प्रभात के बाबा जी चल दिये । हाँ जी, मरना जीना सब के साथ लगा है ।

मरने को जी चाहे कफ़न का टोटा—अ० बिना समान किसी काम को करने की इच्छा करना । प्र० महेश पढ़ना तो चाहता है पर पुस्तक एक नहीं । सच है कि मरने को जी चाहे कफ़न का टोटा ।

मरने में क्या हाथी घोड़े जुड़ते हैं—अ० मरते देर नहीं लगती । प्र० महेश बैठे-बैठे मर गया । हाँ जी, मरने में क्या हाथी घोड़े जुड़ते हैं ।

मरने से डरना क्या—अ० मौत से डरने वाले की हमेशा जीत होती है । प्र० धनुर्धारी अर्जुन मृत्यु से निर्भय था, अतः विजयी रहा । सच है कि मरने से डरना क्या ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरा हाथी सवा लाख का—अ० बड़े घर के बिगड़ने पर भी सब कुछ रहता है। प्र० रायबहादुर अनोखेलाल बिगड़ गये पर उनकी एक कोठी पन्द्रह लाख की बिकी क्यों नहीं, मरा हाथी सवा लाख का।

मरियो गिरिया बैल मरै वह हटिया टट्टू। मरै करकसा नारि मरै वह खसम निखट्टू—अ० ये सब मरे ही भले। प्र० बंधु, जब मेरा बैल बैठ जाता है तो जी दुःखी होता है। सच है कि मरियो गिरिया बैल मरै वह हटिया टट्टू। मरै करकसा नारि मरै वह खसम निखट्टू।

मरिहों पर तोहि न टरिहौं, तोर भैया और मिलै हों—अ० ऐसा कंजूस व्यक्ति के लिए कहा जाता है। प्र० बंधु, पचास का नोट जेब में रखा है, तुड़ा क्यों नहीं लेते। पर हाँ, तुम्हारी तो वह कहावत है कि मरिहों पर तोहि न टरिहौं, तोर भैया और मिलै हों।

मरे को क्या मारोगे—अ० अधीन को मारना ठीक नहीं ह। प्र० जब कान्ह मोहम्मद गौरी की गर्दन काटने लगा तो पृथ्वीराज चौहान ने कहा था कि मरे को क्या मारोगे।

मरे को मारा शाह मदार—अ० साधु भी ग़रीबों ही को सताते हैं। प्र० बंधु, वह साधु भी दीन भगवन्ता से पाँच का नोट ठग ले गया। सच है कि मरे को मारा शाह मदार।

मल्लाह का तो लंगोटा भीगता है—अ० मालिक की हानि होती है नौकर का कुछ नहीं बिगड़ता। प्र० कहो भय्या, आज तो मंझोली का पहिया टूट गया। फिर क्या हुआ? मल्लाह का तो लंगोटा ही भीगता है, मेरा क्या गया।

माँ पै धी पिता पै छोरा, बहुत नहीं तो थोरा थोरा—अ० जो गुण पिता के होते हैं वे ही पुत्र के और जो माता के होते हैं सोई बेटी के। प्र० वीर अभिमन्यु के लक्षण देख कर श्रीकृष्ण ने कहा था कि यह दूसरा अर्जुन है सुभद्रे! हाँ जी, माँ पै धी पिता पै छोरा, बहुत नहीं तो थोरा थोरा।

मान का पान ही बहुत—अ० सम्मान बड़ी वस्तु है। प्र० बंधु, रमेश की माली हालत अच्छी नहीं है फिर भी वह बड़ा सम्मान करता है। हाँ बंधु, ठीक है, मान का पान ही बहुत है।

मान री मान मैं तेरा मेहमान—अ० बिना सम्बन्ध सम्बन्ध दिखाना। प्र० श्याम ने कहा कि मैं तो आपको जानता तक नहीं, आप भाई कहते हैं। आपने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि मान री मान मैं तेरा मेहमान।

मानो तो देव नहीं भीत का लेव—अ० मानो तो देवता अन्यथा कुछ भी नहीं। प्र० श्याम ने कहा कि माता पूजने से क्या लाभ? सुनने वाले ने उत्तर दिया कि क्यों नहीं श्याम बाबू, मानो तो देव नहीं भीत का लेव।

माया का क्या जोड़ना, खल खानी कम्बल ओढ़ना—अ० कंजूस व्यक्ति ही धनवान होता है। प्र० रमेश भाई, तुम तो हमेशा बंडी में ही रहते हो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ा क्यों नहीं पहनते ? तुम तो वही कहावत चरितार्थ कर रहे हो कि माया का क्या जोड़ना, खल खानी कम्बल ओढ़ना।

माया जी का जंजाल— अ० पैसे के जाल में सब फँसे हैं। प्र० बंधु, रात-दिन मेहनत करते हो, आप तो माया में फँस गए। हाँ बंधु, है तो यही, माया जी का जंजाल।

माया तेरे तीन नाम परसी, परसा परस-राम—अ० माया के साथ नाम बढ़ता है। प्र० बंधु, ज्यों ज्यों धन बढ़ता जाता है त्यों त्यों गंगा के नाम बदलते जाते हैं। सच है कि माया तेरे तीन नाम परसी, परसा, परस-राम।

माया मरी न मन मरे, मर मर गये शरीर। आशा तृष्णा ना मिटी, कह गये दास कबीर अ० माया, मन, तृष्णा और आशा अमर है तथा देह वारम्बार होती है। प्र० श्रेय ने गौरव से कहा, बंधु, देह तो फिर हो जाएगी पर माया अटल है, इसलिए इससे मुक्ति पाओ। यथा माया मरी न मन मरे, मर मर गये शरीर। आशा तृष्णा ना मिटी, कह गये दास कबीर।

मार के आगे भूत भागे—अ० मार से सब सीधे हो जाते हैं। प्र० रमेन्द्र वड़ी बक बक करता था। चार बेंत लगते ही सीधा हो गया। सच है कि मार के आगे भूत भागे।

मारते का हाथ पकड़ा जाता है, कहते की जीभ नहीं पकड़ी जाती—अ० जीभ नहीं रुकती। प्र० महेन्द्र ने सोबती से कहा, कल रमेश तुम्हारी बहुत बुराई कर रहा था। सोबती ने उत्तर दिया कि फिर क्या हो, मारते का हाथ पकड़ा जाता है, कहते की जीभ नहीं पकड़ी जाती है।

मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है— अ० ईश्वर बड़ा रक्षक है। प्र० सम्राट अकवर शेरशाह सूरी की लड़ाई में गोलों से भी बच गया। हाँ जी, मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है।

मार मार के सती करना—अ० मारपीट करके इच्छा के विरुद्ध काम लेना। प्र० बंधु, मनीष राजी से तो काम करना नहीं चाहता पर तुम उसे मार मार के सती करना चाहते हो।

मारा घुटना फूटी आँख—अ० करें कुछ और हो कुछ और। प्र० बंधु, मैंने पत्थर मार कर तोड़ना तो चाहा आम था पर टूट पड़ी जामुन। ठीक है कि मारा घुटना फूटी आँख।

मारैं न चूही नाम फतेह खाँ—अ० गुणों के अनुसार नाम न होना। प्र० बंधु, चुहिया तो तुम्हारे से मरती नहीं और शेर को मारने की डींगे मारते हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि मारैं न चूही नाम फतेह खाँ।

माले मुफ्त दिले बेरहम—अ० दूसरे का माल लुटाना। प्र० धर्मराज युधि-ष्ठिर के यज्ञ में दुर्योधन को धन लुटाते देख लोगों ने कहा था कि ठीक है, माले मुफ्त दिले वेरहम।

माले हराम बूद बजाय हराम रफ्त शुद— अ० हराम की कमाई हराम में जाती है। प्र० मुंशी जी जैसी ऊपरी कमाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं, वैसी ही जाती है। ठीक है कि माले हराम बूद बजाय हराम रफ्त शुद।

मास से नाखून अलग नहीं होते—अ० सम्बन्धी से अलग नहीं हुआ जाता है। प्र० बंधु, तुम तो फिर सत्येन्द्र की ओर हो गए। सच है कि मास से नाखून अलग नहीं होते।

मिज़ाज परियों का रूप चुड़ैलों का—अ० दीन होकर बड़ों की होड़ करना। प्र० बधु, तुम्हें देखकर तो उबकाइयाँ आने लगीं हैं पर कुर्त्ता दो घोड़े बोस का डाल रखा है। सच है कि मिज़ाज परियों का रूप चुड़ैलों का।

मिट्टी कहै कुम्हार सों, तू क्या रौंदै मोहि। एक दिन ऐसा होयगा, मैं रौंदूंगी तोहि—अ० निधन पर देह मिट्टी है। प्र० बंधु, यह देह जलकर धूल में मिल जाएगी। ठीक तो है कि मिट्टी कहै कुम्हार सों, तू क्या रौंदै मोहि। एक दिन ऐसा होयगा, मैं रौंदूंगी तोहि।

मिट्टी को हाथ डाले सोना मिलै—अ० थोड़े काम में ज्यादा फायदा। प्र० बंधु, तुम तो मिट्टी में हाथ डालते हो और सोना मिलता है।

मिटे न होनहार की रेख—अ० भावी बलवान है। प्र० श्रीराम चक्रवर्ती के पुत्र होने पर भी वन में रहे। सच है कि मिटे न होनहार की रेख।

मित्र से न अंतर और शत्रु से न नेह—अ० मित्र से कपट न रखे और शत्रु से किसी स्थिति में भी प्रेम न करे। प्र० बंधु, तुमने अपने पुराने शत्रु मंगल से फिर व्यवहार रखा, सो देख लिया। क्या तुम जानते न थे कि मित्र से न अन्तर और शत्रु से न नेह।

मियाँ का दम और किवाड़ों की जोड़ी—अ० ऐसा बहुत ग़रीबी पर कहा जाता है। प्र० बंधु, आजकल तो तुम्हारे केवल मियाँ का दम और किवाड़ों की जोड़ी है।

मियाँ कान काटने डोलैं, बीवी मांगै बाली—अ० किसी के विरुद्ध किसी चीज़ की इच्छा करना। प्र० बंधु, तुम तो अपना वेतन बढ़वाना चाह रहे हो और मालिक तुम्हें निकालने की सोच रहा है। सच है कि मियां कान काटने डोलैं, बीवी मांगै बाली।

मियाँ बीवी राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी—अ० दो की राज़ी में तीसरे का काम नहीं। प्र० जब श्याम और मोहन दोनों राज़ी हैं तो कहो सोहन तुम कौन? क्या तुम जानते नहीं कि मियाँ बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी।

मिल गये की रामराम—अ० मुख देखे का स्नेह। प्र० बंधु, अब बातें मत बनाओ। तुम्हारी तो मिल गये की रामराम है।

मिल गये की हराहरी—अ० मिल गया तो खा लिया नहीं ख़ैर। प्र० बंधु, तुम्हारी तो वही कहावत है कि मिल गये की हराहरी।

मीठा बोल पूरी तोल—अ० मिष्टभाषी और पूरा तोलने वाला दूकानदार कमा खाता है। प्र० बंधु, मीठा बोल और पूरी तोल से पवन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूकान गली में होते हुए भी अच्छी चल निकली ।

मीठे के लालच झूठा खाते हैं—अ० स्वार्थ के लिए ही किसी की चाटुकारिता की जाती है । प्र० बंधु, मुझे व्यर्थ में ताने मत दो। मीठे के लालच में ही झूठा खाया जाता है ।

मीठे नौन, नौन पं मीठा—अ० मीठा खाने के बाद नमकीन और नमकीन के बाद मीठा खाना उचित है । प्र० बंधु, नमकीन खिलाओ, मीठे से तो मन भर गया है । ठीक है कि मीठे नौन, नौन प मीठा ।

मीठे से मरे तो जहर क्यों देय—अ० विनम्रता से काम चले तो दंड क्यों दिया जाए । प्र० श्रीराम ने क्रोधी परशुराम को विनम्रता से जीता था । सच है कि मीठे से मरे तो जहर क्यों देय ।

मुंडा जोगी और घुटी दवा की क्या पहचान—अ० स्पष्ट है । प्र० एक घुटमुंडे को देखकर श्रेय ने अपने पितामह से पूछा कि बाबा जी, यह कौन है ? पितामह ने उत्तर दिया, वत्स, मुंडा जोगी और घुटी दवा की क्या पहचान ?

मुफ्त की दारू काज़ी को हलाल—अ० बिना दाम की वस्तु सब को अच्छी लगती है । प्र० बिना दामों पंडित जी भी धोती जोड़ा ले आये । वे तो धर्मात्मा हैं । अरे बंधु, जानते नहीं, मुफ्त की दारू काज़ी को हलाल ।

मुर्गी अपनी जान से गई मियां जी को मजा न आया—अ० स्पष्ट है । प्र० बंधु, मैं तो पिलता पिलता मर गया पर मालिक के भावें भी नहीं । सच है कि मुर्ग़ी अपनी जान से गई मियां जी को मज़ा न आया ।

मुर्गी को तकुवे का दाग़ ही बहुत है—अ० कंगाल को थोड़ी हानि भी बहुत है । प्र० बस, पाँच रुपये में ही रो दिये । तब रमेश ने कहा कि भाई मुर्गी को तकुवे का दाग़ ही बहुत है ।

मुंह माँगी तो मौत भी नहीं मिलती—अ० मन की इच्छा पूरी नहीं होती है । प्र० बंधु, कार का कुछ कम भी लोगे । सुनने वाले ने उत्तर दिया, बिल्कुल नहीं । तब उसे उत्तर मिला कि मुँह माँगी तो मौत भी नहीं मिलती ।

मुँह में दाँत न पेट में आँत न माथे में आँख—अ० अत्यन्त वृद्धावस्था । प्र० बंधु, ग़ज़ब हो गया, हरिया ने सोनिया की सगाई ऐसे के साथ की है, जिस के मुँह में दाँत, न पेट में आँत, न माथे में आँख ।

मुँह लगाई डौमनी गावै आल पताल—अ० जब कोई छोटा व्यक्ति किसी बड़े व्यक्ति के सिर चढ़ गया हो और कुछ से कुछ कहने लग जाए । प्र० बंधु, मेरे सामने बहुत बोलने की ज़रूरत नहीं है । तुम्हारी तो वही कहावत है कि मुँह लगाई डौमनी गावै आल पताल ।

मुर्दा बहिश्त में जाय या दोजख में, अपने हलुए पूरी से काम—अ० स्वार्थी लोग कहा करते हैं । प्र० बंधु, वैसे तो तुमने मेरे साथ बड़े मजे के दिन काटे हैं पर जब मुझ पर मुसीबत आ पड़ी है तो पास भी नहीं फटकते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाह-वाह, मुर्दा बहिश्त में जाए या दोज़ख़ में, अपने हलुए पूरी से काम।

मुल्ला की डाढ़ी तबर्रूक में गई—अ० जब किसी का सारा पैसा बड़ाई में ही निकल जाये। प्र० बंधु, तुम तो सेठ जी में ही कंगाल हो गए। सच है कि मुल्ला की डाढ़ी तबर्रूक में में गई।

मुश्क खुद बगोयद न कि अत्तार बगोयद—अ० अपने मुंह अपनी बड़ाई ठीक नहीं, काम स्वयं तुम्हारी प्रशंसा करेगा। प्र० बंधु, अपने मुख से कुछ न कहो। क्या तुम जानते नहीं कि मुश्क खुद बगोयद न कि अत्तार बगोयद।

मूरख के मुँह बाँमई बोलत बचन भुजंग—अ० मूर्ख कटुवादी होते हैं। प्र० ऊधो ने कहा, हे अक्रूर, कंस के मुख से सदा कड़वी बात ही निकलती है। सच है कि मूरख के मुँह बाँमई बोलत बचन भुजंग।

मूरख को समझाइये, ज्ञान गाँठ की जाय—अ० मूर्ख को उपदेश देने से आप को भी मूर्ख बनना पड़ेगा। प्र० विदुर ने कहा, हे गांगेय! मूर्ख दुर्योधन के समझाने में अपनी विद्या भी खो बैठोगे। क्या जानते नहीं कि मूरख को समझाइये, ज्ञान गाँठ की जाए।

मेर तेर की जेवड़ी बँट बाँधा संसार—अ० यह मेरा है यह तेरा है के फंदे में सारी दुनिया फँस रही है। प्र० बंधु, तुम मेर तेर बहुत करते हो। इससे तो तुम्हारे पर यही कहावत चरितार्थ हो रही है कि मेर तेर की जेवड़ी बँट बाँधा संसार।

मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर। तेरा तुझ को सौंपते, क्या लाग है मोर—अ० हे प्रभु, इस दुनिया में मेरा कुछ नहीं, सब कुछ तेरा ही है। प्र० बंधु, इस संसार में तुम्हारा क्या है? सुनने वाले ने उत्तर दिया कि कुछ भी नहीं! मेरा तो यही विश्वास है कि मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर। तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागं है मोर।

मेरी बिल्ली मुझे ही म्याऊँ—अ० यह ऐसे व्यक्ति के लिए कहा जाता है जो किसी का अन्न खाकर उसी को धमकावे। प्र० दुर्योधन ने भीष्म से कहा, अरे बुड्ढे, मेरा ही अन्न खाया और मुझे ही धमकाता है। तुम्हारी तो वही कहावत है कि मेरी बिल्ली मुझे ही म्याऊँ।

मेरे ख़सम के बड़े बड़े यार, धुने जुलाहे अरु मनियार—अ० ऐसे व्यक्ति के लिए कहा जाता है जो नीच व्यक्तियों की संगति करता हो। प्र० बंधु, तुमने तो नीचों में बैठ कर यही कर दिखाया कि मेरे ख़सम के बड़े बड़े यार, धुने जुलाहे अरु मनियार।

मेरे बावरे की उल्टी रीति, सावन भादों जमाय दई भीत—अ० असमय काम करना। प्र० बधु, धनिया ने अब फाल्गुन के मास में ज्वार बोनी शुरू कर दी। उसकी तो वही कहावत हुई कि मेरे बावरे की उल्टी रीति, सावन भादों जमाय दई भीत।

मेरे हाँ से आग लाई नाम धरा बैसान्दुरू—अ० जब कोई व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी के अन्न से पला हो और फिर स्वयं को उससे बड़ा माने। प्र० सुयोधन ने द्रोणाचार्य से कहा, मेरे ही तो टुकड़े तोड़े, आज आपे को बड़ा मानते हो। सच है कि मेरे ही से आग लाई नाम धरा बैसान्दुरू।

मेले में झमेला—अ० मेले में झगड़ा हो जाता है। प्र० बंधु, आज नौचन्दी के मेले में श्याम से हाथापाई हो गई। सच है कि मेले में झमेला।

मेहरी मुहब्बत सब गई गये नान और पान। हुक्का ते मौह फूंकि के बिदा किया मेहमान॥—अ० आजकल हुक्के से ही सब शिष्टाचार हो जाता है। प्र० बंधु, कल वेदी की ससुराल वालों ने रोटी पानी की तो बात पूछी नहीं, हुक्का ही पिलाकर चलता किया। सच है कि मैहरी मुहब्बत सब गई गये नान और पान। हुक्का ते मौह फूंकि के बिदा किया मेहमान।

मैं और मेरा मनुस, तीसरे का मुँह झुलस—अ० मैं और मेरा पति तीसरे का क्या काम। प्र० अरी सरला, मेरा तो सीधा सिद्धान्त है कि मैं और मेरा मनुस और तीसरे का मुँह झुलस।

मैंने कब कही कि तेरे छोरा कू मिरगी आती है—अ० अपनी भलाई के मूंडे दूसरे की बुराई करनी। प्र० हरदयाल ने जब देखा कि रामदयाल के बेटे को देखने वाले आये हैं तो वह उनके आगे जाकर बोला, क्यों रामदयाल, मैंने कब कही कि तेरे छोरा कू मिरगी आती है।

मैंने क्या उसके खुर चूंटे हैं—अ० मेरा कोई किसी तरह का उससे सम्बन्ध नहीं है। प्र० बंधु, तुम सुरेश को जानते हो। सुनने वाले ने उत्तर दिया, मैं क्यों जानता, मैंने क्या उसके खुर चूंटे हैं।

मोठ मूंग में कौन बड़ा—अ० बिरादरी में सब एक हैं। प्र० बंधु, हरिया ने चुन्नीलाल को हुक्का नहीं दिया। यह ठीक नहीं किया, भला मोठ मूंग में कौन बड़ा।

मोरी का कीड़ा मोरी में खुश—अ० किसी की प्रकृति नहीं बदलती है। प्र० बंधु नल के बल जल चढ़ जाता है, पर अंत को नीचे गिरता है। सच है कि मोरी का कीड़ा मोरी में खुश।

मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी—अ० जब किसी नीच व्यक्ति को ऊँचा पद मिल जाये। प्र० बंधु, आपे से बाहर मत हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी।

मोहि और न तोहि ठौर--अ० जब किसी को दूसरा नौकर न मिले और नौकर को कोई और मालिक न मिले। प्र० बंधु, मैं सुरेश को कई बार निकाल चुका हूँ, पर फिर आ जाता है। सच है कि मोहि और न तोहि ठौर।

मौत सिर पर खेलना—अ० मौत नजदीक आना। प्र० बंधु, सोचकर चलो। तुम्हारे सिर पर मौत खेल रही है।

म्याऊँ की ठौर कौन पकड़ेगा—अ० अपनी जान ख़तरे में कौन डालेगा। प्र० चूहों के सभापति ने कहा कि बिल्ली के गले में घंटी बाँध दी जाए। तभी एक चूहे ने खड़े होकर कहा, ठीक है, पर म्याऊँ की ठौर कौन पकड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य

यथा नाम तथा गुण—अ० जैसा नाम तैसा काम। प्र० वीर अभिमन्यु का पराक्रम देखकर द्रोणाचार्य ने कहा था कि जीते रहो वत्स, यथा नाम तथा गुण है।

यथा राजा तथा प्रजा—अ० जैसा स्वामी तैसा सेवक। प्र० द्रोणाचार्य ने कहा, देखो गांगेय, अर्जुन के रथ के घोड़े कृष्ण की इच्छानुसार चलते हैं। सच है कि यथा राजा तथा प्रजा।

यह किसी का सगा न होगा—अ० सबके विरुद्ध। प्र० बंधु, ललित का विश्वास मत करना। यह किसी का सगा नहीं है।

यह दाढ़ी है कि धोके की टट्टी—अ० ऊपर की बनावट से कोई साधु नहीं हो सकता है। प्र० बंधु, ये दाढ़ी वाले साधु कैसे पवित्र हैं। सुनने वाले ने उत्तर दिया, 'नहीं, यह दाढ़ी धोके की टट्टी है।

यह दिन सबके लिए है—अ० निधन के अवसर पर कहा जाता है। प्र० बंधु, आज अशोक की दादी बैठी-बैठी चल बसी। हाँ बंधु, यह दिन सबके लिए है।

यह दुनिया सब रैन का सपना—अ० संसार की माया झूठी है। प्र० बंधु, कैसा ज़माना आ गया है। कल जिसके पैर कार से बाहर नहीं निकलते थे आज उनमें जूता भी नहीं है। ठीक है कि यह दुनिया सब रैन का सपना है।

यह बला अच्छी पीछे पड़ी—अ० जब कोई व्यक्ति किसी के पीछे पड़ जाए। प्र० बंधु, रतिमोहन से बहुत परेशान हूँ। वह किसी समय पीछा ही नहीं छोडता। सच मानो, यह बला अच्छी पीछे पड़ी है।

यह बेल मढ़े नहीं चढ़ती दीखती—अ० यह कार्य पूर्ण होता दिखाई नहीं देता। प्र० तुम कितना ही ज़ोर क्यों न लगा लो, यह बेल मढ़े चढ़ती नहीं दीखती।

यह भी किसी ने नहीं पूछा कि तेरे मुँह में कै दाँत हैं—अ० जब किसी की कहीं बात न पूछी जाये। प्र० सत्येन्द्र की ससुराल में किसी ने उसकी बात भी नहीं पूछी तो उसने कहा कि बंधु, मुझसे तो किसी ने यह भी नहीं पूछा कि तेरे मुँह में कै दाँत हैं।

यह भी नहीं जानते कि बेर के पेट किधर है—अ० यह सीधे-साधे व्यक्ति के लिए कहा जाता है। प्र० सुरेन्द्र इस विषय में तुम क्या बताओगे? तुम तो यह भी नहीं जानते कि बेर के पेट किधर है।

यह मुँह और मसूर की दाल—अ० किसी को ऐसी चीज़ दी जाये, जिसके योग्य वह न हो। प्र० बंधु, यह कुपात्र है, इसे ऐसा श्रेष्ठ दान क्यों दे रहे हो? सच है कि यह मुँह और मसूर की दाल।

यह संसार काल का खाजा, जैसा कुत्ता तैसा राजा—अ० सभी जीवधारी मरेंगे। प्र० आज दानवीर राय-बहादुर चल बसे। अरे भय्या, इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अचरज की क्या बात है। यह संसार काल का खाजा, जैसा कुत्ता तैसा राजा।

यहाँ अच्छे अच्छों के पर जलते हैं—अ० इस स्थान पर महाधूर्त भी ठीक हो जाते हैं। प्र० यहाँ से सीधा चला जा, जानता नहीं कि यहाँ अच्छे-अच्छे के पर जलते हैं।

यहाँ क्या तेरा नाल गड़ा है—अ० तुम्हारी बपौती नहीं है। प्र० अरे भय्या, यहीं पड़ा क्यों दुःख पा रहा है। यहाँ क्या तेरा नाल गड़ा है।

यहाँ न लागहिं राउरिमाया—अ० जिस व्यक्ति को समझाने में निराशा हाथ लगे वहाँ ऐसा कहा जाता है। प्र० अयोध्यापति राजा दशरथ ने जब रानी कैकेई को अनेक प्रकार से समझाया तो कैकेई ने उत्तर दिया कि यहाँ न लागहिं राउरिमाया।

या तो करै दर्दमंद या करै गर्जमंद—अ० किसी की मदद या तो कोई प्रेमी करता है या कोई स्वार्थी। प्र० दुर्योधन ने कहा, देखो कर्ण ने मेरे लिए युद्ध में प्राण दे दिये। सच है या तो करै दर्दमंद या करै गर्ज़मंद।

या तो किसी का हो चल या किसी को कर चल—अ० हरेक व्यक्ति के लिए यही उचित है कि या तो किसी की माने या किसी को मनावे। प्र० युधिष्ठिर से भीम ने कहा, दादा, आप पितामह की आज्ञा लिए बिना कुछ नहीं करते हैं। हाँ भाई, ठीक है, या तो किसी का हो चल या किसी को कर चल।

या तो खाय घी से नहीं जाय जी से—अ० जो व्यक्ति या तो कोई वस्तु ग्रहण करे ही नहीं और जो ले तो बढ़िया ले। प्र० वीर अभिमन्यु ने कहा कि पाँच गाँवों पर संधि नहीं होगी, लूंगा तो पूरा राज्य लूंगा, नहीं तो वनवास। यह तो वही कहावत हुई कि या तो खाय घी से नहीं जाय जी से।

या बेईमानी तेरा ही आसरा है—अ० जब कोई बेईमानी करे और मुंहजोरी भी करे। प्र० सुयोधन ने कहा कि हमने पाण्डवों के साथ क्या अधर्म किया है, कुछ नहीं। तब विदुर ने कहा था कि या बेईमानी तेरा ही आसरा है।

या मारै भादों की घाम, या मारै साझे का काम—अ० भादों की धूप बुरी होती है और साझे का काम बुरा होता है। प्र० बंधु, आजकल तो आपका रंग गिर गया है। हाँ भाई, या मारै भादों की घाम, या मारै साझे का काम।

यार की यारी से मतलब उसके फेलों से क्या—अ० ऐसा लूटने खाने वाले मित्र कहा करते हैं। प्र० कर्ण ने कहा, राधेय, सुयोधन को पापों से रोको। यह सुनकर उसने उत्तर दिया, मुझे तो यार की यारी से मतलब उसके फेलों से क्या।

युग टूटा सार मारी—अ० मेल बड़ी चीज है। प्र० रावण और विभीषण का युग टूट गया पर श्रीराम और लक्ष्मण का बना रहा। इसलिए श्रीराम विजयी हुए। सच है कि युग टूटा सार मारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र

रंग में भंग पड़ना—अ० आनन्द में क्लेश होना। प्र० भीष्म के मरते ही सुयोधन के रंग में भंग पड़ गया।

रख पत रखा पत—अ० आदर कर और आदर करा। प्र० योगीराज कृष्ण सबकी प्रतिष्ठा करते थे, इस कारण सब के मान्य थे, सच है कि रख पत रखा पत।

रक्खे सच्चा हाथ तो मोती लागे हाथ—अ० चोर व्यक्ति को कुछ नहीं मिलता है। प्र० बंधु, आशीष कभी पैसे की भी चीज़ नहीं चुराता। इसलिए सारे दूकानदार उसे पसन्द करते हैं। सच है कि रक्खे सच्चा हाथ तो मोती लागे हाथ।

रती दान धी को नहिं दियौ, देखो री समधिन को हियौ—अ० जब व्याही बेटी को दहेज में कुछ न दिया जाये तब बेटे की माँ कहती है। प्र० अरी बहन, सत्येन्द्र की बहू क्या लाई है। इस पर सत्येन्द्र की माँ ने जवाब दिया कि क्या कहूँ, मुझे तो यही कहना पड़ता है कि रती दान धी को नहिं दियौ, देखोरी समधिन को हियौ।

रस मार रसायन बनती है—अ० जितेन्द्रिय रहे तो देह पुष्ट रहती है। प्र० सात्यकी ने कहा, हे भीम! गांगेय पचासी वर्ष की अवस्था में भी ऐसे लड़ता है जैसे पन्द्रह-सोलह वर्ष का लड़का लड़ता है। सच है कि रस मार रसायन बनती है।

रस्सी जल गई पर बट न गये—अ० बिगड़ गये पर अकड़ न गई। प्र० भय्या भूखे तो मरने लगे पर मुख से अब भी नहीं बोलते। सच है कि रस्सी जल गई पर बट न गये।

रसोई का ब्राह्मन और कसाई का कुत्ता—अ० ये दोनों कभी भूखे नहीं मरते। प्र० गदाधारी भीम ने राजा विराट के यहाँ रसोई का काम इसीलिए किया था। सच है कि रसोई का ब्राह्मन और कसाई का कुत्ता।

रहमान को रहमान, शैतान को शैतान—अ० जैसे को तैसा। प्र० बंधु, सोमेश सब को सताया करता था। अन्त को उसका सब नष्ट हो गया। सच है कि रहमान को रहमान, शैतान को शैतान।

रहे गिरधारी के, दूध दे बिहारी के—अ० किसी और के खाये और काम किसी और के यहाँ करे। प्र० दुर्योधन ने द्रोणाचार्य से कहा, गुरुदेव, आप मेरा अन्न खाते हुए पाण्डवों की ओर से युद्ध करेंगे तो आपकी वही कहावत होगी कि रहे गिरधारी के, दूध दे बिहारी के।

राई को पर्वत करै, पर्वत राई माहि—अ० प्रभु सर्वशक्तिमान है। प्र० हे विदुर, देखो प्रभु की कैसी विचित्र लीला है। हाँ जी, वह राई को पर्वत करै, पर्वत राई माहि।

राजा जोगी अगिन जल इनकी उल्टी रीति। डरते रहना भीम ये थोड़ी पालें प्रीति॥—अ० राजा, जोगी, अग्नि और जल ये किसी के ही होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। प्र० बंधु, तुमने प्रेम में आकर संगम पर गोता लगाया सो डूबने से बचे। क्या तुम जानते न थे कि राजा जोगी अगिन जल इनकी उल्टी रीति। डरते रहना भीम ये थोड़ी पालें प्रीति।

राजा रूठे नगरी लेय—अ० मालिक बिगड़े तो नौकर को नौकरी से हटा दे और क्या कर सकता है। प्र० बंधु, मालिक आजकल तुम्हारे से नाराज़ रहते हैं। सुनने वाले ने उत्तर दिया। भय्या, नौकरी से ही तो हटा देंगे। बस, राजा रूठे नगरी लेय।

राजा राज परजा सुखी—अ० राजा के बिना प्रजा में उपद्रव मचे रहते हैं। प्र० योगीराज कृष्ण के बिना प्रजा को उपद्रवियों ने दुःखी कर दिया। सच है कि राजा राज परजा सुखी।

राज़ी हैं हम तो उसमें जिसमें तेरी रज़ा है। नहि जानता हूँ किस दिन इन्सान की क़ज़ा है। यहाँ तो यों भी वाह वाह और यों भी वाह वाह—अ० ईश्वरेच्छा में विचार की आवश्यकता नहीं है। प्र० भीम ने वन में धर्मराज युधिष्ठिर से पूछा कि दादा आप हर क्षण यहाँ भी प्रसन्न ही रहते हैं। युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, क्यों न रहूँ, मैं जानता हूँ कि राज़ी हैं हम तो उसमें जिसमें तेरी रज़ा है। नहि जानता हूँ किस दिन इन्सान की क़ज़ा है। यहाँ तो यों भी वाह वाह और यों भी वाह वाह।

रात गई बात गई—अ० रात भर में काम कर लो सवेरा होते ही अप्रतिष्ठा हो जाएगी। प्र० तन्ना ने कहा कि माता जी को रात भर में परनाले का दुर्ग जीत कर न दिया तो रात गई बात गई।

रात नर्मदा उतरी, प्रातः कुआ लखि सिकुरी—अ० कोई बड़ा काम करने के बाद किसी छोटे से काम से डरना। प्र० धनुर्धारी अर्जुन ने विराट देश में युद्ध के लिए जाते हुए भय प्रगट किया तो युधिष्ठिर ने कहा, वृहन्नला! तुम्हारी तो वही दशा है कि रात नर्मदा उतरी, प्रात कुआ लखि सिकुरी।

राधा राधा रटत हैं, आक ढाक अरू कैर। तुलसी ब्रज में आय कै, कहा राम सों बैर—अ० राम भक्तों के लिए ब्रज में सब लोग राधा-कृष्ण, राधा-कृष्ण कहते हैं। राम-राम कोई नहीं कहता। इसलिए तुलसीदास जब ब्रज में गए तब कहा था। प्र० रात्रि के समय जब तुलसीदास विहारी जी के मंदिर में सो रहे थे तो रात को चौकीदार जो जगाता फिरता था वह भी यही कहता था कि श्रीराधे, श्रीराधे। इस पर तुलसीदास जी ने कहा था कि राधा राधा रटत है, आक ढाक अरू कैर। तुलसी ब्रज में आय कै कहा राम सों बैर।

रानी को राजा अरू कानी को काना प्यारा—अ० अपने अपने सम्बंधी सबको भले लगते हैं। प्र० बंधु, बंदरिया अपने बच्चे को कैसी छाती से लगाये फिरती है। ठीक तो है, रानी को राजा अरू कानी को काना प्यारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम कों बिसारैं, तो जीती बाजी हारैं— अ० नास्तिकों के बने काम भी बिगड़ जाते हैं। प्र० श्रीराम को छोड़ने से हिरण्याकश्यप का प्राप्त राज्य भी सप्राण गया। सच है कि राम कों बिसारैं, तो जीती बाजी हार।

राम भरोसे जो रहैं पर्वत पैं लहराय— अ० ईश्वर सब ठौर रक्षा करता है। प्र० बंधु, हम लोगों के बालकों को इतना करने पर भी कुछ न कुछ लगा ही रहता है। पर इन सिरकी बन्दों के बालक जंगल में ही अच्छे भले रहते हैं। सच है राम भरोसे जो रहैं पर्वत पैं लहराय।

राम राम जपना पराया माल अपना— अ० बगुला भगत के लिए ऐसा कहा जाता है। प्र० बंधु, पंडित जी वैसे तो ज्ञानोपदेश करते हैं पर आँख बचाकर जो कुछ हाथ लगता है, उड़ा ले जाते हैं। उनकी तो वही कहावत है कि राम राम जपना पराया माल अपना।

राम राम सब कोइ कहें, दशरथ कहै न कोय। एक बार दशरथ कहै, तो कोटि यज्ञ फल होय— अ० स्पष्ट है। प्र० बंधु, दसों इन्द्रियों का जो स्थान मन उसका नाम कोई नहीं लेता अर्थात् मन के संकल्प और विकल्पों का विचार करैं तो मन की शुद्धि फिर उतनी ही हो जाए जितनी करोड़ यज्ञों के करने से होती है। इसलिए राम राम सब कोइ कहें, दशरथ कहै न कोय। एक बार दशरथ कहै, तो कोटि यज्ञ फल होय।

रीझ बूझ वारी मृदंग को एक टका और खंजर की पावली— अ० जो वस्तु मन चढ़ जाती है उसके दाम भी ज्यादा चढ़ जाते हैं और जो मन से उतर जाती है उसके दाम भी उतर जाते हैं। प्र० बंधु, यह घोड़ी मुझे अच्छी लगी। मैंने इसे हज़ार की जगह पन्द्रह सौ में लिया और घोड़ा अच्छा नहीं लगा, आठ सौ में भी नहीं लिया। सच है कि रीझ बूझ वारी मृदंग को एक टका औ खंजर की पावली।

रुपया आनी जानी चीज़ है— अ० लक्ष्मी चंचल है। प्र० बंधु, जो कल लखपति था आज उसको भोजन भी नहीं। सच है कि रुपया आनी जानी चीज़ है।

रुपया पैसा हाथ पैर का मैल है— अ० जब किसी का रुपया निकल जाए तो संतोष के लिए कहा जाता है। प्र० बंधु, रात-दिन क्यों सोच करते हो। रुपया पैसा हाथ पैर का मैल है, फिर हो जाएगा।

रूखी सूखी खाय के ठंडा पानी पी। देखि पराई चूपरी क्यों ललचावैं जी — अ० संतोष के लिए कहा ज़ाता है। प्र० बंधु, दूसरों की चीज़ों को देखकर तुम्हारा मन क्यों ललचाया करता है। क्या तुम जानते नहीं कि रूखी सूखी खाय के ठंडा पानी पी। देखि पराई चूपरी क्यों ललचावैं जी।

रूठे को मनावे नहीं, फटे को सीवे नहीं तो कैसे काम चले— अ० गृहस्थियों को शांति और हाथ रोक कर करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। प्र० बंधु, तुम्हारे कुर्ते में टांके लगे हैं। सुनने वाले ने उत्तर दिया, हाँ भाई ठीक है, रूठे को मनावे नहीं, फटे को सीवे नहीं तो कैसे काम चले।

रेवड़ी के फेर में आ जाना—अ० कठिनाई में पड़ना। प्र० रमेश आंख खोल कर चलो नहीं तो रेवड़ी के फेर में आ जाओगे।

रोके पूछे हँसके उड़ावे—अ० कपटी मित्र का काम है कि हित प्रगट करके बात को जान ले फिर हँस हँस कर लोगों से कहता फिरे। प्र० बंधु, मुकेश को तुम मित्र मत समझो। वह रोके पूछे हँस के उड़ावे, ऐसा व्यक्ति है।

रोगों की जड़ खांसी, लड़ाई की जड़ हाँसी—अ० खाँसी और हँसी दोनों ही बुरी हैं। प्र० बंधु, रमेश हँसी-हँसी में मुझ से लड़ पड़ा। सच है कि रोगों की जड़ खाँसी, लड़ाई की जड़ हाँसी।

रोज कुआँ खोदना और रोज पानी पीना—अ० नित्य कमाना और नित्य खाना। प्र० बंधु, तुम जितना कमाते हो उतना व्यय कर देते हो। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि ठीक है, रोज़ कुआँ खोदना और रोज पानी पीने पर विश्वास है।

रोज की दवा गिज़ा—अ० दवा खास वक्त तक ही काम देती है। प्र० रमेश, अब दवा छोड़ो। क्या तुम जानते नहीं कि रोज़ की दवा गिज़ा है।

रोज़गार और दुश्मन रोज़ रोज़ नहीं मिलते—अ० लगे रोज़गार को और मिले दुश्मन को कभी न छोड़े। प्र० पृथ्वीराज चौहान ने मौहम्मद ग़ौरी को सात बार छोड़ कर क्या फल पाया। उसी के हाथ बंदी हुआ। इसलिए कहा है कि रोज़गार और दुश्मन रोज़ रोज़ नहीं मिलते।

रोते गये मरों की ख़बर लाये—अ० जब कोई व्यक्ति किसी कार्य के लिए उसकी इच्छा के विरुद्ध भेजा जाये और वह उस कार्य के बिगड़ने की ख़बर दे। प्र० महेश, जाकर घोड़ी ले आओ। महेश ने आकर कहा कि भय्या वह तो भाग गई। इस पर सुरेश बोला, ठीक है, रोते गये मरों की ख़बर लाये।

ल

लंका निश्चर निकर निवासा, यहाँ कहाँ सज्जन कर बासा—अ० जब कोई साधु भावी वश कुठौर रहता हो। प्र० पवनसुत हनुमान ने विभीषण को नीचों में रहते देख कहा था कि लंका निश्चर निकट निवासा, यहाँ कहाँ सज्जन का वासा।

लंगड़े लूले गये बरात, पांति की बिरियाँ बैठी लात—अ० व्यर्थ मनुष्य का कहीं सम्मान नहीं होता है। प्र० ज़मींदार के यहाँ दावत में अपाहिज धनिया को धक्के देकर निकाल दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच है कि लंगड़े लूले गये बरात, पांति की बिरियाँ बैठी लात ।

लकड़ी के बल बंदरिया नाचे—अ० मूर्ख व्यक्ति पिट कर ही काम करता है। प्र० महेश ने सतीश का पान लाने के लिए कहा तो उसने फट से मना कर दिया । मगर जब मुंह पर दो तमाचे पड़े तो ले आया । सच है कि लकड़ी के बल बन्दरिया नाचे ।

लग गया तो तीर नहीं तुक्का—अ० काम शुरू करो, हो गया तो हो गया, नहीं जाने दो । प्र० सतीश बी० ए० की परीक्षा में बैठा है, पास हो गया तो हो गया, नहीं तो जाने दो । ठीक है कि लग गया तो तीर नहीं तुक्का ।

लगा सो भगा—अ० जो काम शुरू हो जाता है । वह खत्म भी हो जाता है । प्र० भय्या, सावन मास आज से शुरू हुआ है । अभी तो तीस दिन शेष हैं । सो तो ठीक, पर लगा सो भगा ।

लच्छमी सों बैर ना तो दरिद्र सों बैर क्यों—अ० धन तो मिले नहीं तो दरिद्र से बिगाड़ क्यों किया जाए । प्र० बंधु, बड़े व्यक्तियों से तो मेल नहीं पर छोटों से बैर क्यों बांधा जाए । हम तो यही जानते हैं कि लच्छमी सों बैर ना तो दरिद्र सों बैर क्यों ।

लघुता से प्रभुता मिलै—अ० व्यक्ति विनम्रता से ही बड़ा होता है। प्र० श्रीराम अपनी विनम्रता से जगत् विख्यात हो गये । सच है कि लघुता से प्रभुता मिले ।

लश्कर में ऊँट बदनाम—अ० अनोखी वस्तु के लिए ऐसा कहा जाता है । प्र० बंधु, सुनो जिसने कुछ न देखा हो वह क्या जाने, देखो लश्कर में ऊँट बदनाम ।

लाख का घर ख़ाक कर दिया—अ० बना बनाया घर विगाड़ दिया । प्र० मुकेश ने कुसंगति में पड़ कर अपना लाख का घर ख़ाक कर दिया ।

लाख जाय पर साख़ न जाय—अ० पैसा चाहे बर्बाद हो जाए पर सम्मान न जाए । प्र० यह वक्त रुपये का मुंह देखने का नहीं है । देखो लाख जाय पर साख़ न जाय ।

लाखन को धन पायकै, मरै न कफ़न पाय—अ० पापी को धनी होने पर भी क़फन नहीं मिलता है । प्र० गिरधर इतना धनवान था पर मरने पर कफ़न भी नसीब नहीं हुआ । सच है कि लाखन को धन पायकै, मरै न कफ़न पाय ।

लाग लगी तब लाज कहाँ—अ० जब एक को एक नीचा दिखाने का प्रयास करे । प्र० बंधु, मेरी तो अब तुम्हारे से लाग लगी है । देखो तुम हारो या मैं, अब लज्जा कहाँ । क्या तुम जानते नहीं कि लाग लगी तो लाज कहाँ ।

लाचारी पर्वत से भारी—अ० दीनता सही नहीं जाती है । प्र० दीनता के कारण पाण्डवों को भीख माँगनी पड़ी है । सच है कि लाचारी पर्वत से भारी होती है ।

लाद दे लदा दे और लादन वाला साथ दे—अ० ऐसा अनुचित माँग पर कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है । प्र० बंधु, अनाज तो दिया पर घर तक पहुँचवा दो । वाह-वाह, यह तो वही कहावत हुई कि लाद दे लदा दे और लादन वाला साथ दे ।

लाला के लाला और ईंधन के ईंधन—अ० झाऊमल । प्र० कल लाला जी मंत्री महोदय से मिलने गये । उन्होंने पूछा कि आपका नाम क्या है ? उत्तर मिला कि झाऊमल । सुनकर अन्य कह उठे, खूब, लाला के लाला और ईंधन के ईंधन ।

लिखे ईसा पढ़े मूसा—अ० जो लिखे वही पढ़े, तब कहा जाता है । प्र० बंधु, श्याम से चिट्ठी मत लिखाना । उसकी तो वही कहावत है कि लिखे ईसा पढ़े मूसा ।

लीक लीक गाड़ी चलै, लीकहि चलै कपूत । ये तीनों उल्टे चलें, शायर सिंह सपूत—अ० उन्नतिपरायण लोग नए-नए यत्न निकाला करते हैं । प्र० कोलम्बस ने पृथ्वी को गोल सिद्ध करके दिखा ही दिया । सच है कि लीक लीक गाड़ी चलै, लीकहि चलै कपूत । ये तीनों उल्टे चलें, शायर सिंह सपूत ।

लीजै ससा अहेर कों केहरि को सामान—अ० छोटे कार्य को सिद्ध करने के लिए भी बड़े सामान की आवश्यकता होती है । प्र० बंधु, इतना सामान इस यात्रा के लिए काफी नहीं रहेगा । क्या तुम जानते नहीं कि लीजै ससा अहेर कों केहरि को सामान ।

लीपा पोती करना—अ० कार्य ठीक प्रकार से न करना । प्र० श्याम तुम पास कैसे हो सकते थे, तुम तो पर्चे में वैसे ही लीपा पोती करके चले गये थे ।

लीपू ओटा मरे मोटा—अ० अचारजों की औरतें ऐसा कहा करती हैं । प्र० बंधु, इन अचारजों की भावना तो लोगों की मौत में ही लगी रहती होगी । सुनने वाले ने उत्तर दिया कि वे तो कहते ही यह हैं कि लीपूँ ओटा मरे मोटा ।

लुगाई रहे तो आप से, नहीं जाय सगे बाप से—औरत आप ही शीलवान रह सकती है, नहीं तो उसे कुलटा होने से कोई नहीं रोक सकता है । प्र० बंधु, इतने लोगों में भी कमला की क्या स्थिति है । सच है कि लुगाई रहे तो आपसे, नहीं जाये सगे बाप से ।

लुटिया डूबी रे हरदास घोड़ा दाना खाय न घास—अ० किसी काम के बिगड़ने के लक्षण पहले ही दिखलाई दे जाते हैं । प्र० बंधु, गंगा न पढ़ता है न कॉलेज जाता है । उसकी तो वही कहावत है कि लुटिया डूबी रे हरदास, घोड़ा दाना खाय न घास ।

ले के दिया कमा के खाया, फूटे भाग जगत में आया—अ० ऐसा हरामखोर लोग कहा करते हैं । प्र० बंधु, कोई धंधा करो, कैसे दिन काटोगे । सुनने वाले ने उत्तर दिया कि वाह-वाह, तुम जानते नहीं कि ले के दिया कमा के खाया, फूटे भाग जगत में आया ।

लेता मरे न देता—अ० जो व्यक्ति कर्ज लेकर न चुकाये उसका काम बंद हो जाता है किन्तु जो कर्ज उतार दे उसका काम चलता रहता है । प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधु, हमारा तो इस बात में विश्वास है कि लेता मरे न देता, सो अपने व्यापार में कभी परेशानी नहीं आई।

लेते और कुछ, देते और कुछ—अ० कर्ज लेते और देते समय व्यक्ति की दो दशाएँ होती हैं। प्र० श्याम देखा, मातादीन रुपया लेते समय क्या था और अब कैसी आँखें दिखाता है। सच है कि लेते और कुछ, देते और कुछ।

लेना देना कुछ नहीं, लड़ने को मजबूत—अ० जो व्यक्ति भिक्षुकों को धमकावे। प्र० जब रहमान ने एक भिक्षुक को भगाने के लिए डंडा उठाया तो उसने कहा, लेना देना कुछ नहीं, लड़ने को मजबूत।

लोभ घटावै कानि—अ० लालच बड़ी बुरी बला है। प्र० लालची दुर्योधन शीघ्र ही मारा गया। सच है कि लोभ घटावै कानि।

लोहू लगाकर शहीदों में मिलना—अ० झूठी बनावट बनाना। प्र० बंधु, मारा नहीं जाता चूहा भी, पर लोहू लगाकर शहीदों में मिलते हो।

लोहे की मंडी में मार ही मार—अ० नीचों के साथ उपद्रव ही होता है। प्र० महेश, तुम जहाँ जाते हो वहाँ झगड़ा ही कराते हो। सच है कि लोहे की मंडी में मार ही मार।

व

वक्त की यारी, घोड़े की सवारी—अ० जब समय ठीक आता है तो मिट्टी भी सोना बन जाती है। प्र० बन्धु, जब धर्मराज युधिष्ठिर के अच्छे दिन आये तो सात अक्षौहिणी से ग्यारह अक्षौहिणी जीत ली। सच है कि वक्त की यारी, घोड़े की सवारी।

वर मरै पटिया परै—अ० पति के निधन पर भी जो स्त्री शृंगार करे। प्र० कमला तुमने भी देखा कि शैव्या वैधव्य जीवन में भी शृंगार करती है। सच है कि वर मरै पटिया परै।

वसीले बिना रोजगार नहीं मिलता—अ० बिना कुछ करे कुछ नहीं मिलता है। प्र० बंधु, मेरे लिए कुछ करो, वसीले बिना रोज़गार नहीं मिलता है।

वह कमली गई जिस में तिल बँधते थे—अ० वे व्यक्ति परलोकगामी हुए जो ग़रीबों की मदद करते थे। प्र० राजा उग्रसैन के मरने पर कंस की सभा में एक भिक्षुक आया तो महामात्य ने कहा कि महाराज, वह कमली गई जिसमें तिल बँधते थे।

वह कीमियागर कैसा, जो माँगे पैसा—अ० वह कैसा विद्वान् जो दूसरों के अधीन हो। प्र० बंधु, द्रोण ने द्रुपद से आधा राज्य छीन लिया था। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि अरे बंधु, वह कीमियागर कैसा, जो माँगे पैसा।

वह कौन-सी किशमिस है जिसमें तिनका नहीं—अ० वह कौन कुल या व्यक्ति ऐसा है जिसमें दोष नहीं होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र० बंधु, दूसरों की बुराई मत करो, वह कौन-सी किशमिस है जिसमें तिनका नहीं।

वह कौन-सी बगरी, जो हम से चपरी — अ० ऐसा कौन-सा घर है जिसे हम नहीं जानते। प्र० बंधु, बताओ तो सही किसके घर जाना है। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि वह कौन-सी बगरी है जो हमसे चपरी।

वह तो अपने बाप का भी नहीं—अ० जो किसी से मिलजुल कर नहीं रहे। प्र० अरे श्याम, मुकेश से अलग रहना। वह तो अपने बाप का भी नहीं।

वह दिन गए जब गाय बछड़े देती थी—अ० जब अच्छा वक्त निकल जाए और बुरे दिन आ जाएँ। प्र० जब सम्राट अकबर ने रहीम को निकाल सब कुछ छीन लिया तो उन्होंने अपने मित्रों से कहा कि यारो यारी छोड़ दो ते रहीम अब नाहिं। सच है कि वह दिन गए जब गाय बछड़े देती थी।

वहम की दवा लुकमान (लोकमान्य) के भी पास नहीं—अ० किसी के शक को कोई नहीं मिटा सकता है। प्र० बंधु, ये परीक्षापयोगी प्रश्न हैं, इन्हें कर लो तो पास हो जाओगे, बाकी वहम की दवा लुकमान के भी पास नहीं।

वह मर गया हमें मरना है—अ० जब किसी की सच्चाई की बड़ाई की जाये। प्र० रायबहादुर गनपतराय बड़े ही दयालु व्यक्ति थे, वह मर गए हमें मरना है। उनके घर से कोई खाली हाथ नहीं लौटता था।

वह मानस तो नित सुख पावै, सीख बड़ों की में चित्त लावै—अ० बड़ों की शिक्षानुसार चलने वाला हमेशा खुश रहता है। प्र० सीता जी ने सती अनसूया की शिक्षानुसार चल कर अखण्ड यश प्राप्त किया। सच है कि वह मानस तो नित सुख पावै, सीख बड़ों की में चित्त लावै।

वह राजा मरता भला जाकै न्याय न होय—अ० अत्याचारी राजा मरा ही भला। प्र० बंधु, कंस के मरने पर प्रजा ने क्यों सुख माना, यों कि वह राजा मरता भला जाकै न्याय न होय।

वह शैतान से ज्यादा प्रसिद्ध है—अ० जिसको सब जानते हों। प्र० महेश ने रतिमोहन से कहा कि बंधु, सुरेश का पता तो बताओ। रतिमोहन ने उत्तर दिया कि बंधु, वह तो शैतान से ज्यादा प्रसिद्ध है।

वही ढाक के तीन पात, चौथा हो न पाँचवें की आस—अ० प्रयास करने पर भी जब कोई उतने का उतना ही रहे। प्र० कहो बंधु, रमाकांत ने कुछ किया। अरे बंधु, उसकी तो वही कहावत है कि वही ढाक के तीन पात, चौथा हो न पाँचवे की आस।

वही शैतान जो सिर चढ़ बोले—अ० सच्चाई कभी नहीं छिपती। प्र० खूब रही, जिरह में आकर तो वेदी ने सब उगल दिया। सच है कि वही शैतान जो सिर चढ़ बोले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाकौ अच्छौ मति कहै, जो तेरे ढिग आय। करै बुराई और की, अपने आप बढ़ाय—अ० ऐसे व्यक्ति अच्छे नहीं होते जो एक की दूसरे के सामने बुराई करते हैं और अपनी प्रशंसा करते हैं। प्र० बंधु, सत्य, तुम भले व्यक्ति नहीं हो क्योंकि तुम मेरे सामने बुराई और अपनी भलाई करते हो। जैसे कहा भी है कि वाकौ अच्छौ मति कहै, जो तेरे ढिग आय। करै बुराई और की, अपने आप बढ़ाय।

वा नारी संग बैठ न भाई, जाको लोग कहैं हरजाई—अ० कुलटा स्त्रियों की संगति बुरी है। प्र० अरे, रति-मोहन उस छिनाल मुनिया के पास बैठ कर ख़त्म हो गया। सच है कि वा नारी संग बैठ न भाई, जाको लोग कहैं हरजाई।

वाह नारी तेरी चतुराई, चून बेच कर गाजर खाई—अ० ऐसा मूर्ख व्यक्ति के लिए कहा जाता है। प्र० हरिया के बापू ने उससे थाली लाने को कहा। हरिया फाली उठा लाया। उसने तो वही कहावत चरितार्थ कर दी कि वाह नारी तेरी चतुराई, चून बेच कर गाजर खाई।

विद्या कंठ, पैसा गंठ—अ० पास का पैसा काम आता है। प्र० बंधु, अमीरी को कौन जाने? सच है कि विद्या कंठ, पैसा गंठ।

विद्या वह ही जगत में, दीने दूनों होय। राजा चोर न हरि सकै, बंधु बाँट नहिं कोय—अ० विद्या की महिमा अतुल है। प्र० व्यास ने कहा, हे गांगेय, देखो विद्या बल से द्रोण ने द्रुपद का आधा राज्य बाँट लिया। सच है कि विद्या वह ही जगत में, दीने दूनों होय। राजा चोर न हरि सकै, बंधु बाँट नहिं कोय।

वृन्दावन सौ बन नहीं, नन्द गाम सो गाँऊँ, वंशीवट सौ वट नहीं, बृज तजि कहूँ न जाउँ—अ० ऐसा ब्रज-वासी उस समय कहा करते हैं, जब कोई उनसे ब्रज छोड़ने के लिए कहता है। प्र० तनसुख ने मोहन से कहा, बंधु, तुम यहाँ से बम्बई चले जाओ। मोहन ने उत्तर दिया, क्यों, जानते नहीं वृन्दावन सौ बन नहीं, नन्द गाम सो गाँउँ, वंशीवट सो वट नहीं, बृज तजि कहूँ न जाउं।

श

शंका डायन मनसा भूत—अ० शंका खाने वाली है और मन सताने वाला है। प्र० बंधु, धनुर्धारी अर्जुन निःशंक होकर महाभारत में लड़ा, इस कारण सबको धराशायी कर दिया। सच है कि शंका डायन मनसा भूत।

शक्ल चुड़ेलों की मिजाज परियों का—अ० कुरूप होकर सरूपों का सा नख़रा दिखाना। प्र० बंधु, कल्लू वैसे तो काले कौए को भी लज्जित करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, पर चलता अधर ही है। सच है कि शक्ल चुड़ेलों की मिजाज परियों का।

शतरंज नहीं शत रंज—अ० शतरंज खेल में सैंकड़ों रंज होते हैं। प्र० अरे छोटे नवाब, शतरंज को छोड़ो। यह तो सुना होगा कि शतरंज नहीं शत रंज है।

शरह में शरम क्या—अ० व्यापार में शर्म नहीं करनी चाहिए। प्र० बंधु, शरमाते क्यों हो, शरह में शरम क्या।

शहद की छुरी—अ० कपटी व्यक्ति। प्र० अरे तुलसी, अहमद से डरना, वह शहद की छुरी है।

शहद, सुहागा, घी मरी धातु का जी—अ० इन से धातु पुष्ट हो जाती है। प्र० बंधु, शहद, सुहागा और घी का सेवन करो, स्वस्थ हो जाओगे। तुम जानते हो कि शहद, सुहागा, घी मरी धातु का जी।

शाखा मृग की यह प्रभुताई, शाखा ते शाखा पै जाई—अ० जो थोड़ा अथवा छोटा कार्य कर सके। प्र० पवनसुत हनुमान जी ने श्रीराम से कहा, महाराज, हम क्या कर सकते हैं। आप जानते हैं कि शाखा मृग की यह प्रभुताई, शाखा ते शाखा पै जाई।

शादी ग़मी सब के होती है—अ० दुःख-सुख सबके साथ लगे रहते हैं। प्र० आज बर्तन मांजने वाली नहीं आई। उसकी लड़की की शादी है। हाँ जी, शादी ग़मी सबके साथ होती है।

शादी है गुड़ियों का खेल नहीं है—अ० शादी के समय जब सामान इकट्ठा किया जाता है। प्र० बंधु, इतना झंझट क्यों कर रहे हो। सुनने वाले ने उत्तर दिया कि तुम क्या जानो, यह शादी है गुड़ियों का खेल नहीं है।

शाम के मरे को सुबह तक कैसे रोवैं—अ० जितनी देर की ताकत होती है उतनी ही देर कार्य चल सकता है। प्र० बंधु, तुम रात भर जागने के लिए कहते हो। भला शाम के मरे को सुबह तक कैसे रोवैं।

शिकार के वक्त कुतिया हगासी—अ० काम के वक्त जी चुराना। प्र० जब थोड़ा-सा काम आकर पड़ा तो तुम घर जाने लगे। सच है कि शिकार के वक्त कुतिया हगासी।

शिकारी शिकार खेलें मूढ़ पीछे-पीछे फिरें—अ० कार्य करने वाले कार्य करें और बेवकूफ उनके पीछे-पीछे फिरें। प्र० ललित तो घोड़ा खरीदने गया था पर तुम क्यों गए थे? सच है कि शिकारी शिकार खेलें मूढ़ पीछे-पीछे फिरें।

शिवि दधीचि हरिचन्द कहानी, एक एक सब कहहिं बखानी—अ० ये तीनों बड़े धर्मात्मा हुए हैं। प्र० बंधु, जानते हो कि महाराज दशरथ के लिए अयोध्यावासियों ने क्या कहा था? सुनने वाले ने कहा कि नहीं। तो सुनो, उन्होंने कहा था कि शिवि दधीचि हरिचन्द कहानी, एक एक सब कहहिं बखानी।

शुक सारी राखैं सबै, काक न [illegible] **कोय**—अ० मधुर बोलने वाले से सब स्नेह करते हैं। प्र० बंधु, तु[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोर वचन छोड़ो। क्या तुम जानते नहीं कि शुक सारी राखैं सबैं, काक न राखै कोय।

शूद्र करहिं जप तप व्रत नाना—अ० कलियुग में नीच तो उत्तम कर्म करेंगे। प्र० वंधु, देखा, चेता चमार ने कैसा लम्बा टीका निकाला है। सच है कि शूद्र करहिं जप तप व्रत नाना।

शेर एक ही भला—अ० एक ही सपूत कुल का नाम रोशन कर देता है। प्र० बंधु, एक ही चन्द्र गगन को प्रकाशित कर देता है। सच है कि शेर एक ही भला।

शेर का झूठा गीदड़ खाय—अ० नीच व्यक्ति ही दूसरों के अधीन रहा करते हैं। प्र० बंधु, तुम सत्येन्द्र की कमाई में से जो बचता है उसी पर जीवित हो, क्या तुम जानते नहीं कि शेर का झूठा गीदड़ खाय।

शेर के शेर हीं होता है—अ० बहादुर का पुत्र भी बहादुर ही होता है। प्र० चक्रव्यूह के युद्ध में अभिमन्यु का पराक्रम देख कर द्रोणाचार्य ने कहा था कि शेर के शेर ही होता है।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं—अ० प्रतापी राजा के राज्य में बड़े छोटों को नहीं सताते हैं। प्र० महाराज विक्रमादित्य के राज्य में शेर बकरी एक घाट पानी पीते थे।

शेरों के मुंह किसने धोया है—अ० वीर पुरुष स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते, वे तो रक्ताप्लावित ही रहते हैं। प्र० अभिमन्यु जब लक्ष्मण को मार कर उन्हीं रक्त रंजित वस्त्रों में खाने लगा तो द्रौपदी ने कहा था कि शेरों का मुँह किसने धोया है।

शैतान की आंत—अ० किसी लम्बी चीज़ को देखकर कहा जाता है। प्र० अरे बंधु, यह लाठी है अथवा शैतान की आँत।

शैतान के भी कान काटे—अ० इसका प्रयोग धूर्त व्यक्ति के लिए किया जाता है। प्र० बंधु, शकुनि ने तो शैतान के भी कान काट दिये थे।

शैतान ने भी बच्चों से हार मानी—अ० बच्चे वड़े उपद्रवी होते हैं। प्र० बच्चों के अनुचित कामों को देखकर ललित ने कहा था कि शैतान ने भी बच्चों से हार मानी है।

शैतान सिर पर चढ़ रहा है—अ० अधिक क्रोध की स्थिति को कहा जाता है। प्र० श्याम से बात मत करना, उसके तो शैतान सिर पर चढ़ रहा है।

शैतान से ज्यादा मशहूर—अ० जिसे सब जानते हों। प्र० अरे, उसे कौन नहीं जानता? वह तो यहाँ शैतान से ज्यादा मशहूर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स

सइयाँ गये परदेश अब डर काहे कौ—अ० जब मालिक बाहर चला जाये तो सेवक निडर हो जाते हैं। प्र० कहो बंधु, आजकल तो मौज की छन रही है। क्यों नहीं, सइयाँ गये परदेश अब डर काहे कौ।

सइयाँ भये कोतवाल अब डर काहे कौ—अ० जब अपना सम्बन्धी बड़ी पदवी पा जाये। प्र० बंधु, अब तो आपके पिताजी मंत्री हो गए हैं। बस, सइयाँ भये कोतवाल अब डर काहे कौ।

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा—अ० मरने पर सब यहीं रह जाता है। प्र० बंधु, सिकन्दर साथ क्या ले गया! सच है कि सब ठाठ रड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा।

समय का राजा समय का दास—अ० समय प्रबल है। प्र० समय पर गदाधारी भीम को भी रसोई बनानी पड़ी। सच है कि समय सब कुछ करा लेता है।

समय का प्रभाव—अ० जब किसी को अचानक ही हानि पहुँचे। प्र० बंधु, इस समय तुम्हारा चुप रहना ही अच्छा है, यह समय का प्रभाव है।

समय निकल जाता है बात रह जाती है—अ० जब कोई व्यक्ति ऐसा काम करे कि उससे दूसरे को नुकसान पहुँचे। प्र० रानी कैकेई मर गई पर बात चली आती है। सच है कि समय निकल जाता है पर बात रह जाती है।

समय सब कर लेता है—अ० सुसमय में काम आप ही सिद्ध हो जाते हैं। प्र० सुदिन आने पर रावण का भाई विभीषण श्रीराम से आ मिला। सच है कि समय सब कर लेता है।

सवेरे का भूला साँझ को घर आवै तो भूला न जानो—अ० जब कोई जल्दी ही सुधर जाये। प्र० बद्रीप्रसाद जी, आपका बड़ा लड़का जल्दी ही सम्भल गया। सच है कि सवेरे का भूला साँझ को घर आवै तो भूला न जानो।

सस्ता रोवे बार बार, महँगा रोवे एक बार—अ० थोड़े मूल्य की वस्तु अच्छी नहीं होती। प्र० एक एक रुपये के कई पेन ला चुका हूं, एक ने भी काम नहीं दिया। सच है कि सस्ता रोवे बार बार, महँगा रोवे एक बार।

साँप की मावसी होना—अ० लड़ाई लगा कर चुप हो जाना। प्र० बंधु, रमेश का विश्वास मत करना। वह तो साँप की मावसी है। काटे और बिल में चली जाए।

साँप छछूंदर की गति—अ० जब किसी वस्तु को न ले सकें, न छोड़ सकें। प्र० श्रीराम के वन-गमन के समय महारानी कौशल्या की साँप छछूंदर की गति हो गई।

साँप बिल में सीधा चलता है—अ० चतुर लोग घर में झगड़ा नहीं उठाते। प्र० बंधु, परिवार में राड़ उठानी ठीक नहीं। तुम तो जानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हो कि साँप भी बिल में सीधा चलता है ।

साँप मरे न लाठी टूटे—अ० काम भी बन जाए और आपस में बिगाड़ भी न हो । प्र० श्रीकृष्ण पाण्डव-कौरवों में संधि कराकर ऐसा करना चाहते थे कि साँप मरे न लाठी टूटे ।

सांस सांस पै राम कहि, वृथा सांस मति खोय । न जानूं या सांस कौ, आवन होय न होय—अ० नानकदेव क्षण-भंगुर हैं। प्र० सुयोधन, परस्पर कलह में मत पड़ो, ईश स्तुति में लगो । देखो सांस सांस पै राम कहि, वृथा सांस मति खोय । ना जानूं या सांस कौ, आवन होय न होय ।

सांसा सुध बुध सभी घटावै—अ० चिन्ता में बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । प्र० बंधु, अधिक चिन्ता मत करो । देखो, सांसा सुध बुध सभी घटावै ।

साजन साजन मिल गये, झूठे भये लबार—अ० बंधु-बंधु मिल जाते हैं और फूट डालने वाले लज्जित होते हैं । प्र० बंधु, तुम दोनों भाई तो फिर एक हो गए पर विष्णु लड़ाई लगाकर कैसा लज्जित है । सच है कि साजन साजन मिल गये, झूठे भये लबार ।

साझे के चने दुखती आँखों में भी चबाने पड़ते हैं—अ० दुःख होने पर भी अपना हिस्सा नहीं छोड़ा जाता है । प्र० महेन्द्र शर्बत का गिलास बना कर लाया और अपने साथी सोमेश से बोला, लो बंधु, थोड़ा तुम भी पी लो । सोमेश ने कहा, अच्छा बंधु, लाओ, जुकाम तो है ही पर साझे के चने दुखती आँखों में भी चबाने पड़ते हैं ।

सात पूत का बाप भूखा मरता है—अ० एक ही को अधिष्ठाता बनाना ठीक रहता है । प्र० भय्या, हवेली में पाँच-पाँच नौकर होने पर भी मेरी कोई चिलम नहीं भरता है । प्र० ठीक है कि सात पूत का बाप भूखा मरता है ।

साधुओं को स्वाद क्या गुड़ नहीं तो बताशे ही सही—अ० यह ढोंगी साधुओं के लिए कहा जाता है । प्र० बंधु, दो मीटर खद्दर हो तो कुर्ता बन जाए । सुनने वाले ने उत्तर दिया कि खद्दर तो नहीं मलमल है । अच्छा तो वही सही, साधुओं को स्वाद क्या गुड़ नहीं तो बताशे ही सही ।

सारी उमर भाड़ ही झोंका—अ० जन्म-भर मेहनत करने पर भी पैसा नहीं जोड़ा है । प्र० बंधु, कुछ बुढ़ापे के लिए भी जोड़ तोड़ कर रखा है ? सुनने वाले ने कहा, नहीं, मैंने तो सारी उमर भाड़ ही झोंका है ।

सारी देगची में एक ही चावल देखा जाता है—अ० एक ही बात से सब भेद खुल जाता है । बंधु, मैं तो एक ही बात से सारा मामला समझ गया । सच है कि सारी देगची में एक ही चावल देखा जाता है ।

सारी रामायण पढ़ गये पर यह न जाना कि राम राक्षस था या रावण—अ० जब कोई किसी बात को न समझे । प्र० रमेश ! गणित के सारे अभ्यास प्रश्न कर गया पर यह न जाना कि व्याज क्या है । सच है कि सारी रामायण पढ़ गये पर यह न जाना कि राम राक्षस था या रावण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझे — अ० जब किसी को पैसा मिल गया हो और वह सभी को अपने जैसा समझने लग जाए। प्र० बंधु, क्या तुम्हारे पास सौ दो सौ रुपये भी नही हैं। हां भाई, सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझे।

सावन हरे न भादों सूखे—अ० हमेशा एक समान रहना। प्र० बंधु, तुम क्यों विचार करते हो। मुझे देखो ना कि सावन हरे न भादों सूखे।

सिखड़े सरदारों के पैर बड़े गँवारों के— अ० बड़े व्यक्ति विचारवान होते हैं और मूर्ख मारे मारे फिरते हैं। प्र० देखा बंधु, हरदयाल ने कैसी बात निकाली। सच है कि सिर बड़े सरदारों के पैर बड़े गँवारों के।

सिर मुंडाते ही ओले पड़े—अ० काम के आरम्भ में ही बाधा पड़ना। प्र० मैं जैसे ही घर से निकलने लगा वैसे ही छींक मार दी किसी ने। ओहो, सिर मुँडाते ही ओले पड़े।

सिंह पराये देश में नित मारै नित खाय—अ० वीर पुरुष सब स्थानों पर अपना प्रताप जमा लेता है। प्र० बंधु, श्याम जहाँ भी जाता है वहीं अपनी रोजी रोटी कमा लेता है। क्यों नहीं, सिंह पराये देश में नित मारै नित खाय।

सींग कटा के बछड़ों में मिलना—अ० वृद्ध व्यक्ति बच्चों में बैठे। प्र० अरे, तुमने देखा पिचासी वर्ष का चेता मूछें कटा कर जवान बनता है। उसकी वही कहावत है कि सींग कटाके बछड़ों में मिलना।

सीतला का खाजा—अ० यह छोटे लड़कों के लिए कहा जाता है। प्र० अरे भय्या, इस सीतला के खाजे को कैसे पढ़ाओगे?

सीधी उँगली घी नहीं निकलता—अ० बिना दाब रस नहीं निकलता है। प्र० पहले तो तुम माने नहीं पर जा[ब] लाठी देखी हाथ में तो सीधे हो गए। सच है कि सीधी उंगली घी न[हीं] निकलता है।

सीधे पर सब की तान—अ० सीधे व्यक्[ति] को सब धमका लेते हैं। प्र० बंधु भोले भाले राम को सब पीट ले[ते] हैं। सच है कि सीधे पर सब क[ी] तान।

सुख में नींद दुःख में राम—अ० सुख[की] अवस्था में भगवान को कोई या[द] नहीं करता है दुःख में सब याद कर[ते] हैं। प्र० दुःख में सुमिरन सब क[रे] सुख में करे न कोय। जो सुख [में] सुमिरन करैं, तो दुःख काहे क[ो] होय।

सुखी मीन जहँ नीर अगाधा, जिमि हरि[ि] शरन न एकौ बाधा—अ० स्पष्ट है[।] प्र० बंधु, ईश भजन में एक भी दुः[ख] नहीं होता है यथा सुखी मीन ज[हँ] नीर अगाधा, जिमि हरिशरन [न] एकौ बाधा।

सुनहु पवन सुत रहन हमारी, जिमि दस[]नन में जीभ विचारी—अ० दुष्टों [के] बीच रहना ऐसा ही है जैसा जिह्[वा] का दाँतों में रहना। प्र० पवन सु[त] हनुमान ने विभीषण को देखक[र] पूछा था कि यहाँ कैसे रहते हो[?] तब विभीषण ने उत्तर दिया था [कि] सुनहु पवन सुत रहन हमारी, जि[मि] दसनन में जीभ विचारी।

सुनार की खटाई और दर्जी की तनी— अ० इस बहाने से ये दोनों ग्राहक[ों] को टाला करते हैं। प्र० बंधु, कंग[न] आ गये। उत्तर मिला कि नह[ीं] अभी तो खटाई में पड़े हैं। हाँ भाई[,] सुनार की खटाई और दर्जी की तनी तो प्रसिद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नै सबकी करै मन की—अ० सब की बातों का निचोड़ लेकर इच्छानुसार करना चाहिए। प्र० बंधु, अपनी आदत तो यह है कि सुनै सब की करै मन की।

वह होती है शाम होती है, उम्र यों ही तमाम होती है—अ० रात दिन के हेर फेर में ही जीवन कट जाता है। प्र० अरे भय्या, सोच कर देखो तो क्या हो रहा है। देखो, सुबह होती है शाम होती है, उम्र यों ही तमाम होती है।

खत धान पड़ा जनु पानी—अ० आवश्यकता में किसी वस्तु का मिल जाना। प्र० आपको देख ऐसी स्थिति हो गई कि सूखत धान पड़ा जनु पानी।

र्य को दीपक दिखाना—अ० विद्वान् को सीख देना। प्र० स्वामी जी को उपदेश करना तो सूर्य को दीपक दिखाना है।

र का सवा सेर अ० एक से एक अधिक बली। प्र० अरे, क्यों उछल रहे हो, सेर को सवा सेर धरा है।

ोने की चिड़िया हाथ लगी—अ० जब धनवान कपटी के हाथ आ जाये। प्र० छज्जू के साथ लाला के लड़के को देख घनश्याम ने कहा, अच्छी सोने की चिड़िया हाथ लगी है।

ोने की चिड़िया हाथ से निकल गई—अ० जब धनवान कपटी के हाथ से निकल जाए। प्र० भय्या, हमारे हाथ से सोने की चिड़िया निकल गई।

ोलह परी का नाच देखना—अ० जुआ खेलना। प्र० कहो बंधु, सोलह परी के नाच में क्या दिया।

ौ अजानों से एक सुजान भला—अ० सौ मूर्खों में एक विद्वान् भला। प्र० एक चन्द्रमा सारे अंधकार को दूर कर देता है पर नक्षत्र लाखों भी कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए सौ अजानों से एक सुजान भला।

सौतन चून की भी बुरी—अ० स्पष्ट है। प्र० कांटा बुरा करील का और बदरौठी घाम। सौति बुरी है चून की, और साझे को गाम।

सौ कोसा एक मसोसा—अ० एक चुप सौ को हराती है। प्र० बंधु, तुम इन लोगों की बातों पर ध्यान मत दो। क्या तुम जानते नहीं कि सौ कोसा एक मसोसा।

सौ गज़ नापूं फारूँ न एक—अ० बहुत कहना थोड़ा करना। प्र० बंधु, तुम्हारी बातों से सिद्ध होता है कि तुम्हारी वही दशा है कि सौ गज़ नापूँ फारूँ न एक।

सौ जूते और हुक्के का पानी—अ० जो कोई अपनी सच्चाई दिखाये। प्र० देखो भय्या, मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि अगर तुम्हारा लड़का पास न हुआ तो मेरे सौ जूते और हुक्के का पानी।

सौ नकटों में एक नाक वाला नक्कू—अ० सैंकड़ों बुरे व्यक्ति अपने आपको भला मानते हैं और एक भला इन लोगों में बुरा हो जाता है। प्र० बंधु, स्वयं को देखो, मुझे क्यों कहते हो, मेरी वही कहावत है कि सौ नकटों में एक नाक वाला नक्कू।

सौ मारे एक न गिने—अ० ऐसा बद आदमी के लिए कहा जाता है। प्र० बंधु, तुम ऐसे हो कि तुम्हारे सौ मारे एक न गिने।

स्वांग तो भरा है जो खेला जायेगा—अ० काम तो शुरू किया है जो पूरा हो जाएगा। प्र० बंधु, शादी की तैयारी कर लो। हाँ भाई, स्वांग तो भरा है जो खेला जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह

हर को भजै तो हर का होय, जात पाँत पूछैं नहिं कोय—अ० भगवान को अपना भक्त प्यारा है जाति नहीं। प्र० श्रीराम ने शबरी के बेर बड़े प्रेम से खाये थे। सच है कि हर को भजै सो हर का होय, जात पाँत पूछैं नहिं कोय।

हर नाम हीरा घुन लगै न कीरा—अ० प्रभु का नाम अटल है। प्र० बंधु, हर का नाम लो और सब छोड़ो, क्योंकि हर नाम हीरा घुन लगै न कीरा।

हर बिन हार गये योधा—अ० ईश्वर भजन बिना वीरों ने भी हार मानी। प्र० बंधु, नास्तिक कंस मारा ही गया। सच है कि हर बिन हार गये योधा।

हर भज और सब तज—अ० प्रभु को भजाकर और सब छोड़। प्र० अक्रूर ने कहा, ऊधो, हर भज और सब तज।

हंडिया में एक ही चावल देखा जाता है—अ० एक ही बात से इंसान का भेद खुल जाता है। प्र० बंधु, तुम्हारी एक ही बात से तुम्हारे मन का सारा भेद खुल गया। सच है कि हंडिया में एक ही चावल देखा जाता है।

हंस समाज गये कहो, बक के कौन हवाल—अ० विद्वान् मण्डली में मूर्ख की प्रतिष्ठा नहीं होती। प्र० साहित्य सम्मेलन की बैठक में घनश्याम की बात भी नहीं पूछी। सच है कि हंस समाज गये कहो, बक के कौन हवाल।

हंसा यहाँ रहिबौ नहीं, सरवर गयौ सुखाय—अ० जब किसी स्थान पर प्रतिष्ठित व्यक्ति की अप्रतिष्ठा हो तब ऐसा कहा जाता है। प्र० जब गिरिधर की सवाईं जयसिंह की सभा में अप्रतिष्ठा होने लगी तो उ[illegible] कहा कि हंसा यहाँ रहिबौ न[illegible] सरवर गयौ सुखाय।

हँसि खेल बखत कटि जायेगौ, जानै कित कों रमि जायगौ—अ० खु[illegible] से सबके साथ हिलमिल कर च[illegible] यह उम्र कट जायेगी फिर न ज[illegible] कौन कहाँ जन्म ले। प्र० बंधु, [illegible] तरह दुःखी रहना ठीक नहीं। जा[illegible] नहीं कि हँसि खेल बखत कटि जाये[illegible] जानै को कित कों रमि जायगौ।

हटि जा मेरौ को भरु डाटै—अ० [illegible] सामने कौन जम सकता है। [illegible] गदाधारी भीम ने दानवीर कर्ण[illegible] कहा, राधेय, हटि जा मेरौ को [illegible] डाटै।

हवा के घोड़े पर सवार होना—अ० कि[illegible] को कुछ न गिनना। प्र० कर्ण [illegible] अपनी ओर पाकर दुर्योधन हवा[illegible] घोड़े पर सवार हो गया।

हवा बदलना—अ० उल्टी दशा होन[illegible] प्र० जनरल के आते ही युद्ध की ह[illegible] बदल गई।

हवा बिगड़ना—अ० बुरे दिन आना। [illegible] अब तो राय बहादुर की हवा बि[illegible] गई।

हवा मार जाना—अ० हाथ पाँव [illegible] जाना। प्र० श्याम से अब उठा न[illegible] जाता, उसे ज्वर में हवा मार ग[illegible]

हथेली पर बाल जमाना—अ० असम[illegible] को सम्भव करना। प्र० वैद्य [illegible] कोई ऐसी औषधि दो कि मेरी ब[illegible] स्त्री के संतान हो जाये। यह न हो[illegible] भाई, हथेली पर बाल नहीं जमते[illegible]

हथफेरी करना—अ० हाथों में कि[illegible] चीज को ग़ायब करना। प्र० [illegible] उस ग्राहक ने ऐसी हथफेरी की [illegible] पेंट पीस हाथों ही में ग़ायब [illegible] लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

074270

GURUKUL KANGRI LIBRARY

Accession 12-5-84
Class on
Cat on
Tag etc.
Checked
Any Other

STOCK VERIFY 2020 G.K.V. Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar